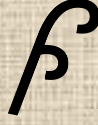
ISSN 2229-547X VIDEHA

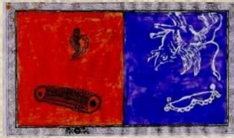


विदेह ३७३ म अंक ०१ जुलाई २०२३ (वर्ष १६ मास १८७ अंक ३७३)

[विदेह (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.videha.co.in]



विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्

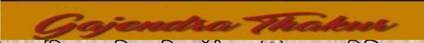


विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।







(c) २०००- २०२३. सर्वाधिकार सुरक्षित। भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितक रूपमे विद्यमान अछि *(किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)।*

ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि।

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

Videha e-Journal: Issue No. 373 at www.videha.co.in

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- *चित्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

<u>अक्खर खम्भा (आखर खाम्ह)</u>

तिहुअन खेत्तहि काञि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ॥ ***(****कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।****)***

माने आखर रूपी खाम्ह निर्माण कऽ ओइपर **(** *गद्य-पद्य रूपी* **)** मंच जँ नै बान्हल जाय तँ ऐ त्रिभुवनरूपी क्षेत्रमे ओकर कीर्तिरूपी लत्ती केना पसरत।

शुक्ल यजुर्वेद (२६.२)-यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।।हम सभ गोटेकें ई पवित्र वाणी (वेदवाणी) सुनाबी। ब्राह्मणकें, क्षत्रियकें, शूद्रकें आ आर्यकें; अपन लोककें आ अपरिचितकें सेहो (माने सभकें)। मुदा ऐ वेदवाक्यक विपरीत मनुस्मृति वेदवाणीक अध्ययन/ श्रवणकें समाजक किछु गोटे लेल निषेध करऽ चाहलक, मुदा स्मृति सेहो वेदवाक्यकें प्रमाण मानैत अछि (शब्द प्रमाण) तें तकर विरुद्ध देल ओकर निर्देश स्वयं अमान्य भऽ जाइत अछि।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. -Robert Louis Stevenson

----

Videha: Maithili Literature Movement

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्ति:

𑓇 𑒠𑓂𑒨𑒾: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒢𑓂𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭 Ẇ 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱:

अनुक्रम

ऐ अंकमे अछि:-



ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म

ওঁ দ্যৌ: শান্তিৰন্তৰিক্ষ Ẇ শান্তিঃ পৃথ্বী শান্তিৰাপ: শান্তিৰোষধয: শান্তি রনস্পতয: শান্তির্রিশ্বে দেরা: শান্তির্ৰহ্ম

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्युलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आप:-जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

ব্র্হ্মণসঁ প্রার্থনা জে দ্যুলোকমে, অংতৰিক্ষমে, পৃথ্বীপৰ, জলমে, ঔষধমে, রনস্পতিমে, রিশ্বমে, সভ দেরতাগণমে আ ব্র্হ্মমে শাঁতি হুঅয।

ওঁ-ব্র্হ্মণ, দ্যৌ-সূর্য-তৰেগণ, অংতৰিক্ষ- পৃথ্বী আ দ্যুলোকক রীচ, আপ:-জল, রিশ্বেদেরা- সভ দেরতা, ব্র্হ্ম- সর্জক।

ॐ, स॒हस्रंशीर्षा॒ पुरुंषः। स॒ह॒स्रा॒क्षः स॒हस्रंपात्।

𑓇, 𑒮↓ 𑒯𑒮𑓂𑒩↑ 𑒬𑒲𑒩𑓂𑒭𑒰↓ 𑒣𑒳𑒩𑒳↑ 𑒭𑓁। 𑒮↓ 𑒯↓ 𑒮𑓂𑒩𑒰↓ 𑒏𑓂𑒭𑓁
𑒮↓ 𑒯𑒮𑓂𑒩↑ 𑒣𑒰𑒞𑓂।

स भूमिं ग्वंग वि॒श्वतों वृ॒त्वा। अत्यंतिष्ठद् दशाङ्गु॒लम्॥

𑒮 𑒦𑒴𑒧𑒱𑓀↑ Ẇ 𑒫𑒱↓ 𑒬𑓂𑒫𑒞𑒼↑ 𑒫𑒵↓ 𑒞𑓂𑒫𑒰। 𑒁𑒞𑓂𑒨↑ 𑒞𑒱𑒭𑓂𑒚𑒠𑓂 𑒠𑒬𑒰𑒓𑓂𑒑𑒳↓ 𑒪𑒧𑓂॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।

ॐ सहस्रंशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः
सहस्रपात् ॥ सभूमिँ सर्व्वतस्पृत्वा
त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

प॒द्भ्याग्ँ शू॒द्रो अंजायत॥

প↓ ড্যাগ্ঁ↑ শূ↓ দ্রো অ↑ জাযত॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

प॒द्भ्यां भूमि॒र्दिशः॒ श्रोत्राँत्।

প↓ ড্যাং ভূমি↓ র্দিশঃ↓ শ্রোত্রা↑ ↑ ৎ।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

❀ (White Florette- innocence and purity)

☸ (Wheel of Dharma)

卐 (Swastik)

꣼ (सिद्धिरस्तु, सिद्धम সিদ্ধিৰস্তু, সিদ্ধম Devanagari Anji)

Ẇ (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

𑓆 (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

𑓆



१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१.२.अंक ३७२ पर टिप्पणी

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

गूगल बार्ड(मैथिली) गूगल ट्रान्सलेट /

https://bard.google.com/ (गूगल बार्ड(
गूगल ट्रान्सलेटक लिंक
https://translate.google.com/?sl=en&tl=mai&op=translate
गूगल ट्रान्सलेटकेँ आर पुष्ट करबाक खगता छै तइ लेल अगिला काज अढ़ा रहल छी:
https://translate.google.com/about/contribute/
Crowdsource Maithili Community
Please fill the form
Next Step
Download the Crowdsource app from android play store and start contributing
or go to web on the following link for contributing:
https://crowdsource.google.com/about/
Crowdsource by Google is a gamified platform that empowers users to directly train Google's artificial intelligence systems and make Google products work equally well for everyone, everywhere.

चैट जी(मैथिली) माइक्रोसॉफ्ट बिंग ट्रान्सलेट /४-.टी.पी.जी -टी.पी.

https://openai.com/

https://openai.com/gpt-4

https://openai.com/chatgpt

https://www.bing.com/translator
https://translator.microsoft.com/
CONTRIBUTE VOICE CLIPS TO MICROSOFT TRANSLATOR
GO TO https://translator.microsoft.com/
Download Microsoft Translator APP- (Android/ IOS)
Click three horizontal lines in the left top corner.
Click "on" to Contribute Voice Clips to contribute clips to teach Microsoft's speech technology more about Maithili.
Your contribution start confirmation date/ time appears, which could be sent to your email too.

JNU

मैथिली

मैथिली लेक्सिकन

मिथिलाक्षर फॉण्ट लेल (तिरहुता) आवेदन ३० सितम्बर २००९ आ फेर संशोधित आवेदन ५ मई २०११ कैँ श्री अंशुमन पाण्डेय द्वारा देल गेल आ दुनू बेर ऐमे विदेहक सहयोगक वर्णन भेल। ११ जूनकैँ श्री अंशुमन पाण्डेय

एकर स्वीकृतिक सूचना विदेहक फेसबुक ग्रुपपर देलनि। आब ई फॉण्ट बनि कऽ तैयार अछि आ नीचाँक लिकपर डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि।

तिरहुता, नेवाड़ी आ कैथी फॉण्ट डाउनलोड Google's Noto Fonts project/ GitHub

तिरहुता नोटो फॉण्ट	कैथी ओटीएफ	कैथी टीटीएफ	नेवाड़ी ओ.टी.एफ.	नेवाड़ी टी.टी.एफ.

https://fonts.google.com/ (Google Open Fonts download)

Tirhuta Offline Keyboard download

Keyman Tirhuta/ Vedic Devanagari Keyboards Download

https://malarproject.gitlab.io/tirhuta (Tirhuta Keyboard Online)

https://keymanweb.com/?_ga=2.7155890.1818820209.1675749426-2042013574.1675749426#mai-tirh,Keyboard_tirhuta

https://keymanweb.com/?_ga=2.241635586.1818820209.1675749426-2042013574.1675749426#mai-tirh,Keyboard_malar_tirhuta

https://aksharamukha.appspot.com/converter (Script/ Website Convertor)

https://aksharamukha.appspot.com/keyboards [Input (IME]

https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts (fonts- opensource)

https://www.cdac.in/ (Tirhuta/ Unicode Typing Tool)

तिरहुतामैथिल ब्राह्मणक पञ्जी आधारित इतिहास /कैथी फॉण्ट -

https://deepblue.lib.umich.edu/bitstream/handle/2027.42/110341/pandey_1.pdf?sequence=1 (उत्तर-(बिहारक मैथिल ब्राह्मणमे जाति

https://www.unicode.org/L2/L2009/09329-maithili.pdf (यूनीकोड तिरहुता फॉण्ट लेल आवेदन ३० सितम्बर २००९(विदेहक सहयोग -

https://www.unicode.org/L2/L2011/11175r-tirhuta.pdf (यूनीकोड तिरहुता फॉण्ट लेल आवेदन ५ मई २०११ -(विदेहक सहयोग

"विकीपीडियामे मैथिली"

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator

http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai

http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai

http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai

अंतिम पाँचू साइट विकी मैथिली प्रोजेक्टक अछि। एहि लिंक सभ पर जा कय प्रोजेक्टकेँ आगाँ बढ़ाऊ।

विकीपीडिया /आ आन फॉण्ट (तिरहुता) मिथिलाक्षर /गूगल ट्रून्सलेट / :कीबोर्ड प्रोजेक्ट प्रारम्भ
विकीपीडिया ०१ फरबरी २००८ लिंक
https://books.google.co.in/books?id=VC-BD5Ad6z4C&lpg=PA1&pg=PA1#v=onepage&q&f=f

alse **(मैथिली देवनागरी(**
https://books.google.co.in/books?id=cTezCU59bJwC&lpg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false **(मैथिली तिरहुता(**
https://books.google.co.in/books?id=3zKudz6wAO8C&lpg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false **(मैथिली ब्रेल(**

किछु मैथिली विकिपिडिया पेजक लिंक:

विदेह (पत्रिका) https://mai.wikipedia.org/s/kgv
इन्टरनेटक संसारमे मैथिली भाषा https://mai.wikipedia.org/s/s6h

भालसरिक गाछ https://mai.wikipedia.org/s/ipm

विदेह https://mai.wikipedia.org/s/ie1

विदेहक फेसबुक भर्सन https://mai.wikipedia.org/s/iu1

विदेह सम्मान https://mai.wikipedia.org/s/jc2

विदेह आर्काइभ https://mai.wikipedia.org/s/jc0

विदेह मिथिला रत्न https://mai.wikipedia.org/s/jc3

विदेह मिथिलाक खोज https://mai.wikipedia.org/s/jc4

विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण https://mai.wikipedia.org/s/jc5

श्रुति प्रकाशन https://mai.wikipedia.org/s/iu7

अनचिन्हार आखर https://mai.wikipedia.org/s/ion

मैथिली गजल https://mai.wikipedia.org/s/idz

मैथिली बाल गजल https://mai.wikipedia.org/s/iex

मैथिली भक्ति गजल https://mai.wikipedia.org/s/if1

-Gajendra Thakur, editor, Videha (be part of Videha www.videha.co.in -send your WhatsApp no to +919560960721 so that it can be added to the Videha WhatsApp Broadcast List.)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१.२.अंक ३७२ पर टिप्पणी

आशीष अनचिन्हार

मिथिलाक्षरमे परमानन्द लाल कर्ण जीक गीता माहात्म्य नीक जकाँ आगाँ बढ़ि रहल अछि। आशा अछि जे ई निरन्तर आगाँ बढ़त।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.गद्य खण्ड

२.१०.जगदीश प्रसाद मण्डल-सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल (लघुकथा)

२.११.रबीन्द्र नारायण मिश्र-बदलि रहल अछि सभकिछु (उपन्यास)-धारावाहिक

२.१.परमानन्द लाल कर्ण- गीता माहात्म्य (आगाँ)

Sunday, 4 June 2023 8:59 AM



(नाम - परमानन्द लाल कर्ण- जन्म तिथि-३०.०१.३०
पिता - स्व० परशुराम लाल कर्ण, गाँव-घोघसर
पो०- रिबौल, दरभंगा, शिक्षा - स्नातकोत्तर, CAIIB
सेवानिवृत्त - प्रबन्धक, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया)

गीता माहात्म्य

(पद्म पुराण उत्तर खण्ड)

चारिम अध्याय

श्री भगवान कहलथिन - प्रिये, आब हम चारीम अध्यायक माहात्म्य बतबैत छी। सुनू, भागीरथीक तट पर वाराणसी नाम सँ एकटा पुरी अछि। ओहि ठाम विश्वनाथजीक मन्दिर मे भरत नाम सँ एकटा योग निष्ठ महात्मा रहैत छलाह। ओ सब दिन आत्मचिन्तन मे तत्पर भऽ आदर पूर्वक गीताक चारीम अध्यायक पाठ करैत छलाह जेकर अभ्यास सँ हुनकर अन्तःकरण निर्मल भऽ गेल छल। ओ शीत-उष्ण आदि द्वन्द्व सँ कखनहुँ व्यथित नहि होयत छलाह। एक समयक बात अछि ओ तपोधन नगरक सीमा मे स्थित देवताक दर्शनक ईच्छा सँ भ्रमण करैत नगर सँ बाहर निकलि गेलाह। ओहि ठाम बैरक दूटा गाछ छल। गाछक जड़ि मे ओ विश्राम करऽ लगलाह। एक गाछक जड़ि पर माथ आ दोसर गाछक जड़ि पर पएर राखने छलाह। थोड़े देरक बाद जखन ओ तपस्वी चलि गेलथि तखन दुन्नू गाछ पाँच-छओ दिनक बाद सूखा गेल। जाहि मे पात आ डाँढ़ि सेहो नहि रहि गेल। तखन ओ दुन्नू गाछ कोनो ब्राह्मणक पवित्र घर मे दू कन्याक रूप मे जन्म लेलीह।

ओ दुन्नू कन्या जखन सात बरखक भेलीह तखन एक दिन ओ दूर देश सँ घूमि कें आबैत भरत मुनि कें देखलथिन। हुनका देखैत ओ दुन्नू मुनिक पएर पर गिर मधुर स्वर मे कहलथिन-

हे मुनि अहाँक तपस्या सँ हमरा दुनूक उद्धार भेल अछि। हम बेरक गाछक योनि त्यागि केँ मनुष्यक शरीर प्राप्त कएलहुँ अछि। हुनका एना कहला पर मुनि केँ बड़ विस्मय भेलनि। ओ पुछलथिन - अहाँ कखन आ कोन साधन सँ अहाँ के मुक्त कएलहुँ अछि। संगहि संग ई बताउ जे अहाँ कोन कारण सँ बेरक गाछ भेल छलहुँ। किएक तँ ओहि विषय मे हमरा कोनो जानकारी नहि अछि।

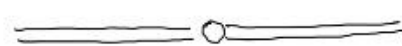
तखन ओ कन्या पहिने बेर भेलाक कारण बतबैत कहलथिन - हे मुनि, गोदावरी नदीक तट पर छिन्नपाप नाम सँ एकटा तीर्थ स्थल अछि जे मनुष्य लोकनिक पुण्य प्रदाता अछि। ओ स्थान तपक चरम सीमा पर पहुँचल अछि। ओहि ठाम सत्यतपा नाम सँ एकटा तपस्वी बड़ कठोर तपस्या कऽ रहल छलाह। ओ ग्रीष्म ऋतु मे प्रज्वलित आगिक मध्य बैसैत छलाह, वर्षा ऋतु मे जलक धार सँ हुनकर माथक केश सदिखन भीजल रहैत छल आ जाड़क समय मे पानि मे रहलाक कारणे हुनकर शरीरक रोम सदिखन ठाढ़ रहैत छल। ओ बाहर भीतर सँ सदिखन शुद्ध रहैत छलाह। समय पर तपस्या करैत आ मन इन्द्री केँ संयम मे राखि परम शान्ति पाबि आत्मा मे रमण करैत छलाह। ओ अपन विद्वता सँ एहन व्याख्यान दैत छलाह जेकरा सुनबाक लेल ब्रह्मा जी स्वयं सब दिन हुनका लग आबैत छलाह आ प्रश्न करैत छलथिन। ब्रह्माजी सँ हुनका कोनो तरहक संकोच नहि छलनि। तेँ ओ हुनका एलाक बाद हुनकर सदिखन तपस्या मे लीन रहैत छलाह। परमात्माक ध्यान मे निरन्तर रहलाक कारणे हुनकर तपस्या सदिखन बढ़ैत रहैत छल। सत्यतपा केँ जीवनमुक्त मानि इन्द्र अपन समृद्धिशाली पदक सम्बन्ध मे भयभीत भऽ गेलाह। ओ हुनकर तपस्या भंग करबाक लेल सभ प्रकारक विघ्न उत्पन्न करए आरम्भ कएलनि। अप्सराक समुदाय सँ हमरा दुनू केँ बजाय केँ इन्द्र एहि प्रकारे आदेश देलथिन - अहाँ दुनू ओहि तपस्वी केँ तपस्या मे विघ्न करू जे हमरा इन्द्र पद सँ हटा केँ स्वयं स्वर्गक राज्य भोग चाहैत अछि।

इन्द्रक ई आदेश पाबि हम दुनू गोदावरी

𑒢𑒠𑒲𑒏 𑒞𑒙 𑒣𑒩 𑒍𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒍 𑒧𑒳𑒢𑒱 𑒞𑒣𑒮𑓂𑒨𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒍𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒧𑒢𑓂𑒠 𑒂 𑒑𑒧𑓂𑒦𑒲𑒩 𑒮𑓂𑒫𑒩 𑒧𑒹 𑒥𑒖𑒻𑒞 𑒧𑒵𑒠𑓀𑒑 𑒂𑒍𑒩 𑒧𑒡𑒳𑒩 𑒫𑒲𑒝𑒰𑒏 𑒡𑒳𑒢 𑒮𑒿 𑒯𑒧 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒁𑒣𑓂𑒮𑒩𑒰 𑒮𑒯𑒱𑒞 𑒧𑒡𑒳𑒩 𑒮𑓂𑒫𑒩 𑒧𑒹 𑒑𑒲𑒞 𑒂𑒩𑒧𑓂𑒦 𑒏𑒋𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒋𑒞𑒥𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒧𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑒰 𑒏𑒹𑒿 𑒫𑒬 𑒧𑒹 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒯𑒧 𑒮𑒦 𑒮𑓂𑒫𑒩, 𑒞𑒰𑒪 𑒂 𑒪𑒨𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒢𑒰𑒔 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒋𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒥𑒲𑒿𑒔-𑒥𑒲𑒔 𑒂𑒔𑒩𑒱 𑒐𑒮𑒏𑒪𑒰 𑒣𑒩 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒯𑒧𑒩 𑒕𑒰𑒞𑒲 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒢𑒱। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒏 𑒅𑒢𑓂𑒧𑒞𑓂𑒞 𑒑𑒞𑒱 𑒏𑒰𑒧𑒢𑒰𑒏 𑒅𑒠𑓂𑒠𑒲𑒣𑒢 𑒏𑒩𑒃𑒥𑒪𑒰 𑒕𑒪। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒫𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒞𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒧𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑒰𑒏 𑒧𑒢 𑒧𑒹 𑒅𑒏𑓂𑒞 𑒏𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒏𑓂𑒩𑒼𑒡𑒏 𑒮𑓀𑒔𑒰𑒩 𑒦𑒃 𑒑𑒹𑒪। 𑒞𑒐𑒢 𑒍 𑒯𑒰𑒟 𑒧𑒹 𑒖𑒪 𑒪𑒃 𑒏𑒹 𑒏𑓂𑒩𑒼𑒡𑒰𑒑𑓂𑒢𑒱 𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒖𑓂𑒫𑒪𑒱𑒞 𑒦𑒃 𑒬𑒰𑒣 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒱𑒢 - '𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒑𑓀𑒑𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒏𑒕𑒹𑒩 𑒧𑒹 𑒥𑒹𑒿𑒩𑒏 𑒑𑒰𑒕 𑒦𑒃 𑒖𑒰𑒅।' 𑒄 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒯𑒧 𑒮𑒦 𑒫𑒱𑒢𑒨𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑓂𑒟𑒢𑒰 𑒏𑒋𑒪𑒯𑒳𑒿- 𑒧𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑒢𑓂 𑒯𑒧 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒣𑒩𑒰𑒡𑒲𑒢 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒿 𑒖𑒹 𑒠𑒳𑒭𑓂𑒏𑒩𑓂𑒧 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒹 𑒏𑓂𑒭𑒧𑒰 𑒏𑒩𑒴। 𑒋𑒢𑒰 𑒏𑒯𑒱 𑒯𑒧 𑒧𑒳𑒢𑒱 𑒏𑒹𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒢𑓂𑒢 𑒏𑒋𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒞𑒐𑒢 𑒍 𑒣𑒫𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒞𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒧𑒳𑒢𑒱 𑒬𑒰𑒣𑒼𑒠𑓂𑒡𑒰𑒩𑒏 𑒁𑒫𑒡𑒱 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒏𑒯𑒪𑒟𑒱𑒢 - 𑒖𑒐𑒢 𑒦𑒩𑒞 𑒧𑒳𑒢𑒱 𑒋𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒋𑒞𑒰𑒯 𑒞𑒐𑒢 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒦 𑒬𑒰𑒣 𑒧𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒦𑒃 𑒖𑒰𑒨𑒥। 𑒞𑒏𑒩𑒥𑒰𑒠 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒦 𑒧𑒵𑒞𑓂𑒨𑒳𑒪𑒼𑒏 𑒧𑒹 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒪𑒹𑒥 𑒂 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒖𑒢𑓂𑒧𑒏 𑒮𑓂𑒧𑒵𑒞𑒱 𑒥𑒢𑒪 𑒩𑒯𑒞।

𑒯𑒹 𑒧𑒳𑒢𑒱𑒫𑒩 𑒖𑒐𑒢 𑒯𑒧 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒥𑒹𑒿𑒩 𑒑𑒰𑒕𑒏 𑒩𑒴𑒣 𑒧𑒹 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒞𑒐𑒢 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒪𑒑 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒩𑒲𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒖𑒰𑒣 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒯𑒧𑒩 𑒅𑒠𑓂𑒡𑒰𑒩 𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒯𑒧 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒏 𑒢𑒧𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒲। 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒹𑒫𑒪 𑒬𑒰𑒣 𑒮𑒿 𑒅𑒠𑓂𑒡𑒰𑒩𑒹𑒙𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒣𑒱𑒞𑒳 𑒋𑒯𑒱 𑒦𑒨𑒰𑒢𑒏 𑒮𑓀𑒮𑒰𑒩 𑒮𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒩𑒲𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒣𑒰𑒚 𑒏𑒃 𑒧𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒏𑒃 𑒠𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿।

𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒏𑒯𑒪𑒟𑒱𑒢 - 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒏𑒹𑒿 𑒋𑒯𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒯𑒪𑒰 𑒣𑒩 𑒧𑒳𑒢𑒱 𑒐𑒳𑒬 𑒦𑒹𑒪𑒟𑒱𑒢 𑒂 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒮𑒿 𑒣𑒴𑒖𑒱𑒞 𑒦𑒃 𑒫𑒱𑒠𑒰 𑒪𑒃 𑒏𑒹 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒍 𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒂𑒠𑒩𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒏 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒩𑒲𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒣𑒰𑒚 𑒏𑒩𑒃 𑒪𑒑𑒪𑒲𑒯 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒮𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒅𑒠𑓂𑒡𑒰𑒩 𑒦𑒹𑒪𑒢𑒱।



গীতা মাহাত্ম্যে
(পদ্ম পুৰাণ উত্তৰ খণ্ড)
পাঁচম অধ্যায়

শ্ৰী ভগৱান কহলথিন - হে দেৱী আব সব লোকনি মে সম্মানিত গীতাক পাঁচম অধ্যায়ক মাহাত্ম্যে বতাবৈত ছী। অহাঁ সাবধান ভঽ সুনু। মদ্ৰদেশ মে পুরুকুৎসপুৰ নাম সঁ একটা নগৰ অছি। জাহি মে পিংগল নাম সঁ একটা ব্ৰাহ্মণ ৰহৈত ছলাহ।

ও বেদপাঠী ব্ৰাহ্মণ বিখ্যাত বংশ মে জন্ম লেলে ছলাহ জে সৰ্বথা নিষ্কলংক ছলথি। মুদা ও অপন লনক লেন বেদশাস্ত্ৰক স্বাধ্যায় ছোড়ি ঢোল আদি বজাবৈত আ নাচ-গান মে মন লগাবৈত ছলাহ। নাচ-গান আ বাদ্য যন্ত্ৰ কলা মে পৰিশ্ৰম কঽ পিংগল প্ৰসিদ্ধি প্ৰাপ্ত কঽ লেলথিন। জাহি সঁ হুনকা ৰাজভৱন মে সেহো স্থান ভেটি গেলনি। আব ও ৰাজাক সংগ ৰহঽ লগলাহ আ পৰ নাৰীক উপভোগ কৰঽ লগলাহ। নাৰী সিবা দোসৰ কতঙু মন নহি লাগৈত ছলনি। ধীৰে-ধীৰে অভিমান বঢ়ি গেলা সঁ উচ্ছৃংখল ভঽ একান্ত মে ৰাজা সঁ দোসৰক দোষ বতাবঽ লগলাহ। পিংগলক স্ত্ৰীক নাম অৰুণা ছল। ও নীচ কুল মে জন্ম লেলে ছলীহ আ কামী পুৰুষক সংগ বিহাৰ কৰবাক ইচ্ছা সঁ সদিখন একৰ ভোগ মে ঘুমৈত ৰহৈত ছলীহ। ও অপনা পতি কেঁ অপন মাৰ্গক কাঁট সমঝি একদিন অধৰতিয়া মে ঘৰক অন্দৰ হুনক সিবকাটি মাৰি দেলথিন আ হুনকৰ লাশ কেঁ জমীন মে গাড়ি দেলথিন। এহি প্ৰকাৰ ও যমলোক পহুঁচি গেলাহ আ ভীষণ নৰকক উপভোগ কঽ নিৰ্জন বন মে গিদ্ধ যোনী মে জন্ম লেলাহ।

অৰুণা সেহো ভগন্দৰ ৰোগ সঁ পীড়িত ভঽ অপন সুন্দৰ শৰীৰ ত্যাগি ঘোৰ নৰক ভোগলাক পশ্চাৎ ওহি বন মে শুক যোনি মে জন্ম লেলীহ। এক দিন ও দানা চুগবাক ইচ্ছা সঁ এম্হৰ ওম্হৰ ফুদকি ৰহল ছলীহ তখনহি গিদ্ধ অপন পূৰ্বজন্মক বৈৰক স্মৰণ কঽ অপন তীক্ষ্ণ নহ সঁ হুনকা মাৰি দেলথিন। শুকী ঘায়ল ভঽ পানি সঁ ভৰল মানুখক খোপড়ী মে খসি পড়লীহ। গিদ্ধ ফেৰি

𑒃𑒢𑒏𑒰 𑒠𑒱𑒮 𑒗𑒣𑒙𑓂𑒙𑒰 𑒧𑒰𑒩𑒪𑒟𑒱𑒢 𑒞𑒐𑒢𑒯𑒱 𑒉𑒏𑒙𑒰 𑒥𑒯𑒹𑒪𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒢𑒱𑒬𑒰𑒢𑒰 𑒮𑒰𑒡𑒱 𑒫𑒰𑒝 𑒔𑒪𑒾𑒪𑒟𑒱𑒢। 𑒃𑒢𑒏 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒖𑒢𑓂𑒧𑒏 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒉𑒏𑒙𑒰 𑒐𑒼𑒣𑒛𑓃𑒲𑒏 𑒖𑒪 𑒧𑒹 𑒛𑒴𑒥𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒝 𑒞𑓂𑒨𑒰𑒑𑒱 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒕𑒪𑒲𑒯। 𑒑𑒵𑒡𑓂𑒩 𑒣𑒏𑓂𑒭𑒲 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒋𑒯𑒱 𑒧𑒹 𑒑𑒱𑒩 𑒏𑒹𑒿 𑒛𑒴𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒞𑒐𑒢 𑒨𑒧𑒩𑒰𑒖𑒏 𑒠𑒴𑒞 𑒃𑒢𑒏𑒰 𑒃𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒏𑒹𑒿 𑒨𑒧𑒩𑒰𑒖𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒧𑒹 𑒪𑓄𑒑𑒹𑒪𑒟𑒱𑒢। 𑒋𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒃𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒏𑒵𑒞 𑒣𑒰𑒣 𑒏𑒩𑓂𑒧 𑒏𑒹𑒿 𑒨𑒰𑒠 𑒏𑓄 𑒦𑒨𑒦𑒲𑒞 𑒕𑒪𑒟𑒱। 𑒞𑒠𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒨𑒧𑒩𑒰𑒖 𑒖𑒐𑒢 𑒃𑒢𑒏𑒩 𑒒𑒵𑒝𑒱𑒞 𑒏𑒩𑓂𑒧 𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒟𑒱𑒢 𑒞𑒐𑒢 𑒃𑒢𑒏𑒰 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒞 𑒦𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒧𑒵𑒞𑓂𑒨𑒳𑒏𑒰𑒪 𑒧𑒹 𑒁𑒏𑒮𑓂𑒧𑒰𑒞 𑒐𑒼𑒣𑒛𑓃𑒲𑒏 𑒖𑒪 𑒧𑒹 𑒮𑓂𑒢𑒰𑒢 𑒏𑒹𑒪𑒰 𑒮𑒿 𑒃𑒢𑒏 𑒣𑒰𑒣 𑒢𑒭𑓂𑒙 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒐𑒢 𑒋 𑒃𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒢𑒫𑒰𑓀𑒕𑒱𑒞 𑒪𑒼𑒏 𑒧𑒹 𑒖𑒨𑒥𑒰𑒏 𑒂𑒖𑓂𑒘𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒱𑒢 𑒄 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒋 𑒃𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒣𑒰𑒣 𑒏𑒹𑒿 𑒨𑒰𑒠𑒱 𑒏𑓄 𑒫𑒱𑒮𑓂𑒧𑒨 𑒧𑒹 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯 𑒂 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒩𑒰𑒖𑒏 𑒔𑒩𑒝 𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒝𑒰𑒧 𑒏𑓄 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒟𑒱𑒢 - 𑒯𑒹 𑒦𑒑𑒫𑒢 𑒯𑒧 𑒃𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒧𑒹 𑒒𑒵𑒝𑒱𑒞 𑒣𑒰𑒣𑒏 𑒮𑓀𑒔𑒨 𑒏𑒉𑒢𑒯𑒳𑒿 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒹𑒨𑒼 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒧𑒢𑒫𑒰𑓀𑒕𑒱𑒞 𑒪𑒼𑒏 𑒧𑒹 𑒦𑒹𑒖𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒼𑒢 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒹 𑒥𑒞𑒰𑒅।

𑒨𑒧𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒯𑒪𑒟𑒱𑒢 - 𑒑𑓀𑒑𑒰𑒏 𑒏𑒕𑒹𑒩 𑒣𑒩 𑒫𑒙 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒉𑒏𑒙𑒰 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒧 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢𑒲 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒋 𑒉𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞𑒫𑒰𑒮𑒲, 𑒧𑒧𑒞𑒰𑒩𑒯𑒱𑒞, 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞, 𑒫𑒱𑒩𑒏𑓂𑒞 𑒂 𑒏𑒏𑒩𑒼 𑒮𑒿 𑒠𑓂𑒫𑒹𑒭 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒰𑒐𑓄 𑒫𑒪𑒰 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒋 𑒢𑒱𑒨𑒧 𑒮𑒿 𑒮𑒥 𑒠𑒱𑒢 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒣𑒰𑒿𑒔𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒣𑒰𑒚 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒣𑒰𑒿𑒔𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒬𑓂𑒩𑒫𑒝 𑒏𑒹𑒪𑒰 𑒣𑒩 𑒧𑒯𑒰𑒣𑒰𑒣𑒲 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒮𑒢𑒰𑒞𑒢 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒏 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒣𑒰𑒥𑒱 𑒪𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒣𑒳𑒝𑓂𑒨𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒰𑒣 𑒮𑒿 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒞 𑒬𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒦𑓄 𑒋 𑒁𑒣𑒢 𑒬𑒩𑒲𑒩𑒏 𑒞𑓂𑒨𑒰𑒑 𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒣𑒰𑒚 𑒮𑒿 𑒖𑒱𑒢𑒏𑒩 𑒬𑒩𑒲𑒩 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒪 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪, 𑒖𑒹 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒣𑒰𑒥𑒱 𑒪𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒧𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑒰𑒏 𑒐𑒼𑒣𑒛𑓃𑒲𑒏 𑒖𑒪 𑒮𑒿 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒃𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒣𑒫𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒲। 𑒂𑒩 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒃𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒧𑒢𑒫𑒰𑓀𑒕𑒱𑒞 𑒪𑒼𑒏 𑒧𑒹 𑒖𑒰𑒅 𑒏𑒱𑒉𑒏 𑒞𑓄 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒣𑒰𑒿𑒔𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒧𑒰𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑓂𑒨 𑒮𑒿 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒃𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒣𑒫𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒬𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒁𑒕𑒱।

𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒏𑒯𑒪𑒟𑒱𑒢 - 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒮𑒧𑒰𑒢 𑒦𑒰𑒫 𑒩𑒰𑒐𑓄 𑒫𑒪𑒰 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒯𑒪𑒰 𑒣𑒩 𑒋 𑒃𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒐𑒳𑒬 𑒦𑓄 𑒫𑒱𑒧𑒰𑒢 𑒣𑒩 𑒥𑒻𑒮𑒱 𑒫𑒻𑒏𑒳𑒝𑓂𑒚 𑒡𑒰𑒧 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯।

——०——

𑒣𑒩𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒪𑒰𑒪 𑒏𑒩𑓂𑒝

२.२.कुमार मनोज कश्यप-सर्वसहा



कुमार मनोज कश्यप

१ टा लघुकथा

सर्वसहा

रनमा माय के झाड़ू-पोछा-चौका-बरतन कऽ आँचर सऽ हाथ पोछि निचैन सऽ चाह पिबैत देखि ओहिना पुछि लेलियै - 'आहाँ के लोकक घर मे काज केला सऽ सभ प्राणी के गुजर-वसर भ' जाइयै ? घरवाला के तऽ ओहिना एम्हर-ओम्हर मड़ड़ाईते देखैत छियै दिन भरि!' रनमा माय के चाहक कप ठोर सऽ पहिने रुकि गेलै - 'आब आहाँ सऽ की चोराऊ मालिक! पाई कते मिलै हई? जेहो होई है तकर तऽ रनमा बाप तारिये-दारू पी जाई हई। घर-घर सऽ बाइस भात रोटी जे कुछो केयो दै हई उहे से कहुना खेपने जाई हियै आ. लोकक देल फाटल-पुरान सऽ देह झँपाई हई।'

- 'आहाँ तारी-दारू मे उड़बै लै पाई दैतै कियै छियै? दिन भरि कोंढ़ तोरी आहाँ आ डुबाबै ओ! ' -- हमरा तामस उठि गेल छल। मुदा रनमा माय शांते

रहल आ कोनो दार्शनिक जकाँ बाजल - 'मालिक कहै तऽ हियै आहाँ बलु सत्ते; मुदा ओकर पीबै के आदत तऽ आब छूटै सऽ रहलै! हम पाई नहिंओ देबै तैयो तऽ जबर्दस्ती मारि-पीट कऽ कऽ लईये लेतै। उहो से नईं होतै तऽ चोरी करतै; झपटमारी करतै कोनो-ने-कोनो धरानी पीतै तऽ अवस्से! अई सभ सऽ तऽ नीक जे हमहीं पाई दऽ दियै घरक बात घरे रहे! कपाड़ मे सटल हई हमर तऽ भोगतै के..?'

हम निरूतरे नहिं लज्जितो छलहुँ ।

-**कुमार मनोज कश्यप, सम्प्रति**: भारत सरकार के उप-सचिव, **संपर्क:** सी-11, टावर-4, टाइप-5, किदवई नगर पूर्व (दिल्ली हाट के सामने), नई दिल्ली-110023 मो. 9810811850 / 8178216239 ई-मेल : writetokmanoj@gmail.com

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.३.आचार्य रामानन्द मण्डल-आदिपुरुष आ बिरोध/ बिधवा के पियार

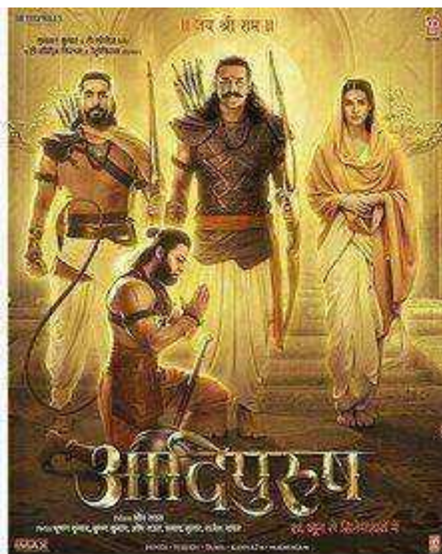


आचार्य रामानंद मंडल

आदिपुरुष आ बिरोध/ बिधवा के पियार

१

आदिपुरुष आ बिरोध



आइ कालि फिल्म आदिपुरुष के खूब चर्चा हय।बहुत लोग अइ फिल्म के रामानंद सागर कृत धारावाहिक रामायण,संत तुलसीदास रचित रामचरितमानस आ महर्षि बाल्मीकि कृत रामायण से तुलना करैत विरोध करैत हतन। हालांकि बहुत रचनाकार राम कथा रचलैन हतन। बहुत ब्राह्मण ग्रन्थ,पुराण आ बौद्ध साहित्य मेयो राम कथा प्रतिपादित हय।जे बहुत भिन्न चरित के हय। सीता के रूप वर्णन आ तथ्यात्मक मेयो बाल्मिकी रामायण आ रामचरितमानस में आकाश पाताल के अंतर हय। यथा पुत्र प्राप्ति हेतु रानी सभ मे आनुपातिक खीर वितरण,स्वयंबर आ रावण बध में विभीषण के भूमिका। रामचरितमानस के अनुसार स्वयंबर भेल।परंच रामायण के अनुसार रामचरितमानस लेखा स्वयंबर न भेल।रामचरितमानस के अनुसार रावण बध में विभीषण त बाल्मिकी रामायण के अनुसार इन्द्र के सारथि मातलि के रावण बध में भूमिका हय। विरोध इहो कि फिल्म में हनुमान जी सीता के बहिन कहैत हतन जौकि रामायण में हनुमान जी सीता के माता सीता संबोधित करैत रहलन हय। परंतु अमीश कृत पोथी सीता मे हनुमान जी सीता के बहन आ सीता हनुमान जी के भैया कह के संबोधित करैत हतन।असल मे ज्यादा लोग संत तुलसीदास के रामचरितमानस से प्रभावित हतन। बहुत पहिले से लोग राम लीला दैखैत रहलन हय।संत तुलसीदास रामचरितमानस के प्रचार प्रसार के लेल रामलीला चलैलन रहलन। रामलीला में व्यास जी हारमोनियम पर रामचरितमानस गवैत रहलन।वैहे परंपरा नेपथ्य से रामानंद सागर अपन धारावाहिक रामायण में कैलन।लोग वन माइंडेड भे गेल।लोग के विभिन्न रामकथा पढैय के आवश्यकता हय।तब विरोध अपने आप कम हो जायत।

२

बिधवा के पियार

हमरा वो अबैत जात बड़ा गौर स देखत रहै।परंच हम बिना गौर कैले अबत जाइत रही।एकटा दिन एगो छोट लैइका एगो पूरजी लेके देलक आ कह ल क सर जी बड़की माय देलक हैय।हम बड़की माय नाम सुन ले रही।

कारण पता चलल कि तीन भाई मे से सबसे बड़का भाई जे बिधुर रहे तीन गो लड़की आ एगो लड़का के बाप रहे।आ सरकारी सरबिस से रिटायर रहे। अपना लड़की के तुरिया लड़की से शादी कैले रहे।आ कुछ दिन बाद मर गेल रहे।वोहे विधवा युवती के लोग सब बड़की माई के नाम से जाउत- जैधी आ सतवा बेटी-बेटा पुकारत रहै।

हं। अब वै पुरजी के खोल के पढे लगली।पुरजी में लिखल रहे-

प्रिये सर जी,

परनाम।

हमरा अंहा से पियार भ गेल हैय।

अंहा के शांति

पुरजी पढिते,हमर मन के शांति खतम भे गेल।मन में शांति खलवली मचा दे लक। एक लाइन के पुरजी।असल में उ एगो प्रेम पत्र रहे। अब त दिन रात शांति के बारे में ही सोचैत लगली। हम अपना खिड़की से बार बार देखें लग ली।जब वो नहाय कल पर आबे। वो खुब देर तक नहाय लांगल। कुछ कुछ अंग प्रदर्शन भी करे लागल।वोहो नजर चुरा के देखे लागल कि खिड़की से दे

खै छी कि न। जब वो बुझ जाए त और अंग प्रदर्शन करे लागल। हमरो शांति अब कामिनी लागे लागल।हम आ वो दूनू गोरे एक दोसर के देखे लगली। प्यार परवान चढ़े लागल।

अब वोहे लैका रोज दिन पुरजी यानी लव लेटर थमाबे लागल।अपन दुख भरी कहानी,अपन बेदना,अपन देहक कामना, अपन भावना आ अपन सपना बताबे लागल। एक दिन त प्रेमक पत्र में लिखनन कि हम अंहा से विआह करै लेल तैयार छी।हमर बाबू माय बहुत पहिले से ब्याह करे के लेल कहैत रहलथिन। लेकिन हम तोहर बिआह न करबौ।कारण कि अपना सब में बिधवा विआह न चलै छैय।हम सभ कुलिन वर्ग से छी। लेकिन हम सभ गलती कैले छी कि तोहर बिआह बुढ वर से कै देलिओ।आइ तोहर दुःख देखल न जाइए। अब तु अपना से केकरो से विआह क ले।परजाइतो में क ले। अब हमरा से दुःख न सहल जाइ अ।

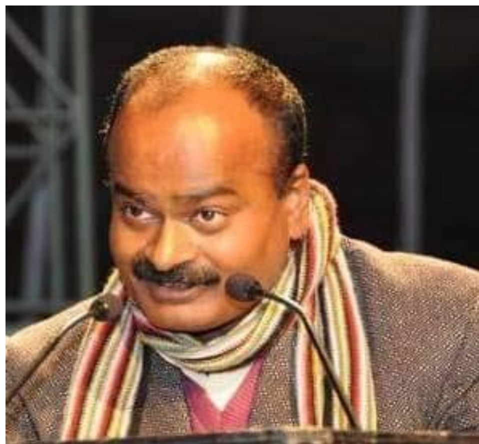
इ सब जान के हम किंकर्तव्यविमूढ़ हो गेली।हम त बिआह के बारे में सोचने भी न रहली।एक दिन सांझ में अचानक हमरा रूम के किबारी से खटखट के आवाज सुनाई पड़ल। हम कहली के। बाहर से आवाज़ आयल,हम शांति।हम किबारी खोल देली। शांति भीतर आके सिटकिनी लगा देलक। हमरा बेड पर आके बैठ गेल। हमहु बैठ गेली।वोइ बिधवा युवती के आइ नजदीक से देखली। वो हाथ पकड़ के बात करे लागल। कभी कभी देह के भी छुए लागल।बात करैत करैत देह में सट गेल।अब वोइ छुअन से हमरो देह में सुरसुरी होय लागल।केना दुनू युवा देह एक देह हो गेल पता न चलल।हम अपना के शर्मिंदा बुझे लगली। लेकिन वो मुस्कुराइत रहें।वोकर भाव शांत दिखे।वो बड़ी फूर्ति से रूम के किबारी खोल के बाहर निकल गेल।

अब हम समझ ली कि वो वोकर देह के मांग रहे।जै वो पूरा क लेलक। हमरा वोकरा से वितृष्णा भ गेल।हम वहां से दोसर जगह चल गेली।बाद में पता चलल कि वो सजातीय विधुर , दूर के जीजा जी के साथ लिव इन रिलेशन शिप में रहे लागल हैय।इ कहानी अपना पर बितल एक दोस्त बतैलक,जे ब हुत दिन बाद हमरा से मिले आयल रहे । हम सोचे लगली इ बिधवा के पिया र न मजबूरी रहे, विधवा विवाह निषेध के।

-आचार्य रामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सीतामढ़ी,*सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-चन्द्र देवी, पिता-स्व०राजेश्वर मंडल, पत्नी-प्रमिला देवी, जन्म तिथि-०१ जनवरी १९६० योग्यता- एम-एससी (रसायन शास्त्र), एम ए (हिन्दी)। रूचि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविता -कहानी लेखन आ आलेख। प्रकाशित पोथी - मैथिली कविता संग्रह भासा के न बांटियो। २०२२ प्रकाशित रचना - सझिया कविता संग्रह पोथी - जनक नंदिनी जानकी आ शौर्य गान। २०२२ पत्रिका -मिथिला समाज, घर -बाहर आ अपूर्वा (मैसाम)। अखबार -दैनिक मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश। सामाजिक-सामाजिक चिंतन, दायित्व- पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, डुमरा, सीतामढ़ी। स्थायी पत्ता- ग्राम-पिपरा विशनपुर थाना-परिहार जिला-सीतामढी। वर्तमान पता-पिपरा सदन,मुरलियाचक वार्ड-04 सीतामढ़ी पोस्ट-चकमहिला जिला- सीतामढी राज्य-बिहार पिन-843302 मो नं-9973641075 ईमेल- ramanandmandal001@gmail.com*

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.४.डॉ कैलाश कुमार मिश्र- समीक्षा- ठेहा परक मौलाएल गाछ



डॉ कैलाश कुमार मिश्र

समीक्षा- ठेहा परक मौलाएल गाछ

मैथिली साहित्य केर गद्य हमरा नीक लगैत अछि। रबीन्द्र नारायण मिश्र केर टटका उपन्यास “ठेहा परक मौलाएल गाछ” एखने पूरा पढ़लहुँ अछि। रबीन्द्र जी प्रवासी मैथिल छथि, वरिष्ठ सेवा निवृत अधिकारी छथि, संयमित लोक आ गहन पाठक छथि। पढ़बाक संग-संग नियमित लिखबाक व्यसनी थिकाह। खोजी प्रवृत्ति केर लोक छथिए। ई जड़ि केर लोक छथि। बहु-भाषी छथि मुदा मातृभाषा सँ अनकंडीशनल प्रेम छनि ताहिं अधिकांश रचना मैथिली मे करैत छथि।

प्रवासी मैथिल केर समस्या ई छनि जे ई सब अपन मिथिला, माटि, परंपरा,

परिवार, समाज आ इतिहास संग चार्म मे जिबैत छथि। हिनका सभ के नॉस्टैल्जिया जेना अपन गिरफ़्त मे लेने होनि। नॉस्टैल्जिया कतेक समय यथार्थ सँ लोक के दूर भगा लैत अछि। लोक बिसरि जाइत अछि जे गाम सँ दिल्ली, कोलकाता, मुंबई, बैंगलोर आ ओतय सँ दुबई, लंदन, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिआ आदि ठाम ओ सभ कियैक गेलाह अथवा जा रहल छथि। अगर अपन जड़ि सँ डायस्पोरा के अतेक सिनेह छनि तँ उनटा माइग्रेशन कियैक नहि भ रहल अछि ? एक समस्या जे सभ्यता केर निर्माणक शैशव कल सँ एखन धरि निरंतरता सँ आबि रहल अछि से अछि जेनेरशन गैप। सेवा निवृत आ वरिष्ठ नागरिक अपन विचार, संस्कार, सोच के सर्वोत्तम मनैत छथि, हुनका होइत छनि जे नवका लोक दिशाहीन, संस्कृतिभंजक, हृदयहीन होइत छथि। हुनका अपन लोक, बुजुर्ग, संस्कृति, संस्कार आ सभ सँ पैघ अपन भूमि आ देश सँ प्रेम नहि छनि। हुनक भौतिकतावाद परम्परा आ संस्कृति पर प्रहार करैत अछि। जमीन सँ जन केर प्रेम सनातन सँ आबि रहल छैक मुदा वैश्विक बाजार, रोजगार आ व्यापार केर अवसर, जीवन मे सुख आ बिलासिता आब लोकक सोच बदलि रहल अछि। पोथी केर आलोचना लिखब सँ पहिने ई बात सब कहब जरुरी अछि कारण एहि बात सभक खाम्ह पर ई उपन्यास ठाढ़ अछि।

चलू, संक्षेप मे बता दी जे उपन्यास केर कथा वस्तु की अछि। उपन्यास मे प्राण अनबाक हेतु रबीन्द्र जी नायक केर बात प्रथम पुरुष अथवा फर्स्ट पर्सन मे करैत छथि। एकर अर्थ भेल जे लेखक कथा केर प्रमाणिकता पर मोहर लगा रहल छथि। उपन्यास प्रारम्भ भ रहल अछि। नायक मिथिला केर एक गाम सँ दिल्ली नौकरी तकबा केर जोगार मे आबि जाइत छथि। चारु दिस तकैत छथि मुदा कियोक व्यक्ति नहि भेट भ रहल छनि जे हुनकर समस्या दिस ताकनि ! अंततः गुरुद्वारा मे एक अधेड़ बयस केर पंडित जी भेटैत छथिन्ह। पंडित जी युवक के एक संस्कृत विद्यालय अथवा गुरुकुल मे ल

जाइत छथिन्ह। युवक के ओतहिं रहबाक, भोजनक व्यवस्था भ जाइत छनि आ ओ पढ़ि क दिल्लीक एक सरकारी स्कूल मे शिक्षक बनि जाइत छथि। अधेड़ उमेर केर पंडित जी शिक्षक छलाह। हुनका ई युवक सभ तरहेँ नीक लगलथिन्ह ताहिं ओ अपन एकमात्र पुत्री रमा जे वनस्थली विद्यापीठ मे शिक्षा ग्रहण क रहलि छलीह तिनका सँ युवक के विवाह करा देलथिन्ह। रमा के सेहो सरकारी नौकरी लागि गेलनि।

युवक अपन पत्नी रमा संग व्यवस्थित पारिवारिक जीवन दिल्ली मे व्यतीत करय लगलाह। समय चलैत रहलैक आ हिनका सभ के दू बालक : मुरली आ श्याम एवं एक पुत्री शालिनी केर जन्म भेलनि। दुनू प्राणी सरकारी नौकरी मे छलाह ताहिं तीनू संतानक पढाई उत्कृष्ट पब्लिक स्कूल मे करौलनि। मुरली आ श्याम इंजीनियर बनलाह आ शालिनी कॉमर्स दिस प्रवेश करैत सी ए। बाद मे मुरली लंदन आ श्याम अमेरिका नीक नौकरी, पाई, सुविधा आदिक लोभे चल गेलाह आ शालिनी माता पिता लग दिल्ली रहि सी ए भ गेलीह। दिल्ली मे तीन कमरा केर फ्लैट ल लेने रहथि। मुरली आ श्याम पैसा कमा तँ रहल छलथिन्ह मुदा विवाहक बात टालि रहल छलथिन्ह। एहि बीच शालिनी के एक केरल केर ईसाई लड़का सँ प्रेम भ गेलनि। ओ अपन बात जखन अपन माता पिता सँ कहलथिन्ह तँ ई सभ झमा खसलाह। मुदा की क सकैत छलाह। लड़का नीक रहैक लाचार भ विवाह करा देलथिन्ह। बाद मे शालिनी के एक कन्या भेलनि। शालिनी अपन पति संग मुंबई रहैत छलीह। बेचारे पुनः अपन पत्नी रमा संग असगर रहय लगलाह। आर त आर जहिया सेवा निवृत भेलाह तहियो तीनू संतान मे कियोक नहि एलथिन। दुखी छलाह, मुदा की क सकैत छलाह। मुरली सलाह दैत छलथिन्ह जे ओ अपन सम्पति आदि बेचि फैक्ट्री लगा लेथि। ओहि सँ आमदनी संग समय कटि जेतनि। श्याम कुनो वृद्ध आश्रम मे रहबाक सुझाव द रहल छथिन्ह। शालिनी के अपन काज आ परिवार सँ

कहाँ समय बचैत छनि ? पत्नी रमा बीमार रहैत छथिन्ह। मुदा पड़ोसी जे दक्षिण भारतीय छथि से दुनू प्राणी हिनका सभ के बहुत सिनेह करैत छथिन्ह।

समय चलैत रहैत छनि, पश्चाताप बढ़ल जा रहल छनि। बीच मे एक दिन पत्नी रमा के हार्ट अटैक होइत छनि। हॉस्पिटल मे स्टेंट लगबाक दरकार। असगर छथि। पड़ोसी मात्र सहारा। तीनू संतान के फोन करैत छथिन्ह। कियोक फोन नहि उठबैत छनि। दुखी भेल जा रहल छथि। खैर! पत्नी रमा इलाज के बाद सकुशल घर अबैत छथिन। बाद मे बेटा सब फोन करैत छथिन मुदा कियोक दिल्ली नहि अबैत छथिन।

एहि बीच पुत्र श्याम बेर-बेर अमेरिका आबय लेल आग्रह करैत छथिन्ह। निर्णय लैत अमेरिका किछु दिन चलि जाइत छथि। ओतय ज्ञात होइत छनि जे श्याम डेविड नामक कुनो लड़का संग लिवइन मे रहि रहल छथि। विस्मय आ विछोह मे रहैत छथि। अमेरिका आएब पर क्षोभ भ रहल छनि ! एक दिन शहर केर प्रमुख स्थान घुमेबा लेल श्याम संग जाइत काल एक आदमी केर कार सँ रमा के दुर्घटना भ जाइत छनि। रमा के जांघ केर हड्डी टूटि जाइत छनि। तुरत हॉस्पिटल जाइत छथि। ओतय ऑपरेशन होइत छनि। हॉस्पिटल केर खर्चा से स्वयं करैत छथि कारण श्याम लग अतेक पाई नहि छनि। संयोग सँ जाहि आदमी केर कार सँ दुर्घटना भेल छलन्हि से भद्रलोक छल आ ओ पूरा इलाज केर खर्च उठबैत छनि आ सब पैसा वापस क दैत छनि। श्याम केर घर मे दुनू प्राणी असगर रहैत छथि। या त श्याम देर राति क अबैत छथि अथवा कतेक दिन नाहियो अबैत छथि। एहना स्थिति मे समय काटब मुश्किल। एक दिन बगल के पार्क मे जाइत छथि त देखैत छथि जे बुजुर्ग स्त्री पुरुख आपस मे हिल मिल मस्ती क रहल छथि। ओ सब खा रहल छल, पी रहल छल, गाबि रहल छल, नृत्य क रहल छल। हिनका दुनू प्राणी के ओतय भव्य स्वागत

होइत छनि। पता चलैत छनि जे ओहि मे अधिकंश लोक भारतीय मूल के अछि। कियोक अपने, ककरो माता पिता, त ककरो पितामह अतय नौकरी केर तलाश मे आबि गेल रहथि। अमेरिका मे लोक अपन काज मे व्यस्त रहैत अछि। माता पिता या त ओल्ड होम मे रहैत छथि अथवा स्वयं मे मस्त। रमा आ हुनक पति के एहि बूढ़ सब संग मोन लागय लगैत छनि। रमा प्रति दिन वरिष्ट लोक सभ लेल किछु ने किछु बना क ल जाइत छथि जकरा ओ सब बहुत प्रेम सँ खाइत छथि। एक दिन कुनो बात केर कारण रमा केर पति अपन पुत्र श्याम के डेविड सँ झगड़ैत देखि लैत छथि। डेविड श्याम के कहि रहल छलैक जे ओ आब श्याम केर माता पिता संग अहि घर मे नहि रहत। ई दृश्य देखि रमा दुनू प्राणी छोभ मे अबैत छथि आ निर्णय लैत छथि जे दिल्ली वापस आबि जेतीह। फोन सँ ज्ञात होइत छनि जे हुनक दक्षिण भारतीय पड़ोसी आब बंगलौर जाक अपन मकान मे दुनू प्राणी आ बेटा पुतहु एक संग एक घर मे रहैत अछि। मुरली हुनका सभ के लंदन बजा रहल छनि मुदा मोन ततेक ने दुखा गेल छनि से सोझे दिल्ली आबि जाइत छथि।

दिल्ली एलाक किछु दिनक बाद कोरोना महामारी सँ पूरा संसार त्राहि कृष्ण करय लगैत अछि। किछु दिनक बाद पता चलैत छनि जे श्याम अपन मित्र डेविड केर खून क देलकैक। सब सबूत श्याम केर दोषी प्रमाणित क रहल छलैक। अंततः श्याम के आजीवन कारावास केर सजा भेट गेलैक। ओ जेल मे सजा काटि रहल छल। इम्हर बंगलौर मे दक्षिण भारतीय पड़ोसी केर पत्नी के कैंसर भ गेल रहैक। ओ बहुत परेशान छल। ई सब बंगलौर गेलाह आ पड़ोसी के देखि अबैत छथि।

दिल्ली अबैत देरी एक दिन मोबाइल पर कियोक फ्रॉड करैत उपन्यास केर मुख्य पात्र केर अकाउंट सँ बहुत पैसा निकालि लैत छनि। किछु राशि तँ बैंक

मैनेजर बचा दैत छनि मुदा दस लाख लेल पुलिस मे एफ आई आर करबैत छथि। एक दिन पुलिस घर आबि मुरली के फोटो देखबैत बतबैत छनि जे पैसा फ्रॉड करबा केर काज हुनक पुत्र मुरली केने छनि। आब की कऽ सकैत छलाह ? एक बेटा हत्या केर जुर्म मे अमेरिका मे आजीवन कारावास केर सजा काटि रहल छनि आ दोसर अपने माता पिता केर बैंक अकाउंट सँ फ्रॉड ! केस वापस ल लैत छथि। यद्यपि बेटी आ जमाय सँ प्रसन्न छथि। बेटी तँ बेर-बेर मुंबई आबि ओतहि रहबाक हेतु आग्रह करैत छनि। की क सकैत छलाह ! इम्हर एक दिन एकाएक मुरली घर पर आबि जाइत छनि। मुरली सं पता चलैत छनि जे ओ जाहि विदेशी महिला संग लिवइन रिलेशनशिप मे रहैत छलाह ओ लड़की सब फ्रॉड केने रहैक। आर त आर ओ महिला हुनकर पूरा अकाउंट खाली क भागि गेलैक। अब मुरली बंगलौर मे काज कर चाहैत छलाह। एक फैक्ट्री लगबै चाहैत छलाह जाहि मे 25 लाख केर जरुरत रहैक। पहिने त मना क देलथिन्ह मुदा पत्नी रमा कहैत छथिन्ह जे एक बेटा जेल मे आजीवन कारावास केर सजा काटि रहल अछि आब की करब पैसा बचाय। अंततः द दैत छथिन्ह। किछु दिनक बाद मुरली फेर अबैत छथि आ एहि बेर मकान केर कागज़ बैंक केर जमानत लेल मँगैत छथिन्ह। न नुकुर करैत रमा करेज पर पाथर रखैत ओहो द दैत छथिन्ह। मुरली बंगलोर चलि जाइत छथि।

एकाएक पता चलैत छनि जे दक्षिण भारतीय पड़ोसी केर पत्नी के कियोक बदमाश गरदनि दबा हत्या क देलकैक आ सब पैसा, गहना इत्यादि ल क भागि गेलैक। ई दुनू प्राणी पड़ोसी केर हाल लेबा लेल आ मुरली सँ भेट करबा केर उद्देश्य सँ बंगलोर केर हेतु बिदा होइत छथि। बंगलोर गेला के बाद पता चलैत छनि जे पुलिस सिक्योरिटी कैमरा केर सहारा सँ पता लगेलकैक जे पड़ोसी केर पत्नी केर हत्या कियोक आन नहि अपितु ओकर पुतोहू केने रहैक। सब बात प्रमाणित भ गेल रहैक ताहिं ओकर पुतोहु के जेल भ गेलैक।

पड़ोसी केर बेटा पिता केर अवहेलना करय लगलैक जखन कि ओ सब बेटा केर व्यापार लेल अपन संचित निधि लगा देने रहैक। अंत मे पड़ोसी के ओकर बेटा घर सँ निकालि दैत छैक। ओ ककरो मदति अहि दुर्दिन केर क्षण मे सेहो नहि लेत अछि आ एक गुरुद्वारा मे चलि जाइत अछि।

मुरली केर काज फँसि गेल रहनि। कोरोना आ अन्य कारण सँ रेल सही समय सँ सामान नहि पहुँचा सकल रहैक। कर्जा बढ़ैत गेलैक। अंततः मुरली दिवालिया घोषित भ जाइत छथि आ रमा के मकान सेहो ख़त्म भ जाइत छनि। एहि बीच मुंबई सँ एक नर्स कुनो अस्पताल सँ फोन करैत छनि जे शालिनी अपन पति आ बेटी संग कोरोना केर चपेट मे छथि आ हॉस्पिटल मे भर्ती छथि। शालिनी केर पति बहुत क्रिटिकल छथि। फेर जानकारी अबैत छनि जे शालिनी केर पति केर निधन भ गेलनि। शालिनी एखनो गहन चिकित्सा मे छथि मुदा बेटी आब ठीक छनि। आब की हो? दुनू प्राणी रमा लॉकडाउन केर कारण एक टैक्सी पकड़ि मुंबई जाइत छथि। पता चलैत छनि जे कुनो सम्बन्धी केर आभाव मे किछु सामाजिक संस्था केर द्वारा शालिनी केर पति केर अंतिम संस्कार करा देल गेलैक। एक घर मे शालिनी केर बेटी केर देख रेख रमा दुनू प्राणी करय लगलीह। किछु दिन मे शालिनी सेहो अस्पताल सं घर आबि गेलीह मुदा शरीर खिन्न रहय लगलनि। लंग्स आ अनेक ठाम समस्या भ रहल छलनि। किछु दिनक बाद शालिनी केर सेहो निधन भ जाइत छनि। शालिनी दुनू प्राणी यद्यपि अपन बेटी लेल पर्याप्त चल आ अचल सम्पति छोड़ि देने रहथिन्ह। ओ बचिया एम् बी ए करबाक योजना करैत छैक।

आब हिनका सभ लग किछु नहि छलनि। मकान सेहो गेलनि। किछु दिनक बाद बैंक हिनकर मकान केर नीलामी करैत छैक जकरा ई सभ कहूना क किन

लैत छथि। स्थिति लगैत छनि जे आब सुधरि रहल अछि तँ एकाएक श्याम दाढ़ी बढ़ेने, बूढ़ आ रोगी केर काया लेने दिल्ली डेरा पर आबि जाइत छथिन। पता चलैत छनि जे श्याम के अमेरिका केर अदालत अहि बात पर छोड़ि देने छनि जे ओ तुरत अमेरिका सदा केर लेल छोड़ि देताह।

ई त छल उपन्यास केर संक्षिप्त विवरण। आब अहि पर किछु चर्च करैत छी। उपन्यास केर भाषा बहुत सहज, सरल आ पाठक संग चलैत छैक। पूरा उपन्यासक प्लॉटिंग बहुत आकर्षित करैत छैक जकर परिणाम ई होइत छैक जे पाठक कथा केर सब लेयर अथवा तह संग यात्रा करैत रहैत छथि। कतौ उबाऊ अथवा लिंक नहि टूटैत छैक। पोथी केर स्वरुप, पृष्ट संख्या आदि के देखैत ई स्पष्ट भ जाइत छैक जे ई लघु उपन्यास केर श्रेणी मे अबैत अछि जकरा अंग्रेज़ी मे नॉवेल्ला कहल जाइत छैक मुदा बात, प्रसंग आ सम्बाद ई पोथी अनेक तरहक रखैत छैक, गंभीरता संग रखैत छैक। एहि मे माइग्रेशन केर अनेक पक्ष सम्मिलित कएल गेल छैक - गाम छोड़ब आ दिल्ली महानगर आयब, संघर्ष करैत पढ़ब, नौकरी करब, परिवार केर नीवक निर्माण करब, बाल बच्चा केर क्वालिटी शिक्षा केर व्यवस्था करब, बाल बच्चा द्वारा नाम, पैसा, विलासिता केर कारण अपन देश सँ दूर देश जाएब, बैंक लोन, आजुक पीढ़ी द्वारा वरिष्ठ नागरिक, विशेष रूप सँ वृद्ध माता पिता केर जवाबदेही सँ भागब, अपन धरती, लोक, संस्कृति आ संस्कार सँ विमुख रहब, विवाह सँ पूर्व लिवइन रिलेशनशिप मे रहब, माता पिता परिवार के छोड़ि स्व मे केंद्रित रहब, समलिंगी व्यवहार, बैंकिंग फ्रॉड, कॉरोना , कोरोना केर त्रासदी, ओकर बादक प्रभाव, कोरोना भेलाक बाद जे रोगी के अन्य शारीरिक आ मानशिक समस्या होइत छैक तकर चित्रण, अपन समाज, जाति कुल सॅ अलग विवाह करब, अस्थिर जीवन आ ने जानि की की। हमरा लगैत अछि रबीन्द्र नारायण मिश्र अपना भरि कथा केर रोचकता केर दृष्टिकोण सँ सफल रहल छथि।

पोथी कतौ बोर नहि करैत छैक, नैराश्य दूरे रहैत छैक। संगहि भाषा आ व्याकरण सम्बन्धी गलती नाममात्र भेटत। उपरोक्त गुण एहि पोथी कैं पठनीय बनबैत छैक।

मुदा पोथी जँ कियो समीक्षा केर दृष्टि सँ पढ़त तँ किछु प्रश्न उठब स्वाभाविक छैक। लेखक अथवा उपन्यासकार एक विशेष युग के प्रतिनिधित्व करैत छथि। रबीन्द्र नारायण मिश्र स्वयं 70 के छथि, अवकाश प्राप्त सरकारी अधिकारी छथि। ई नव बयस केर लोक मे, विशेष रूप सँ पुरुष मे सार्वभौमिक कमी ताकि रहल छथि। युवक चाहे मिथिला, बिहार, दिल्ली, बंगलौर अथवा अमेरिका के होथि ओ सब कर्तव्यच्युत छथि - किछु एहि तरहक मानशिकता ई पोथी स्पष्ट करैत अछि। जेनेरशन गैप देखार भ रहल छैक। हमरा लगैत अछि आजुक अधिकांश युवक अपन माता पिता केर प्रति साकांक्ष आ भावनात्मक भ रहल छथि। किछु गलत आ दिशाहीन अवश्य छथि। हमरा इहो लगैत अछि जे अही कथा वस्तु पर अगर कियोक 35 -40 वर्षक युवा उपन्यास लिखने रहितथि त उपन्यास केर ट्रीटमेंट अलग रहितैक। कम सँ कम एक पुरुष चरित्र नीक अथवा आदर्श अवश्य रहितैक। बहुत पढ़ल लिखल इंजीनियर, मैनेजमेंट केर युवक सब नौकरी छोड़ि व्यापार मे आबि रहल छथि। ओ सब सफल सेहो भ रहल छथि। स्टार्टअप हमेशा खराप नहि होइत छैक। संस्कृति संरक्षण एक आवश्यक मुद्दा अवश्य छैक मुदा ताहि लेल अनुकूल वातावरण तँ सभ सँ पहिने माता-पिता परिवार मे निर्माण करथु! यहूदी परिवार, कश्मीरी परिवार, सिख परिवार, बंगाली परिवार, मलयाली परिवार वैश्विक वातावरण अवश्य स्वीकार करैत अछि मुदा दुनिया केर कोनो कोण, देश मे रहैत अपन संस्कृति, संस्कार, भाषा, भोजन सँ अलग नहि होइत अछि। एक बात हमरा लागल कारण एक प्रखर साहित्यकार सँ पोथी केर माध्यम सँ किछु दर्शन अथवा जीवन दर्शन केर पन्ना, पैराग्राफ, पंक्ति मुखर अवश्य होबाक चाही जे साहित्य के सार्वभौमिक साहित्य बना सकय अन्यथा

एहि तरहक रचना के एक लघु काल खंड मे विलुप्त भऽ जएबाक डर बनल रहैत छैक। एहेन बात अहि पोथी मे साहित्यकार नहि समावेश क सकल छथि।

कुल मिला क ई उपन्यास – “ठेहा परक मौलाएल गाछ” - एक नीक कृति छैक। उपन्यासकार आ प्रकाशक दुनू के बधाई।

लेखक एवं प्रकाशक: रबीन्द्र नारायण मिश्र
दाम: 400 रुपया (2023)
House No: C42, NSG SAS Ltd., Black Cat Enclave Pocket No.: 6 Builders Area, Greater Noida, Gautam Buddha Nagar, UP: 201315

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.५.डॉ किशन कारीगर-भोजकाजी मनेजर (हास्य कटाक्ष)



डाॅ. किशन कारीगर

भोजकाजी मनेजर (हास्य कटाक्ष)

बसहा बड़द पर बैसल बाबा बज़बड़ाइत रहै जे एहने कहूं मनेजर भेलैइए? एतेक दाबी त पैंजाब आ स्टेट बैंक वला के नै देखलियै रूपैया छोड़बै काल? एकरा सब के त बैंको वला मनेजर स बेसी दाबी भऽ गेलै. इ सब गाम घर मे रहैए तेकर माने की भोज काज मे मनमाना करै जाएत? से नहि चलअ देबै आब? बाबा तामसे अघोर भेल बजैत दमसल चलि जाइत रहै.

रस्ता मे बाबा भेंट भेलैथ त हम हाल चाल पूछली की समाचार यौ बाबा? बाबा बजलै अंगोरा धधकल्हा. हौ कारीगर तंहू की हमर मन अघोर करै पर उतारू भेल छह? तोरा मीडिया वला सब के त एहने ख़बैर मे मोन रमकल रहै छह की आ लगले ब्रेकिंग न्यूज बना दै छहक. पहिने एक जूम तमाकुल खुआबह त कहै छिअह?

बाबा कतबो तामस मे रहौ की मोन अघोर रहै त तइयो कारीगर भेंट होइ त मोन हलूक आ तामस कम जरूर भऽ जाइ की.
आब ब्रेकिंग न्यूज़ बनेबा लोभ मे बाबा के तमाकुल बना के खुएलहुँ? फेर बाबा के पुछली जे कि सब होल कैले खिसियाएले रहली ग. तमाकुल खाइत मातर बाबा पूरा घटनाक्रम एकसूरे कहअ लगलै. हौ कारीगर की कहियअ काल्हि एकटा सराधि भोज खाई लै गेल रही. छौंड़ा मारेर सब बारिक रहै त रमकल फिरै? कोनो पता मे देलकै किछो कोनो छूटियो गेल.

फुँसियाहिक हो हो बेसी होइत रहै. भोजकाजी मनैजर झूठो के बारिक छौंड़ा सब पर दमसै जे सब पता दिसी सब किछो परस, बेरा बेरी घूम. असल मे त ओइ मनेजरे के सिखाउल विद्या रहै जे मूँहे कान देख पता मे परसै जंहियै आ दौगल फिरिहें. आ ठीक सैह होइत रहलै. हम बाबा के पुछलौंह जे अंहा पांत दिस अहगर के रसगुल्ला अएल रहै की ने? बाबा फेर तमतमाइत बजलाह जे एक आध बेर लालमोहन एक बेर रसगुल्ला एलै. आ दोहरबै लै कहलियै त छौंड़ा सब कहलक जे बाबा आब त दही चिन्नी उठि गेलै? तोंही कहअ त केना तामस ने उठत?

एना कहूं करब भेलैए भोजकाजी मनेजर सबके जे अपना चिन्हा परिचे वला गिरोह दिसी सब किछो दोहरा तेहरा दै छै. कतेक खेबो करै छै आ चोरा के लोटो मे भरि लअ जाइए? आ जेकरा चिन्हा परिचे ने तेकरा पता दिसी बेर निबदी धअ लेतह की? ओहिना जेना बैंक मे रूपैया छोड़ेबा काल बैंक वला कहतअ जे लिंक फेल तहिना इ भोजकाजी मनेजर सब भांज पूरबै मे रहतह की? सराध होउ एहेन भोजकाजी मनेजर सबहक?

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.६.लालदेव कामत-मैथिल भैया करू विचार- पोथी समीक्षा/ मैट्रिक फाइल (लघुकथा)/ लघुकथा- मरदुमसुमारी'क अर्थ जानि गेलौं!/ आर्ट पुरस्कार आ सुरेन्द्र/ मूलअति पिछड़ाक आरक्षण हड़पल गेल!



लालदेव कामत- मैथिल भैया करू विचार- पोथी समीक्षा/ मैट्रिक फाइल (लघुकथा)/ लघुकथा- मरदुमसुमारी'क अर्थ जानि गेलौं!/ आर्ट पुरस्कार आ सुरेन्द्र/ मूलअति पिछड़ाक आरक्षण हड़पल गेल!

१

मैथिल भैया करू विचार- पोथी समीक्षा

कविवर बद्रीनाथ राय " अमात्य" जीके पाँच दर्जन काव्यके मैथिली पोथी " मैथिल भैया करू विचार पल्लवी प्रकाशन सँ बहराएल हन्। १०९ पृष्टक एहि पोथीके दाम २०० टाका अछि।नव कविता वस्तुत: मंचीय - गेयातत्मक बुझाइछ। मिथिलाक किछु गीतकार अपना अंदाजमे एहिमे सँ गौउने छथि। हिनक काव्य रचना अत्यन्त सौष्ठव भेल छन्हि। सद्यप्रकाशित ऐ गेयातत्मक

कविता संग्रहमे भावक अविरल आओर अजस्त्रधारा प्रवाहित भेल य। कविताके विचार भाव नैयका आ मौलिक दृष्टिगत होईछ। हिनक कविता कैँ सम्पुष्टि दैत अनेको कविजनके लघु आ दीर्घाकार कविता सँ मूलभूत तुलना कयल जा सकैछ। एके शिर्षक सँ दीर्घ अथवा खंड काव्य अनेकों कविजीक छन्हि,परंच साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता प्रोफेसर (डा०) इन्द्र कान्त झा जीक कतेको कविताक शिर्षक 'क नाऊ एके छन्हि। मुदा ताहू सँ दू डेग आरो आगू बढि हिनक भेल अछि। मुदा से अप्रकाशित रहि गेलनि अछि। पाठक कैँ विविध शिर्षक सँ कविता पढहयमे आओत , जाहिमे रस अलंकार आ छंद लालित्य बुझाएत। से हिनक पोथी रूपैँ आब कहिया धरि आओत? एहि पोथीके हाथ लगेबाक माने भेल जे आद्य:उपरान्त शिघ्रे पढऐय बिना रुकि नै सकैत छी। एहि निहितार्थ वरेण्य साहित्यकार श्री नन्द बिलास राय जीक अभिमतमे तथ्य सेहो पुष्टि करैत छैक। स्वयं बद्रीनाथ बाबू अपन बातमे कविताक रचना संदर्भ मैँ सांगोपांग व्याख्या कयनहि छथि । ताहि सँ पाठकवर्ग कैँ कविताक रोचकता सेहो सहेजे बूझिमे आबि जाएत। समसामयिक विषय पर पांति गरहैत रायजी निमग्न भ' गबैत छथि। यथा पाँति देखल जाऊ :-

पालक परम कठोर भेल अछि,
मुदा विकासक शोर भेल अछि।
अपने रान्हल तीसी तीमन ,
नोनगर करूगर जोर भेल अछि।।

मिथिलाक समृद्धि तखने होएत जहन एतुका सर्वहारा वर्ग 'क लोकके बेरोजगारी खत्म होय :-

हकन कनइए मिथिला धरती ,
जनमानस लाचार बहुत छै ।
बाउ विकाश विलम्ब जुनि करियौ ,
खाली हाथ बेकार बहुत छै।।

मिथिलामे मैथिली'क नाम पर किछ जरदगव अपना वर्ग आ जाति'क नहिँ ,वरन् बिनु परवाह कयने अपन गोतिया आ गोधिंयापनिक चलाकी सँ एक गुट ठाढ केने छैक।ताहिक वर्चस्ववादी संस्कृति पर व्यंग करैत कवि पाँति लिखने छथि -:

माला मंच माइकमे मिथिला,
माथमे चाही ललका पाग ।
आब सुधरि जो निर्लज्जा तूँ ,
गत्तर गत्तर लगलौ दाग ।।

मंच- माइक- माला पहिर खूब नितराइत, यशस्वी बनैत ,दीपके ईजोत पसारबाक आकर्षक पेनी देखू तँ अन्हारे आ हहाकारे केने छै । से व्यक्तिगतो जीवनमे कनेक यश बटोरने रहनाय मनुखता हैत! तेँ कवि कटाक्ष करैत ई पांति देलनि -:

लात खाइतमे उमर बितल छौ
गारि सुनैतमे पकलौ केस ।
तन्द्रा के तूँ त्याग पतितहा
देहमे नञि छौ लाजक लेश।।

भारतीय नागरिक केँ विशेष कय लेखकीय काजमेँ लागल कलमवीर केर दू गूट - एक वामपंथ तँ दोसर दक्षिण पंथमे बँटल देखल जाइछ,से हदघरी मानसिकता आधार पर बँटले बुझाइछ। मुदा संतुष्टि कतौ नै न छैक? यथा-:

राजनीतिक दलदल के कारण,
सबहक मनमे रार बहुत छै ।
अपना मनसँ सब सिन्धु छै ,
देखलहुँ सुख्खल धार बहुत छै।।

मिथिलांचल प्राय: रौंदी (अकाल) आ वाढिमे त्रस्त रहैत छैक। सरकार दिशसँ सरकारी कर्मी आ त्रि-स्तरीय पंचायती राज क' जनप्रतिनिधि राहत सूची

लाभार्थी लेल बनाबयमे घोर अनियमितता करैत खूब धन डेकारैत छैक। निगरानी जाँच दल सेहो वादमे मालामाल होईछ,आ हाथी तँ दहा जाइछ मुदा चीरै दू बूँन जल बिना बंचित रहि जाइछ। एहि मार्मिक दृश्यके चित्र खींचैत कवि समानताक लेल बेकल देखाईछ। यथा-:

चास बास संसाधन रहितहुँ

सब कनहापर भार बहुत छै।

पीपड़ पाखरि के मोजर नञि

छाँवहीनटा तार बहुत छै ।।

छै समाजमे बहुत विषमता

भ्रष्टाचार विकार बहुत छै ।

किछुए के चुनरी मलमल छै

बाँकि लोक उघार बहुत छै ।।

अपन कविताक उपयोगिता मादे कविजी घोषणा करैत छथि। यथेष्ट पढल-लिखल आ अफसर बनल मिथिलाक बेटा जे शहर नगरमे रहि पैघौत झाड़ैत छथि से आब गाम घरक मैथिल सन मैथिली बजनिहार नहिँ छथि।ओ आब अपन परिबारिक धियापुता सँ अंगरेजीये हिन्दीमे वार्तालाप करैत अपना कैँ श्रेष्ठ बुझैछ आ मिथिला मंच पर मैथिली लेल नोर बहबैत रंगल नढ़िया बनल देखाईछ,से ऐ पांतिमे स्पष्ट लौकैत य -:

माँ मैथिली हमरा कहलनि -

जे पुत छथि पढल - लिखल नञि,

खूबे ओ देलनि सम्मान ।

पूत हमर जे पढल लिखल छथि ,

माँ नँय बूझलनइ , बुझलनि आन।।

मैथिली साहित्य आन्दोलन मेँ हिनक योगदान लेल हम अभिभूत छी। हिनक पोथी'प्राकथन' मेँशंभूनाथ मिश्र लिखैत छथि-:मैथिली जगतमे एक सँ

बढिकय एक साहित्यकार भेलाह, जे मैथिली साहित्यिक विकास लेल अपन लेखनी कैँ गति दैत रहलाह। एहि क्रममे श्री बद्रीनाथ राय "अमात्य" उदेमान नक्षत्र रुपमे सोझा अयलाह अछि। हिनक कविता बरबरि फेसबुक पर अभरैत रहल अछि। हिनक रचनामे मुख्य रूप सँ मिथिलाक समस्या उजागर होइत रहलनि। कतेको काव्य हिनक व्यंग्यात्मक होई छन्हि,जे पाठक कैँ कविता विधा दिश सहेजें आकृष्ट करैत अछि। प्रस्तुत पोथी " टटका गेयाततमक कविता " मेँ देशक आ नगर विकास क' कथा-कविता मादे श्री रायजी कहैत छथि-:

हेहर - थेथर , आंकड़- पाथर ,

भ्रष्ट शिरोमणि मुखिया भेल ।

सुगरक खुरके पूजा होइए ,

कुक्कड़क मुँह गमकौआ तेल।।

वर्तमान पंचायती राज व्यवस्था'क जे परिवेश बनल जा रहल अछि, ताहिमे ई कविता रोचक ओ सटीक बुझाइछ।

एकटा कविताभे कविजीक कहब छन्हि, जहन हमसब मिथिलावासी छी, तहन जाति- पाति,धर्म सम्प्रदाय की? सब एके जाति - एके धर्म आ एके सम्प्रदायक छी; सब मैथिल छी। यथा, पाँति द्रष्टव्य -:

हम जातिके छोड़ि देने छी ,

अहूँ जातिके छोड़ू भाय।

आऊ एके पांतिमे बैसि,

भुखल छी? तँ खाऊ मिठाय ।।

कविवर रायजी आत्मकथा नामक कविता मादे अपन जीवनक व्यथा कथा रखलनि अछि , जाहिमे कैंचाक अभावे सोचल लक्ष नहिँ भ' पबैत छैक! यथा-

अर्थक हीन मनोरथ सबटा,

छल सपना सपने रहि गेल।

देखब कहिया दिन सुदिन हम,
दग्ध हृदय जरिते रहि गेल।।
अछि द्वेष दंभ सँ दुषित समाज,
उपहासे मात्र करईए ।
मन मारि अपमान सहै छी,
झर - झर नोर बहाए ।।

प्रस्तुत मैथिली साहित्य पोथी ' टटका गेयातत्मक कविता ' संग्रह'क सब काव्य बेश उपरा- उपरी अछि। आशा अछि पाठककेँ चहटगर लगतन्हि । एहि पोथीके पछिला कमर पर कवि जीक छविक संग परिचय देल गेल छैक। संगहि वरेन्य साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुर जीक मंतव्य सेहो पाठकके नजैर पड़तैन। हालहि २०२३ जूनमे ई पोथी सगर राति दीप जरय कथा संगोष्ठी में लोकार्पण भेल अछि।

२

मैट्रिक फाइल (लघुकथा)

हमरा गामक प्रवेशिका उत्प्रेषित बहुतो छात्रक परीक्षा रिजल्ट बिहार बोर्ड सँ निकलल रहय। दू गोट विद्यार्थी प्रथमश्रेणी , तिनटा सेकेण्ड आ एकटा थर्ड डिवीजन सँ पास भेल छल। दूटा मैट्रिक फाइल भ' गेलैक। जाहिमे सँ एक हैडेन कुमार अपना बाबाके समक्ष हमरा कहलक हम तँ १२४ अंक धरि आनि लेने रही। परीक्षा दै सँ पहिले नेताजी बाबाके कहिये - रिनाल्ड डाउटपेन किन दिय,से नहिये ने किनि देलक। ओहि लीड सँ खूब अक्षर बनै छैक। परीक्षामे नीक लिखाबट पर प्रशन्न भ' आँखि मुनिके सर नम्बर दैत छथि। ओना हमर काँपी गोल - गोल अक्षर लिखल सँ बढ़ निमन देखाई छलै। जौं हम रिनाल्ड

कलम सँ लिखतियै तँ आरा - तिरछा सुलेख अक्षर बनैत। आने छात्र जेकाँ खुशीमे हमहूं मधुर बांटक लेल औरियान मेँ रही , परंच जे ने करय हमर बाबा! जौं कदाचित रिनाल्ड पेन रहैत तँ हमरो सबसँ नीक लव्धांक भेटैत। ई सुनि पौत्र उपर आँखि गुड़रैत बाबा केँ रहल नै गेलैक, बजलाह - तखन अपने सँ पाई रहैत कियाक ने रिनाल्ड पेन दुकान सँ आनि लेलए। पढ़ुआ जे रहत से दोसरो कोनू कम्पनीक कलम सँ कापीमे प्रश्नोत्तर लिखत आ मैट्रिक अनुत्तीर्ण नहिं होयत! हैडेन कहिते रहल रिनाल्ड पेन किन दैतह,तँ अवश्ये मैट्रिक ऐ बेर पास करितौँ।

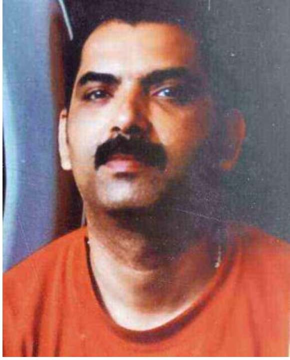
३

लघुकथा- मरदुमसुमारी'क अर्थ जानि गेलौं !

एक गोटे रो देबू सँ छेंटगर भेने यौ देबू मेँ सुमार भेलाह। आओर अपना गामक बूजूर्गक बीच हौ देबू जी सम्बोधन सुनि प्रशन्नचित रहथि। हमरा हरल ने फुरल एकटा सबालक जिज्ञासा हुनका सँ कयल। अपनेक गामक नांऊ राजस्व गामस्तर केर नै भ' केँ एक बसाहट रूपेँ टोला कियाक कहाओल गेल? ओ कहलनि ब्रिटिश जमाना सँ पहिले सँ सूड़ियाही'क आवादी रामनगर सँ बेशी रहलैक। कोशी - बलान वाढ़िक कारणेँ किछ लोक अन्तय कुटुम्ब लग आ नेपाल सेहो जा बसल । तैयो ऐ गाममे एक सांझक भोजमे १२ मोन चाउर सीदहा लगैछ। से मरदुमसुमारी होइतकाल ई जनौ नान्हिटा टोल रहल हेतैक।

४

आर्ट पुरस्कार आ सुरेन्द्र



प्राचीन भारतीय चित्रकला'क विश्वमे खूब नाम छैक; जाहिमे अजंता, एलोरा - कोणार्क आ मिथिला पेंटिंग (मधुबनी चित्रकारी) केँ चर्चा होईछ। पछिला दू दशक केर कलाजीवनमे २५ सँ अधिक समूह प्रदर्शनी लागि चुकल जाहिमे भारतके नाम रौशन केलनि सुरेन्द्र कुमार। हुनक चित्र लंदन(ब्रिटेन),यूनान(ग्रीस), स्वीटजरलैंड,फ्रांस आदि देशमे समकालीन चित्रकलाक प्रतिनिधित्व करैत लाखों टाकामे बिकायल छन्हि। एहि प्रकार राष्ट्रीय ख्याति विस्तार पाबि अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति स्थापित कय चुकलाह हन्। दरभंगा कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय मेँ फाईन आर्ट केर संकाय धरि छैक। दरिभंगा प्रमण्डलके एक गाम सँ एके दियादि परिवारमे दू गोट व्यक्ति केर सम्मानक चर्चा सर्वत्र होईछ। अपने सबके बताबी मिथिलांचलक प्रसिद्ध गाम हटनी जे मधुबनी जिलाक कोसी क्षेत्र घोघरडीहा प्रखंड अंतर्गत छैक। एहि गाममे निवंधित सामाजिक संस्था " मिथिलांचल कोसी विकास समिति दिश सँ मैथिली भाषा समृध्दि लेल एक ' कोसी संदेश ' नामक त्रिमासिक साहित्यिक पत्रिका विगत दस साल सँ बहरा रहलैक अछि। एहि गतिविधिमे जुटल अवैतनिक कर्ताधर्ता लोकनि समय - समय पर विशेष व्यक्तित्वक संदर्भमे जनतव सेहो आलेख /साक्षात्कार माध्यम सँ

पाठक कैँ देबाक श्रृंखला हालमे चलौलनि अछि। डाक्टर इन्द्र कान्त झा क' आ गीरजा नन्द झा जीक विषयमे विशेषांक देखि प्रशन्नताक कड़ी मे आगामी अंक अजीत कुमार आजाद केर पोथी लेखन मादे निकालबाक योजना सूचनाक तौरपर लोक फेसबुक सँ जानलक हन्। साहित्य अकादमी दिल्ली सँ हुनक कविता संग्रह ' पेन ड्राइवमे पृथ्वी ' मैथिली कविता पोथीके एक लाख टाकाक पुरस्कार भेटल अछि। ई पुरस्कार वर्ष २००४ मेँ मात्र ५० हजार टाकाक भेटैत रहैक। ओहि साल अजीत आजादक फरिकानमे भातीज सुरेन्द्र कुमार मिश्र कैँ पुरस्कार भारत सरकार के ५० हजार टाका हुनका ललित कला पर 'नेशनल अवार्ड ' भेट चुकल रहनि। मिथिला 'क लोक जतय कतौह कोनू क्षेत्रमे छथि, विशेषताक अनुभव पावि सरकारी निधि पुरस्कार रूपैँ अवश्ये पावि जाई छथि। ई अत्यन्त हरखक विषय थीक । जे कियो विद्वता - दक्षता आ क्रियाशीलताक आधार पर मिथिला सँ बाहर अपन गुणक डंका बजाकय गाम घरक लोकमे गौरवान्वित करैत प्रेरणा जगा रहल अछि।

नौआबाखर पंचायत'क हटनी निवासी कवि- लेखक शंभूनाथ मिश्र जीके जेष्टपुत्र रुपमे जनम दि० २६-८- १९७३ कैँ सुरेन्द्र कुमार मिश्रके भेलैन, से सरल व्यक्तित्वक मृदुभाषी युवक छथि। सम्प्रति रोहणी दिल्ली मेँ रहैत अपन स्टूडियो ; विजुअल आर्टके सफल संचालन मे जुटल छथि। हिनका नीक परिवेशमे शिक्षा - दीक्षा आ रहन - सहन सँ व्यक्तिगत जीवनमे उत्कृष्टता आयल। कोनू कला महाविद्यालय विशिष्टता प्राप्त करय ले चारिटा भाग बना गेल छई -: (१) कच्ची द्वारा चित्रकारिता,(२) मूर्तिकला विभिन्न पदार्थ सँ,(३) प्रिण्ट मेकिंग तकनीकी द्वारा आ (४) डिज़ाइन मेकिंग। ई चारीम तँ पूर्णतः व्यापारिक कला थीक।आ शेष तीनू कलात्मक कला छी। श्री सुरेन्द्र कुमार मिश्र जतय जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय नव दिल्ली सँ स्नातक तथा,ओतय महाराजा सयाजीराव विश्व विद्यालय बरौदा सँ प्रिण्ट मेकिंग मे स्नातकोत्तर छथि। ई किछु दिन भारतक महाविद्यालय मेँ पढ़ेलाक

वाद पेंटिंगके फैकेल्टी रूपमे सिंगापुर चलि गेलाह। दू बरखक यात्रामे ओतय केर महाविद्यालय मे पढ़ौलनि।ओहि सँ ई मलेशिया , फिलिपिंस आ इण्डोनेशियाक यात्रा कयलनि। तकरवाद स्वदेश लौट गेलाह। सुरेन्द्र विद्यार्थी जीवन सँ चित्र कलाक अतिमेधावी कलाकार रहलाह अछि। इयह कारण अछि जे देशक सबसँ प्रतिष्ठित कला संस्थान - सांस्कृतिक मंत्रालय भारत सरकारक अधीन देवय जाए बाला ' नेशनल एकेडमी अवार्ड , जे २००४ ई० मेँ ४६म् नेशनल अवार्ड ई प्राप्त कर चुकल छथि। एहिके अतिरिक्त दर्जनों पुरस्कार एवं प्रसंशा पत्र ई प्राप्त कर्यने छथि। जाहिमे किछ प्रमुख ऐ तरहें अछि -: गैलरीश्री आर्टर्स द्वारा जेडीवीसी प्रशंसा पत्र , गांधी शांति समिति नव दिल्ली द्वारा स्वतंत्रताक पचासम वर्षगांठ स्वर्ण जयंती समारोह २०१५ केर एस आई एफ ए एस नृत्यगीत समारोह पर तथा २०१८ मेँ स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ परफार्मिंग एण्ड विजुअल आर्ट रोहतक (हरियाणा) द्वारा प्रशंसा पत्र शम्मिलाइत अछि। सन् १९६० सँ १९७० ई० धरिक चित्रकारिता केँ आधुनिक कहल जाईछ। तकर वादक अवधि समकालीन चित्रकलाक दौड़ कहल जाइत य। ऐ तरहेँ २००२ ई० केर चित्रकारिताक डिग्री प्राप्त केलावाद सँ विशेष रुपेँ कर्मशील छथि, समकालीन चित्रकार सुरेन्द्र। एहि संदर्भमे अर्धनारीश्वर जी गतवर्ष कोशी संदेश मेँ हुनक साक्षात्कार छविक संग छापने रहथि,धरि मिथिलाक पाठक वर्गके हिनका विषयमे अधिक आरो जानबाक उत्कण्ठा जगैत रहनि। युवावर्ग आई अभियन्त्रण, चिकित्सा आदि क्षेत्रमे अपन रुचि देखाबैछ से एहूक्षेत्रमे जीविका लेल संभावना तलाशी सकैत अछि।

५

मूलअति पिछड़ाक आरक्षण हड़पल गेल!

बिहार राज्यमे आरक्षणक विरोधी के? आओर कर्पूरीजीक देल आरक्षण

अधिकार कैँ आई ३२ शाल सँ के सब हिला - डोलाके राखि देलक ? ई दूनू गप्प केर अनुत्तरित प्रश्न अत्यन्त पिछरल समाजक पढ़ल - लिखल व्यक्ति लग मुँह दुसि रहलैक हन्। आई विगत ४३ बरख सँ कांग्रेस,राजद आ जदयू बेराबेरी सरकार बिहारमे चला रहल छैक। केन्द्रीय सरकार पिछड़ा तबकाके एक सूचि - ओबीसी नाम सँ कायम रखने अछि। आ बिहार मेँ यदा-कदा भाजपा सेहो सम्मिलित सरकारमे संग पुरनहि रहल अछि। ओतय नौकड़ीक आरक्षण सीट २७% मंडल कमीशन केर शिफारिश पर भुतपूर्व प्रधानमंत्री वीपी सिंह जी लागू कयने छलाह। ताहू ठामक सीटमे विभाजन होएब परम आवश्यक छैक। मुदा ताहि लेल संसद सदस्य लोकनि आवाज नहिँ उठाए,अपन-अपन राजनीतिक दल/पार्टी ले हौउ हुसीलमे लागल देखाईछ। परंच वोटक समय खूब दिवास्वप्न देखाबैछ। हम बिहारक दशा पर बात करय चाहि रहलहुँ अछि।

सन् १९४७ मेँ भारत देश स्वतंत्र भेलासन्ता अपन संविधान १९५० मेँ लागू कयल। आ लोक कल्याणकारी सरकारक नीति रहल संगहि संविधान'क राष्ट्रीय लक्ष्य छल समानता आनी। से आईधरि क्रमिक रूपेँ काजक चर्च भैयो रहलैक अछि। मुदा लोकतांत्रिक व्यवस्था मेँ सामाजिक न्याय केर सरकार अन्याय मचेबामे पाछु नहिँ रहलीह। जनता की करतीह! हर ५ वर्खपर नागरिकता के नाते मतदान करत। मतदाता जागरूकता लेल सेहो समय - समय पर स्वैच्छिक संगठन आ भोलेन्टरी संस्था सब सजगता देखाबैछ। मुदा वास्तविक ग़छल हक चुनावी घोषणापत्र जारी कयलाक पछाति नेता बिसरि जाइछ। इयह एक विडम्बना कैँ देश आ राज्यक निर्वाचन वाद आम जनता झखैत - भोगैत य। सबकैँ बुझल अछि १९६७ क' सोसलिस्ट आण्डोलन आ १९७४ केर सम्पूर्ण क्रान्ति आंदोलन'क प्रयोग सँ पिछरल जातिमे सामाजिक बदलाउ आ राजनीतिक लीलसाक शख एलेक। ऐ तरहक सजगता सँ विधानसभा आ लोकसभामे बैकवार्ड क्लासके प्रतिनिधित्व बढलैक,परँच

अत्यन्त पिछरल जातिमे संख्या अनुपाते लाभ नहिँ भेटलैक। तकर कारण रहैक जे अत्यन्त पिछरल वर्गमे समाजीक समरसता , शिक्षा आ राजनीतिक चेतनाक सर्वथा अभाव। धन्यवाद छन्हि संविधान निर्माता बाबा साहेब डॉ भीमराव आंबेडकर जीकेँ ,जे कमजोर वर्गक प्रति संवेदनशील रहथि ; तैँ संविधान मेँ उचित उपबंध कयलनि।

(क) १९५१ मे तात्कालीन मुख्यमंत्री श्रीकृष्ण सिंह सरकारमे अत्यन्त पिछरल जाति (एनेक्सर-१) आ पिछड़ा जाति (एनेक्सर-२) केर सूची तैयार भेलैक,जाहिमे अनूसूचि-१ मेँ ७९ जाति एवं अनुसूचि-२ मेँ ३० जाति छलैक।

(ख) १९६६ मेँ केबी सहाय सरकारमे फेर दूनू लिस्ट केँ एकमे जरमिझर क' देल गेलैक,तैयो पटना यूनिवर्सिटीमे एनेक्सर-१ लेल १०% आरक्षण कायम रहलैक।

(ग) १९६९ मेँ जननायक कर्पूरी ठाकुर द्वारा पछुआयल जातिके सामाजिक ओ शैक्षणिक स्तरक अध्ययन लेल मुंगेरीलाल कमीशन गठन आ ओहिक अनुशंसा केर आधार पर पिछड़ा -अतिपिछरा पृथक कयल गेल।

(घ) जनता पार्टी १९७७ मेँ मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर केँ बनेलनि। ओ १९ नवम्बर १९७८ केँ राज्य सरकारके नौकड़ीमे अति पिछड़ा -पिछड़ा वर्गकेँ २०% आरक्षणक प्रावधान कयलनि। ऐ तरहेँ पिछड़ा ८% आ अधिक पिछड़ा १२% मेँ बँटल। आर्थिक रूप सँ पिछरल समाजक लेल ३% आ स्रीगण केँ ३%आरक्षण देल गेल रहय।ओहि समय अतिपिछड़ा मेँ ९४आ पिछड़ा वर्ग मेँ ३४ टा जाति सुचिवध्द भेल छलैक। एहन समतामूलक सूची पर आँखि गड़ेनहार लोकमे तरेतर हलचल बनल रहल।

(घ) एहि सुचिमे १९८०-१९८९ई० (कांग्रेस सरकार) मेँ एक मजगूत जातिके एने०-२ सँ एने०-१ मेँ आनि एकटा कुवाट बनेलक। ताहि बाट पर चलैत १९९०-२००४ धरि लालू-राबड़ी जीक सरकार मेँ २४ जाति आ २००५ सँ अद्यतन नीतीश कुमार सरकार २० जाति केँ अतिपिछड़ा मेँ जोड़ल गेलैक। एहि पैघ

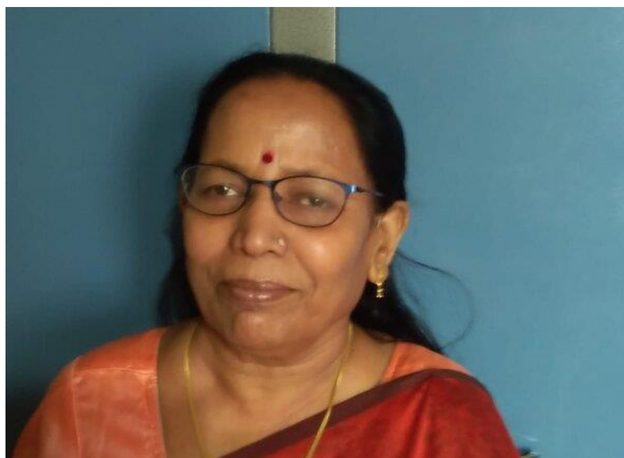
करैत सूचिमे संभ्रांत व समृद्ध जातिकैं सम्मिलाइत केला सँ मूल अति पिछड़ा कैं बढ़ नोकसान पहुँचाएल गेल अछि। बीपीएससी परीक्षा २०१९ ई० मेँ ६० सँ ६२ म् प्रतियोगिता आयोजित भेलासन्ता १२८ आरक्षित सीट पर नैका अतिपिछड़ा ९९ पद पाबि मूल अति पिछड़ा वर्गक सीटमे मेँ सिन्ह देलक । ६३म् परीक्षामे सेहो ९१ सीटमे ५९गोट सीट लेलक। पंचायत राज चुनाव २०१७-२०२२ मेँ प्रखंड प्रमुख ७८आरक्षीत सीटमे ४७ पर उम्मीदवार काविज भेलैक। एहि तरहेँ मूल अतिपिछड़ा मेँ उदासीन रहब आ हाशिया पर आबि गेनाई एक सोचल समझल षड्यंत्र मानल जायत। तहिना विज्ञापन सं० १/२०१८ केर अन्तर्गत बिहार विधानसभा, सचिवालय सहायक, पुस्तकालय सहायक, अनुवादक (हिन्दी/अंग्रेजी) शोध संदर्भ सहायक ,विजली विभाग'क कनीय विद्युत अभियंता (इमप्लायमेंट नं० ६/२०१८) ,सहायक विद्युत अभियंता आ बिहार पुलिस अवर सेवा आयोगमे दरोगा बहालीके परीक्षा परिणाम मेँ सेहो अति पिछरीवर्गक स्थान नगण्य भ' गेलैक। बीपीएससी केर आयोजित सहायक अभियंत्रण सेवा (यांत्रिक अभियन्ता) केर परिणाम २० जुन २०२० कैं प्रकाशित भेल रहय,ताहिमे सेहो मूल अति पिछड़ा वर्ग क' स्थान नगण्य छलैक। वर्तमान परिस्थितिमे अत्यन्त पिछरल जाति मेँ सम्मिलित हिंदू/मुस्लमान समुदाय केर जनसंख्या कुल बिहारक जनसंख्याक' लगधक ४२% सँ बेसिये आंकल जाई छै। मुदा एहिके आरक्षण सरकारी नौकरीमे मात्रे १८% छैक। जखन वर्तमानमे आरक्षण कोटा एहि तरहेँ अछि -:

अत्यन्त पिछड़ी जाति १८% , पिछड़ी जाति १२% , अनूसूचित जाति १६% , अनुसूचित जनजाति १% , विकलाँग-महिला- स्वतंत्रता सेनानी ३% आ समान्य कैं ५०% लाभ हरसठे भेट रहलनि अछि।आरक्षण मौलिक अधिकार नहिँ थीक मुदा भारत सरकार मेँ सेहो आर्थिक दृष्टि सँ पछुआयल स्वर्ण कैं

१०% आरक्षण भेट रहल छैक।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.७.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खेप-२२)



निर्मला कर्ण (१९६०-), शिक्षा - एम् ए, नैहर - खराजपुर,दरभङ्गा, सासुर - गोढ़ियारी (बलहा), वर्त्तमान निवास - राँची,झारखण्ड, झारखंड सरकार महिला एवं बाल विकास सामाजिक सुरक्षा विभाग मे बाल विकास परियोजना पदाधिकारी पद सँऽ सेवानिवृत्ति उपरान्त स्वतंत्र लेखन।

मूल हिन्दी- स्वर्गीय जितेन्द्र कुमार कर्ण, मैथिली अनुवाद- निर्मला कर्ण

अग्नि शिखा (भाग- २२)

पूर्व कथा:

उर्वशी के इन्द्र द्वारा पाँच साल तक स्वर्ग सs निर्वासित करय के दण्ड भेटैत छनि, राजा पुरूरवा सs प्रेम करय के अपराध के लेल।आ चित्रलेखा के उर्वशीक संदेश के ढोबय के कारण एक महीना तक स्वर्ग-सुरभि सs वंचित रहबाक दण्ड भेटैत छनि।मुदा उर्वशी के आग्रह पर आ हुनका द्वारा कहला पर जे चित्रलेखा छथि निर्दोष,ओकर दण्ड सेहो इन्द्र द्वारा उर्वशी के देल जाइत

छैक।आ ओ सजा सेहो पाँच साल के अछि।

आब आगू:

उर्वशीक ह्रदय मे अत्यंत तामस भरल छलैक।स्वर्ग सँऽ निष्कासनक पैघ दण्ड हुनकर माथ पर कलंक बनि गेल छलैक। आइ धरि हुनका स्वर्ग मे सम्मान सँऽ देखल जाइत छलैक।आब लोक हुनका पर आंगुर उठाओत,ई सब कोना सहती ओ ।त्रिलोक भरि में ई बात श्रुति-सूत्र के माध्यम सऽ पसरत।स्वर्ग के सब प्राणी के पहिने सऽ एहि बात के जानकारी आब त भऽ गेल अछि।आब ई बात त्रिलोक में सेहो पसरत।

संभवतः ई भरतमुनि के श्राप के परिणाम भऽ सकैत अछि,हुनकर कथन झूठ नै भऽ सकैत अछि। हुनकर श्राप के अवधि हमरा कोनो ने कोनो रूप में भोगहि के छल।की इन्द्र द्वारा देल गेल ई दण्ड हुनके देल श्राप के मात्र बहन्ना अछि? इन्द्रक दण्ड सेहो श्राप काल स्वर्ग सँऽ बाहर बिताबय के संकेत दऽ रहल अछि। विधि के रचल नियमन कतेक नियमित अछि।

ताहि लेल हमरा विशेष व्यथित होयवाक आवश्यकता नहि।विष्णु लोक मे लोक हमर स्वर्ग सँऽ निष्कासन कैं भरतमुनि केर अभिशापक प्रभाव बुझताह। रहल बात भूलोक केर तऽ की हमरा ओतय कलंकित मानल जायत? हँ भऽ सकैत अछि!मुदा भूलोक मे हम अपन कलंक नुका सकैत छी,जँ हम राजा पुरूरवा लग चलि जायब।राजा हमरा वचन देने छथि जे ओ हमर प्रेम स्वीकार करबाक प्रतीक्षा करताह। हँ सैह ठीक रहत! हम... हम ओतय जा सकैत छी।तऽ हम मात्र ओतहि कियैक नहि जायब! हम कतहु आन ठाम जाऽ दण्ड भोगि कियेक अपयश के भागीदार बनब!हम राजा पुरूरवाक संग वैवाहिक जीवनक आनंद लेब,आ तखन हमरा राजा पुरूरवाक प्रेयसी पत्नी के रूप मे भूलोकक इतिहास मे सेहो प्रसिद्धि भेटत। भूलोक निवासी तक तऽ हमर श्राप के कथा संभवत कहियो नहि पहुँचि पायत।धीरे-धीरे स्वर्ग मे सब कियो ई बात बिसरि जायत।एतय लगभग सब कैं सदिखन कोनो ने कोनो दण्ड भेटिते

रहैत छैक।हँ,ई किछु नव बात नहि भेल अछि!
अरे! ई दण्ड आ भरत मुनि के अभिशाप तऽ हमरा लेल वरदान जकाँ साबित भऽ रहल अछि। हम राजा पुरूरवा सँऽ अगाध प्रेम करैत छी। हुनकर प्रेम के उन्माद मे डूबि अशक्त व्याकुल भऽ रहल छी। कियैक नहि एहि विरहक पीड़ा कैँ छोड़ि दाम्पत्य सुखक भोग करू।
उर्वशीक हृदय एहि कल्पना सँ रोमांचित भऽ गेल छल।
हमर प्रियतम!हम अहाँ लग आबि रहल छी! आब अहाँ कैँ हमर विरह मे जरय नहि पड़त!
मुदा......मुदा,.....ई अवधि बहुत कम अछि!हमरा पुरूरवा के छोड़ि पाँच साल बाद स्वर्ग आपस आबय पड़त!ई तऽ आओर दु:खद अछि।पुरूरवा के हृदय में मिलन के आस जगा पुनः दु:खी कऽ हुनक परित्याग करय पड़त । तखन हमरा आर कलंक लागत। एकर किछु मार्ग हमरा निकालऽ परत। हँ! हम राजा पुरूरवा के गृह जायब! हमर प्रियतम के निकट !ओ अवश्य हमर प्रतीक्षा में होयताह। हमर स्वर्ग वापसी के बाद भूलोक वासी आ स्वयं राजा पुरूरवा हमरा पर दोषारोपण नहि करथि,संगहि राजा के बेसी विरह के कष्ट नै उठाबय के होनि,ताहि लेल हम वैवाहिक जीवन शुरू करय स पहिने दूटा शर्त के पालन करबा हेतु राजा के वचनबद्ध करब ।ओ नश्वर प्राणी छथि!ओ देर सबेर ओहि शर्त के अवश्य तोड़ि देताह! आ तखन हमरा हुनका छोड़बाक अवसर भेटि जायेत।एहन स्थिति मे भूलोक मे सेहो हमरा कलंक नहि लागत,जे उर्वशी अपन असहाय संतान आ बुढ़ारी मे अपन पति कैँ छोड़ि देलनि! भूलोक वासी एहि बात के अवश्य मानत - उर्वशी अप्सरा छलीह। हुनका प्राप्त करवा हेतु जे शर्त राखल गेल छल,पूरा नहि भेल। राजा द्वारा शर्त भंग कएल गेल छल! तखन उर्वशी की करितथि! ई काज हम करब। हम स्वर्ग के नियम सँऽ बन्हायल छी। ओकर विरुद्ध हम कोनो काज नहि कऽ सकैत छी। विवाह संऽ पहिनहि हमर शर्त राखब पुरूरवाक संग छल होयत। मुदा ई छल आवश्यक

अछि। प्रेम में प्रियतम के प्राप्ति एवं युद्ध में विजय प्राप्ति हेतु कूनो युक्ति कैनाई छल अथवा अपराध नहि होएत अछि ।

एहि मे राजाक लेल सेहो भलाई अछि।ओहो हमर विरह में व्यथित हेताह। हमर प्रेम प्राप्त भेला सँऽ हुनकहु दर्द मेटायत। कम सँ कम किछु वर्ष धरि,हम हुनका सँऽ भेंट करब।ई समय स्वर्ग लेल मात्र पाँच वर्षकआवश्य अछि। मुद्रा पृथ्वी के लेल तऽ बहुत काल भऽ जाएत। हम बिसरैत किएक छी जे हमर श्राप अवधि के संग चित्रलेखा के देल श्राप के अवधि जुड़त तखन आर बेसी भऽ जाएत। हँऽ ओ हमर पाणि ग्रहण करबा सँऽ कतेक मुदित हेताह!हमहूँ अपन प्रियतम संग गृहस्थ धर्म ग्रहण केलाक बाद अपन हृदय कैँ व्याकुलता शांत कऽ सकब।हमर ई विरह-विदग्ध हृदय जे हमर प्रियतमक विरह मे अपन सुधि-बुधि हेराएलअछि,हुनकर प्रेम प्राप्ति केलाक बाद शीतल भऽ जायत।

हुनका ईहो नहि ज्ञात भऽ सकलनि जे हुनक डेग फेर कखन उठि गेल,आ ओ भूलोक दिस विदा भ' गेलथि ।

एखन उर्वशी स्वर्गक सीमा पर छलीह कि देखलथि जे रम्भा आ चित्रलेखा हुनका सोझाँ देबाल बनि ठाढ़ छथि,उर्वशीक डेग रुकि गेलनि ।

"की बात छै सखी लोकनि,अहाँ दुनू गोटे हमर बाट किएक रोकने छी"? उर्वशीक ठोर धीरे-धीरे काँपि उठल।

"हमरा सभ कैँ बुझल छल,अहाँ आइ राति स्वयं हमरा सभ सँ अलग भऽ जायब,अपन दण्ड केर भोग करबा लेल। मुदा की अहाँ जेबा सँ पहिने हमरा सभ सँ भेंट करब जरूरी नहि बुझलहुँ? सखी!की हम सभ अहाँ सँऽ एकदम फराक भऽ गेल छी"? रम्भा एवं चित्रलेखा दुनू उर्वशी के उपराग दैत कहलथि।

उर्वशी - "नहि, एहन किछु बात नहि छल! हम अहाँ सब सँ भेंट करय चाहैत छलहुँ,मुदा दण्ड भेटलाक बाद हमर मोन लाज आ दु:ख सँऽ व्यथित भऽ रहल छल। हम अहाँ सबहक सामना कोना कऽ सकैत छलहुँ! ई सोचि हमरा साहस

नहि भेल। हम अपराध केने छलहुँ,अपराधी के दण्ड भेटबाक चाही"।
चित्रलेखा - "नहि,अहाँ कोनो अपराध नहि केने छी! प्रेम सेहो वैह भगवान् द्वारा बनाओल गेल अछि जे हमर अहाँ एवं अन्य सब सृष्टि के रचना कएने छथि । की अहाँ कैँ महामान्य भरतमुनि केर अभिशाप मोन नहि पड़ैत अछि? अहाँ बिसरि गेलहुँ हुनक अभिशाप? देवेन्द्रक देल दण्ड ओहि अभिशापक परिणाम थिक। ओहि अभिशाप केर प्रभाव मे देवेन्द्र अहाँ के दण्ड देने छथि। एकरा विधि के विधान बुझु। अहाँ ओहि अभिशाप आ ओहि अभिशाप केर प्रभाव मे छी। ई अवसर अछि जे भाग्य के द्वारा देल गेल अछि सखी!अहाँ अपन प्रियतम के पास जाउ!ई अवधि स्वर्ग के लेल बहुत छोट अछि,मुदा धरती के लेल छोट नै!जाउ सखी! संगति में खुश रहू अपन प्रियतम के!हम अहाँ के सुखद पारिवारिक जीवन के कामना करैत छी।अपन प्रियतम स भेंट कऽ अपन जीवन के सुखद बनाउ!
उर्वशी भीजल मुस्कान दैत बजलीह - "सखी!हम सहमत छी जे ई अवधि धरती लेल लंबा होयत,मुदा एतेक दिन नहि होयत जे हम विरह के पीड़ा सहन कऽ सकब! जखन एहि भेंट के बाद विरह होयत, मोन में ओहि स्थिति के कल्पना कऽ हम काँपि जाइत छी"l
रम्भा - "अहाँ बिसरि रहल छी मित्र!अहाँ कैँ स्वर्ग सँऽ निष्कासन भेटि गेल अछि,मुदा ताहि संग ई नहि कहल गेल जे निष्कासन अवधिक बाद आपस आबय पड़त। अहाँ नहियो आबि सकै छी! तैँ एतय वापस नहि आऊ। अपन प्रियतम के संग सुखी जीवन जीबू"!
उर्वशी - "सखी!अहाँ हमरा सँ बेसी देवेन्द्र कैँ चिन्हैत छी!अहाँ कैँ लगैत अछि जे देवेन्द्र ई होबय देताह ?"
उर्वशीक एहि प्रश्न पर दुनू सखी चुप भऽ गेलीह।उर्वशी मात्र किछुए क्षणक बाद पुन:बजलीह - "हँ सखी! हमहूँ निर्णय कएने छी! हम पृथ्वीलोक मे रहब!आ एहि अवसर कैँ प्रिय-मिलन के रूप मे उपयोग करब। विदाई दिय

सखी!आहाँ दुनू गोटे विदा करू !आ हमरा सभक जीवन लेल,अपन आशीर्वाद आ शुभकामना सेहो दियऽ"।

दुनू मित्र मिलिकय बजलीह - "अहाँक जीवन सुखीएवं समृद्ध होय,अहाँक प्रेम कल्प पर्यंत तक एकटा मिसाल बनय।

दुनू मित्रक आँखि मे नोर झिलमिलाइत छल,मुदा दुनूक ठोर पर मुस्कान छल,एहि नोर मिश्रित मुस्कान संग दुनू गोटे उर्वशी कैँ विदाई देलथि ।

क्रमशः

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.८.नन्द विलास राय-मंत्रीजी सँ पैरबी



नन्द विलास राय

मंत्रीजी सँ पैरबी

विनीतजी पैघ ठीकेदार छैथ। कइएक विभागमे ओ ठीकेदारीक लेल निबन्धन करौने छैथ। करोड़ोमे हुनकर ठीकेदारीक काज चलैत रहै छैन। चाहे सिंचाइ विभाग हो वा भवन निर्माण विभाग, वा पुल-सड़क निर्माण विभाग सगतैर हुनकर काज चलिते रहै छैन। दसटा हाइबा गाड़ी, पाँचटा जेसीबी, दसटा ट्रैक्टर, पाँचटा टीपर, पाँचटा मिक्चर मशीन आर कताक तरहक मशीनसभ रखने छैथ।

21 अगस्तक दिन विनीतजी एकटा टेण्डरक काजसँ पटना गेल रहैथ। भवन निर्माण विभागमे टेण्डर भरि कऽ जखन बाहर सड़कपर एला कि हुनकर मोबाइलक घन्टी बजलै। जेबीसँ जखन मोबाइल निकालि नम्बर देखलैन तँ हुनक मैनेजर अजयजीक नम्बर रहैन। विनीतजी फोन रिसिभ करैत बजला-

"हँ अजयजी, की बात? "

ओम्हरसँ आवाज आएल-

"सर, रामपुर थानाक बड़ाबाबू पाँचटा हाइबा आ एकटा जेसीबी जब्त कऽ थानापर लऽ गेला हेन। हम बड़ाबाबूसँ भेँट केलिऐन तँ ओ कहला जे ठीकेदार को बुलाओ।"

तैपर विनीतजी बजला-

"ठीक छै। अखन हम पटनामे छी। राति तक गाम पहुँचब आ भोरे आठ बजे धरि रामपुर थानापर पहुँचब। अहाँ आठ बजे भोरमे रामपुर थानाक अगल-बगलमे रहब। हम फोन करि कऽ अहाँकेँ बजा लेब।"

ई कहि विनीतजी फोन काटि देलखिन।

ऐगला दिन विनीतजी आठ बाजिकऽ पाँचे मिनटपर रामपुर थानाक गेटपर पहुँच गेला। अजयजी एकटा चाहक दोकानपर बैसल रहैथ। जखने विनीतजीक स्कारपिओ गाड़ी देखलखिन ओ चाहक दोकानपरसँ उठि विनीतजीक गाड़ी लग पहुँचला। विनीतजी अजयजी केँ संग कऽ थानापर गेला। बड़ा बाबू थानापर नहि रहैथ। ओ डेरापर रहैथ। विनीतजी अजयजी सँ पुछलखिन-

"बड़ाबाबूक डेरा केतए छै से अहाँकेँ बुझल अछि? "

अजयजी कहलकैन-

"जी बुझल अछि।"

तैपर विनीतजी बजला-

"केतेक दूर छै। जँ बेसी दूर हएत तँ गाड़ी लऽ लेब आ जँ लगीचे हएत तखन पएरे टहलैत चलब।"

अजयजी कहलकैन-

"नहि बेसी दूर नहि छै। लगधक अदहा किलोमीटर हएत।"

विनीतजी बजला-

"तखन टहैलते चलू।"

दुनू गोरे बड़ाबाबूक डेरापर पहुँचला। बड़ाबाबू दाढ़ी बना रहल छला। अजयजी

गेटेपर सँ कहलखिन-

"प्रणाम सर। ठीकेदार साहैब एला हेन।"

तैपर बड़ाबाबू कहलखिन-

"आइये भीतर आ जाइये। अच्छा किये डेरेपर आ गये।"

विनीतजी आ अजयजी भीतर गेला। विनीतजी दुनू हाथ जोड़ैत बजला-

"नमस्कार सर। अपनेक आदेशक मोताबिक हम हाजिर छी। की सेवा कएल जाए।"

बड़ाबाबू बगलमे राखल कुर्सी दिस इशारा करैत बजला-

"बैठिये।"

दुनू गोरे यानी विनीतजी आ अजयजी बैस गेला।

विनीतजी बड़ाबाबूक दूटा छोट-छोट बच्चाकेँ देखि कऽ अजयजीसँ कहलखिन-

"जा छुच्छे हाथे आबि गेलौं। एना करू अहाँ बाजारसँ एक किलो रसभरी मिठाइ आ एक किलो सेब कीनने आउ। ढौआ अछि किने।"

अजयजी खड़ा होइत बजला-

"जी ढौआ अछि।"

ई कहि अजयजी बाजार दिस विदा भऽ गेला।

तैबीच बड़ाबाबू बजला-

"अच्छा किये मुंशी को हटा दिये।"

तैपर विनीतजी बजला-

"अच्छा, आब कहल जाए सर। हमरा की आदेश छै।"

बड़ाबाबू बजला-

"देखिये मामला गम्भीर है। बिना परमिट का आप नदी से बालू खनन कर रहे थे। सरकार का शख्त आदेश है जो कोई भी बेकती बिना परमिट का किसी सरकारी जमीन में खनन कर काम करे उनका गाड़ी जब्त कर तुरन्त प्राथमिकी

दर्ज किया जाए।"

विनीतजी खुशामद करैत बजला-

"हम कोनो अहाँसँ बाहर छी सर। हमरा की करए पड़तै से आदेश कएल जाए आ हमरा गाड़ी सभकेँ छोड़ि देल जाए।"

दुनू गोटामे यानी बड़ाबाबू आ विनीतजी मे लेन-देनक गप होमए लगल। बड़ाबाबू पाँच लाख टका मंगलखिन। विनीतजी बड़ गिड़गिड़ेला। अन्तमे बड़ाबाबू कहलकैन- "तीन लाख से कम में काम नहीं चलेगा। ऊपर तक पहुँचाना पड़ता है।"

विनीतजी कहलकैन-

"सर, हमरा दू दिनक समय देल जाउ।"

तैपर बड़ाबाबू बजला-

"बिना प्राथमिकी का थानापर गाड़ी रखना गैर कानूनी है। मैं एक दिन का समय दे रहा हूँ। कल सुबह आठ बजे आकर मामला रफा-दफा करा लीजिये। वरना आप जानियेगा और आपका काम जानेगा।"

ताबेतमे अजय मिठाइ आ फल लऽ कऽ पहुँच गेला। मिठाइ आ फल बड़ाबाबूक सामने टेबुलपर रखैत विनीतजी बजला-

"ठीक छै सर, आदेश देल जाउ। काल्हि पुन: दर्शन करब।"

ई कहि अजयजी आ विनीतजी बड़ाबाबूक डेरासँ बाहर आबि गेला।

जखन दुनू गोटा बड़ाबाबूक डेरासँ निकैल कऽ सड़कपर एला तँ अजयजी पुछलकैन-

"भेल बात सर? "

विनीतजी कहलखिन-

"हँ बात तँ भेल, बड़ पाइ मंगैए बड़ाबाबू।"

अजयजी पुछलकैन-

"केतेक पाइ मंगै छैथ? "

विनीतजी कहलखिन- "पूरा-पूरी तीन लाख।"

अजयजी बजला- "ठीके बड़ पाइ मंगै छैथ।"

विनीतजी गाड़ी लऽ गाम दिस विदा भेला ओ सोचए लगला, बड़ाबाबू तँ बड़ पाइ मंगला हेन। की करी। एकाएक हिनका मोन पड़लैन हमरे मामाक दोस्तक बेटा तँ गृह मंत्री छथिन। दुनू गोटा यानी विनीतजीक मामा आ गृहमंत्रीजीक घर एक्के गाम जगतपुरमे। विनीतजी सोचलैथ किए ने गृहमंत्री सँ पैरवी लगौल जाए। जँ गृहमंत्रीजीक पैरबी भऽ जाए तँ तीन लाखक काज एको लाख टकामे भऽ सकैए।

ओ गाड़ी लऽ सीधा मामा गाम जगतपुर पहुँचला। ममियौत भायकेँ सभ गप्प कहलकैन। संयोग मंत्रीजी गामे आएल रहथिन। ममियौत भाय राजीवजी कहलखिन-

"चलू संयोग नीक अछि। मंत्रीजी गामेमे छैथ।"

दुनू गोटा मंत्रीजीक घरपर पहुँचला। ओइठाम बेस भीड़ छेलइ। मुदा राजीवजीकेँ मंत्रीजी सँ भेँट करैमे दिक्कत नहि भेलइ। राजीवजी आ विनीतजी दुनू गोटा मंत्रीकेँ सभ बात कहलकैन। मंत्रीजी पी.ए. साहैबकेँ बजा कऽ पुछलखिन-

"रामपुर कोन जिलामे पड़ै छै? "

पी.ए. साहैब कहलकैन-

"भीमपुर जिलामे।"

तैपर मंत्रीजी पी.ए. साहैबकेँ कहलखिन-

"ठीक छै विनीतजीक काज नोट कऽ लियौन। रातिमे हमरा भीमपुर जिलाक एस.पी.सँ बात कराएब।"

पी.ए. साहैब कहलकैन-

"ठीक छै सर।"

मंत्रीजी, विनीतजी आ राजीवजी सँ कहलखिन-

"काम भऽ जेतै। हम रातिमे भीमपुरक पुलिस अधीक्षककेँ कहि देबैन। अहाँ काल्हि सबेरे एस.पी.सँ भेँट कऽ लेब। काज भऽ जाएत।"

पी.ए. वरूणजी राजीवजी आ विनीतजी केँ लऽ कऽ बाहर एला। पी.ए. वरूणजी राजीवजी सँ कहलखिन-

"की कहब अखन तक बोहैनो नहि भेल हेन। फेर विनीतजीकेँ कहलकैन- अच्छा अहाँ बोहैन करू आ काज नोट कराउ।

विनीतजी एकटा दू हजारक नोट पी.ए. वरूणजी केँ देलकैन।

तैपर वरूणजी बजला- कमसँ कम पाँच साए एक टका आर दियौ। शुन्ना ठीक नहि होइ छै।

विनीत जी पाँच साएक एकटा नोट आ एकटा पाँचक सिक्का आरो वरूणजी केँ देलकैन। वरूणजी विनीतजी सँ पुछलकैन- रामपुरे थानाक ने मामला छी। बिनीतजी बजला- जी पी.ए. साहैब।

वरूणजी आगाँ पुछलखिन- गाड़ीए सभ ने जब्त केने अछि, वएह गाड़ी छोड़ेबाक अछि।

विनीत जी कहलकैन- जी गाड़ीए छोड़बाक हेतु पैरवी करेबाक अछि।

तैपर वरूणजी कहलकैन- अहाँ निश्चिन्त भऽ कऽ जाउ। रातिमे हम मंत्रीजीकेँ भीमपुरक एस.पी.सँ बात करा देबैन। अहाँक पैरबी भऽ जाएत। काल्हि अहाँ भीमपुरक एस.पी.सँ मिल लेब। काज भऽ जाएत।

विनीतजीकेँ मन रहैन जे अपने सोझामे मंत्रीजी सँ एस.पी. भीमपुरकेँ फोन कराबी मुदा से नहि भेल। ओ अपन शंका राजीवजी लग व्यक्त केलखिन जे पैरबी हएत कि नहि।

राजीवजी कहलकैन- जखन वरूणजीकेँ पच्चीस साए टका दऽ देलिऐन तखन वरूणजी मंत्रीजी सँ एस.पी. साहैबकेँ फोन करेबे करथिन। ओना, भोरमे हम वरूणजीसँ भेँट कऽ लेबैन। नहि ते एना करू वरूणजीक फोन नम्बर लऽ लिअ, भोरमे फोन कऽ वरूणजी सँ पुछि लेबैन।

तैपर विनीतजी कहलखिन- सएह ठीक हएत।

राजीवजी जेबीसँ मोबाइल निकालि मोबाइलमे वरूणजीक नम्बर देखैत बजला- लिखू वरूणजी मोबाइल नम्बर।

विनीतजी अपना मोबाइलमे पी.ए. वरूणजीक मोबाइल नम्बर सेभ कऽ लेलखिन।

ऐगला दिन विनीतजी वरूणजी केँ फोन लगेलखिन जखन ओमहरसँ हेल्लोक आवाज आएल तँ विनीतजी बजला- हेल्लो पी.ए.साहैब, नमस्कार, हम विनीत बजै छी।

तैपर ओम्हरसँ आवाज आएल- नमस्कार विनीतजी। अहाँक काज भऽ गेल। मंत्रीजी भीमपुरक एस.पी. साहैबकेँ कहि देलकैन। काज भऽ जाएत। अहाँ एस.पी. साहैबसँ भेँट कऽ लेबैन।

विनीतजी भीमपुर पहुँच कऽ एस.पी. साहैबकेँ भेँट केलखिन।

एस.पी. साहैब पुछलकैन- कहिये क्या काम है?

विनीत जी कहलकैन- सर रातिमे मंत्रीजी फोन केने छला।

तैपर एस.पी.साहैब बजला- अच्छा। अच्छा। आप ही विनीत ठेकेदार हैं। गृहमंत्री जी का फोन आया था। आप रामपुर थाना के थाना अध्यक्ष से मिल लीजिये। हम थाना अध्यक्ष को कह दिये हैं। आपका काम हो जाएगा।

विनीत जी जखन रामपुर थानाक बड़ाबाबूसँ भेँट केलखिन तँ बड़ाबाबू कहलकैन- एस.पी. साहैब आपके बारे में कहे है। शायद गृह मंत्रीजी एस.पी. साहैब को फोन किये थे। जाइये पाँच लाख रूपये का प्रबन्ध कर कल बारह बजे दिन तक आइये। देर करने पर मुझे प्राथमिकी दर्ज करना पड़ेगा। प्राथमिकी दर्ज हो गया तो मुश्किल में पड़ जाइयेगा। थाना अध्यक्षक बात सुनि विनीत जी अवाक भऽ गेला। विनीत जीकेँ अवाक देखि बड़ाबाबू बजला- पहले जो तीन लाख रूपया मांगे थे उसमें थानाक हिंस्सा और एस.पी. साहैब, डी.आई.जी साहैब का हिस्सा था। अब बात मंत्रीजी तक पहुँच चुका है तो

उसको भी हिस्सा चाहिए न।

विनीतजी सोचए लगला- कोन दुर्मतिया चढ़ल जे गृहमंत्री सँ पैरबी करेलौं। ऐसँ नीक तँ बड़ाबाबूकेँ तीन लाख टका दऽ काज कराए लइतौं।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.९.जगदीश प्रसाद मण्डल- सुचिता (धारावाहिक उपन्यास)



जगदीश प्रसाद मण्डल

सुचिता (धारावाहिक उपन्यास)

'सुचिता' धारावाहिक रूपेँ छपब प्रारम्भ भेल 'मिथिला दर्शन'मे, जे पहिने प्रिंटमे छपब बन्द भेल आ मात्र पी.डी.एफ. मे ई-प्रकाशित हुअय लागल आ फेर सेहो बन्द भऽ गेल। आ तेँ 'सुचिता'क सेहो छपब/ ई-प्रकाशित हएब बन्द भऽ गेल। अही आलोकमे ई उपन्यास धारावाहिक रूपेँ ई-प्रकाशित कएल जा रहल अछि।- सम्पादक।

पाँचम पड़ाव

छअ मास बीत गेल। जहिना घोड़ो घोड़वान एक रफ्तार चलि दम मारए चाहैए तहिना राधारमण दम मारि शान्त भेला कि मोन पड़लैन अपन परिवार आ परिवारक सम्बन्ध। जे पिता कमाइक आशा तोड़ि लेलैन, हुनका मनमे की छैन..! परिवारक बीच नजैर पहुँचते राधारमणक मन छुब्ध हुअ लगलैन। केना

परिवार बीच सम्बन्ध बनत? जखन मनमे एहेन विचार गड़ा गेल अछि जे जइ देशक लोक अखनो भीख मांगि जीवन-वसर करैए, ओकरा-जोकर कोनो काज नइ छै, तेकर अतिरिक्त जे काजो करैबला अछि ओकरा जँ छोट-छीन काज छइहो तँ बारह मासमे दू मास चारि मास भेटै छइ। तैसंग सभसँ विराट रूपमे ओ अछि जेकरा काजक अनुकूल मजूरी नहि भेटै छै। मुदा परिवार तँ ओहिना सबहक अछि जेना परिवार होइ छै, माने माता-पिता, पत्नी, बाल-बच्चा..! तैठाम हमरा सन-सन वेतनबला केते लोक छैथ। एते वेतनक पछातियो जँ बेइमानी रस्तासँ पाइये बनाएब तखन इमान कहिया बनाएब आ धरम केतए बँचाएब? अपन जे पहिल वेतन भेटल, तेही दिन जोड़ि लेलौं जे केते पाइ कोन काजमे खर्च करब अछि। जीवनकेँ गतिशील रखैले गतिशीलताक रस्ता धड़ए पड़ै छै, जँ से नहि धड़ब तँ समय पाछू छोड़ि देत। तइ हिसाबसँ पिताजीकेँ दू हजार रूपैआ महिना दिअ लगलयैन। तीन मास तक तँ कोनो सुनि-गुनि नहि सुनलौं। अपनो मनमे बिसवास जगि गेल जे पितोजी ऐ बातकेँ बुझि मानि लेलैन जे आइ राधारमण कमाएब शुरू केलक अछि, आइसँ पूर्व तक तँ ओकरादेही दू हजार महिना खरचे होइ छल, से जखन पूर्ति करैत परिवार चलबैत आबि रहलौं अछि, तइमे दोबर भेल। माने दू हजार खर्चक मुँह बन्न भेल आ दू हजार ऊपरसँ भेटल, तखन जे परिवार जइ गतिये चलैत किए ने होउ, मुदा चारि हजार तँ लाभकारी भेबे कएल किने। तैठाम चारिम मासमे जखन पितेजी पत्रक माध्यमसँ जवाब देलैन जे "तोरा सन बेटासँ आशा तोड़लौं। जइ परिवारमे कहुना-कहुना पाँच हजारसँ ऊपर चाह-पानक खर्च अछि, तैठाम जँ बेटा चाहो-पानक खर्च परिवारक नहि जुमा सकैए, तखन अनेरे ओकर कमाइ छुबे किए करब।"

पिताक पठौल पत्र मोन पड़िते राधारमणकेँ बुकौर लागि गेलैन। जखन पिताक जीवन बेटा आ बेटाक जीवन पिता नहि देख-बुझि सकता तखन दुनूक बीच

सम्बन्ध सूत्र केहेन रहत। पिता-पुत्रक बीच जे विकृतता पनैप चुकल छल तइसँ राधारमण अपन जिनगीमे मोड़ आनए चाहलैन मुदा पीठेपर लिखल माइक पत्र राधारमणकेँ भेटलैन तँ मोड़मे जोड़ दैत अपन विचार बढ़ौलैन। माइक पत्रमे स्पष्ट छेलैन जे एक दिन भिनसरू पहरकेँ, करीब आठ बजे तीनू बापूत माने विलासोदेव सुखदेवो आ वामदेवो, विलासदेवकेँ तीन बेटा, जेठ राधारमण, माझिल सुखदेव आ छोट वामदेव। तीनू बापूत माने विलासोदेव, सुखदेवो आ वामदेवो भीनसुरका अहार चड़ि चुकल छला। चौक-चौराहापर सँ दुनू बेटो माने सुखदेवो आ वामदेवो पहुँच चुकल छेलैन। तीनू बापूतक बीच कचहरी लागल। दरबारक पहिल प्रश्न छल राधारमणक दू हजार रूपैआ महिना पठाएब।

भाए सन मुजरिम भाएकेँ भेटल। जैठाम धियो-पुता बजैए जे राहरिक दालि आ दियाद, माने भाए जेत्ते गलैए तेत्ते सुआदिष्ट बनैए। मुदा असल न्यायाधीश तँ पिताजी भेला। हुनके मुँहमे ने जय-पराजय दुनू अछि। जे अपने राधारमणक जीवन आ विचारसँ ओहिना हटल छला जेना पृथ्वीक दुनू ध्रूव अछि। एक दिस भोलाबाबा जकाँ भाँग-गाँजा पीब सभ मस्त तँ दोसर दिस चण्डी जकाँ लहलहाइतो छेलाए-हे। चौकपर चालि चलनिहार वामदेव रहबे करए। तहूमे छोट बेटा रहने बापक कनी बेसी दुलारू सेहो छेलाए-हे। बुझले अछि जे राज-दरबारमे एकटा बूड़िराज सेहो स्थायी सदस्य दरबारक होइते आबि रहल अछि। वामदेव बाजल- "अहाँकेँ राधारमण भैया की बुझलैन? हम सभ नइ जनै छी जे ओहन-ओहन कुरसीपर लोककेँ बैसते सौनक बून जकाँ लछमी झहरए लगैए।"
वामदेवक मुँहक बात की बुझलैन आकि अपन मनक घावक जलैन जगलैन से तँ विलासदेव जनता मुदा बेटाक प्रस्तावकेँ विलासदेव सोल्होअना विचार करैले स्वीकारि लेलैन। बेसी बहसा-बहसी नहियेँ भेलैन किए तँ तीनू बापूतक

धारा एक्के दिशामे प्रवाहित होइत रहैन। विलासदेव अपन निर्णय करैत बजला-

"जइ बेटापर आशा छल जे कमा कऽ घरकेँ चमकौत तेकरा बुते जखन चाहो-पानक खर्च नहि पुरौल हएत, तखन ओकरासँ केते आशा। वामदेव अखने चिट्ठी तैयार करह जे अहाँ अपन कमाइ अपने राखू। अहाँक कमायक आशा हम नइ करै छी।"

माइक पत्र मोन पड़िते राधारमणकेँ विचारमे छुब्धहीनता जगलैन। चिट्ठीक उपसंहार, माइक देल राधारमणकेँ मोन पड़लैन। लिखल छल-

"बौआ राधा, जखन अराध तखन ने राधा। कियो केकरो भरोसे जन्म नइ नेने अछि, जहिना सबहक दुनियाँ छी तहिना तोरो दुनियाँ छिअ, तँए अपन दुनियाँकेँ अपना नजरिये देखैत चलह।"

माइक विचारकेँ असीरवाद बुझि राधारमण अपन परखल गाम दिस विचार बढ़ौलैन। सीतानाथसँ मोबाइलपर सम्पर्क करैत बजला-

"बौआ सीतानाथ?"

सीतानाथ बाजल-

"हँ, भैया..!"

राधारमण-

"दुनू संगी संग भैयारी नीके छह किने?"

सीतानाथ-

"हँ, भैया। अपना दिसक?"

'अपना दिसक' सुनि राधारमण गुम्म भऽ गेला। गुम्म होइक कारण भेलैन जे तीनू गोरेक बीच, माने अपन, सीतानाथ आ गीतानाथक बीच जे सम्बन्ध अछि माने जइ काजे, तेतबेटा ने तीनूक बीच दुनियाँ अछि। अपने सरकारक जवाबदेह अफसर छी, ओ दुनियाँ अलग अछि। मुदा तीनूक बीच जे दुनियाँ बनबए चाहै छी तैठाम सीतानाथ अपने अपन काजक समाचार नहि कहि,

प्रश्न उन्टा कऽ किए पुछलक। मुदा लगले राधारमणक मन मानि लेलकैन जे सीतानाथ अखन बाल-बोध अछि, तँए एना बाजल। ओकरा सुधारि विचारकेँ अपना जगहपर आनी। सएह सोचि राधारमण बजला-

"बौआ, आइ छअ मास बीत चुकल अछि, अपनो जीवनक गाड़ी ओहिना चलि रहल अछि जहिना कोनो सवार भेल सवारीगाड़ी चलैत रहैए। अपन काजक की रफ्तार छह?"

’काजक रफ्तार’ सुनि सीतानाथ बाजल-

"भाय साहैब, गीतोनाथ आबि गेल अछि। दुनू गोरे सम्मिलिते रूपेँ कहब।"

सम्मिलित रूप सुनि राधारमणक मनमे शान्तिक पड़ाव भेटलैन। शान्तिक पड़ाव ई भेल जे जखने दू मुँहक बात (माने विचार) एकरंग हएत तखने ओइमे शक्तिक संचार शुरू होइ छै। शान्तिक पड़ाव भेटिते राधारमण ऐगला सीमा निर्धारणक चर्च करैत बजला-

"बौआ, साल भरिक समय बनल छल, जे ऐगला साल औझुके दिन पोथी माने ’गामक इतिहास’ समाजक बीच समारोहपूर्वक हाथमे देबैन। समारोह ऐ दुआरे जे पोथी लिखैमे जे-जे समस्या आएल ओहो समाजकेँ जना देब अछि किने। से जँ जना देबैन तखन ऐगला पीढ़ीक जे कर्ता-धर्ता हेता ओ तँ ओते परिचित भऽ गेल रहता किने जे अमुक काज करैमे की सभ समस्या अबैए। खुशीक विचार एकटा आरो भेल जे पिताजीकेँ जे दू हजार रूपैआ महिना दइ छेलिऐन, ओहो लेब छोड़ि देलैन। तँए चाहै छी जे ओइ पाइकेँ अही काजमे लगा देब। तँए पोथी छपबैक समस्याक समाधाने बुझह।"

राधारमणक विचार सुनि गीतानाथ बाजल- "भाय साहैब, अखन हमरा एकटा काज अछि तँए निचेन नइ छी, रातिमे निचेनसँ तीनू भाँइ गप-सप्प करब। ओना, काज प्रगतिक पथपर अछिए मुदा तैबीच किछु बारीक बात एहेन अछि जेकरा वारीकीसँ देखैक अछि। अखन दोसर काजमे मन इंगेज भऽ गेल अछि।"

राधारमण बजला-

"केतेकालमे फ्री भऽ जेबह?"

गीतानाथ-

"भाय साहैब, ओना छी फिरिये मुदा जइ काजमे व्यस्त छी तेकर आयु समाप्त होइपर अछि। तँए ओकरासँ निपैट लेब बेसी जरूरी अछि।"

गीतानाथक बात सुनि राधारमणक मनमे खुशी संचरित भेलैन। खुशीकेँ संचरित होइते विचारक परिपक्वताक दिशा-बोध बुझि पड़लैन। राधारमण बजला-

"बौआ गीता, तोरे समैये समय मुदा जइ काजे गप-सप्प करब, ओकरा कमतर (साधारण) नहि बुझल जाए।"

गीतानाथ बाजल-

"मात्र एक घन्टाक समय दिअ। एक घन्टाक पछातिक समय भेल।"

राधारमण बजला-

"बड़बढ़ियाँ। बौआ सीता, तोहर की हाल छह?"

सीतानाथ बाजल-

"भाय साहैब, जखन अहाँ दुनू गोरे जोड़ा बनि जाएब तँ एकपलियाकेँ के पुछत? अहाँ दुनू गोरेक विचार हमरो मान्य अछि।"

बीचक घन्टा भरिक समय जहिना सीतानाथकेँ तहिना राधारमणकेँ अपन काजक उदेस कर्मशीलताक सीमापर ठाढ़ करैत मनकेँ मथए लगलैन। मने ने सभ किछु छी। चाहे राजा बनाबए कि भिखारी। सीतानाथक विचारमे नव जोड़ एकटा सेहो जोड़ा गेल। ओ जोड़ाएल ई जे जखने गामक इतिहास खोजि निकालब तखने ने ऐगला पीढ़ी खोजी मानि ऐगला खोजी ओहो हएत। इतिहासक पन्नामे पहिल लकीर खीचिनिहार तँ हमहीं सभ ने भेलौं। तहूमे तीन दिशाक तीनू गोरे खोजी छी। तँए, अपन-अपन दिशाक रेमन्त जकाँ ऐगला वाहन तँ भेबे केलौं किने...।

जहिना सीतानाथक मनमे खुशी पनैप रहल छल तहिना राधारमणक मनमे सेहो खुशी होइत रहैन जे पहिने तँ किछु भयंकर बुझि पड़लैन मुदा करैक क्रममे फूलोसँ हल्लुक बुझि पड़लैन...। तँए मनमे खुशी दिनो-दिन बढ़िते जा रहल छेलैन।

गीतानाथ काजमे रमल, राम वनमे जहिना विचैड़ रहल छला तहिना सीतोनाथ आ राधारमणो राम-रमैया कृष्ण-कन्हैयाक नाच नचिये रहल छल।

घन्टा भरि केना बीत गेल, से तीनूमे कियो ने बुझलैन। गीतानाथ बाजल-

"भाय साहैब, काजक तेहेन बँटवारा भेल जे जाँतक तरमे तेना दबा गेल छी जे अपनाबुते निकलल हएत कि नही।"

राधारमण मने-मन बुझै छला जे समाजक एहेन लीला अछि जे महानकेँ हान-हीन बना, हीन-हानकेँ महान बना अजगर साँप जकाँ गेरुली मारि बैसल अछि आ कियो लगमे ऐ दुआरे नहि जाएत जे आँखियेसँ सुरैक लेत। एकाएक राधारमणक मन ओइ सीमापर पहुँच गेलैन जे जिनका नजैरमे रखि इतिहास गढ़ए चाहै छी तिनकासँ छअ मास छिपा कऽ रखलौं। जे उचितो छल, किए तँ करतो ओहने छला जे अनुभवहीन छला, मुदा छबे मासक लग्नक मन काजक बुनियाद गढ़ैक शिष्य बना लेलक। तँए नीक हएत जे आइ समाजक बीच ईहो बातक खुलासा कऽ दिऐन जे हम तीनू गोरे गामक इतिहासक ओतबे अध्यायकेँ क्रियारूपमे लेलौं हेन जेते साल भरिमे कएल जा सकैए। छअ मास बीति गेल आ छअ मास बाँकी अछि, तँए सभ आमंत्रित छी, नव अध्यायो जोड़ैले आ जे अध्याय चलि रहल अछि तेकरो आगूक खोज करैले।

गीतानाथक बात सुनि राधारमण चौअनियाँ हँसी कहियौ आकि दुतियाक चानक मुस्की कहियौ तहिना बिहुसैत बजला-

"बौआ गीता, तूँ अप्पन नामक माने बुझै छहक। गीता भेल महाभारतक ओहन अंश जे गीत गबैत जीवनकेँ महान जीवन बना दइए।"

राधारमणक विचार सुनि गीतानाथक मन जेना गीताक कर्मक मर्म बुझए

लगल तहिना एकाएक मनमे बिजलोका जकाँ चमकल। चमकल ई जे राधारमण सन बेकतीक विचार व्यक्त भेलैन अछि। भाँट-बक्खोक विचार थोड़े छी जे आमक गाछपर महकारी फड़त आ महकारी लत्तीमे आम फड़त। आम तँ अमृत फल छी, ओ आमेक गाछमे फड़ि सकैए। विचारमे गीतानाथक मन तेतेक उदिग्न भऽ गेल जे विचारल कहियौ आकि बिनु विचारल मुहसँ निकलल-

"भाय साहैब, ओना तँ काल्हि धरि यएह बुझै छेलौं जे मनुक्ख सामाजिक प्राणी छी, मुदा आइ...।"

सभ विचारकेँ समटैत राधारमण बजला-

"बौआ, यज्ञ हुअ कि कृत्ति से पैघ हुअ कि छोट, जँ ओकर क्रमवद्ध, सिलसिलेवार ढंगसँ कएल जाए तँ जरूर ओ किछु ने किछु नीक फल दइते अछि। तँए नीक हएत जे जइ समाजक अंग अपना सभ छी, ओइ समाजकेँ सेहो जगबैत कहि दिऐन जे हम तीन गोरे ऐ काजे (गामक इतिहास) अपन विचारसँ आगू डेग रखलौं हेन, जेकरा आइ छबम मास बीत गेल, छअ मासक पछाइत ई पोथी सबहक हाथमे आबि जाएत, तँए बीचक जे समय अछि तेकरा सभ मिलि किए ने उपयोग करी। ओना, काज आंशिके बुझल जाए, किए तँ इतिहास ओहन विषय छी, जे सबहक संग अछि। माने सबहक अपन-अपन इतिहास अछिए। तैठाम तँ गाम गामे छी, गामा सन पहलमानो अछिए। जेकर रंग-रंगक पहल सेहो अछिए। अहाँ ने नट-बोल्टबला पेंच बुझै छिऐ मुदा पहलमानी केनिहारो सहए बुझै छैथ? ओ हार-जीतक पहल करिते छैथ आ ओहने पहल बना पहलमानियोँ करबे करै छैथ।"

समतल मैदानमे घोड़ा जहिना बेसम्हार दौड़ैए तहिना गीतोनाथ आ सीतोनाथकेँ भेल। संगठन रूपी शक्तिकेँ नमन करैत सम्मिलित स्वरे दुनू गोरे बाजल- "भाय साहैब, अपने तँ मने-मन मनक कल्पनाकेँ सपना बना देखि नेने हएब, तँए ओ पहिने कने कहि दिअ।"

ओना, दुनू गोरेक विचार सुनि राधारमणक मन मानि लेलकैन जे विचारणीय प्रश्न तँ अछिए। मुदा ओकर अखन बुझबक अगुताइये की अछि। पछातियो बुझल जा सकैए। जखन घर बन्हैले विदा भेल छी आ आइ फड़कीक टाट बन्हैक अछि, तखन औझुका काजक ने पहिने मन बनाएब आकि मानीथम कि धड़ैन नापब। विचारकेँ रस्तापर अनैत राधारमण बजला-

"बौआ, तोहर विचार मानि लेलौं, मुदा अखन ओ महत्वपूर्ण रहितो आंशिक महत्वक अछि, तँए पछाति ले राखह। अखन पहिने समाजकेँ अपन काजक जानकारी दऽ दहुन। समाजक काज छी, तँए समाजमे सभ मुँह उठाबैथ। सभ चाहैए जे गाम-समाजक लोक चिन्हैथ, मुदा चिन्हो-पहचिन्ह कि कोनो एक्के रंगक अछि। ठको अपन ठकविद्याक परिचय समाजकेँ देनहि रहैए। मुदा बहादुरी तँ ऐ बीचमे अछिए जे ठककेँ सभ जनितो ठकाइत रहैए।"

सीतानाथ बाजल-

"भाय सहैब, जिनगीक नक्शा-खतियानक चर्च छोड़ू। अखन की करबाक अछि तैपर विचार करू।"

अनुकूल आभास देखि राधारमण अपनाकेँ अनुकूल बनबैत बजला-

"बौआ, अखन तीनिये गोरे ने विचारो केलौं आ किछु काजो केलौं हेन। मुदा छी तँ समाजक काज, तँए समाजोकेँ किए ने भागीदार बनौल जाए।"

जोर दैत गीतानाथ बाजल-

"निसचित बनौल जाए। हुनकर खगता माने समाजक इतिहास लेखनमे समाजोक खगता अछिए।"

गीतानाथक विचारकेँ राधारमण गम्भीरतासँ लेलैन। गम्भीर होइत बजला-

"बौआ गीता, हुनकर खगता इतिहास लेखनमे अछि, एतबे नहि बुझक चाही। वएह इतिहास पुरुष छैथ जे इतिहासक सर्जकक संग सृजनहार सेहो छथिए।"

राधारमण आ गीतानाथक बीच होइत गप-सप्पकेँ सीतानाथ दुनू कान उठा-उठा सुनबो करए आ नजैरकेँ कखनो राधारमणपर तँ कखनो गीतानाथक

नजैरियोपर दोड़बैत रहए। मुदा मुँह अवाक रहइ। गीतानाथ बाजल-
"भाय सहैब, सृजन संग सृजनहारक बीच जे सटान अछि तेकरा कनी फरिछा दीतिऐ।"
गीतानाथक जिज्ञासा सुनि राधारमणक जिज्ञासा सेहो बढ़लैन। बढ़ैक कारण भेलैन जे जखने लोकमे बुझैक आ करैक जिज्ञासा जागैए तखने ने समाजमे जगरपन अबैए। मुदा ई तँ जिनगी भरिक छी, तेकरा केना एक्के दिनमे समेटि लेब। मुस्कान दैत राधारमण बजला-
"बौआ गीता, सभसँ पहिने अपन बेकतीगत जीवन आ अपन दायित्वकेँ बुझक चाही। बेकतीगत जीवनक दू माने अछि, पहिल पारिवारिक दोसर अपन जीवनकेँ आगूक जीवनमे संचरित करब, जइ बनबैले नबे प्रतिशत माने पनरहअना अपन समय कियो अपनामे समर्पित किए ने करैथ, मुदा मात्र दस प्रतिशत माने एकअना जँ समाज ले सेहो समर्पित करैथ तँ बेकतीगत जीवन सेहो सामाजिक जीवनमे संचरित होइते अछि, वएह भेल अपन दायित्व।"
ओना, राधारमणक विचार जहिना सीतानाथ तहिना गीतोनाथ नीक जकाँ नहि बुझि पेलक। जइसँ मन अकछाए लगलै। मुदा कोनो काजक विषय पर गप-सप्प करैले सभ बैसल छल, तँए काजकेँ अगुअबैत सीतानाथ बाजल-
"भाय साहैब, ने अहाँ केतौ पड़ाएल जाइ छी आ ने हमहीं सभ केतौ पड़ाएल जाइ छी। तँए अखन आगू-पाछूक गप-सप्पकेँ छोड़ि अखुनका जे काज अछि तैपर विचार करू।"
अपन सीमापर सीतानाथकेँ ठाढ़ होइत देखि राधारमण टिक-टिप्पैन छोड़ि बजला- "तीनू गोरेक जे जिम्माक काज अछि, माने आंशिक इतिहासक रचना, तइमे अपन जे भार पुरलौं से सुना दइ छी।"
बिच्चेमे राधारमणकेँ रोकैत गीतानाथ बाजल-
"भाय साहैब, जहिना अहाँकेँ गामक इतिहास तकैक भार अछि तहिना ने हमरो गामक सम्पैतिक (आर्थिक) इतिहासक खोज करैक अछि आ

सीतानाथकेँ सेहो गामक आएल-गेल पाहुन-परकसँ लऽ कऽ अखन तकक जेते लोक छैथ हुनको करनी-धरणी तकैक भार तँ अछिए। जहिना अहाँ अपन भार सभकेँ सुनेबैन तहिना ने छअ मासक वृतान्त हमहूँ सभ सुनेबैन तँए शॉर्ट-कटमे समयकेँ देखैत बजियौ।"

गीतानाथक विचार राधारमणकेँ नीक लगलैन। नीको केना ने लगितैन। जखने लोक एक-दोसरक बीच अपन पेटक बात बजए लगैए तखने ने ओकर हृदयक संग आत्माक विचार सेहो दहलए लगै छइ। राधारमणकेँ सेहो तहिना भेलैन। बजला-

"छअ मासक बीच सरकारक जेते कार्यालय अछि तइमे नाम-मात्र गामक लिखित शेष अछि। तइमे जेते ताकि सकलौं तेतेमे जे भेटल से सुना दइ छी। आगू जँ किछु नवो कागजात भेटत तँ ओकरा ऐगला पन्नामे जोड़ि देबइ।"

राधारमणक विचार गीतानाथ नीक जकाँ नहि बुझि पेलक। बाजल-

"से केना हएत भाय साहैब?"

राधारमण बजला-

"बौआ, इतिहासोक ने इतिहास अछि। जहिना सासुकेँ सासु सेहो भेलैन आ ससुरकेँ ससुर तहिना इतिहासोक इतिहास अछि किने? मुदा तइमे एतेक अन्तर तँ अछिए जे सासुकेँ सासु आ ससुरकेँ ससुर भेल इतिहास अछि आ अपने सासु आकि ससुर बनब भविसक पेटमे अछि।"

राधारमणक विचार गीतानाथ आधासँ बेसी बुझलक मुदा सोल्होअना नइ बुझने मन कनी-कनी झुझुआइते रहलै। मुदा मुख्य विचारकेँ तर पड़ैत देखि अपन विचारकेँ मने-मन तर केलक आ बाजल-

"भूल-चूक लेनी-देनीमे जे छुट-छाट हएत ओ पछाइत मुँह-मिलानी कऽ लेब। अखन जे आवश्यक कहब अछि ओ सभकेँ कहि दियौन। किए तँ जिनगीक कोनो ठेकान अछि, जखन जिनगियेक ठेकान नहि अछि तखन जिनगीक लीलाक कोन ठेकान। मुदा जीवनो तँ जीवन छी ओही बेठेकान जीवनमे ने

अपनो ठेकनगर जीवन केतौ-ने-केतौ घोंसिया कऽ रखनहि अछि।"

गीतानाथक विचार सुनि राधारमणक मन बिहुसि उठलैन, बजला-

"बौआ, तीनटा सूत्र गामक भेटल अछि। तइमे दूटा सरकारक खजानासँ भेटल अछि आ एकटा जनश्रुतिसँ माने जनमानससँ। पहिने सरकारी सूत्र सुना दइ छिअ पछाइत जनश्रुति सुनेबह।"

ओना, सीतानाथ किछु बाजि तँ नहि रहल छल मुदा गाँजा-भाँग (माने चीलम) पीनिहार जहिना दम मारि मुँहक निशाँएल धुआँकेँ मने-मन घोंटए लगैए तहिना विचारकेँ घोंटि रहल छल। तैबीच गीतानाथ बाजल-

"भाय साहैब, शुभ-काजमे बिलम्म भेने अशुभ होइक सम्भावना बनए लगैए तँए आब..?"

राधारमण बजला-

"बौआ, अपन गामक जन्म आठमी शताब्दीमे दू गोरेकेँ गाममे बसलासँ भेल।"

आजुक परिवेशकेँ देखैत सीतानाथ बाजल-

"दुनू एक्के जाइतिक छला?"

राधारमण-

"नहि। ओइ समय दुनूक बीच जाति भेद नहि छेलैन। अपन जीबै-जोकर उपाय करब आ धारक पानि पीब, यएह दुनूक जीवन छेलैन। ओना, ओइ समय अपन गाम गामक श्रेणीमे नहि छल, किए तँ जैठाम पचीस घरसँ बेसी छल ओकर गिनती गाममे होइत रहइ। तइमे तीन-तीन साए परिवारक गाम सेहो छल।"

अचम्भित होइत गीतानाथ बाजल- "आ दोसर?"

राधारमण बजला-

"दोसर अछि सर्वेक। जे 1890 इस्वीसँ लऽ कऽ 1902 इस्वीमे भेल। तइमे अपन गाम बनि गेल आ नक्शा खतियान तैयार भऽ गेल।"

राधारमणक विचारक प्रवाहमे गीतानाथकेँ प्रवाहित होइते मुँह फुटि पड़ल-

"वाह।"

विचारक भारकेँ कम करैत राधारमण बजला-

"जनश्रुत बहुत रास अछि तँए खेसारीक खेतमे जहिना अकटा-मिसिया उजाड़ब सुतिपना अछि तहिना अछि। तँए एकरा निचेनसँ दोसर दिन कहबह। ओना, लिखिकऽ तैयार कऽ नेने छी तँए पढ़ैक मन हुअ तँ लिहह।"

सीतानाथ बाजल-

"भाय साहैब, हल्लुक सवार घोड़ा फौद मारैए। एते दिन नइ बुझै छेलिऐ तँए गाम हल्लुक बुझि पड़ै छल, मुदा लोकक वृतान्त जखन खोजए लगलौं आ आएल-गेलकेँ तकै दिस बढ़लौं कि ठक-ठक गोपाल जकाँ भऽ गेलौं।"

सीतानाथक मुहसँ 'ठक-ठक गोपाल' खसिते गीतानाथ बाजल-

"भाय, सम्पैतिक खेल तँ आरो मदारियो नाचसँ बदतर अछि।"

राधारमण बुझि रहल छला। बजला-

"लागल रहह..!"

(जारी---)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१०.जगदीश प्रसाद मण्डल-सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल (लघुकथा)



जगदीश प्रसाद मण्डल

सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल

जेठ मासक दसराहा माने दसमी तिथिक शुक्र दिनक भिनसुरुका समय। चाहक प्रतीक्षामे निर्मल बाबा दलानक ओसारक चौकीपर बैसल अँगनमुहाँ देखि रहल छला। औझुका काजक बोझ माथकेँ दबने छेलैन। अप्पन गाछी-कलमक ताक-हेरक संग आइ समाजक उत्सव सेहो छीहे, तँए ओहूमे भाग लेबेक अछि। भाग लेबेक अछि- क माने जिज्ञासा रहित नहि बुझब, अपनो जिज्ञासा छैन्हे जे समाजक बीच जे कोनो उत्सव अछि ओ सभक उत्सव छीहे, तँए अपनो उत्सव भेबे केलैन। ओना, निर्मल बाबाक मनमे दोसरो विचार जगि चुकल छेलैन ओ छेलैन जे किछु बर्खसँ, परिवेशमे बहुत बदलाव आएल अछि, लोको सभ केते आएल आ केते गेबो कएल तँए आजुक जे दृश्य अछि तेकरा ढंगसँ देखब अछि।

ब्रह्मस्थान कहियौ कि डिहवारक स्थान आकि गाम-देवताक स्थान, जइमे आइ लोक घोड़ा चढ़ौत। अखनो आ किछु बरख पूर्वो तक परिवारक कुमार बच्चा,

माने बिनु बिआहल बच्चा अपन माइक संग जाइ छल आ गाम-देवताक स्थानमे घोड़ा चढ़ेबो करै छल आ चढ़ैबतो अछि। चङेरामे माटिक घोड़ाकेँ साजि माए फूल-पानक संग ब्रह्मस्थान जाइ छैथ आ बच्चा हाथकेँ बेरा-बेरी सभ किछु दइ छथिन आ बच्चा ऐगला वाहन बनि अपन घोड़ाकेँ पैछला घोड़ाक आगूमे सजबै छैथ। ऐठाम एकटा बात आरो अछि, ओ अछि एक्के स्थानक तीन नाम। ब्रह्मस्थान, डिहवार स्थान आ गाम-देवताक स्थान। मुदा अखन से नहि, अखन बस एतबे जे घरसँ घोड़ा सजि केना ब्रह्मस्थान पहुँच रहल अछि, बस एतबे जिज्ञासा निर्मल बाबाक मनमे छैन। ईहो नइ मनमे छैन जे जैठाम माइक माथपर सजल घोड़ा कुमार बच्चाक हाथे चढ़ैए तैठाम परदेशी युवक-जहान आ गामक नवयुवकक सेहो संख्या बढ़ि गेल अछि तैसग घोड़ाक (चढ़ौआ घोड़ाक) सवारी सेहो बदैल रहल अछि। गमैया साइकिल तँ कम्मो-सम्म मुदा मोटर साइकिल आ इंजनबला चरिचकिया गाड़ीक संख्या बढ़िये गेल अछि। जइपर सजि कुम्हारक बनौल माटिक घोड़ा ब्रह्मस्थान पहुँच रहल अछि। से अप्पन आँखिये निर्मल बाबाकेँ देखैक छैन। मुदा चाह पीने बिना दरबज्जापर सँ उठबोकेँ नीक नइ बुझि रहला अछि। तहूमे जीवन भरि पत्नीक बुझल वृत्ति छैन्हे, तेकरो छोड़ब उचित नहि बुझि रहला अछि।

पत्नीक वृत्तिक माने एतबे अछि जे सुलछमी दादी, जिनकर उमेर साठि बर्खसँ ऊपर भऽ गेल छैन, बेटी जखन चेष्टगर भेलैन तखन भनसाघरक आधा काजक भार सुमझा देलखिन आ जखन पुतोहु एलैन तखन सोल्होअना भनसाघरक भार बेटी-पुतोहुकेँ सुमझा देलैन, मुदा पतिव्रत कहियौ आकि पत्नी धर्म, ऐठाम पतिव्रतक माने भनसियाक व्रत बुझू, से अखनो सुलछमी दादी अपने हाथे निमाहै छैथ। ओ व्रत छी जे पतिकेँ भिनसुरुका पहिल चाह कहियौ आकि दिनक पहिल बेरक चाह अपनेसँ बनाकऽ पिआएब। कोनो सार्वजनिक स्थल हुअ आकि बेकतीगत जीवन, जीवनक पहिल कदमक महत्व अछिए।

मने-मन निर्मल बाबा अप्पन गामक चौबट्टीकेँ ठिकिया मन असथिर केलैन।

समाज दिससँ ससैर निर्मल बाबाक मन अप्पन जीवन दिस एलैन। अबिते जहिना खेतमे धान फुटैए तहिना निर्मल बाबाक मनक विचार फुटलैन। विचार फुटिते धानक लावा जहिना खापैड़सँ चनचना कुदैए तहिना निर्मल बाबाक मुहसँ निकललैन-

"सिहन्ता-सिहन्ते रहि गेल.!"

ओना, असगरेमे बैसल निर्मल बाबक मुहसँ निकललैन मुदा तैबीच सुलछमी दादी चाह नेने लगमे पहुँच गेली, तँए ओहो सुनलैन। सुनिते सुलछमी दादीक मनमे भेलैन जे भऽ सकैए हमरा देखिकऽ पति बाजल होथि, तखन जँ दोहराकऽ नइ पुछऐन सेहो केहेन हएत, मुदा मनमे ईहो होनि जे जाबे मुँहक आहार मुँहमे नइ लेता ताबे किछु पुछब आकि कहब उचित नइ हएत। किए तँ अपने कानक सुनलो आ मनक पढ़लो एकटा कथा हुनका मनमे नचलैन। युग-युगक युगकर्त्ताक खेल चलबो कएल अछि आ चलितो तँ आबिये रहल अछि। कथा अछि, एकटा गामकेँ चौबगलीक पाँच कोसक गामक लोक कहए लगल जे भोरे-भोर जे ओइ गामक नाओं लेत ओकरा भरि दिन अन्नक भोग नइ हेतइ। किए कहए लगलै से अखन नहि, अखन बस एतबे जे चारूकातक लोक कहितो आबि रहल अछि आ कहबो केलक। गाममे एकटा वैज्ञानिक भेला। हुनको कानमे एहेन प्रश्न देल गेलैन। प्रश्न एला पछाइत वैज्ञानिकजी पहिल दृष्टि सँ जखन तजबीज केलैन तँ हुनका सोल्हन्नी तखन अनसोहाँत बुझि पड़लैन। मुदा जखन समाजक विचारक परम्परा दिस तजबीज केलैन आ परम्परा रोकैक शक्ति अपनामे अँटकारलैन तखन बुझि पड़लैन जे जेतबो मान-सम्मान पेलौं अछि सेहो चलि जाएत.! असमंजसमे पड़ल वैज्ञानिकजी जी-जाँति कहियौ आकि जी-तोड़ि, बजला-

"एहेन विचार सोल्होअना सत्य अछि।"

बजैक क्रममे वैज्ञानिकजी बाजि गेला, आब ओकरा प्रयोगशालामे प्रयोग करि कऽ निर्णय कएल जाएत। गामक जेते गाछी-कलम अछि तइमे सभसँ बेसी

कोन गाछपर चिड़ै रहैए। किछु किस्मक गाछ गाम-घरमे अखनो ओहन अछिए जैपर चिड़ै बेसी बइसैए। ओही गाछक नियुक्ति भेल। गामक लोकक बीच ने फूसि हएत मुदा अनगौंआँक समर्थन भेटने तँ फुसियो सत्य हेबे करैए। गामक नवयुवक चूड़ा-दही-चिन्नी-केरा इत्यादिक ओहन भोजनक ओरियान केलैन जेहेन अनगौंआँ अतिथि-अभ्यागतकेँ भोजन करौल जाइए।

तेसर दिन भने एकटा अनगौंआँ अपना गामसँ आन गाम जाइ छला। बीचक गाममे प्रयोगशाला बनल अछि। नवयुवक सभ हुनका पकैड़ गाछक निच्चाँ ठाँउ कऽ नारक बीड़ीपर बैसा भोजनक सभ विन्यास परसलैन। भोजन करैसँ पहिने युवक सभ कहलकैन- "भोजनक सब विन्यास आगूमे अछि, आब ओइ गामक नाम लइमे माने जइ गामक नाम लेलासँ अन्नक भोग नइ होइए, कोनो हर्ज नइ ने?"

अनगौंआँ बजला-

"जाबे मुँहमे अन्न नइ लेब ताबे तक नाम नइ लेब। तखनो तक कोनो आशा नहि।"

युवक सभ बलजोरी गट्टा पकैड़ कहलकैन-

"आब बाजू।"

जखने अनगौंआँ अभ्यागत ओइ गामक नाम लइ गेला, जइ गामक नाम लेलासँ अन्नक भोग नइ होइए कि तखने गाछक ऊपरसँ एकटा कौआ चट कऽ देलक। चट करिते अनगौंआँ अभ्यागत बजला-

"देखलिऐ.! आब अहाँ सभ भरि दिन भूखल राखब किने।"

चारि-पाँच घोंट चाह जखन निर्मल बाबा पीलैन तखन सुलछमी दादी बजली-

"की बजलिऐ जे सिहन्ता सिहन्ते रहि गेल?"

चाह अप्पन रंग निर्मल बाबाकेँ पेटसँ देखबए लगलैन जइसँ मन फुहराम जकाँ भइये गेल रहैन। निष्कपट रूपमे बजला-

"सिहन्तासँ रोपल दूटा आमक गाछ अछि। भरिसक अहूँकेँ मोने हएत जे छठम

साल पूसाक किसान मेलासँ अनलौं।"

एक तँ ओहुना पत्नीमे एहेन अभ्यास बनियेँ जाइए जे बिनु विचारनौं हँ-मे-हँ मिला दइते छैथ, तहिना सुलछमी दादी हूँहकारी भरैत बजली-

"हँ से तँ अननहि रही।"

कोनो घटनाक एक्को अंश भेटने लोक काल्पनिक घटना गढ़िये लइए, तहूमे जैठाम सनेस रहत तैठाम तँ आरो मजगूतीक संग गढ़ल जाएत। निर्मल बाबा बजला-

"ओहीठाम सँ ने दूटा आमक गाछ अनने रही आ कहने रही जे साल भरिक पछाइत जखन गाछ फड़ए लगत तखन बारहो मास आमो आ आमक चटनी सेहो खाइत रहब।"

आमक अँचारक चर्च ऐ दुआरे नइ केलौं जे बीस-बीस बर्खक आमक अँचार योगनी दादी-काकी सभ घरमे रखनौं रहै छैथ आ साले-साल बनैबतो छथिए। जहिना अँचार तहिना घीबोक अछि, चालीस-पचास बर्खक पुरान घी भेटिते अछि। खाएर से अखन नहि।..सुलछमी दादी बजली-

"हँ, तेकर की?"

पत्नीक प्रश्न सुनि निर्मल बाबाकेँ परबा-पौरुकी जकाँ दम घूटए लगलैन। दम ई घूटए लगलैन जे अप्पन हारल दाउ बाजी कि नइ बाजी। निर्मल बाबा ओहन अखड़ाहा परक पहलवान छैथ नहि जे बुझि पौता जे नीको अधला होइए आ अधलो नीक होइए। ई तँ मनक विचार कहियौ कि शब्दक खेल कहियौ, से छी। सभ जनिते छी जे तिलकोर आ कुरली एक्के वंशक लत्तीनुमा गाछ छी। जहिना तिलकोरक तहिना कुरलीक लत्तीक जड़ि उज्जर होइए आ तहिना लत्तीक बढ़वारियो दुनूक एक्के रंग अछि आ जहिना पत्ताक रंग-रूप, आकार-प्रकार एकरंग अछि तहिना फूलो-फड़क अछिए। मुदा एकटाक पात खाएल जाइए आ दोसराक फड़। कहब जे एना किए अछि, से तँ ओइ लत्तीकेँ पुछियौ जे तोहर फड़ मीठ आ पात तीत किए होइ छह आ दोसराक पाते किए मीठ

होइए आ फड़ तीत।

मुदा निर्मल बाबाक मनमे जे हारल सन बुझि पड़ि रहल छैन तेकरा काजक डोरिसँ बान्हि बजला-

"जड़ियेसँ कहि दइ छी, अहाँकेँ अखन तक सभ बात कहबो ने केलौं आ जे कहलौं से मनो हएत कि नहि।"

भाय, जहिना पत्नीक विचार सुनैले पतिकेँ आ पतिक विचार सुनैले पत्नीकेँ, सभक मनमे जिज्ञासा होइते छैन तहिना सुलछमी दादीकेँ सेहो भेलैन। बजली-

"कनी सेरियाकऽ बाजब, ई नहि जे नख-शिख वर्णन नहि कए ऊपरे-झापड़ बाजि, माने शिखे-नखक वर्णन कए पछाइत पुइछ दी जे नीक जकाँ बुझलौं कि नहि?"

पत्नीक विचार सुनि निर्मल बाबाक मनमे पाथरक अमृत रस जकाँ माने शिलाजीत जकाँ सुअदगर विचारसँ भेँट भेलैन। शिलाजीतक रस जे पानियेँ जकाँ अछि तँ की ओ मक्खनक फटौन-पानि थोड़े हएत। हीय खोलि निर्मल बाबा बजला- "तीन तरहक बैसार पूसाक किसान मेलामे भेल छल, एकटामे अन्नक चर्च चलल, दोसरमे तीमन-तरकारीक आ तेसरमे फल-फलहरीक। अहूँ जनिते छी जे अपने फल-फलहरीसँ विशेष सिनेह अछि आ ओइसँ कम सिनेह तीमन-तरकारीसँ आ तहूसँ कम अन्न-पानिसँ अछि।"

सुलछमी दादीकेँ निर्मल बाबाक विचार सुनैमे नीक लगलैन। नीक किए लगलैन से तँ ओ अपने बुझती मुदा तेसर माने आन तँ यएह ने बुझत जे जीवनमे कहियो सुलछमी दादीकेँ फल-फलहरी वा तीमने-तरकारी वा अन्ने-पानिक दुख नइ होइ छैन, तँए हुनकर मन सदिकाल अरबा चाउरक बसिया भात जकाँ फरहर रहबे करै छैन, सुलछमी दादी बिहुँसैत बजली-

"अहीं पेब ने सब किछुसँ सम्पन्न परिवार अछि।"

एक तँ अप्पन जीवनक चोट खाएल निर्मल बाबाक मन रहबे करैन, तँए होनि जे जोर-जोरसँ बाजी जे सपना सपने रहि गेल, मुदा रहैथ तँ दुइये गोरे। दू

गोरेमे लोक कनफुसकियोसँ काज चला लइए, तैठाम जोरसँ बजैक कोन खगता अछि। कमो-जोरसँ लोक सत्य बात बजैए आ सोझा-सोझी जोरोसँ बजिते अछि।

जहिना कल्पनाकेँ थुथुनो नमगर होइए आ नाङैर सेहो नमगरे होइए तहिना सपनाक सेहो दुनू नमगर-चौड़गर होइते अछि। निर्मल बाबा बजला-

"अहाँ एतबेमे परिवारकेँ सम्पन्न बुझै छी। जेना अपने सुनलौं तँ सुनिकऽ पाँच साए रूपैआमे दूटा बरहमसिया आमक गाछ कीनिकऽ आनि रोपिकऽ सेवा केलौं आ आइ जेठक दसराहा छी, जँ एकोटा आम पाँच बर्खक बीच भोग भेल रहैत तँ संतोष होइत। ओ सम्पन्नता तँ परिवारमे नहियेँ आएल।"

ओना बजैक क्रममे निर्मल बाबा बाजि गेला मुदा पछाइत अपने मोन पड़लैन जे भूगोलक दृष्टिसँ खेतीक काज ठानब उचित छल, मुदा से नहि भेल। आब तँ यएह ने उचित जे आजुक भौगोलिक परिवेशकेँ देखैत क्रियाशील होइ। ओना, जीबठगर लोक पाथरोपर दुभि जनमैबते छैथ आ भविष्यमे सेहो जनमेबे करता।

संयोग बनल, तहीकालमे रास्ता धेने अपने झंझारपुर जाइत रही कि निर्मल बाबा देखलैन। देखिते दरबज्जेपर सँ शोर पाड़ैत बजला-

"रमाकान्त, कनी सुनि लएह तखन जइहह।"

ओना, रही अपने अगुताइमे मुदा निर्मल बाबाकेँ सभ दिनसँ श्रेष्ठ बुझैत आबि रहल छिऐन तँए ठाढे-ठाढ़ सुनैक विचार मनमे रोपि लगमे पहुँचते बजलौं-

"की कहै छी बाबा?"

जेना पाशापर माने जीवनक पाशापर निर्मल बाबा हारि रहल छला तहिना मन तीताएल छेलैन। मुदा मनमे एते तँ छैन्हे जे केकरा लग केहेन शब्द केहेन भावमे बाजी। बजला-

"रमाकान्त, मरब की जीब तेकर कोनो ठेकान नहि अछि, अप्पन जीवनक घटल घटना एकटा अछि से पहिने सुनि लएह, पछाइत आगू बढ़िहह।"

निर्मल बाबाक विचार सुनि अपनो मनमे नव जिज्ञासा जगल जे जीवन केकरो किए ने होइ मुदा जीवन तँ जीवन छी। तहूमे मनुक्खक जीवनक घटना छी, कहियो ने कहियो खगता हेबे करत। बजलौं-

"बाबा, बेसी आहे-माहेमे नइ कहियौ, कनी अगुताएल छी। मुदा अगुताइमे एहनो विचार नइ छोड़ि देबै जइसँ विचारे घवाह, घवाह माने अधबुझू, भऽ जाए।"

अप्पन मनक सभ बात बजैक जगह पेब निर्मल बाबा बजला-

"रमाकान्त, तोरासँ परोछोमे पत्नीकेँ किछु बात कहि देने छिऐन, मुदा ओ पारिवारिक भेल। जड़ियेसँ कहि दइ छिअ।"

कोनो घटना वा काजकेँ जड़िसँ छीप धरि सुनिकऽ गुनबे ने बुधिक (ज्ञानक) गुनब भेल। मने-मन मनकेँ ब्लैक बोर्ड जकाँ साफ करैत बजलौं-

"कहियौ?"

निर्मल बाबा बजला-

"तोहूँ देखै छह रमाकान्त जे अनका जकाँ मनमे अखनो माने साठि बर्खक उमेर बितला पछातियो, मनमे नइ आएल अछि जे आब जे कोनो फल-फलहरीक गाछ रोपब, तँ अपनो भोग हएत कि नहि, तँए रोपबे ने करब। शुरूहेसँ सभ दिन मनमे एहेन धारणा बनले अछि जे सभ दिन किछु-ने-किछु नव लगाबी। तँए पाँच बरख पूर्व जखन फल-फलहरी भोजनक गुण बुझलौं तखन ठिकियाकऽ किसान मेलामे पूसा पहुँचलौं।"

ओना, पूसाक किसान मेलामे भाग लेबाक इच्छा अपनो मनमे केते दिनसँ अछि मुदा कुसंयोग एहेन होइत रहल जे अखन तक नहियेँ जा भेल अछि। बजलौं-

"मेलामे की सभ देखलिऐ, बाबा?"

निर्मल बाबा निष्कपट भावमे बजला-

"देखै-सुनैक की कोनो ठेकान रहल, बहुत लोको देखलिऐ आ खेती-वारीक

बहुत गाछ-बिरीछ, बीआ-बाइल सेहो देखलिऐ मुदा से सभ कथीले। अपने दूटा बरहमसिया आमक गाछ कीनलौं। मन सपनाएले छल जे बारहो मास जखन आम सन फल भेटत तखन जीवनमे खगते की रहि जाएत।"

आगूक बात बुझल रहैत तखने ने से तँ छल नहि, तँए बजलौं-

"अहाँ तँ बाबा कमाल कऽ देलिऐ। तेहेन ठिकिया कऽ गोटी चाललौं जे एक्के गोटीमे पार भऽ जाएब।"

अपना जनैत नीके बात बाजल छेलौं मुदा निर्मल बाबाकेँ नीक नइ लगलैन। बजला-

"की गोटी चालब, सभ पानिमे चलि गेल।"

बजलौं-

"से केना बाबा?"

निर्मल बाबा बजला-

"तोहूँ बजार जाइक धड़फड़ीमे छह आ अपनो बजैमे संकोच होइए, एतबे बुझह जे आइ जेठक दसराहा छी, ओना लोक बरिसाइते दिनसँ आम खाएब शुरू करै छैथ, मुदा अपना पाँच बरख पूर्वक सिहन्ता अखनो सिहिन्ते बनल रहि गेल अछि।"

बजा गेल-

"से केना बाबा?"

निर्मल बाबा बजला-

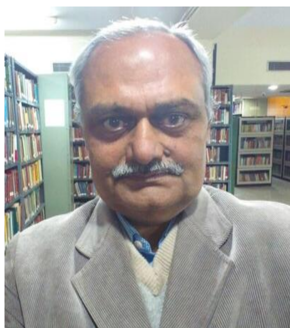
"निचेनमे दोसर दिन जड़िसँ छीप धरि सबटा सुना देबह।"

अकछाइत निर्मल बाबाकेँ देखि बजलौं-

"अखन जाइ छी बाबा, मुदा सुनब बाँकी रहल।"

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.११.रबीन्द्र नारायण मिश्र-बदलि रहल अछि सभकिछु (उपन्यास)- धारावाहिक



रबीन्द्र नारायण मिश्र

बदलि रहल अछि सभकिछु (उपन्यास)- धारावाहिक

खण्ड ६-१०

बदलि रहल अछि सभकिछु

6

"इनकिलाब! जिंदाबाद !!देबन बाबू जिंदाबाद! नेताजीक जय!"
एहि प्रकारक नारा सौंसे इलाकामे लागि रहल छल । चारूकात विजयोल्लास पसरि रहल छल । खुजल जीपपर नेताजी,अबीरसँ पोताल बीचमे आ हुनकर काते-काते कैकटा सम्मानित लोकसभ ठाढ़ छलाह । नेताजी कल जोड़ने ,मुस्की दैत सभक अभिवादन स्वीकार कए रहल छलाह । हुनकर खुजल जीप मंद-मंद गतिसँ आगू बढ़ि रहल छल । नेताजीक पाछू-पाछू सौंसे टोलक

लोकसभ करमान लागल छल । नेताजीक काफिला एक टोलसँ दोसर टोल दिस बढ़ैत रहल । लोकसभ ओहि काफिलासँ जुड़ैत रहल । एहि तरहें एकट्ठा भेल लोकसभ इसकूलक मैदानमे जा कए जमा भेल । ओतए एकटा विशाल मंच बनल छल । ओकर बीचमे नेताजी जा कए ठाढ़ भेलाह । हुनकर दुनू कात समर्थकसभ विजयी मुद्रामे विद्यमान छलाह । मंचक सामनेमे विशाल मानव समुद्र उपस्थित छल । सभक मोनमे उत्सुकता,सभक मोनमे इनाम भेटबाक जिज्ञासा। कहल गेल रहैक जे आइ नेताजी मंचपरसँ पथिआक-पथिआ दामी चीज-वस्तुसभ बँटताह । अपन समर्थकसभक प्रति कृतज्ञता व्यक्त करबाक हेतु हुनका द्वारा कएल जा रहल एहि तरहक ई अभिनव प्रयोग छल। अन्यथा, पहिने तँ चुनाओ जीतलाक बाद ओ कतए निपत्ता भए जाथि तकर कोनो ठेकान नहि ।

गाम-गाम नेताजीक विजय रथ घुमाओल गेल । इसकूलक मैदानमे भाषण भेल । रातिमे इलाका भरिक लोकक सभजाना भोज भेल । सभ आनंदमे छल । चुनाओसँ पहिने भेल दुर्घटनाक बात तँ छोड़ू,ओहिसँ पहिलुका नेताजीक सभ गलती जेना जनता जनार्दन बिसरि गेलथि । बिसरबो कोना नहि करितथि । एक सप्ताहसँ दिन-राति मंगनीक जलखै,चाह,भोजन आ साँझक भरिपोख दारूक ओरिआन कएल गेल छल । तरह-तरहक नाच-गान सेहो भेल । कहक माने जे की-की ने भेल । एतबोपर जँ लोक भोट नहि दैत तखन तँ कृतघ्नते ने होइतैक । से लोकसभ अपन लाज रखलक,नेताजीक मान रखलक । सभ किछु ओहिना भेल जेना नेताजी चाहलथि ।

चुनाओ संपन्न भेल । नेताजीक दल-समग्र विकास दल (एसभीडी) पूर्ण बहुमतसँ सरकार बनाबए जा रहल छल । टेलीवीजनसँ ई समाचार वारंबार प्रसारित भए रहल छल । हम स्वयं समाचार देखि नहि सकैत छलहुँ । जहलमे हमर कोठरीक सामने तैनात पुलिस सभटा समाचार हमरा दैत रहत छल । नेताजी स्वयं अपार बहुमतसँ ओ सीट जीति चुकल रहथि । जनतंत्र जीति

रहल छल । जनक्रान्ति दल(जेकेडी)हारि गेल छल। बाह रे जनता! बाह रे नेता!

चुनाओक बादक लड़ाइ तँ शक्तिपुरममे हेबाक छलैक। ताहिमे तँ नेताजी माहिर छलाहे । ओ शक्तिपुरम पहुँचलाह । दू दिनक बाद रविदिन साँझमे शपथग्रहण समारोह छैक । से बात हुनकर जनतबमे अएलनि । जतेक मुँह ततेक तरहक बात । के-के सलाहकार बनत? जे केओ बनए नहि बनए मुदा नेताजीक नाम तँ पक्का छलनिहे । से तँ हुनका चुनाओसँ पहिने अलाकमान कहि देने रहनि। बस दसटा जन प्रतिनिधि चाही जे हुनकर पाछू-पाछू चलैत रहए।

"मुदा हम तँ आब बहुत वरिष्ठ छी । हमरा तँ आब राज्यप्रमुख बनेबाक चाही ।"

"मुदा अलाकमान अहाँक बात बूझए तखन ने । ओतहु तँ तरह-तरहक घनचक्कर छैक । सुनैत छी राज्यप्रमुखक हेतु एकदम नव जन प्रतिनिधिकेँ नाम आगू चलि रहल छैक । सलाहकारक हेतु सेहो नवकेसभक नाम छैक ।"

"से किएक?"

"पुरना नेतासभ मरि गेल की?"

एहि बेर जखनसँ नेताजी शक्तिपुरम पहुँचलाह,हुनकर बामा आँखि बहुत जोरसँ फरकि रहल छनि । लाख प्रयास करैत छथि आँखिक फरकब कमे नहि भए रहल छनि । बेर-बेर हनुमानजीक ध्यान कए रहल छथि । शक्तिपुरम टीसन लग हनुमान मंदिर लगसँ जाइत रहथि तखनहि बहुत जोरसँ बामा आँखि फड़कि गेल रहनि। बहुत जोरसँ हनुमान चालीसा पढ़ए लागल रहथि । कार रोकि देलखिन । भेलनि जे हनुमानजीक दर्शन केनहि चली । जँ कोनो असगुन भेल होएत ,किंवा हेबाक होएत तँ ओ रोकि लेताह । नेताजी कारसँ उतरलाह । हुनका संगे-संगे हुनकर अंगरक्षक सेहो चलि रहल छल । एक सोड़हि प्रसादक डिब्बा कीनि लेलनि । अंगरक्षक मिठाइक डिब्बा धेलक । आगू-आगू

नेताजी आ पाछू-पाछू हुनकर अंगरक्षक प्रसादक डिब्बासभ लेने चलि रहल छल । ताबतेमे पाँतिमे आगू ठाढ़ एकटा मोछिअल बड़ी जोरसँ छिकलक। नेताजीक तँ होस उड़ि गेलनि । मंदिरोमे इएह हाल भए रहल अछि । दर्शनक पाँति नमगर छल । ओहिठाम नियमसँ काज होइत छैक से हुनका बूझल रहनि । तथापि,ओ पाँतिमे ठाढ़ भए गेल रहथि । मुदा ततेक लोक पाँतिमे आगू छल जे हुनकर नंबर आबएमे दूपहर भए गेल । दर्शन केलाक बाद ओहिठाम उपस्थित लोकसभकेँ अपने हाथे प्रसाद देलथि । तकरबादे अपन डेरा पहुँचलाह । सोचने रहथि जे हनुमानजी सभटा सम्हारि लेथिन। से तँ ठीके । मुदा साँझ होइत-होइत मीडिआमे सलाहकारसभक जे सूची बहराएल ताहिमे हुनकर नाम नहि छलनि । एकछाहा नवतुरिआसभकेँ सलाहकार बनाओल जेबाक समाचार आबि रहल छल। सलाहकारक सूचीमे सँ पुरना नेताजीसभ लुप्त छल। कतहु ककरो चर्चो नहि छल। से देखितहि नेताजी घरेमे बेहोस भए गेलाह।

7

ओमहर हम जहलमे पड़ल छलहुँ । मासक धक लागि गेल। हमर की गलती छल जे जहलमे बंद कए देल गेलहुँ? से किछु बूझा नहि रहल छल । नेताजी आ हुनकर सहयोगी केओ हमर हाल-चाल नहि लेलाह । सभ अपन काजमे व्यस्त छलाह। पहिने चुनाओ आ आब सलाहकार बनबाक प्रयास । हमरा जहलमे केओ-केओ गाहे-बगाहे किछु-किछु समाचार दैत रहैत छल । मुदा ओहिमे कतेक की सत्य छल,की झूठ छल से के फरिछबैत? मास दिन जहलमे

रहैत-रहैत बहुत किछु सोचबाक मौका भेटल । नेताजीक प्रति मोनमे आक्रोश तँ छलहे । ने हम हुनकर आगू-पाछू करितहुँ ने हमर ई हाल होइत।

असलमे हमरा शुरुएसँ समाजक हेतु किछु करबाक अभिलाषा मोनमे छल। तेँ जखन पहिल बेर हमर कालेजमे नेताजीक भाषण भेल रहए तँ हम बहुत प्रभावित भेल रही । भेल जे ई व्यक्ति कतेक महान छथि । दिन-राति देसक बारेमे सोचैत छथि । हम अपन कैकटा संगीसभक संगे हुनकर आगू-पाछू करए लगलहुँ । जखन कखनहु ओ लग-पासमे बैसार करितथि तखन हमसभ ओतए पहुँचि जइतहुँ । क्रमशः हम हुनकर लगीच अबैत गेलहुँ ।

पता नहि कोन-कोन धारामे हमरापर केस कएल गेल छल। जमानतक कैकटा प्रयास असफल होइत गेल । गाम-पर हमर माए-बाबू बेकल रहथि । दिन-राति कचहरी दोड़ैत रहलाह । कोना-कोना टाकाक जोगार कए ओकीलक फीस दैत रहलाह । मुदा किछु कारगर नहि भेल । सुनबामे आएल जे एकदिन बाबूकेँ किछु बदमाससभ रस्तामे धमका सेहो देने रहनि ।

"खबरदार! जाबे चुनाओ छैक ताबे बेसी उठा-पुटक नहि करू । चुपचाप रहू । जँ बात बढ़ल तखन जे होएत से सोचनहु नहि होएब ।"

हमर बाबू ओकर बाद सरिपहुँ डरा गेलथि । कचहरी गेनाइ छोड़ि देलथि । ओहि बदमाससभक संदेशमे दम छलैक। ओ सभ नेताजीक गुंडा दलक लोक छल । हमरा सन-सन कतेको लोक एहिना जहाँ-तहाँ चुप्प करा देल गेल रहए । हमसभ साइत नेताजीक व्यक्तित्वक एहि पक्षक जानकार नहि भए पबितहुँ जँ हमरा संगे ई सभ नहि घटल रहैत । मुदा आब की कएल जाए? एकर किछु जबाब नहि फुराइत छल । हम जहलमे बंद भेल-भेल सोचैत रहैत छलहँ । राति-राति भरि करोट बदलैत रहैत छलहुँ । एक मोन होअए जे जहलसँ निकललाक बाद एहिसभसँ हटि जाएब,कोनो प्रयाससँ नौकरी ताकि लेब आ अपन परिवारक पालन-पोषण करब । चैनसँ जिनगी बिताएब। आब एहि झंझटसभमे कहिओ नहि पड़ब । मुदा कखनहुँ होअए जे एतेक स्वार्थी होएब

उचित नहि होएत। नेताजी सन-सन समाजक दुश्मनक सही इलाज तँ तखनहि संभव होएत जखन ओकर सत्यता समाजक सामने अबैक । ततबे नहि,ओकर सही विकल्प होइक । नहि तँ ओकर वर्चस्व बनले रहत आ नीक लोकसभ जान बँचएबामे लागल रहत ।

एकदिन भोरे जलखै केलाक बाद हम जहलमे अपन कोठरीमे किछु पढ़ैत रही की जेलर बाबू हमरा बजओलक । हम पुलिसक संगे-संगे हुनकर कार्यालय पहुँचैत छी । ओतए हमरा देखि जेलर बाबू बहुत प्रसन्न भेलाह । हमरा दिस एकटा कागज बढ़बैत कहैत छथि-

"अंकुरजी! अपनेक हेतु नीक समाचार आएल अछि । अहाँकेँ जमानत भए गेल अछि । जरूरी खानापुरीक बाद अहाँकेँ आइए जहलसँ छोड़ि देल जाएत ।"

हम ई समाचार सुनि बहुत खुस रही । होअए जे कतेक जल्दी घर पहुँचब । माए-बाबूसँ भेंट करब। अपन घरमे निचैनसँ हुनका लोकनिसँ गप्प-सप्प करब । हम जेलर बाबूक कोठरीमे बैसले-बैसले कागजसभपर दस्तखत कए देलिऐक। थोड़बे कालक बाद हमरा जहलसँ छोड़ि देबाक फरमान बहाल भए गेल । हम जहलसँ बाहर अएलहुँ । जहलक गेटपर हमर पिताजी भोरेसँ बिना किछु खैने-पीने ठाड़ छलाह । हमरा देखितहु ओ ठोह पारि कए कानए लगैत छथि । हमरो नहि रहल जाइत अछि । आँखिसँ नोर बहए लगैत अछि । हम हुनका प्रणाम करैत छी । दुनूगोटे बड़ीकाल धरि एक-दोसरकेँ देखैत रहि जाइत छी । फेर हमही ओहि मौनकेँ तोड़ैत छी-

"हमसभ चली । गामपर माए बाट तकैत होएत ।"

"ठीके कहलह । ओ तँ राति भरि जगले छथि । तोहर अएबाक समाचार सुनितहि तरह-तरहक ओरिआनमे लागि गेल छथि । बौआकेँ कदीमाक तरकारी बहुत नीक लगैत छनि । भोरे चुरा-दहीक जलखै बहुत पसिंद छनि । हलुआ बनेबाक हेतु किछु सुजी लेने आएब । एतबे गप्प-सप्प राति भरि करैत

रहलीह । भोरुकबामे निन्न लगलनि तखनहु इएहसभ बड़बड़ाइत सुनिअनि । आखिर माए छथि ने।"

दुनूगोट रिक्सापर बैसि जाइत छी । हमरासभकेँ लेने रिक्सा आगू बढ़ि जाइत अछि । हमसभ गाम पहुँचैत छी । अपन घर दिस बढ़ैत जे आनंद होइत छल तकर वर्णन करब मोसकिल अछि । होअए जे रस्ता एतेक पैघ किएक छैक । आओर छोट किए नहि भए रहल छैक । एक मोन होअए जे दौड़ी आ घर पहुँचि माएक पैरपर खसि पड़ी । मुदा बाबू जे संगे रहथि । हुनके गतिसँ चलि सकैत छलहुँ । खैर! थोड़े कालक बाद हमसभ अपन घर पहुँचि गेलहुँ । गाममे हमरा देखितहु माएक हाल बेहाल छल । ओ हमरा भरि पाँज पकड़ि लेलक । जोर-जोरसँ कानए लागलि । कतबो बुझेबाक प्रयास करिऐक ओ सुनबे नहि करए । खाली एतबे बजितए-

"आब कतहु ने जेबैं रे बाबू! आब कतहु नहि।"

किछु बुझेबे नहि करए जे आखिर ओ की कहि रहल अछि? परेसानीमे तँ सभगोटे छल । हमरा जहल चलि गेलाक बाद घरमे केओ एक्को राति चैनसँ नहि सूति सकल । मुदा आब तँ हम आबि गेलहुँ । एतेक चिंता कथीक?

बाबू जेना -तेना माएकेँ सम्हारलथि । हमसभ घर पहुँचलहुँ। माए भोरेसँ भोजनक विन्यासमे लागल छल । हम जल्दीसँ स्नान-ध्यान केलाक बाद भनसा घरमे माए लग पहुँचलहुँ । माए हमर प्रतीक्षे कए रहल छलीह । बाबू सेहो ओतहि रहथि । बहुत दिनक बाद हम बाबूक संगे-संगे भोजन केलहुँ । माएक हाथक बनाओल भोजन,एतेक दिनक बाद खा रहल छलहुँ । लगैत छल जेना सद्यः इन्द्रलोकमे पहुँचि गेल छी। हमसभ खाइत रहलहुँ,माए परसैत रहल । कतबो मना करिऐक,माए मानबे नहि करए ।

"आब कनीको जगह नहि बाँचल अछि । आब अखन रहए दही । फेर बादमे खाएब ।"

बाबू सेहो एहि बातक समर्थन केलाह । हमसभ भोजन कए बहरिआ कोठरीमे

चौकीपर बैस गेलहुँ । माए सेहो ओतहि आबि गेल । ताबतेमे एकटा जीप आबि कए हमर दरबाजापर ठाढ़ होइत अछि ।

8

जीपसँ चारिटा मुस्टंड उतरैत अछि। सोझे हमर दरबाजापर आबि जाइत अछि । हमसभ जीपक अबाज सुनि कए बाहर होइत छी आ मुस्टंडसभकेँ ओसारापर बैसल देखि चकित छी,डराइतो छी। हमसभ किछु बजितहुँ ताहिसँ पहिनहि ओहिमे सँ एकटा मुस्टंड बजैत अछि-
"नेताजी हमरासभकेँ पठओलाह अछि । जहलक बारेमे कतहु चर्चा नहि करबाक छैक। ककरो किछु नहि कहबाक छैक। जँ से सभ करबह तँ फेर तूँ जानह ।"
एतबा बाजि ओ सभ ओसारापरसँ उतरि गेल । देखिते-देखिते जीपमे सबार भए गेल। जीप तेजीसँ आगू बढ़ि गेल। हम आ बाबू बुझिए नहि सकलिऐक जे भए की रहल छैक? ऊपरसँ मुस्टंडसभक बगए-बानि देखि माथा काज केनाइ बंद कए देलक। हमसभ ओकरसभक बात सुनैत रहलहुँ। मुदा किछु जबाब नहि दए सकलहुँ। बाबू तँ बहुते डरि गेल रहथि। ओही समयमे माए भनसा घरसँ बाहर आएलि। सभकेँ एना गुम्म देखि छगुन्तामे पड़ि गेलि।
"बात की छैक? तूँ सभ एना परेसान किएक छह? "
बाबू की बजितथि? होनि जे जँ सही-सही कहि देबैक तँ कहीं घबड़ा ने जाथि । एतेक मोसकिलसँ हम जहलसँ छुटि कए आएल छी । फेर ओएह झंझटिसभ सामनेमे देखा रहल छलनि।
"ई नेताजी नीक लोक नहि अछि ।"
"चुप्पे रहू। केओ नेताजी लग चुगली कए देत तँ जान बँचेनाइ मोसकिल भए जाएत ।"

"मुदा एना डराएल हमसभ कतेक दिन रहि सकैत छी? इहो कोनो जीवन थिक?"

"हमसभ गाम छोड़ि दी । कतहु बाहरे रही । कम सँ कम जान तँ बाँचत । शांतिसँ जीब तँ ।"

ई बात सुनि हमरा देहमे आगि फुकि देलक । हम चिचिआ उठैत छी-

"केओ कतहु नहि जाएत । हम अखन मरि नहि गेलहुँ अछि । नेताजीक भाग्य खराब भए गेल छैक ।"

"भाग्य तँ हमरसभक खराब लगैत अछि ।"-बाबू बजलाह ।

बहुत मोसकिलसँ एकमासक बाद जहलसँ छुटि कए हम अपन घर वापस आएल रही । पता नहि बाबू एहि लेल कतेक प्रयास केलथि । ककरा-ककरा ने खुसामद केलनि। केना-ने-केना टाकाक जोगार केलनि । कतेक उत्सुकतासँ माए हमर स्वागत केने छलि । मुदा ई प्रसन्नता बेसी काल नहि रहि सकल । जीपसँ आएल ओहि मुस्टंड सभकेँ देखि कए हमसभ विषादग्रस्त भए गेलहुँ। माए आ बाबू तँ डरे बौक भए गेलथि। मुदा हमरा रहल नहि जाए । आक्रोशसँ देहमे आगि लागि गेल छल । नेताजी हद पार कए चुकल छल ।

"एहि पार की ओहि पार" -हम मोने-मोने सोचलहुँ । रातिमे जखन हमर माए-बाबू सुतले रहथि हम चुपचाप घर छोड़ि देलहुँ । अन्हारेमे पैरे-पैरे शक्तिनाथक ओहिठाम पहुँचि गेलहुँ । शक्तिनाथक घर हमर गाम सतटोलसँ सटले मदनपुरमे रहैक । जहलमे किछुदिन ओ हमरा संगे रहए । ओकरो नेताजी फँसा देने रहैक । मुदा ओकर परिवारक लोकसभ बेसी होसगर छल । तेँ ओकर जमानति पहिने भए गेलैक । तहिआसँ ओ गामे पर छल । कतहु बाहर नहि गेल । हम जहलसँ छुटि गाम वापस आबि गेलहुँ से जानकारी ओकरा नहि रहैक । अचानक रातिमे हमरा अपन ओसारापर ठाढ़ देखि शक्तिनाथ डरा गेल । असलमे ओ लघी करबाक हेतु उठल छल । ओसारापर चौकीपर सुतल रहए । वापस आबि पड़ले छल कि हम देखेलिऐक । अन्हार रहबाक

कारणे ओ हमरा नहि चिन्हि सकल । ओ चिकरबाक प्रयासेमे छल कि हम फुसफुसेलहुँ-

"हम छी अंकुर।"

"एते राति कए असगर? बात की छैक? "

"बात की रहतैक । ई नेताजी जीनाइ मोसकिल कए देने अछि।"

"से की?"

"से कोनो तोरा नहि बूझल छह?"

"अखन की भेलैक जे रातिएमे तोरा आबए पड़लह?"

"की कहिअह? बहुत मोसकिलसँ जमानत भेल । तकरबाद गाम वापस आएले छलहुँ की नेताजीक मुस्टंड.. "

हम एतबे बाजल छलहुँ की ओ बात लोकि लेलक।

"ओ! तँ ओ चारू मोस्टंड तोरो ओतए गेल छलह?"

"हँ ।"

"ओ तँ हमरोसभकँ दस हजार फज्जति कए गेलाए । बूझेबे नहि करैत अछि जे एकरासँ कोना पार पाबी?"

"एकटा काज करह।"

"की?"

"दुनूगोटे शक्तिपुरम चलैत छी । सोझे नेताजीसँ गप्प करी । पुछिऐक जे ओ की चाहैत अछि?"

"ओ एतेक आसान लोक बुझाइत छह?"

"मुदा एना डराइत रहलासँ तँ किछु होबए बला अछि नहि?"

"तखन जे कहह।"

"दुनूगोटे शक्तिपुरम चली । ओतहि बात फरिछाएत ।"

तकरबाद हम आ शक्तिनाथ किछुकाल गप्प-सप्प करैत रहलहुँ । फरीच भए गेल छल । स्नान-ध्यान केलहुँ । किछु जलखै केलहुँ आ शक्तिपुरमक हेतु

बिदा भए गेलहुँ ।

9

नव सलाहकारमंडलक गठन भए गेलैक । राज्यप्रमुख चुनि लेल गेल । सभक शपथग्रहण शक्तिपुरमक नगरभवनमे भेल। नगरभवन दर्शकसँ खचाखच भरल रहए । कार्यक्रम शुरु होअएसँ पहिने रसनचौकी बाजि रहल छल । नगरभवन शक्तिपुरमक चारूकात झंडा फहरा रहल छल । पार्टीक कार्यकर्तासभ विजयोन्मादमे रहि-रहि कए इनकिलाब-जिंदाबादक नारा लगा रहल छलाह । मुदा नेताजीक कतहु अता-पता नहि छल। जे ब्यक्ति अपना-आपकेँ राज्यप्रमुख बनबाक सपना देखि रहल छलाह,जे चुनाओ जितबाक हेतु अपनहि मंचपर बम विस्फोट करबा चुकल छलाह,आओर कहि नहि की-की कए चुकल छलाह, से एहि महत्वपूर्ण परिदृश्यसँ लापता छलाह । कोनो नामो निसान नहि। अपना भरि ओ बहुत प्रयास केलथि । अलाकमान द्वारा नियुक्त पर्यवेक्षककेँ जेबी भरि देलथि । जहिआसँ ओ शक्तिपुरम अएलथि,तहिआसँ पंचसितारा होटलमे नेताजीक आवागमन होइते रहैत छल । मुदा कहबी छैक जखन भाग्य प्रतिकूल होइत छैक तखन किछु जोगार काज नहि करैत छैक। कहब जे एतेक केलाक बादो नेताजीक भाग्य किएक साथ नहि देलकनि? तकर की कहल जाए? समय होत वलबान। जखन मनुक्खक समय प्रतिकूल भए जाइत अछि तखन कतबो किछु करू,सभ किछु उल्टे भेल चल जाइत अछि। जेना रणभूमिमे कर्णक पहिआ धसलनि तँ धसिते चलि गेलनि । ब्रह्मास्त्र काज केनाइ बंद कए देलकनि । परसुरामक श्राप सक्रिय भए गेल । उनचासो हवा उल्टा बहए लागल आ निहत्था कर्णपर अर्जुन सन नीतिकुशल योद्धा कृष्णक बात मानि शस्त्र चला देलनि । कर्ण मारल गेलाह । सएह छल

भावी। तहिना नेताजीक समय चलि रहल छल । केना-ने-केना ओकर प्रतिद्वंदीसभ केन्द्रीय पर्यवेक्षकक संगे होइत ओकर गप्प-सप्प आ आदान-प्रदानक भीडिओ बना लेलक आ ओकरा अलाकमान लग पहुँचा देलक । तकर बाद तँ जे भेल से की कहल जाए?

रातिए भरिमे केन्द्रीय पर्यवेक्षक बदलि देल गेल । हुनका द्वारा बनाओल गेल सलाहकारसभक सूचीक दोबारा समीक्षा कएल गेल । तकर बाद कैकगोटेक नाम कटल,किछुगोटेक नाम जुड़ल । शपथग्रहणक समय सेहो बदलि देल गेल । पहिने चारि बजे साँझक समय निर्धारित कएल गेल छल । तकर बाद एगारह बजे दिनक समय निर्धारित कएल गेल । दोबारा बनल सूचीक जानकारी ककरो नहि लागि सकलैक । जखन नगरभवनमे शपथग्रहणक हेतु भावीसलाहकारसभ अपन-अपन स्थानग्रहण केलथि,तखनहि लोक बूझि सकल जे के सलाहकार बनि रहल छथि आ किनकर नाम छुटि गेलनि । नेताजी अपन स्थान कतहु नहि देखि चोट्टे नगरभवनसँ घुरि गेलाह। अपन डेरा पहुँचलाह । भरिपोख दारू पिलाह आ सूति रहलाह ।

हमसभ शक्तिपुरम सोझे नेताजीक ओहिठाम पहुँचलहुँ। नेताजीक घरक गेट बंद रहैक । शक्तिनाथ घंटी बजओलक । कोनो प्रतिउत्तर नहि भेटलैक । हम दुनूगोटे केबार लग ठाढ़े रहि गेलहुँ । भेल जे केबार आब खुजत ताब । पाँच मिनट धरि ओहिना ठाढ़ रहि गेलहुँ । शक्तिनाथ फेरसँ घंटी बजा देलाह । एहि बेर धराकसँ केबार खुजल । मुदा केबार खोलनिहार नेताजी नहि अपितु संदीप छल । संदीप हमरा देखितहि सकपका गेल । शक्तिनाथकेँ सेहो ओ जनैत छल । हमरा किछु नहि कहि ओ शक्तिनाथ दिस मुखातिब भेल-

"की बात?"

"बात की रहतैक? नेताजी कहाँ अछि?"

"कहि नहि? मुदा बात की छैक?"

"पुछैत छिअह से कहिते नहि छह आ अंट-बंट बजने जा रहल छह ।"

"की पुछैत छह?"

"रे! नेताजी कहाँ अछि, से फरिछा कए कहह ।"

"कतहु गेल छथि ।"

शशिकान्तकेँ संदीपक बातपर विश्वास नहि भेलैक । ओ एकहि झटकामे संदीपकेँ पाछू केलक आ फ्लैटमे अंदर चलि गेल। नेताजीक केबार खुजले छल । ओ ओछाओनपर बेहोस पड़ल छलाह। कतहु कोनो शब्द नहि । नेताजीकेँ हमरा लोकनिक आगमनसँ कोनो क्रिया-प्रतिक्रिया होइत नहि देखलिअनि ।

नेताजीकेँ अंदर देखि शक्तिनाथकेँ संदीपपर बड़ी जोरसँ तामस भेलैक । ओ चोट्टे संदीप दिस घुमल आ धएले चमेटा संदीपकेँ लगा देलक। अनचोके लागल एहि चोटसँ संदीप ठामहि खसल। संदीप बहुत अपमानित महसूस कए रहल छल । मुदा करितए की? ओ जेना-तेना उठल , अपन कोठरी गेल आ केबार बंद कए लेलक।

10

तकर बाद कतबो प्रयास केलिऐक,संदीप केबार नहि खोललक । हम दुनूगोटे नेताजीक कोठरीक आगू केबारसँ सटले ठाढ़े रहि गेलहुँ । नेताजी पीने बुत्त पड़ल छलाह । हुनका कोनो बातक कोनो असर नहि भेलनि। के आएल,के गेल,कोनो मतलब नहि । ओहने समयमे शक्तिनाथ बाजल-

"इएह मौका अछि, एकर नरेठी दाबि दी आ निकल जाइ ।"

"खबरदार! एहन बात फेर नहि बजिअह । ई नेताजीक घर अछि । कतए कोन यंत्र लगओने होएत तकर कोन ठेकान? सीसीटीभीक कैमरा तँ सामनेमे लागले अछि । एहन हालतमे हमसभ खा-मखा मोसकिलमे पड़ि सकैत छी ।"

"तखन करी की? हमसभ एतए जँ भरिओ राति ठाढ़ रहि जाएब तँ की होएत? "
"देखहक। कानून अपना हाथमे नहि लेबाक छैक। नेताजी तँ एकटा मुखौटा अछि। जँ एकरा मारिओ देबहक तँ एकरा सन-सन दसटा नेता उतपन्न भए जेतह। समस्या विचारक छैक। एकर सभक आसुरी प्रवृति समाज, राष्ट्र, कानून, संविधान सभपर भारी पड़ि रहल छैक। एहन बात नहि छैक जे हमरा-तोरासँ पहिने ई बात सभ ककरो अखरलैक नहि, केओ तकर निदान करबाक प्रयास केलकैक नहि, मुदा ओहोसभ अंततोगत्वा, एकरे सभमे सामिल भए गेल। भोग विलासक लालसा भारी पड़लैक। पद, मान-सम्मान ककरा नहि चाही? सभटा आदर्शवाद रस्तेमे भुतिआ गेलैक।"
"तखन करी की से ने कहह? हमसभ एहिठाम आएल छी की करह? आ कए की रहल छी? "
"धैर्य राखह ने? हालत देखिए कए आगू बढ़बाक चाही। तखने लक्ष्यक प्राप्ति भए सकैत अछि।"
"तखन?"
"तखन की। ई कोनो अंतिम राति नहि छैक। काल्हि फेर भोर हेतैक। नव दिन अएतैक। हमसभ सोचि-विचारि कए निर्णय लेब आ अवश्य लेब।"
"अखन की करी?"
"तोरामे इएह गड़बड़ी छह। राजनीति कोनो दोकानपर राखल गुलाबजामुन नहि छैक जे मुँहमे धरिते स्वाद लागए लागत। एतए सालक-साल संघर्ष जरूरी छैक। फिलहाल हमसभ एतहि बैसी, देखिऐ तँ जे बात की छैक? नेताजी एना बेहोस किएक पड़ल अछि?"
"ठीक छैक।"
हम दुनूगोटे ओतहि बैसि गेलहुँ। नेताजी ओहिना पड़ल रहलाह। थोड़े कालक बाद संदीपक कोठरीमे किछु खुसुर-फुसुर भेलैक। केओ नहू-नहू बतिआ रहल

छल । कहबाक माने जे संदीप ओहि कोठरीमे असगर नहि छल । हम दुनूगोटे केबारमे कान सटा दैत छी । भीतर कम सँ कम दूगोटे तँ अछिए।
शक्तिनाथक मुस्की देखए बला छैक । ओ बाजि उठैत अछि-"ई तँ कोनो महिलाक स्वर लागि रहल अछि ।"
हम ओकरा इसारासँ चुप्पे रहबाक हेतु कहैत छी । हम दुनूगोटे ओहिना कान लगओने सुनैत रहि जाइत छी । अबाज तँ होइत छैक,मुदा ततेक नहू-नहू जे कैकबेर अर्थ लगाएब मोसकिल बुझाइत अछि । एतबेमे लागल जेना किछु जोरसँ खसलैक । संभवतः काँचक कोनो वस्तु रहल हेतैक । लगलैक जेना चूर-चूर भए गेलैक। तकरबाद ओहि कोठरीसँ किछु अबाज नहि आएल । संभवतः ओ सभ सुति रहल।
"आब की करी?"
"फेर ओएह बात? रातिओ भरि तूँ चैनसँ नहि रहि सकैत छह । ई बातक ध्यान राखह जे हमसभ नेताजीक घरमे छी । बाहर की भए रहल अछि तकर कोन ठेकान? जँ एहि हालतमे बाहर निकललहुँ आ पकड़ल गेलहुँ तखन?"

-रबीन्द्र नारायण मिश्र, पिताक नाम: स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नाम: स्वर्गीया दयाकाशी देवी, बएस: ६९ वर्ष, पैतृक ग्राम: अड़ेर डीह, मातृक: सिन्घिआ ड्योढ़ी, वृति: भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त), स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त), शिक्षा: चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक, प्रकाशित कृति: मैथिलीमे: प्रकाशन वर्ष:२०१७ १.भोरसँ साँझ धरि (आत्म कथा),२. प्रसंगवश (निवंध), ३.स्वर्ग एतहि अछि (यात्रा प्रसंग); प्रकाशन वर्ष:२०१८ ४. फसाद (कथा संग्रह) ५. नमस्तस्यै (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निवंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास);

प्रकाशन वर्ष:२०१९ ९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निवंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२० १३.शंखनाद(उपन्यास) १४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)१५.ढहैत देबाल(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२१ १६.पाथेय(संस्मरण) १७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक परात(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२२ १९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास) २१.बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास) २२.राष्ट्र मंदिर(उपन्यास) २३.संयोग(कथा संग्रह) २४.नाचि रहल छलि वसुधा(उपन्यास) २५.दीप जरैत रहए (उपन्यास)।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.पद्य खण्ड

३.१.जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'- इजोत

३.२.बाबा बैद्यनाथ- गजल

३.२.राज किशोर मिश्र-जनमौटी नेना

३.१.जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'- इजोत



जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

इजोत

नहि फेकलक ओकरापर तेजाब

नहि लगेलक गरदनिमे फँसरी

नहि केलक ओकरा ल'क'

कतहु भागि जेबाक दुस्साहस

ठीकसँ सुनलक

ओकर एक-एकटा आखर

ओकरा स्थानपर अपन बहिनकें राखि सोचलक

ओकर पिताक स्थानपर

अपन पिताकें राखि सोचलक

मोने-मोन क्षमा क' देलक रीताकें

क्षमा मांगि लेलक ओकर पितासँ

दूर भ' गेलै दुविधा

हटि गेल ओकर बाटसँ

नहि केलक कोनो व्यवधान

ओकर जीवन-यात्रामे

पोछि लेलक अपन आँखिक नोर

मुदा कना गेलै ओइ दिन

जहिया पता चललै

रीताक पति नहि बाँचि सकलाह डकूबा बिमारीसँ

ओहि दिन रीताक लेल उमड़ि एलै करुणा

ठानि लेलक मोनमे

ओहो नहि करत कतहु वियाह

पैंतालीस बरखक राघव

करत समर्पित अपन जीवन

रीता एहेन लोकक

अस्मिताक रक्षाक लेल

राघव करैत रहत रीतासँ प्रेम

बिना कोनो सम्पर्ककेर

विना करैत अमान्य प्रवेश

ओकर जीवनमे

राघव नहि करत ओकर देखाउँस

जे लगा लैत अछि अथवा लगा दैत अछि

गरदनिमे फँसरी

राघव करत ओकर देखाउँस

जे माटि-पानि लेल जीबैत अछि,

देश-दुनियाँ लेल मरैत अछि

राघव जानि गेल अछि

जीवन नहि होइत छैक

अपने सुखक जोगार करबाक लेल

कतहु पड़ाक' वियाह करबाक लेल

राघव जानि गेल अछि

स्त्रीक देह नहि होइत छैक

दुर्व्यवहार करबाक लेल

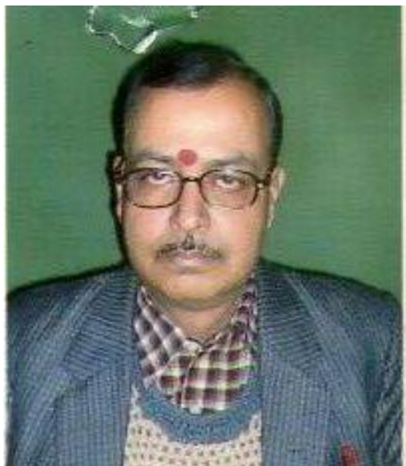
स्त्रीक देह होइछ

संस्कृतिक रक्षा करैत दुलार करबाक लेल

अथवा हाथ अपन जोरि नमस्कार करबाक लेल !

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.२.बाबा बैद्यनाथ- गजल



बाबा बैद्यनाथ

गजल

2 1 2 . 2 1 2 2 1 2 2

आधार"वाचिकबाला छन्द" --

क़ाफिया"अत" -

रदीफ़"शून्य" --

काज ससरत तखन लोक बिसरत।

देखतहि दूरमे नीच घसकत।

नीक मित्रक जखन संग राखी,

दुःखमे ओ समाधान आनत।

जदि समस्या पड़त पैघ कहियो,
देत सभ आबिकेँ बस नसीहत।

लोक अस्वस्थ देखत कहत ओ,
लीखि देबाक चाही वसीयत।

शील थिक सभ मनुज केर गहना,
एक बानर मुहेँ पान शोभत?

दुष्ट जखनहि फँसत फेरमे ओ
आनकेँ संगमे ओ लपेटत।

नीक बातो अहाँ पूछि देखू,
लोक बेसी रहत ओ असहमत।

अछि सहज भगवती केर पूजा,
धूप ली दूबि जल फूल अक्षत।

-बाबा बैद्यनाथ, पूर्णियाँ(बिहार)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.२.राज किशोर मिश्र-जनमौटी नेना



राज किशोर मिश्र, रिटायर्ड चीफ जेनरल मैनेजर (ई), बी.एस.एन.एल.(मुख्यालय), दिल्ली,गाम- अरेर डीह, पो. अरेर हाट, मधुबनी

जनमौटी नेना

'हे नवजा त! हे शि शु नवा गत!
दुनि आ कऽ रहल अछि स्वा गत।

सुवि धा सँ संपन्न अछि वसुधा ,
चढ़ब गा ड़ी , उड़ा ओत नभया न,

एसी , ही टर, कम्प्यूटर,

कपड़ा -लत्ता , नव-नव परि धा न।

नवजुगक देखब चका चो न्ह,
देखब वि ज्ञा नक चमत्का र,
मुदा , पक्षपा त नहि गेलै एखनो ,
ककर, जुग पर ,बेसी अधि का र?

नवल तकनी क ,नवका वि चा र,
ओही सँ बनत अहुँक संस्का र।

परञ्च, आरो की सभ लऽ कऽ,
अछि भऽ रहल अहाॅं क स्वा गत?
पहि ले साँ स ,जे लेलहुँ अछि अहाॅं ,
सुँघू वा यु , प्रदूषि त ला गत ।

रौ द नुका एल रहैछ भो रे सँ,
प्रदूषण सँ बनल धो न्हि मे,
बेमा र बसा त अछि बहि रहल ,
तेँ, नढ़ि आ भा गल सो न्हि मे।

ई पी ढ़ी की सभ सनेस मे,
अछि जो गअओने अहाँ के लेल?
देत वि षण्ण खेलओना सभ,
खेला एब अहाॅं जा हि सँ खेल।

अनपरा सन ,जखन हो एत,
आ, खा एब अन्न ,खा द पर उपजल,
अहीॅं कहब, धो नि ढेका र उठि गेल,
नी क सँ नहि भो जन पऽचल।

पा नि क हा ल तऽ बेहा ल अछि ,
नी र दूषि त छै ,लो क पि आसल ,
बरखो -बुन्नी नि जगुत नहि एँ,
पहुँचल तल कैं पा नि , रसा तल।

गा छ -बि रि छ सभ कटल जा इत अछि ,
ला गल जा इछ कंक्री टक 'जंगल,
प्रकृति क' संपदा मनुख लूटैत अछि ,
भऽ रहल अछि ,दुहु मे दंगल।

पमरि आ ना चत, सो हर गा ओत,
श्रेष्ठ देता ह ,आशी ष छि टि अक्षत,
लो क -कृत प्रदूषि त, हवा -पा नि ,
ओ वि षा क्त भऽ,अरुदा के भक्षत।

प्रा कृति क संपदा नो चि -नो चि कऽ
रखने छथि ,जे सभ उपहा र,
अहाॅं क की दो ष? नवा गन्तुक!
प्रदूषण भेटत ,खो लब ज पेटा र।

सिं गा र कएल जा एत अहाँ क,
मुदा , स्पर्श करत को नो रसा यन,
फूल -पाँ खुड़ि हेरा गेल सभ,
अछि बचल, बस कृत्रि म उपा यन।

कतेक जुगक गरदा सभ जमल,
समा जक दृष्टि को ण पर,
कुपरम्परा , कुरी ति कतेको
बैसल अछि एखनो ,मो न पर।

नो करी -चा करी , भऽ रहल कठि न
कृषि , व्या पा र मे कतेको बा धा ,

जुग -जुग के अंध रेबा ज कतेक,
एखनो तऽ बचले अछि आधा ।

घर -दो आर गि रहस्ती ,परि वा र,
उठा बए पड़त, भवि ष्य मे भा र।

डेग-डेग पर ,अछि प्रति ष्पर्द्धा ,
रा खब अहाँ , को शि श पर ,श्रद्धा ।

कठि न भेल जा इत अछि जि नगी ,
को महर जड़ि , आ को महर,फुनगी ,

जड़ि समस्या क अछि जनसंख्या ,
दि न -दि न बढ़ल जा इछ चुनौ ती ,

नूतन सो च, नव-नव आया म,
कतेक दि न बूनब, मौ नी -पौ ती ?

बढ़ल अछि कपट, प्रवंचना ,
एहि सभ सँ भेँट हो एत,

नव पी ढ़ी सँ उमेद छै,
अंधवि श्वा स -कलंक के ,धो एत।

दुला र तऽ हो एत मुदा ,
औपचा रि कता बेसी ,
मि झरा गेल छै नव संस्कृति मे,
ता कब, संस्कृति अपन देसी ।

एखन, ऊपर सँ सि टल -सा टल,
मुदा भी तर, दि बा ड़ सँ छै चा टल।

जएह सभ छै, एहि पी ढ़ी केँ,
वएह सभ , अहुँ के भेटत उपहा र,
फूल -पा न के बदला मे,
टाॅफी -काॅफी सँ हो एत सत्का र।

नहूँ-नहूँ, कमि रहल छै,
भा वना के मो ल,

असल मे तऽ नफा -डाँ ड़,
ओही सँ ,सभहक तो ल।

सी खि जा एब अहू ॅं सभटा ,
जएह देखबै, वएह तऽ सी खब,
नि र्मल मो नक सि लेट पर,
देखि -देखि इएह सभ ली खब। '

चकुआए रहल छल चा रू दि स,
की ता कि रहल छल चि ल्हका ?
मुदा , एखन ओ की जा न गेलैक,
की छलैक धरो हरि , पहि लुका ?

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

4.Dr. Deepesh Kumar Thakur- Understanding Convergence: Comprehending Medical Humanities as a Literary Genre

4.Dr. Deepesh Kumar Thakur- Understanding Convergence: Comprehending Medical Humanities as a Literary Genre



Dr. Deepesh Kumar Thakur

Understanding Convergence: Comprehending Medical Humanities as a Literary Genre

ABSTRACT: -

Discourses concerned with human health and well-being are emerging in the domain of literary studies. The field is generally termed as 'Medical Humanities'. Medical Humanities is an interesting field of study which takes into consideration the humanities, social sciences, art, literature, creative writing, music, philosophy, etc. in order to study

and understand ideas related to medical science. Literature and medical science is an interesting branch of study which not only incorporates the ideas of medical science in literature but also promotes many interdisciplinary genres. This field is emerging as a new genre in literature which is now considered to be a seminal discourse. Rather than merely speaking about the notions of disease and illness with a medical jargon, Medical Humanities takes within its ambit a wider socio-cultural perspective on health and disease, moral compass of the patient-doctor relationship and experiences thereby making the readers aware of the complexities, and promoting empathy in the mind of readers. This approach put forward by Medical Humanities bolsters the reader's ability to understand the plight of people undergoing the crisis. Most importantly, it enables the reader to suspend his notion of reality and enter into the reality of other characters, thereby promoting moral sensibilities. The main objective of this paper is to understand how medicine and literature confluences together to form a hybrid genre. This paper shall take into account and deal with some important aspects of Medical

Humanities taking reference from literary texts.

Keywords: Humanities, Interdisciplinary, Literature, Medical, Medicine.

Introduction:

The status of literature and literary studies are changing day by day. With the advent of literary theories and inclusion of various ideas of the society within the spectrum of literary texts, a slow but sure paradigmatic shift is observed in the literary scenario. Particularly with the rise of ideas such as 'postmodernism', 'post-structuralism' and 'post-humanism', literature is now trying to encompass many facets of life within the canvas of literature. Since literature and literary departments are a part of the 'Humanities' department at large, any and every aspect of the 'humanity' finds a way in the literary texts. This dominance of the 'post' in academia has abilities to give rise to the notion of 'post-literature' in the literary scenario. Post-literature as a concept and theory which is yet to spread its wings in the academic domains is already undergoing germination at the present times. Interdisciplinary

and multidisciplinary approaches in the field of academics have the solid potential to give rise to this new branch of academic studies. As the cliche goes on, "Literature mirrors the society" or "Literature reflects society, social actions and behavior", therefore it soaks ideas from sociology, psychology, medical sciences, technology, environmental sciences, physical and chemical sciences, life sciences, so on and so forth. However, literature has a way to deal with such issues in a rather succinct manner. The portrayal of such matters are different from the portrayal in their absolute fields of study. However, the matter of fact cannot be denied that literature is now all encompassing. It was C.P. Snow who in 'The Two Cultures' (during 1959 Rede Lecture) made some interesting observations on two cultures- science and humanities, indicating the increasing friction between the two and the importance of bridging them for the progress of the society. Snow, who was a scientist as well as a literary enthusiast, saw the importance of bringing these two fields together for the cause of advancement of both. Keeping this in view, literature in the contemporary scenario has produced works which

try to bridge the gap between the sciences and the humanities. The Science fiction- Sci-fi for example is an interesting take in this field. Sci-fi presents the readers a world where aliens, non-human characters and extraterrestrial creatures are a part of the narrative. Though the setting of these works may be an alternative world, but the plot centers on science and technology to a large extent. They are inspired by the natural sciences like physics, chemistry and astronomy or take its ideas from psychology, anthropology and medical sciences. Most importantly, sci-fi brings together ideas from science and incorporates them in the literary narratives.

Discussion:

Discourses concerned with human health and well-being are emerging in the domain of literary studies. The field is generally termed as 'Medical Humanities'. Medical Humanities is an interesting field of study which takes into consideration the humanities, social sciences, art, literature, creative writing, music, philosophy, etc. in order to study and understand ideas related to medical science. Literature and medical science is an interesting branch of study which not only incorporates the

ideas of medical science in literature but also promotes the following:

- Heightens awareness by bringing issues of medical science in focus.
- Brings stories of patients undergoing severe crisis and writing about their experience.
- Creates critical thinking and promote empathetic awareness about various moral issues in relation to medical practice.

The term Medical Humanities was coined by historian George Sarton and Frances Seigel in their obituary of science historian Edmund Andrews which was published in 1948. Medical Humanities is a highly interdisciplinary branch of study and field that encompasses and embraces the study of medicine through the lens of literature, history, philosophy and other social sciences and subjects of the humanities field. It takes an account of medicine, health, well-being, applied medicine and bioethics. Medical Humanities as a method was primarily deployed by practitioners of medical sciences to teach their students and train them regarding the subjective experiences of patients within the objective world and scientific world of medicine. The main and original aim of Medical

Humanities is therefore to instill humanistic values in medical practioners by relying on the ethics of humanity. As Bleakley observes, "medical humanities attempt the democratizing of medicine shifting medical practices from an authority-led hierarchy that is doctor-centered to patient-centered and interprofessional clinical testing process (Bleakley 2).

'Medical Humanities' as Douglas Robinson mentions in his book Translationality: Essays in the Translation-Medical Humanities (2017) is an act of 'translationality'. For the scholars dealing with 'translation' in general, translation is the art of transferring textual features from one form to another. But in general sense, translationally can be considered as any form of transformation, transference and conveyance from one place to another. Translationality is the process by which things and events change in a due course of time, the process of evolution of old regimes and systems along with the inclusion of new set of laws and principles, the incorporation of something new in the existing norm and the emergence of a newer concept. Thus, translationality includes the old and the new, which gives rise to novel and innovative

designs, bringing in newer forms of knowledge in the existing system. The incorporation of something new in the system is the transition and change occurring in the existing pattern.

Translation is not just the art of changing one form of language to another and expressing what has already been expressed. It extends beyond the general idea of change of language groups and narrating something in some different languages. The Merriam-Webster Dictionary observes 'translation' as "a change to a different substance, form or appearance" and also states that translation is "a transformation in which new axes are parallel to the old ones." Translationality in the existing corpus of study therefore is the inclusion of psychology and psychological analysis of characters and patients within the existing spectrum of literary studies. This is how Medical Humanities work which brings together aspects of literature and medical studies together on a same plane. In this way, translation gives a new form and appearance by changing the existing form of study. Literature and Psychology is the form of study which draws from psychology into literature and incorporates medical sciences into the

humanities thus forming a branch of Medical Humanities (MH) as a field of study. Translationality is thus a change, a force and an impact of one form of study influencing the other. There have been various attempts to bridge the gap between medical science, health care and humanities because of which many other disciplines are merging together in the same platform, giving it an interdisciplinary form and coming up with new areas of study.

Medical Humanities is thus an interdisciplinary and multidisciplinary field that deals with concepts drawn from the medical sciences finding a way to literature. Cole and Carson observes, "Medical Humanities is an inter- and multidisciplinary field that explores contexts, experiences and critical conceptual issues in medicine and health care, while supporting professional identity." Klugman also observes in this regard, "Medical Humanities is an interdisciplinary field concerned with understanding the human condition of health and illness in order to create knowledgeable and sensitive health care providers, patients and family caregivers."

The interdisciplinary study of Medical Humanities is variously defined. Brian Dolan in his book Humanitas: Readings in the Development of the Medical Humanities (2015) states the importance of Medical Humanities in medical education. For Dolan, "everyone teaching Medical Humanities in medical schools needs to answer repeatedly" (Dolan, x). In other words, Medical Humanities are a primary part of medical education in every medical school. Every future medical professional needs to be 'humanized'- that is, taught to engage humanistically not only with patients but also with themselves as a whole. And when it comes to Medical Humanities as curricula keeping in mind the translational aspect of the study, it takes into purview medicine in literature, narrative medicine, disability studies, illness narratives and so on coupled with the humanities and social sciences background. Rather than merely speaking about the notions of disease and illness with a medical jargon, Medical Humanities takes within its ambit a wider socio-cultural perspective on health and disease, moral compass of the patient-doctor relationship and experiences thereby making the readers aware of the complexities, and

promoting empathy in the mind of readers. This approach put forward by Medical Humanities bolsters the reader's ability to understand the plight of people undergoing the crisis. Most importantly, it enables the reader to suspend his notion of reality and enter into the reality of other characters, thereby promoting moral sensibilities. The discipline of humanities- in this case, literature- promotes knowledge of the medical sciences through narratives. Rita Charon in Narrative Medicine: Honouring the Stories of Illness (2006) states about narrative medicine:

If narratives are stories that have a teller, a listener, a time course, a plot, and a point, then narrative knowledge is what we naturally use to make sense of them. Narrative knowledge provides one person with a rich, resonant grasp of another person's situation as it unfolds in time, whether in such texts as novels, newspaper stories and movies, and scripture or in such life settings as courtrooms, battlefields, marriages, and illness (Charon 9).

Charon observes how narratives of this kind provide a rich knowledge and lucid understanding of complex matters through various narratives,

such as, the novel, newspaper stories, movies and other forms of literary and visual narrative.

Charon's view on the necessity and importance of illness narratives promotes C.P. Snow's vision of bringing the two cultures together to promote living by generating awareness in the minds of the readers. Therese Jones, Delese Wear and Lester D. Friedman in the Introduction to Health Humanities Reader (2014) states the importance of promoting subjects like that of the health humanities in today's world. The practice of carrying out an interdisciplinary approach like that of the health humanities is important because of the following reasons:

-Medical Humanities makes critical concepts of the medical sciences accessible and available to a wider audience. Concepts which were previously available solely among medical practitioners have now been incorporated into the humanities.

-By using plot, character and setting, Medical Humanities demonstrate how multidisciplinary perspectives can be adopted in exploring complex issues like disease, illness, health, disability, patient-doctor relationship and so on.

-Medical Humanities is thus a touchstone for both

medical professionals and literary scholars since it ultimately aims at bridging the gap between the two fields of study.

-Ultimately, Medical Humanities aims at disseminating knowledge about concepts related to science and medicine by using various modes of narration, thereby promoting accessibility and empathy in the minds of the readers or audience.

Arthur W. Frank in the article titled 'Being a Good Story: The Humanities as Therapeutic Practice' published in The Health Humanities Reader (2014) state how the humanities have immense potential to bring forth the notions of abnormalities of the body through stories. Firstly, Medical Humanities have immense potential to tell good stories. This takes us to the next point. Medical Humanities not only help ill people to narrate stories about themselves but by telling stories about themselves, they also tell stories to their physicians, their loved ones and these stories become a part of the society. Medical Humanities thus looks into aspects of illness and disease by placing the affected individual at the center. But it does not neglect the people that remain associated with the person who is affected. The study of Medical Humanities thus

takes a larger canvas in consideration. Arthur W. Frank observes that "stories are good because they are interesting. Illness can be an interesting story" (Frank 32). Frank also brings in an important aspect of understanding wherein he tries to establish the meaning of two words- 'Illness' and 'disease'- which forms an important base of this study. Illness as Frank states is an 'experience' whereas disease is a 'condition of the body'. Where disease can be reduced to biochemistry, illness includes biography and takes into consideration not only the affected individual but multiple relationships as well as institutions. This brings into consideration the involvement of 'others' in the scenario when it comes to managing illness and disease.

The study of Medical Humanities also foregrounds two matters-- the tension between the provision of treatment, and the offering of care. Frank states, "Treatment is provided as service; care is offered as a gift. Treatment can be expressed in monetary value; one can buy more attentive treatment but not true care" (Frank 34). 'Treatment' of a disease is thus more impersonal, more professional, more profit oriented. But, 'care' provided to overcome

illness is not always professional. Further differences between treatment and care are outlined thus by Frank:

-Treatment is one dimensional. It is provided by one who has an insight in the field of medicine. Care on the other hand does not require medical insight. It can be provided by anyone and everyone. Care giving involves emotion as well.

-The treatment provider uses the body of the patient as an instrument to be operated upon. The caregiver on the other hand feels the suffering of the one who is cared for.

-Treatment providing has a subject-object demarcation. Providing treatment clearly demarcates the one who is providing treatment and the one who is treated upon. The patient can become the object of treatment in the hands of doctors or specialists. This is not same with that of the care givers. The boundary between the care giver and the patient gets dissolved because here, care givers and patients are both subjects since the care giver is also emotionally attached to the patient's dilemma.

-In providing treatment, there is a power dynamic that works throughout the structure. Here, one

party gains autonomy and exercises its power over the other. Whereas, on the other hand, care giving is endlessly sensitive and is asymmetrical to power dynamics. Here, both the patient and caregiver become one in undergoing loss and overcoming the same.

The human mind is one of the most complex substances in nature. The mind shapes not only the behaviour of an individual but also affects the society as a whole and thus, the human mind can be defined as the most complex circuit in the human body. Moreover, the human mind, even in the present era of scientific development remains largely unexplored, and medical science and psychiatry are working relentlessly to explore various facets of the mind. The National Institute of Mental Health (NIMH) estimates that almost 28.47% of the human population has issues when it comes to mental health as compared to other health-related problems. The WHO is of the same opinion that mental health issues surpass other chronic diseases such as cardiovascular disease or cancer. Mental disorders are a part of the human condition. For over a century, psychologists have studied these conditions in terms of 'abnormal

psychology'; while others have used the term 'psychopathology'. Abnormal psychology studies the disorders related to the mind, mostly in the clinical context which takes into consideration a wide range of psychological disorders like depression, personality disorders, mood disorders, bipolar disorders, Obsessive Compulsive Disorders (OCD) to name a few. Abnormal psychology looks into the atypical or unusual way the mind works or the factors which leads to the improper workings of the mind. Psychopathology on the other hand also takes into consideration the abnormal and improper workings of the mind. Like pathology which studies the nature of disease in the human body-causes, outcomes and the ways to deal with these shortcomings, psychopathology too studies the same in relation to the human mind. Although both 'abnormal psychology' and 'psychopathology' has the same function and meaning, psychopathology is more sensitive and less stigmatizing term. Both the terms takes into consideration the three components, generally known as the 3Ds:

-Dysfunction: It takes into consideration how the thought processes of human being are not at tune

with reality and what are the factors that lead to this dysfunctionality. This dysfunction may be related to the breakdown of cognition, emotion or behavior of an individual.

-Distress or Impairment: Distress is the result of excessive suffering. Both abnormal psychology and psychopathology takes into consideration how prolonged stress can create a negative impact in the mind of the bearer. Excessive distress leads to impairment where an individual loses the capacity to perform in real life and undergoes a disabling condition in personal or social occupation.

-Deviance: The word 'abnormal' itself brings into focus the idea of deviance. This relates to the idea that something is deviated from the 'normal' standard. Though the idea of the word 'normal' in itself is elusive, yet abnormal psychology and psychopathology studies how an individual undergoing mental illness deviates from the norm because of dysfunctionality, distress and impairment.

-Dangerousness: The DSM-V has come up with a fourth D in relation to the 3D's of abnormality. According to many psychologists and psychiatrists, patients undergoing abnormalities in the mind,

can often show dangerous behavior which can come as a threat to the safety of others. This extends the notion that mental illness is confined only to the person undergoing the duress. It can hamper people in various degrees who are in relation to the one suffering.

What is generally termed as 'madness' has been present in the human society since times immemorial. However, throughout history the reception of madness has undergone various changes. Though madness presents abnormality of thought and action, the idea of 'abnormal' is permeable and contested. Since there are no parameters to judge the 'normal' therefore establishing what constitutes the abnormal is elusive. Like other diseases of the body, science cannot measure the degree of madness that an individual has. Andrew Scull in Madness: A Very Short Introduction (2011) observes that contemporary psychiatry and biochemistry can only state that parts of the brain are disfigured or there is "an excess or deficiency of certain neurotransmitters" (Scull 4) in the brain but arriving at a consensus on the actual range of abnormality is not possible. Scull states that there

exist no PET scans or X-Rays or any laboratory tests to determine the status of 'being mad' within individuals. Though this dissertation relies heavily on Diagnostic and Statistical Manual (DSM-V) of the American Psychiatric Association, which is considered the Bible of psychiatric practice all across the world, even it has failed to define what constitutes the 'normal' and how the 'abnormal' deviates from the normal.

Over the years, people related to this field have also tried to figure out the idea whether madness is 'mental' or a 'physical' disability. Andrew Scull notes that two centuries ago William Lawrence, a renowned Bedlam doctor associated madness to problems in the brain. Like other diseases of the body which are related to specific organs, for instance indigestion and heartburn are related to the abdomen, cough and asthma to lungs, madness finds its relation to the brain. It is the brain and its dysfunctionalities that bring out madness. However, in the nineteenth century, it was argued that the aspect of madness is not only related to the brain but also to the overall composition of the body. The brain gets dysfunctional due to certain hereditary factors which are spread across the

body, leading to an inferior and deformed brain, to madness and insanity. The twentieth century's research into madness claimed that it is not only associated with internal dysfunctionality within the body, but is equally affected by the external environment. This dissertation therefore takes note of such factors-mental illness manifesting the body not only because of hereditary factors, but also because of the external environment.

Andrew Scull brings out an important observation when it comes to the diagnosis of mental illness and madness. He states that despite the advancements of psychiatric sciences, cognitive neuroscience and medical sciences in recent years, till date no breakthrough technology or inventions have come about, which could address these mental issues. Though medicines are known to provide temporary relief to existing conditions, madness and mental illness continues to persist in "multitude of forms" (Scull 6). This aspect of mental illness is evident in the novels undertaken for study of this dissertation. Though the characters exhibit abnormal symptoms, and in some cases, have to depend upon medical supervision, the abnormality persists, manifesting

in sporadic bursts in various forms.

The notion of mental illness was evidently divine during ancient times. From the Greeks, down to the Romans and the beginning of Christianity, it was the general assumption that individuals became mad because they were possessed by the Devil or were cursed by God. Madness became a major trope in the Hebrew Bible as well as in the New Testament. Stories in the Hebrew Bible and the New Testament are replete with images and ideas of madness and insanity. However, Hippocrates and Galen of Pergamum pointed out the humanistic turn in this field. A paradigmatic shift was seen when both Hippocrates and Galen mentioned that the root of mental illness lies within the body and no supernatural forces have its control over the same. At the core of their findings was the theory that the human body is a composition of various elements, known as fluids which were constantly in interaction with each other and the misbalances in these fluids lead to various effect on the body and the mind.

Conclusion:

The human body, according to Galen was comprised of four basic elements: blood, phlegm,

yellow bile and the black bile. Though every individual has a composition of all these four elements within the system, the proportions of these elements vary across people, which in turn give rise to different temperaments. And the key to good health is to maintain equilibrium among these body fluids. When an individual fell ill, it was the task of the medical practitioner to figure out which body fluid had become disproportionate and then use various therapies at his disposal to restore the balance of the fluids. It was Hippocrates and Galen who emphasized that the body is affected by the external environment in which an individual is situated. Though they emphasized on seasonal variations affecting the mind of an individual, they also focused on the role of the environment in maintaining a healthy life state.

Besides science and psychology, literature is one such field which has constantly been dealing with the problem of abnormal psychology since times immemorial. From the pages of Shakespeare to motion pictures, themes ranging from insanity, lunacy, psychosis to mental illness have been dealt with. Madness is something that frightens and fascinates everybody. Michel Foucault in Madness

and Civilization: A History of Insanity in the Age of Reason (1961) mentions, "On all sides, madness fascinates man" (Foucault 20). However, despite madness arresting our attention to its reality, mental illness is still not an acceptable term to use in polite company. The primary aim of this paper was to analyze the idea of Medical Humanities and forms of mental illness, abnormal psychology and symptoms of mental ill-health, as projected in literature. In the changing world order, it becomes crucial to update the knowledge base. Therefore, the need of the hour is to bring a change in the existing knowledge system. This can be done by relying on interdisciplinary and multidisciplinary ideas. Medical Humanities- the branch and its study opens up new grounds not only for research in academia but also helps readers to understand the complex medical ecosystem in a lucid manner.

References:

-American Psychiatric Association. Diagnostic and Statistical Manual of Mental Disorders. (DSM-V). American Psychiatric Pub, 2013.

-Caruth, Cathy. Unclaimed Experience: Trauma, Narrative and History. John Hopkins University

Press, 2016.
-Charon, Rita. Narrative Medicine: Honouring the Stories of Illness. Oxford University Press, 2006.
-Dolan, Brian. "One Hundred Years of Medical Humanities. A Thematic Overview." Humanitas: Readings in the Development of the Medical Humanities. University of California Medical Humanities Press, 2015, pp. 1-30.
-Foucault, Michel. Madness and Civilization: A History of Insanity in the Age of Reason. Routledge Classics, 1989.
-Jones, Theresa, et al. The Health Humanities Reader. Rutgers University Press, 2014.
-Robinson, Douglas. Translationality: Essays in the Translation-Medical Humanities. Routledge, 2017.
-Scull, Andrew. Madness: A Very Short Introduction. Oxford University Press, 2011.
-Snow, C.P. The Two Cultures. Cambridge University Press, 1998.
-The ICD-10: Classification of Mental and Behavioral Disorders. Clinical Descriptions and Diagnostic Guidelines. World Health Organization.
-
https://openpress.usask.ca/abnormalpsychology/chapter/part-3/

-https://www.verywellmind.com/what-is-abnormal-psychology-2794775
-https://www.masterclass.com/articles/what-is-science-fiction-writing-definition-and-characteristics-of-science-fiction-literature#what-are-the-common-characteristics-of-science-fiction
-https://www.shmoop.com/study-guides/literary-movements/science-fiction/characteristics
-
https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC3031316/
-https://www.merriam-webster.com/dictionary/translation

Dr. Deepesh Kumar Thakur, working as an Assistant Professor (English) in the Department of Humanities & Liberal Arts teaching Post-Graduate & Graduate students. Native from Kansi, Darbhanga-Mithila region of Bihar state, India. He has more than fourteen years of experience in teaching in Management, Engineering, Law, Medical Science, Architecture, Pharmaceutical, Dental Science, Fashion Designing as well as corporate sectors like NSN Ltd.& TCS Ltd. India, an author of a research book, published by

"Importance of English Language for Professional & Technical Education", "Lambert Academic Publishing (LAP) Germany (Europe). He has presented 40 papers in International & National level Conference & Symposium. He has published several research papers in reputed National and International journals in diversified areas such as 14 no of articles published in International & National Journals with SCCI & Scopus, 4 no. of Books, 12 no of Articles in books, editor of an International Journal, MIRRORVIEW, a magazine and 3 nos. of education books also. He has research interests in diversified areas such as English Language & Literature, Linguistics, Communicative English, Indian English Literature, Translation Studies, Management, Maithili, Nepali & Bengali.

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

५. अनुलग्नक (पृ. १-३७८)

१.विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक Videha e journal's all old issues

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

Search within Old Issues of Videha

https://books.google.com/

Videha Archive of Old Issues विदेह पुरान अंकक आर्काइव (पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र एकेडमिक प्रयोग लेल) विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक पी.डी.एफ. डाउनलोड लेल क्रमानुसार नीचाँक लिंकपर उपलब्ध अछि। All the old issues of Videha e journal are available for pdf download at the respective links below.

....

तिरहुता, नेवाड़ी आ कैथी फॉण्ट डाउनलोड Google's Noto Fonts project/ GitHub

तिरहुता नोटो फॉण्ट	कैथी ओटीएफ	कैथी टीटीएफ	नेवाड़ी ओ.टी.एफ.	नेवाड़ी टी.टी.एफ.

https://fonts.google.com/ (Google Open Fonts download)

Tirhuta Offline Keyboard download

Keyman Tirhuta/ Vedic Devanagari Keyboards Download

https://malarproject.gitlab.io/tirhuta (Tirhuta Keyboard Online)

....

१

गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादन)

विदेह-सदेह १-२५ www.videha.co.in *विदेह ई-पत्रिकाक अंक १-३५० सँ- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन*	
देवनागरी	**मिथिलाक्षर**
विदेहसदेह १:	विदेहतिरहुता सदेह १ :
विदेह:सदेह २ मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना	विदेह: सदेह २ तिरहुता
विदेह:सदेह ३ मैथिली पद्य	विदेह: सदेह ३ तिरहुता
विदेह:सदेह ४ मैथिली कथा	विदेह: सदेह ४ तिरहुता
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]	विदेह: सदेह ५ तिरहुता
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५२-संस्करण -[	विदेहतिरहुता २-संस्करण सदेह ५ :
विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]	विदेह: सदेह ६ तिरहुता
विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]	विदेह: सदेह ७ तिरहुता
विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]	विदेह: सदेह ८ तिरहुता
विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]	विदेह: सदेह ९ तिरहुता
विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]	विदेह: सदेह १० तिरहुता
विदेहसदेह ११:	विदेहतिरहुता सदेह ११ :
विदेहसदेह १२:	विदेहतिरहुता सदेह १२ :
विदेहसदेह १३:	विदेहतिरहुता सदेह १३ :
विदेहसदेह १४:	विदेहतिरहुता सदेह १४ :

विदेह:सदेह ३३ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-२- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३३ तिरहुता
विदेह:सदेह ३४ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-३- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३४ तिरहुता
विदेह:सदेह ३५ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-४- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३५ तिरहुता
विदेह:सदेह ३६ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-५- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३६ तिरहुता

....

यू.पी.एस.सी. आ आन प्रतियोगिता परीक्षा लेल देखू:

विदेह:सदेह १७	विदेह:सदेह २१	विदेह:सदेह २३	विदेह:सदेह २६	विदेह:सदेह २९
विदेह:सदेह ३०	विदेह:सदेह ३२	विदेह:सदेह ३३	विदेह:सदेह ३४	विदेह:सदेह ३५

....

२

विदेहक सभटा पुरान अंक (अंक १ सँ ३५४ आ आगाँ)

विदेहक अंक १-१४९ (देवनागरी, मिथिलाक्षर आ ब्रेलमे)

देवनागरी	मिथिलाक्षर	ब्रेल
Videha_01_01_08	Videha_01_01_08_Tirhuta	1
Videha_15_01_08	Videha_15_01_08_Tirhuta	2
Videha_01_02_08	Videha_01_02_08_Tirhuta	3
Videha_15_02_08	Videha_15_02_08_Tirhuta	4
Videha_01_03_08	Videha_01_03_08_Tirhuta	5
Videha_15_03_08	Videha_15_03_08_Tirhuta	6
Videha_01_04_2008	Videha_01_04_2008_Tirhuta	7

Videha_01_07_2009	Videha_01_07_2009_Tirhuta	37
Videha_15_07_2009	Videha_15_07_2009_Tirhuta	38
videha_01_08_2009	videha_01_08_2009_tirhuta	39
videha_15_08_2009	videha_15_08_2009_tirhuta	40
videha_01_09_2009	videha_01_09_2009_tirhuta	41
videha_15_09_2009	videha_15_09_2009_tirhuta	42
videha_01_10_2009	videha_01_10_2009_tirhuta	43
videha_15_10_2009	videha_15_10_2009_tirhuta	44
videha_01_11_2009	videha_01_11_2009_tirhuta	45
videha_15_11_2009	videha_15_11_2009_tirhuta	46
videha_01_12_2009	videha_01_12_2009_tirhuta	47
videha_15_12_2009	videha_15_12_2009_tirhuta	48
videha_01_01_2010	videha_01_01_2010_tirhuta	49
videha_15_01_2010	videha_15_01_2010_tirhuta	50
videha_01_02_2010	videha_01_02_2010_tirhuta	51
videha_15_02_2010	videha_15_02_2010_tirhuta	52
videha_01_03_2010	videha_01_03_2010_tirhuta	53
videha_15_03_2010	videha_15_03_2010_tirhuta	54
videha_01_04_2010	videha_01_04_2010_tirhuta	55
videha_15_04_2010	videha_15_04_2010_tirhuta	56
videha_01_05_2010	videha_01_05_2010_tirhuta	57
videha_15_05_2010	videha_15_05_2010_tirhuta	58
videha_01_06_2010	videha_01_06_2010_tirhuta	59
videha_15_06_2010	videha_15_06_2010_tirhuta	60
videha_01_07_2010	videha_01_07_2010_tirhuta	61
videha_15_07_2010	videha_15_07_2010_tirhuta	62
videha_01_08_2010	videha_01_08_2010_tirhuta	63
videha_15_08_2010	videha_15_08_2010_tirhuta	64
videha_01_09_2010	videha_01_09_2010_tirhuta	65

videha_15_09_2010	videha_15_09_2010_tirhuta	66
videha_01_10_2010	videha_01_10_2010_tirhuta	67
videha_15_10_2010	videha_15_10_2010_tirhuta	68
videha_01_11_2010	videha_01_11_2010_tirhuta	69
videha_15_11_2010	videha_15_11_2010_tirhuta	70
videha_01_12_2010	videha_01_12_2010_tirhuta	71
videha_15_12_2010	videha_15_12_2010_tirhuta	72
videha_01_01_2011	videha_01_01_2011_tirhuta	73
videha_15_01_2011	videha_15_01_2011_tirhuta	74
videha_01_02_2011	videha_01_02_2011_tirhuta	75
videha_15_02_2011	videha_15_02_2011_tirhuta	76
videha_01_03_2011	videha_01_03_2011_tirhuta	77
videha_15_03_2011	videha_15_03_2011_tirhuta	78
videha_01_04_2011	videha_01_04_2011_tirhuta	79
videha_15_04_2011	videha_15_04_2011_tirhuta	80
videha_01_05_2011	videha_01_05_2011_tirhuta	81
videha_15_05_2011	videha_15_05_2011_tirhuta	82
videha_01_06_2011	videha_01_06_2011_tirhuta	83
videha_15_06_2011	videha_15_06_2011_tirhuta	84
videha_01_07_2011	videha_01_07_2011_tirhuta	85
videha_15_07_2011	videha_15_07_2011_tirhuta	86
videha_01_08_2011	videha_01_08_2011_tirhuta	87
videha_15_08_2011	videha_15_08_2011_tirhuta	88
videha_01_09_2011	videha_01_09_2011_tirhuta	89
videha_15_09_2011	videha_15_09_2011_tirhuta	90
videha_01_10_2011	videha_01_10_2011_tirhuta	91
videha_15_10_2011	videha_15_10_2011_tirhuta	92
videha_01_11_2011	videha_01_11_2011_tirhuta	93
videha_15_11_2011	videha_15_11_2011_tirhuta	94

videha_01_12_2011	videha_01_12_2011_tirhuta	95
videha_15_12_2011	videha_15_12_2011_tirhuta	96
videha_01_01_2012	videha_01_01_2012_tirhuta	97
videha_15_01_2012	videha_15_01_2012_tirhuta	98
videha_01_02_2012	videha_01_02_2012_tirhuta	99
videha_15_02_2012	videha_15_02_2012_tirhuta	100
videha_01_03_2012	videha_01_03_2012_tirhuta	101
videha_15_03_2012	videha_15_03_2012_tirhuta	102
videha_01_04_2012	videha_01_04_2012_tirhuta	103
videha_15_04_2012	videha_15_04_2012_tirhuta	104
videha_01_05_2012	videha_01_05_2012_tirhuta	105
videha_15_05_2012	videha_15_05_2012_tirhuta	106
videha_01_06_2012	videha_01_06_2012_tirhuta	107
videha_15_06_2012	videha_15_06_2012_tirhuta	108
videha_01_07_2012	videha_01_07_2012_tirhuta	109
videha_15_07_2012	videha_15_07_2012_tirhuta	110
videha_01_08_2012	videha_01_08_2012_tirhuta	111
videha_15_08_2012	videha_15_08_2012_tirhuta	112
videha_01_09_2012	videha_01_09_2012_tirhuta	113
videha_15_09_2012	videha_15_09_2012_tirhuta	114
videha_01_10_2012	videha_01_10_2012_tirhuta	115
videha_15_10_2012	videha_15_10_2012_tirhuta	116
videha_01_11_2012	videha_01_11_2012_tirhuta	117
videha_15_11_2012	videha_15_11_2012_tirhuta	118
videha_01_12_2012	videha_01_12_2012_tirhuta	119
videha_15_12_2012	videha_15_12_2012_tirhuta	120
videha_01_01_2013	videha_01_01_2013_tirhuta	121
videha_15_01_2013	videha_15_01_2013_tirhuta	122
videha_01_02_2013	videha_01_02_2013_tirhuta	123

विदेहक अंक १५०३४४-

VIDEHA_155	VIDEHA_156	VIDEHA_157	VIDEHA_158	VIDEHA_159
VIDEHA_160	VIDEHA_161	VIDEHA_162	VIDEHA_163	VIDEHA_164
VIDEHA_165	VIDEHA_166	VIDEHA_167	VIDEHA_168	VIDEHA_169
VIDEHA_170	VIDEHA_171	VIDEHA_172	VIDEHA_173	VIDEHA_174
VIDEHA_175	VIDEHA_176	VIDEHA_177	VIDEHA_178	VIDEHA_179
VIDEHA_180	VIDEHA_181	VIDEHA_182	VIDEHA_183	VIDEHA_184
VIDEHA_185	VIDEHA_186	VIDEHA_187	VIDEHA_188	VIDEHA_189
VIDEHA_190	VIDEHA_191	VIDEHA_192	VIDEHA_193	VIDEHA_194
VIDEHA_195	VIDEHA_196	VIDEHA_197	VIDEHA_198	VIDEHA_199
VIDEHA_200	VIDEHA_201	VIDEHA_202	VIDEHA_203	VIDEHA_204
VIDEHA_205	VIDEHA_206	VIDEHA_207	VIDEHA_208	VIDEHA_209
VIDEHA_210	VIDEHA_211	VIDEHA_212	VIDEHA_213	VIDEHA_214
VIDEHA_215	VIDEHA_216	VIDEHA_217	VIDEHA_218	VIDEHA_219
VIDEHA_220	VIDEHA_221	VIDEHA_222	VIDEHA_223	VIDEHA_224
VIDEHA_225	VIDEHA_226	VIDEHA_227	VIDEHA_228	VIDEHA_229
VIDEHA_230	VIDEHA_231	VIDEHA_232	VIDEHA_233	VIDEHA_234
VIDEHA_235	VIDEHA_236	VIDEHA_237	VIDEHA_238	VIDEHA_239
VIDEHA_240	VIDEHA_241	VIDEHA_242	VIDEHA_243	VIDEHA_244
VIDEHA_245	VIDEHA_246	VIDEHA_247	VIDEHA_248	VIDEHA_249
VIDEHA_250	VIDEHA_251	VIDEHA_252	VIDEHA_253	VIDEHA_254
VIDEHA_255	VIDEHA_256	VIDEHA_257	VIDEHA_258	VIDEHA_259
VIDEHA_260	VIDEHA_261	VIDEHA_262	VIDEHA_263	VIDEHA_264
VIDEHA_265	VIDEHA_266	VIDEHA_267	VIDEHA_268	VIDEHA_269
VIDEHA_270	VIDEHA_271	VIDEHA_272	VIDEHA_273	VIDEHA_274
VIDEHA_275	VIDEHA_276	VIDEHA_277	VIDEHA_278	VIDEHA_279
VIDEHA_280	VIDEHA_281	VIDEHA_282	VIDEHA_283	VIDEHA_284
VIDEHA_285	VIDEHA_286	VIDEHA_287	VIDEHA_288	VIDEHA_289
VIDEHA_290	VIDEHA_291	VIDEHA_292	VIDEHA_293	VIDEHA_294
VIDEHA_295	VIDEHA_296	VIDEHA_297	VIDEHA_298	VIDEHA_299
VIDEHA_300	VIDEHA_301	VIDEHA_302	VIDEHA_303	VIDEHA_304
VIDEHA_305	VIDEHA_306	VIDEHA_307	VIDEHA_308	VIDEHA_309
VIDEHA_310	VIDEHA_311	VIDEHA_312	VIDEHA_313	VIDEHA_314
VIDEHA_315	VIDEHA_316	VIDEHA_317	VIDEHA_318	VIDEHA_319
VIDEHA_320	VIDEHA_321	VIDEHA_322	VIDEHA_323	VIDEHA_324
VIDEHA_325	VIDEHA_326	VIDEHA_327	VIDEHA_328	VIDEHA_329

VIDEHA_330	VIDEHA_331	VIDEHA_332	VIDEHA_333	VIDEHA_334
VIDEHA_335	VIDEHA_336	VIDEHA_337	VIDEHA_338	VIDEHA_339
VIDEHA_340	VIDEHA_341	VIDEHA_342	VIDEHA_343	VIDEHA_344

विदेहक सभ अंक सम्बन्धी किछु आवश्यक पोथी/ जानकारी

Learn Maithili Sign Language- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर)

Learn Mithilakshar- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn IPA through Mithilakshar- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Braille through Mithilakshar- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Tirhuta Offline Keyboard download

Keyman Tirhuta/ Vedic Devanagari Keyboards Download

Learn Kaithi- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

कैथी लिपि (मैथिली साहित्य संस्थान डाउनलोड लिंक)

Learn Newari- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Calligraphic Newari (Ranjana)- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Urdu Script- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Tibetan Script- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Japanese Script for Haiku- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Brahmi- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Kharoshthi- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

स्थायी स्तम्भ जेना मिथिला-रत्न, मिथिलाक खोज, विदेह ई-लर्निङ्ग, विदेह स्त्री-कोना, विदेह पेटार (विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक; विदेह पोथी डाउनलोड; विदेह मैथिली ऑडियो-वीडियोक संकलन आ विदेह शिशु, बाल आ किशोर साहित्य) आ सूचना-संपर्क-अन्वेषण (including Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement) सभ अंकमे समान अछि, तइ हेतु ई सभ स्तम्भ सभ अंकमे नै देल जाइत अछि, ई सभ स्तम्भ देखबा लेल क्लिक करू विदेहक ३४६ म, ३४७ म, ३६६ म आ ३७३ म अंक। ऐ चारू अंकमे सम्मिलित रूपेँ ई सभ स्तम्भ देल गेल अछि।

विदेहक ३४५म आ आगाँक अंक

देवनागरी	मिथिलाक्षर	आइ.ए.पी.	मैथिली ब्रेल
VIDEHA_345	VIDEHA_345_Tirhuta	VIDEHA_345_IPA	VIDEHA_345_Braille
VIDEHA_346	VIDEHA_346_Tirhuta	VIDEHA_346_IPA	VIDEHA_346_Braille
VIDEHA_347	VIDEHA_347_Tirhuta	VIDEHA_347_IPA	VIDEHA_347_Braille
VIDEHA_348	VIDEHA_348_Tirhuta	VIDEHA_348_IPA	VIDEHA_348_Braille

VIDEHA_349	VIDEHA_349_Tirhuta	VIDEHA_349_IPA	VIDEHA_349_Braille

देवनागरी	मिथिलाक्षर	आइ.ए.पी.	मैथिली ब्रेल	कैथी
VIDEHA_350	VIDEHA_350_Tirhuta	VIDEHA_350_IPA	VIDEHA_350_Braille	VIDEHA_350_KAITHI
VIDEHA_351	VIDEHA_351_Tirhuta	VIDEHA_351_IPA	VIDEHA_351_Braille	VIDEHA_351_KAITHI
VIDEHA_352	VIDEHA_352_Tirhuta	VIDEHA_352_IPA	VIDEHA_352_Braille	VIDEHA_352_KAITHI
VIDEHA_353	VIDEHA_353_Tirhuta	VIDEHA_353_IPA	VIDEHA_353_Braille	VIDEHA_353_KAITHI
VIDEHA_354	VIDEHA_354_Tirhuta	VIDEHA_354_IPA	VIDEHA_354_Braille	VIDEHA_354_KAITHI

नागरी	तिरहुता	आइपीए	ब्रेल	कैथी	रंजना	नेवाड़ी	खरोष्ठी	ब्राह्मी
355	Tirhu	IPA	Brail	KAI	Ran	Newa	Kharo	Brahmi

नागरी	तिरहुता	कैथी	रंजना	प्रचलित	ब्राह्मी	IPA	ब्रेल	खरोष्ठी	उर्दू	तिब्बती	तिब्बती-उमे
356	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	खरोष्ठी	उर्दू	Tib	Ume
357	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	खरोष्ठी	उर्दू	Tib	Ume

नागरी	तिरहुता	कैथी	रंजना	प्रचलित	ब्राह्मी	IPA	ब्रेल	तिब्बती	तिब्बती-उमे
358	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	Tib	Ume
359	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	Tib	Ume
360	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	Tib	Ume

नागरी	तिरहुता	कैथी	नेवाड़ी	आइ.पी.ए.	ब्रेल
361	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
362	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
363	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
364	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
365	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
366	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
367	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille

368	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
369	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
370	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
371	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
372	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille

....

३

विदेहक विशेषांक

१) हाइकू विशेषांक

Videha_15_06_2008	Videha_15_06_2008_Tirhuta	12

२) गजल विशेषांक

Videha_01_11_2008	Videha_01_11_2008_Tirhuta	21

३) विहनि कथा विशेषांक

videha_01_10_2010	videha_01_10_2010_tirhuta	67

४) बाल साहित्य विशेषांक

videha_15_11_2010	videha_15_11_2010_tirhuta	70

५) नाटक विशेषांक

videha_15_12_2010	videha_15_12_2010_tirhuta	72

६) समीक्षा विशेषांक

videha_15_01_2011	videha_15_01_2011_tirhuta	74

७) नारी विशेषांक

videha_01_03_2011	videha_01_03_2011_tirhuta	77

८) अनुवाद विशेषांक (गद्य-पद्य भारती)

videha_01_01_2012	videha_01_01_2012_tirhuta	97

९) बाल गजल विशेषांक

videha_01_08_2012	videha_01_08_2012_tirhuta	111

१०) भक्ति गजल विशेषांक

videha_15_03_2013	videha_15_03_2013_tirhuta	126

११) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक

videha_15_11_2013	videha_15_11_2013_tirhuta	142

१२) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक

Videha_01_01_2015

१३) अरविन्द ठाकुर विशेषांक

Videha_01_11_2015

स्वतंत्रचेता- अरविन्द ठाकुर: व्यक्तित्व-कृतित्व (सम्पादक आशीष अनचिन्हार) [विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांकक प्रिण्ट रूप]

१४) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक

Videha_01_12_2015

१५) विदेह सम्मान विशेषा क

विदेह सम्मान: सम्मान-सूची (समानान्तर साहित्य अकादेमी, समानान्तर ललित कला अकादेमी आ समानान्तर संगीत-नाटक अकादेमी सम्मान/ पुरस्कार नामसँ विख्यात)

साक्षात्कार/ समारोह

साक्षात्कार	videha_15_12_2011	videha_15_01_2012	videha_01_02_2012	videha_01_03_2012
videha_01_09_2012	videha_15_01_2013	videha_01_03_2013	Videha_15_04_2016	Videha_01_07_2016

१६) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक

Videha_01_01_2017

१७) मैथिली वेब पत्रकारिता विशेषांक

VIDEHA 313

१८) मैथिली बीहनि कथा विशेषांक-२

VIDEHA 317

१९) रामलोचन ठाकुर विशेषांक

VIDEHA 319

२०) रामलोचन ठाकुर श्रद्धांजलि विशेषांक

VIDEHA 320

२१) राजनन्दन लाल दास विशेषांक

VIDEHA 333

२२) रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक

VIDEHA_348	VIDEHA_348_Tirhuta	VIDEHA_348_IPA	VIDEHA_348_Braille

२३केदार नाथ चौधरी विशेषांक (

VIDEHA_352	VIDEHA_352_Tirhuta	VIDEHA_352_IPA	VIDEHA_352_Braille	VIDEHA_352_KAITHI

२४ प्रेमलता मिश्र ('प्रेम' विशेषांक

Videha_357	Videha_357_Tirhuta

२५शरदिन्दु चौधरी विशेषांक (

Videha_358	Videha_358_Tirhuta

२६संजू दास -सन्दर्भ) विमर्श विशेषांक-कला (, कृष्ण कुमार कश्यप, शशिबाला, एससुमन आ श्वेता .सी. (झा चौधरी

Videha_368	Videha_368_Tirhuta

२७रचनाकार अशोक विशेषांक (

Videha_369	Videha_369_Tirhuta

२७ राम भरोस कापड़ि ('भ्रमर' विशेषांक

Videha_370	Videha_370_Tirhuta

२८विशेषांक (.यू.एस.एम) मिथिला स्टूडेण्ट यूनियन (

Videha_371	Videha_371_Tirhuta

....

४

लेखकक आमंत्रित रचना आ ओइपर आमंत्रित समीक्षकक समीक्षा सीरीज

१.कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

Videha_01_09_2016

२पर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी"माटिक बासन" क"मनु" जगदानन्द झा.

VIDEHA_353

३आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी "जिन्दगीक मोल" मुन्नी कामतक एकांकी.

VIDEHA_354

४.कपिलेश्वर राउतक ५ टा कथा आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_356

५टा कथा आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी उमेश मण्डलक ५.

Videha_357

६टा कथा आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी राम विलास साहुक ५.

Videha_358

७ सुभाष चन्द्र यादवक समस्त साहित्य -नित नवल सुभाष चन्द्र यादव.आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (मिथिलाक्षर)

८राजदेव मण्डलक साहित्यपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी.

Rajdeo Mandal- Maithili Writer
९टा कथा आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी आचार्य रामानन्द मण्डलक ५.

Videha_360

१०नन्द विलास रायक चारिटा कथा आ एकटा एकांकी आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी.

Videha_361

११जगदीश प्रसाद मण्डलक साहित्यपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी.

JAGDISH PRASAD MANDAL- Maithili Writer

१२दुर्गानन्द मण्डलक पाँचटा कथा आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी.

Videha_363

१३नारायण यादवक पाँचटा कथा आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी.

Videha_364

१४दिनेश कुमार मिश्रक समस्त लेखन आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी -दिनेश कुमार मिश्र नित नवल .

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (जारी)

१५ सुशीलक समस्त साहित्य आ -नित नवल सुशील .ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

नित नवल सुशील (जारी)

....

५

"पाठक हमर पोथी किए पढ़थि"- लेखक द्वारा अप्पन पोथी/ रचनाक समीक्षा सीरीज

१. आशीष अनचिन्हार ०१ अगस्त २०२१

१).a) आशीष अनचिन्हार ०१ मार्च २०२३

२सितम्बर २० गजेन्द्र ठाकुर ०१ .२२

....

६

एडिटर्स चोइस सीरीज

एडिटर्स चोइस सीरीज१-

विदेहमे बलात्कारपर मैथिलीमे पहिल कविता प्रकाशित भेल छल। ई दिसम्बर २०१२ क दिल्लीक निर्भया बलात्कार काण्डक बादक समय छल। ओना ई अनूदित रचना छल, तेलुगुमे पसुपुलेटी गीताक कविताक हिन्दी अनुवाद केने छलीह आरशांता सुन्दरी आ हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद केने छलाह विनीत . कविता ऐ विषयपर कोनो उत्पल। हमर जानकारीमे ऐसँ बेशी सिहराबैबला भाषामे नै रचल गेल अछि। कताक सालक बादो ई समस्या ओहने अछि। ई कविता सभकेँ पढ़बाक चाही, खास कऽ सभ बेटीक बापकेँ, सभ बहिनक भाएकेँ आ सभ पत्नीक पतिकेँ। आ विचारबाक चाही जे हम सभ अपना बच्चा सभ लेल केहन समाज बनेने छी।

एडिटर्स चोइस सीरीज१- (डाउनलोड लिंक(

एडिटर्स चोइस सीरीज२-

विदेहमे ब्रेस्ट कैसरक समस्यापर विदेह मे मीना झा केर एकटा लघु कथा प्रकाशित भेल। ई मैथिलीक पहिल कथा छल जे ब्रेस्ट कैसर पर लिखल गेल। हिन्दीमे सेहो ताधरि ऐ विषयपर कथा नै लिखल गेल छल, कारण ऐ कथाक ई- -प्रकाशित भेलाक १२ सालक बाद हिन्दीमे दू गोटेमे घोंघाउज भऽ रहल छल कि पहिल हम आकि हम, मुदा दुनूक तिथि मैथिलीक कथाक परवर्ती छल। बादमे ई विदेह लघु कथामे सेहो संकलित भेल।

एडिटर्स चोइस सीरीज२- (डाउनलोड लिंक(

एडिटर्स चोइस सीरीज३-

विदेहमे जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिलक किछु बाल कविता प्रकाशित भेल। बादमे हुनकर ३ टा बाल कविता विदेह शिशु उत्सवमे संकलित भेल जइमे २ टा कविता बेबी चाइल्डपर छल। पढ़ू ई तीनू कविता, बादक दुनू बेबी चाइल्डपर लिखल कविता पढ़बे टा करू से आग्रह।

एडिटर्स चोइस सीरीज३- (डाउनलोड लिंक(

एडिटर्स चोइस सीरीज४-

विदेहमे जगदानन्द झा क एकटा दीर्घ बाल कथा कहि लिअ बा उपन्यास "मनु" प्रकाशित भेल, नाम छल चोनहा। बादमे ई रचना विदेह शिशु उत्सवमे संकलित भेल, ई रचना बाल मनोविज्ञानपर आधारित मैथिलीक पहिल रचना छी, मैथिली बाल साहित्य कोना लिखी तकर ट्रेनिंग कोर्समे ऐ उपन्यासकेँ राखल जेबाक चाही। कोना मॉडर्न उपन्यास आगाँ बढ़ै छै, स्टेप बाइ स्टेप आ सेहो बाल उपन्यास। पढ़बे टा करू से आग्रह।

एडिटर्स चोइस सीरीज४- (डाउनलोड लिंक(

एडिटर्स चोइस सीरीज५-

एडिटर्स चोइस ५ मे मैथिलीक माने कुमार पवनक दीर्घकथा "उसने कहा था" । हिन्दीक पाठक (साभार अंतिका) "पइठ", जे पढ़ने हेता "उसने कहा था", केँ बुझल छन्हि जे कोना अहि कथाकेँ रचि चन्द्रधर शर्मा अमर भऽ "गुलेरी" चर्चा कऽ रहल छी गेलाह। हम, कुमार पवनक दीर्घकथाक। एकरा "पइठ" पढ़लाक बाद अहाँकेँ एकटा विचित्र, सुखद आ मोन हौल करैबला अनुभव भेटत, जे सेक्सपीरिअन ट्रेजेडी सँ मिलितो लागत आ फराको। मुदा ऐ रचनाकेँ पढ़लाक

बाद तामस, घृणा सभपर नियंत्रणकेँ आ सामाजिकपारिवारिक दायित्वकेँ / आर गंभीरतासँ लेबै सेहो अहाँ, से धरि पक्का अछि। मुदा एकर एकटा शर्त अछि जे एकरा समै निकालि कऽ एक्के उखड़ाहामे पढ़ि जाइ।

एडिटर्स चोइस सीरीज५- (डाउनलोड लिंक(

एडिटर्स चोइस सीरीज६-

जगदीश प्रसाद मण्डलक लघुकथा क अकालमे बंगालमे ४३-१९४२ :"बिसाँढ़" लाख लोक मुइला १५, मुदा अमर्त्य सेन लिखैत छथि जे हुनकर कोनो सर-मे आ .ई सम्बन्धी ऐ अकालमे नै मरलन्हि। मिथिलोमे अकाल आएल १९६७ मुसहर इन्दिरा गाँधी जखन ऐ क्षेत्र अएली तँ हुनका देखाओल गेल जे कोना जातिक लोक बिसाँढ़ खा कऽ ऐ अकालकेँ जीति लेलन्हि। मैथिलीमे लेखनक एकभगाह स्थिति विदेहक आगमनसँ पहिने छल। मैथिलीक लेखक लोकनि सेहो अमर्त्य सेन जेकाँ ओहि महाविभीषिकासँ प्रभावित नै छला आ तेँ बिसाँढ़पर कथा नै लिखि सकला। जगदीश प्रसाद मण्डल ऐपर कथा लिखलन्हि जे प्रकाशित भेल चेतना समितिक पत्रिकामे, मुदा कार्यकारी सम्पादक द्वारा वर्तनी परिवर्तनक कारण ओ मैथिलीमे नै वरण् अवहट्ठमे लिखल बुझा पड़ल, आ ओतेक प्रभावी नै भऽ सकल कारण विषय रहै खाँटी आ वर्तनी कृत्रिम। से एकर पुनः ईप्रकाशन - लघुकथा "गामक जिनगी" अपन असली रूपमे भेल विदेहमे आ ई संकलित भेल संग्रहमे। ऐ पोथीपर जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ टैगोर लिटरेचर अवार्ड भेटलनि। जगदीश प्रसाद मण्डलक लेखनी मैथिली कथाधाराकेँ एकभगाह हेबासँ बचा लेलक, आ मैथिलीक समानान्तर इतिहासमे मैथिली साहित्यकेँ दू कालखण्डमे बाँटि कऽ पढ़ए जाए लागलजगदीश प्रसाद मण्डलसँ पूर्व आ जगदीश प्रसाद - अपन सुच्चा स्व -मण्डल आगमनक बाद। तँ प्रस्तुत अछि लघुकथा बिसाँढ़रूपमे।

एडिटर्स चोइस सीरीज६- (डाउनलोड लिंक(

एडिटर्स चोइस सीरीज७-

मैथिलीक पहिल आ एकमात्र दलित आत्मकथासन्दीप कुमार साफी। सन्दीप : कुमार साफीक दलित आत्मकथा जे अहाँकेँ अपन लघु आकाराक अछैत हिलोड़ि देत आ अहाँक ई स्थिति कऽ देत जे समानान्तर मैथिली साहित्य कतबो पढ़ू अहाँकेँ अछौं नै हएत। ई आत्मकथा विदेहमे ईप्रकाशित भेलाक बाद - मे संकलित भेल आ ई मैथिलीक अखन "बैशाखमे दलानपर" लेखकक पोथी धरिक एकमात्र दलित आत्मकथा थिक। तँ प्रस्तुत अछि मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथासन्दीप कुमार साफीक कलमसँ। :

एडिटर्स चोइस सीरीज७- (डाउनलोड लिंक(

एडिटर्स चोइस सीरीज८-

नेना भुटकाकेँ रातिमे सुनेबा लेल किछु लोककथा ।(विदेह पेटारसँ)

एडिटर्स चोइस सीरीज८- (डाउनलोड लिंक(

एडिटर्स चोइस सीरीज९-

मैथिली गजलपर परिचर्चा ।(विदेह पेटारसँ)

एडिटर्स चोइस सीरीज९- (डाउनलोड लिंक(

....

विदेह सम्मान*:* **सम्मानसूची-** (समानान्तर साहित्य अकादेमी, समानान्तर ललित कला अकादेमी आ समानान्तर संगीत /नाटक अकादेमी सम्मान- (पुरस्कार नामसँ विख्यात

....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रेरित बुझाइत अछि, से एकर एकरा एक उखड़ाहामे उनटा-पुनटा दियौ, ततबे धरि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क **मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेल सेहो ई पर्याप्त अछि,** से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेने छथि से एकर एकटा आर फास्ट-रीडिंग दोसर-उखड़ाहामे करथि|

IGNOU इग्नू BMAF-001

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should

not have difficulty accessing these contents/ documents.

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

विदेह पोथी

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

Search for Books (including Audio-Visual & Sign Language) relating to Mithila/ Maithili

https://books.google.com/



Videha Archive of Maithili Books विदेह मैथिली पोथीक आर्काइव (पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र एकेडमिक प्रयोग लेल) सभ पोथी पी.डी.एफ. डाउनलोड लेल क्रमानुसार नीचाँक लिंक सभपर उपलब्ध अछि। All the books are available for pdf download at the respective links below

....

तिरहुता, नेवाड़ी आ कैथी फॉण्ट डाउनलोड Google's Noto Fonts project/ GitHub

तिरहुता नोटो फॉण्ट	कैथी ओटीएफ	कैथी टीटीएफ	नेवाड़ी ओ.टी.एफ.	नेवाड़ी टी.टी.एफ.

https://fonts.google.com/ (Google Open Fonts download)

Tirhuta Offline Keyboard download

Keyman Tirhuta/ Vedic Devanagari Keyboards Download

https://malarproject.gitlab.io/tirhuta (Tirhuta Keyboard Online)

....

बौद्ध चर्यापद (सौजन्य- म. म. हरप्रसाद शास्त्री, १९०७, जयधारी सिंह, १९६९)

२३ कवि ५० टा चर्यापद संख्या [लुइपाद १, २९; कुक्कुरीपाद २, २०, ४८; विरुबपाद ३; गुण्डारीपाद ४; चत्तिलपाद ५; भुसुकुपाद ६, २१, २३, २७, ३०, ४१, ४३, ४९; कान्हापाद ७, ९, १०, ११, १२, १३, १८, १९, २४, ३६, ४०, ४२, ४५; कम्बलाम्बरपाद ८; डोम्बीपाद १४; शान्तिपाद १५, २६; महिधरपाद १६; वीणापाद १७; सरहपाद २२, ३२, ३८, ३९; शबरपाद २८,५०; आर्यदेवपाद ३१; ढेनढनपाद ३३; दारिकापाद ३४; भादेपाद ३५; ताडकापाद ३७; कनकनापाद ४४; जयनन्दीपाद ४६; धमपाद ४७; तंत्रीपाद २५**]**

१६ राग ४७ चर्यापद संख्या- ३ टा चर्यापद संख्या -२४, २५, ४८ (इन्द्रताल २४; गीति- २५, पटह- ४८)**- मे राग अनुपलब्ध [**पतमञ्जरी १, ६, ७, ९, ११, १७, २०, २९, ३१, ३३, ३६; गबड बा गौड़ २, ३, १८; आरु ४; गुर्जरा, गुञ्जरी बा कान्हा-गुञ्जरी ५, २२, ४१, ४७; देवकरी ८; देशाखा १०,३२; कामोद १३, २७, ३७, ४२; धनाशी बा धनश्री १४; रामकरी १५, ५०; बलडी बा बराडी २१, २३, २८, ३४; शबरी २६, ४६; मल्लारी ३०, ३५, ४४, ४५, ४९; मालासी ३९; मालासी-गाबुरा ४०; बांगल ४३; भैरवी १२, १६, १९, ३८**]**

चर्यापद

महाकवि डाक (संकलन पं जीवानन्द ठाकुर, १९५०)

डाकवचन

मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व) [सौजन्य- डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इण्डिया]

विद्यापति पद्यावली (सम्पादन नगेन्द्रनाथ गुप्त १९१०)

मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व)- गजेन्द्र ठाकुर

ज्योतिरीश्वर ठाकुर (सौजन्य- डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इण्डिया)

वर्णन रत्नाकर

मैथिली धूर्तसमागम

विद्यापति ठक्कुरः [(१३५०-१४३५) मैथिलीक आदि कवि ज्योतिरीश्वर-पूर्व विद्यापतिसँ भिन्न, संस्कृत आ अवहट्ठमे लेखन]

व्याडीभक्ति तरङ्गिणी

गोरक्षविजयम्

Vidyapati A Political Analysis- Dr Shankar Kumar Jha

[सौजन्य पं शशिनाथ झा/ रामदेव झा]

शंकरदेव

पारिजातहरण

रामविजय

दैत्यारि ठाकुर

श्यामंत हरण यात्रा (अंकिया नाट)

माधवदेव

भूमि लुटिया झुमुरा आ पिम्परा-गुचुरा-झुमुरा

लक्ष्मीदेव

कुमारहरण नाट शत स्कंध रावण वध (अंकिया नाट)

जगत्प्रकाशमल्ल

प्रभावतीहरण नाटक

सिद्ध नरसिंहमल्ल

गीतावली सिद्धि

जगत्ज्योतिर्रमल्ल

हरगौरी विवाह नाटक कुञ्जविहार नाटक

हर्षनाथ झा

माधवानन्द नाटक

उषाहरण

हर्षनाथ काव्यग्रन्थावली (संकलन अमरनाथ झा १८९७-१९५५)

रत्नपाणि

उषाहरण नाटक

श्रीकांत

श्रीकृष्ण जन्म रहस्य

नन्दीपति

कृष्णकेलिमाला

गीतमाला

कान्हा रामदास

गौरीस्वयंवर

लाल

गौरीस्वयंवर नाटक

उमापति

पारिजात हरण

भानुनाथ

प्रभावती हरण

देवानन्द

उषाहरण

रमापति

रुक्मणी परिचय

उपाध्याय रामदास

आनन्द विजयाभिदान नाटिका

शिवदत्त

गौरीपरिणय सीतास्वयंवर दुर्गाविजय

पारिजात नाटक

…………………

कथा बौद्ध सिद्ध मेहथपा (बाल साहित्य केन्द्रित) मेंहथमे भेल ८२ म सगर राति दीप जरयमे पठित कथा सभक संकलन

कथा बौद्ध सिद्ध मेहथपा

सखुआवाली (नारी विमर्श केन्द्रित) भपटियाहीमे भेल ८३ म सगर राति दीप जरयमे पठित कथा सभक संकलन

सखुआवाली

सर जी. ए. ग्रियर्सन (१८५१-१९४१)

मैथिली ग्रामर

मैथिली क्रेस्टोमेथी एण्ड वोकाबुलेरी

मुंशी रघुनन्दन दास (१८६०-१९४५) (सौजन्य- राधाकृष्णन् दास)

सुभद्रा हरण

रासबिहारी लाल दास (१८७२-१९४०) (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

सुमति

हरिनन्दन दास (सौजन्य- राधाकृष्णन् दास)

सुदामा चरित

पं रामजी चौधरी (१८७८-१९५२) (सौजन्य- श्री श्रीमोहन चौधरी)

विविध भजनावली

आचार्य रामलोचन शरण (१८८९-१९७१) (सौजन्य- मैथिली साहित्य संस्थान)

जयन्ती-स्मारक ग्रन्थ

धनुषधारी दास (१८९५-१९६५) (सौजन्य- पञ्जीकार विद्यानन्द झा)

मैथिली में बिहारी

हरिमोहन झा (१९०८-१९८४) (सौजन्य- मैथिली साहित्य संस्थान/ गौरीनाथ)

अभिनन्दन ग्रन्थ

अंतिका (हरिमोहन झा विशेषांक)

....

डॉ. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' (सौजन्य- राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर')

महिषासुर मुर्दावाद एवं अन्य नाटक (१९९७)

लोक नाट्य: जट जटिन (२००७) (शोध)

हुगली ऊपर बहैत गंगा आ आन कथा (कथा संग्रह) (२००८)

भ्रमर मैथिली दीर्घ कविता (हिन्दी अनुवाद-अब बस नहीं) (२००९)

मैथिली लोक संस्कृति (नेपाली भाषामे) (२००९)

भैया अएलै अपन सोराज (नाटक संग्रह) (२०१०)

घरमुहाँ (उपन्यास) (२०१२)- ई बुक वर्जन

घरमुँहा (उपन्यास) (२०१२)- प्रिंट वर्जन

अनहरियाक चान (गजल संग्रह) (२०१३)

चीन जे हम देखल (यात्रा संस्मरण) (२०१४)

सूली पर इजोत एवं अन्य नाटक (२०१५)

सीमाके आर-पार (यात्रा संस्मरण) (२०१६)

युद्धभूमिक एसगर योद्धा (कविता संग्रह) (२०१७)

एंटीवायरस (कथा संग्रह) (२०१९)

कोरोनाक संत्रासमे ओझरायल जिनगी (लकडाउन डायरी) (२०२०)

मिथिलाक लोकजीवन लोकसन्दर्भ (२०२२)

सोन्हगर गन्धक अन्वेषी डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'

मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी

स्मारिका (२०१०)

आंगन अंक-४ (२०१२) सलहेस विशेषांक

आँजुर (अंक वर्ष ३६, अंक ३) सोमदेव विशेष

गामघर-३०-०८-२०१८

गामघर-०४-१०-२०१८

गामघर-१६-०५-२०१९

गामघर-२७-०६-२०१९

रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"क किछु नाटक

मुन्नाजी द्वारा साक्षात्कार पृ. ३२१-३२८

देसिल बयनाक बहन्ने रामलोचन ठाकुर प्रसंग पृ. ३४७-३५७

हमर ज्ञान-पिपाशाक स्रोत: शरदिन्दु चौधरी पृ. ३१-३४

जट जटिन पृ. ५६८-७०५

भैया, अएलै अपन सोराज पृ. ५६८-७०५

आलेख कथा-फ्लैशबैक पृ. ८४-८८

आलेख पृ. पृ. ११७-१२५

आलेख पृ. १२७६-१२९०

आलेख पृ. ९७-९८

रायपुर यात्रा प्रसंग पृ. १५०-१५४

सलहेस परिचर्चा रिपोर्ट पृ. ४१-४५

रिपोर्ट पृ. २३१-२४३

रिपोर्ट पृ. ४४५

अंक २४ जून २०१२

२५ जुलाइ २०१२

०५ अगस्त २०१२

२३ फरबरी २०१६

आसिन २०७३

सुजीत कुमार झा (सौजन्य- सुजीत कुमार झा)

रिपोर्टर डायरी (रिपोर्ताज)

चिड़ै (लघुकथा-संग्रह)

जिद्दी (लघुकथा संग्रह)

कोइली घूरि आउ (बाल लघु-विहनि कथा संग्रह)

गन्ध (लघु कथा संग्रह)

खजुरीबाली (लघु कथा संग्रह)

बुलबुल (कथा संग्रह)

दूधमती- (नेपाली आ मैथिलीमे)

अंक ३१ अंक ३२ अंक ३३ अंक ३४ अंक 35 अंक 36 अंक 37 अंक 38 अंक 39 अंक 40 अंक 41

विन्देश्वर ठाकुर

नेपालक नोर मरुभूमिमे

विनीत ठाकुर (सौजन्य- विनीत ठाकुर)

बाँकी अछि हम्मर दूधक कर्ज

संतोष मिश्र (सौजन्य- संतोष मिश्र)

पोसपुत (लघुकथा-संग्रह)

उदास मोन (लघुकथा-संग्रह)

एना-किए (कविता-संग्रह)

अएना (संपादन- कविता-संग्रह)

कनकमणि दीक्षित (मूल नेपालीसँ मैथिली अनुवाद रूपा धीरू आ धीरेन्द्र प्रेमर्षि, बाल साहित्य) (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

भगता बेङक देश-भ्रमण

Ayodhyanath Choudhary (Courtesy- Ayodhyanath Choudhary)

Varied Verses (Maithili Verses in English Translation)

...

डॉ शशिधर कुमर आ सुप्रिया बेबी कुमारी

भूकम्प (पृ. ६३८-६७४)

अणिमा सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

शिशु गीत खेल

इलारानी सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

प्रेम- एक कविता (अनूदित नाटक)

अरुन्धती देवी (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मिथिलाक विदुषी महिला

डॉ. कमला चौधरी (सौजन्य- कमला चौधरी)

मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली २००८

समय-संकेत (कथा-संग्रह) २०१०

डॉ. ललिता झा (सौजन्य- ललिता झा)

मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली २०११

सुस्मिता पाठक (सौजन्य- केदार कानन)

परिचिति (कविता संग्रह)

कनोजड़ि (कथा संग्रह)

नन्दिनी पाठक (सौजन्य- केदार कानन)

पाथरक शहर (कविता संग्रह)

पन्ना झा (सौजन्य- नरेन्द्र झा)

अनुभूति (लघुकथा संग्रह(

कल्पना झा (सौजन्य- कल्पना झा)

गोसाउनिक गीत

नशामुक्ति हित गाबी गीत

निनियाँ

यायावरी- शेफालिका वर्मा (हिन्दी अनुवाद कल्पना झा)

मुन्नी कामत (सौजन्य- मुन्नी कामत)

सुखल मन तरसल आँखि (पद्य आ गद्य)

सुखल मन तरसल आँखि (कविता)

अंततः (कविता संग्रह)

चुक्का (बाल कथा संग्रह)

नीता झा (सौजन्य- नीता झा)

बिलाइ मौसी (बाल लघुकथा संग्रह)

शेफालिका वर्मा (सौजन्य- शेफालिका वर्मा)

यायावरी (यात्रावृत्तान्त)

यायावरी (हिन्दी अनुवाद- कल्पना झा)

अर्थयुग (लघुकथा संग्रह)

एकटा अकास (लघुकथा संग्रह)

भावांजलि (गद्य गीत)

किस्त-किस्त जीवन (आत्म कथा)

आखर-आखर प्रीत

नागफांस (उपन्यास)

Naagphans (In English)

विभा रानी

विभा रानीक दूटा नाटक (भाग रौ आ बलचन्दा)

सुशीला झा (सौजन्य- प्रभा खेतान/ सुशीला झा)

छिन्नमस्ता- प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यासक मैथिली अनुवाद

कुसुम ठाकुर

प्रत्यावर्तन (आत्मकथा)(पृ. ४५९-५७२)

डॉ. कामिनी कामायनी

विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३५० सँ)

प्रीति ठाकुर

गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा -पहिल मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मिथिलाक लोकदेवता (बाल साहित्य)

विद्यापतिक पुरुष परीक्षा (बाल साहित्य)

रेस (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

ए बी सी डी- प्रकृति अक्षर पोथी (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

सभ खाइत अछि (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

बो म्याउ बाह (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

रङ सभ (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(०६) छोट आ पैघ (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(०७) माल-जाल आ जानवर दिस देखू (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(१७) हमर परिवार (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
जानवर (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
पोथी १३: १...२...३... (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
बाजाक अबाज (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
पंजी (११००० मूल मिथिलाक्षर ताड़पत्र)
11000 PALM LEAF PANJI INSCRIPTIONS (VOLUME I TO XXII) Compiled, Scanned & Catalogued by Preeti Thakur

गजेन्द्र ठाकुर आ प्रीति ठाकुर (समालोचना)

नीतू कुमारी
मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)
किरण चौधरी (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)
हमर बाल-वाड़ी
आर्या कॉकपिट मे
दीपा करमाकर- सही संतुलन मे
जंगल मे अहाँक स्वागत अछि
व्हेल छथि आकाश मे
भैया के मुस्कान के चोरौलक
बीज संचयक
अचंभित करय "फिबोनाची"
शौचालयक खिस्सा
लाल बरसाती
गुल्लीक जादुई पेटी

समीराक विकठ भोजन

विवाह मे जाई छी

प्रियंका झा (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर माँछ! नै हमर माँछ!

रश्मि प्रिया (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

कैयो सकै छी, नहियो कऽ सकै छी

सुनीता ठाकुर (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

बण्टी आ बबली

नीलिमा चौधरी (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर सभसँ नीक संगी

स्वास्तिका ठाकुर (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

गप्पू बुते नाचल नै होइ छै

तूलिका (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमरा ओ चाही!

मधूलिका मिश्र (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

ओंघाइत भीमा

लक्ष्मी ठाकुर

जानवर सभ संगे भेँट-घाँट

पूनम मण्डल

सुतै कालक खिस्सा

....

राम इकबाल सिंह 'राकेश' (१९१२-१९९४) [सौजन्य- ई-पुस्तकालय]

मैथिली लोकगीत (१९४२, १९५५)

तेज नारायण लाल 'शास्त्री' [सौजन्य- ई-पुस्तकालय]

मैथिली लोकगीतों का अध्ययन (१९६२)

डॉ शंकर कुमार झा (सौजन्य- कीर्तिनाथ झा/ आर्काइव डॉट ओआरजी)

Vidyapati A Political Analysis

राधाकृष्ण चौधरी (१९२१-१९८५) (सौजन्य- प्रभात कुमार चौधरी/ IGNCA-ASI)

मिथिलाक इतिहास

A Survey of Maithili Literature

The Political and Cultural Heritage of Mithila

Mithila in the Age of Vidyapati

जयकान्त मिश्र (१९२२-२००९) (सौजन्य- काश्मीर रिसर्च इंस्टीट्यूट लाइब्रेरी, आर्काइव डॉट ओआरजी, इण्डियन कल्चर डॉट जीओवी डॉट इन, साहित्य-अकादेमी डॉट जीओवी डॉट इन)

बृहत् मैथिली शब्दकोश भाग-१

A History of Maithili Literature Vol. I

Introduction to the Folk Literature of Mithila

Meet the Author

उपेन्द्र ठाकुर (१९२९-१९९१)[सौजन्य- डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इण्डिया/ IGNCA-ASI]

History of Mithila

Studies in Jainism and Buddhism in Mithila

सोमदेव (१९३४-२०२२) (सौजन्य- राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर')

आँजुर सोमदेव विशेष

प्रभास कुमार चौधरी (१९४१-१९९८) (सौजन्य- अशोक)

सन्धान प्रभास विशेष

लल्लन प्रसाद ठाकुर (१९५३-१९९५) (सौजन्य- कुसुम ठाकुर)

लौंगिया मिरचाइ

नाटककार लल्लन प्रसाद ठाकुर समग्र रचनावली (५ टा नाटक, ४ टा एकांकी आ ३ टा गीति नाटिका सहित)

सुभाष चन्द्र यादव (सौजन्य- सुभाष चन्द्र यादव)

राजकमल चौधरी: मोनोग्राफ

नित नवल राजकमल

बनैत बिगड़ैत (लघुकथा संग्रह)

गुलो

गुलो (हिन्दी अनुवाद- रमण कुमार सिंह)

रमता जोगी

मडर

भोट

गुलो: कला आ भाषा (सम्पादक तारानन्द वियोगी आ केदार कानन)

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (लेखक गजेन्द्र ठाकुर)

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (मिथिलाक्षर)

अशोक (सौजन्य- अशोक आ शिवशंकर श्रीनिवास)

चक्रव्यूह (कविता संग्रह) (१९८६)

त्रिकोण (कथा संग्रह) (१९८६)

ओहि रातिक भोर (कथा संग्रह) (१९९१)

मातबर (कथा संग्रह) (२००१)

संवाद (साक्षात्कार संग्रह) (२००७)

आँखिमे बसल (यात्रा कथा) (२०१३)

बात-विचार (आलोचना) (२०१५)

डैडीगाम (कथा संग्रह) (२०१७)

अशोक-सेलेक्शन्स (विविध)

अशोक-नव कविता

नीक दिनक बाइस्कोप (व्यंग्य संग्रह) (२०१८)

कथा-पाठ (मैथिली कथाक आलोचनात्मक अध्ययन) (२०२२)

प्रतिमान (सम्पादन)

किरण (प्रतिमान गोष्ठी- सम्पादक मोहन भारद्वाज)

सन्धान १ (सम्पादन)

सन्धान २ (सम्पादन)

सन्धान ३ (सम्पादन) प्रभास विशेष

सन्धान ४ (सम्पादन)

मुन्ना जी द्वारा साक्षात्कार (पृ. ३८२-३८५)

बनैत कम बिगड़ैत बेसी (पृ. २०२३-२०३१)

सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कर्णामृत (पृ. ११९-१२२)

रामलोचन ठाकुरक कविता पढ़ैत (पृ. ३२७-३४१)

केदार नाथ चौधरीक उपन्यास (पृ. १०१-१०६)

शरदिन्दुजी (पृ. ७०-७३)

विदेह रचनाकार अशोक विशेषांक

रामदेव झा (सौजन्य- शंकरदेव झा/ योगानन्द झा)

सव्यसाची (अभिनन्दन ग्रन्थ)

मैथिली शब्द संचय

दत्त-वतीक वस्तु कौशल

संकल्प अंक-५ (सम्पादक डॉ रामदेव झा, सहायक सम्पादक डॉ योगानन्द झा) १९८८

कीर्तिनाथ झा (सौजन्य- कीर्तिनाथ झा/ आर्काइव डॉट ओआरजी)

कुरल: मैथिली भावानुवाद (मूल तमिल आदि-कवि तिरुवल्लुवर)

टूटल पाँखि (खलील जिब्रानक उपन्यास 'द ब्रोकन विंग्स'क मैथिली अनुवाद)

किछु पुरान गप्प, किछु नव गप्प (कथा संग्रह)

अनुपम मिश्र पॉडकास्ट एपीसोड ४० कीर्तिनाथ झा

आशीष अनचिन्हार

संदर्भ सहित (गजल-आलोचना)

कुमारि इच्छा (गजल संग्रह)

जंघाजोड़ी (गजल संग्रह)

अनचिन्हार आखर (गजल, रुबाइ आ कताक संग्रह)

मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास

मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास (अनुलग्नक: अंतिका आलेख:अंतर्जाल आ मैथिली: गजेन्द्र ठाकुर)

मैथिली गजलक रेडी रेकोनर

शब्द-अर्थ-शक्ति

स्वतंत्रचेता- अरविन्द ठाकुर: व्यक्तित्व-कृतित्व (विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांकक प्रिण्ट रूप)[सम्पादन]

डॉ योगानन्द झा (सौजन्य- योगानन्द झा)

लोकजीवन ओ लोकसाहित्य १९८६

संकल्प अंक-५ (सम्पादक डॉ रामदेव झा, सहायक सम्पादक डॉ योगानन्द झा) १९८८

आलेख सञ्चयन २००२

मैथिली शाक्त साहित्य- शास्त्रीय भगवती गीत (सम्पादन) २००२

मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष २००६

लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पदा २००७
गहबर गीत (संकलन-सम्पादन) २००७
मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली २००९
कथा-लोककथा २०१०
कपिलदेव ठाकुर 'स्नेहलता' कृत सीतावतरण (सम्पादन) २०११
मंगल-प्रभात गाँधीजी (अनुवाद) २०१३
भोरे-भोर (डॉ ए. कीर्तिवर्द्धनक हिन्दी कविता संग्रहक अनुवाद) २०१४

तारानन्द वियोगी (सौजन्य- तारानन्द वियोगी/ सुभाष चन्द्र यादव)

प्रलय रहस्य (कविता संग्रह)
अतिक्रमण (कथा संग्रह)
Between the Two Dams (English Translation by Prabhat Jha)
जैसे अँधेरे में चाँद (हिन्दी अनुवाद- अरुणाभ सौरभ)
बचाने का यत्न (जीवकान्त)- (अतिथि सम्पादक तारानन्द वियोगी)
राजकमल-जीवन क्या जिया (पृ. १६४-२७४)
महिषी की तारा
बुद्ध का दुख और मेरा (हिन्दी अनुवाद- अविनाश)
तुमि चिर सारथि (हिन्दी अनुवाद- केदार कानन/ अविनाश)
तारा-चालीसा
ई भेटल तँ की भेटल
साखी (मैथिली दलित-कविता)
कबीर आ हुनक मैथिली पदावली
धराशायी हेबाक समय (कविता मे कोरोना काल)
दुनिया घर मेहमान (प्रेम कविता)

अपन युद्धक साक्ष्य (गजल संग्रह)

छियानत (कथा संग्रह)

बहुवचन (आलोचना)

गुलो: कला आ भाषा (सम्पादन)

सुधांशु शेखर चौधरी (सौजन्य- शरदिन्दु चौधरी)

शेखर रचित गजल ओ गीत

शरदिन्दु चौधरी (सौजन्य- शरदिन्दु चौधरी)

जँ हम जनितहुँ (२००२)

बड़ अजगुत देखल (२००५)

गोबरगणेश (२०११)

करिया कक्काक कोरामिन (२०१६)

बात-बातपर बात खण्ड-१ (२०१९)

मर्मान्तक-शब्दानुभूति (बात-बातपर बात खण्ड-२) (२०२०)

हमर अभाग: हुनक नहि दोष (बात-बातपर बात-३) (२०२१)

साक्षात् (बात-बातपर बात-४) (२०२१)

विदेह शरदिन्दु चौधरी विशेषांक

काशीकान्त मिश्र मधुप

विदेह काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक

राजनन्दन लाल दास

विदेह राजनन्दन लाल दास विशेषांक

प्रेमलता मिश्र प्रेम

विदेह प्रेमलता मिश्र प्रेम विशेषांक

रवीन्द्र नाथ ठाकुर

विदेह रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक

मायानन्द मिश्र (सौजन्य- केदार कानन)

अवांतर (गजल-गीतल)

कलानन्द भट्ट (सौजन्य- केदार कानन)

कान्ह पर लहास हमर मैथिली गजल संग्रह

अनुलग्नक-कोसी कॉलोनी सँ किशन कुटीर धरि

रामकृष्ण झा 'किसुन' (सौजन्य- केदार कानन)

किसुन समग्र-१ (सम्पादक केदार कानन आ रमण कुमार सिंह)

किसुन समग्र-२ (सम्पादक केदार कानन आ रमण कुमार सिंह)

मैथिलीक नव कविता (सम्पादन)

बहुआयामी किसुनजी (सम्पादक महेन्द्र आ केदार कानन)

केदार कानन (सौजन्य केदार कानन/ CIIL/ सुभाष चन्द्र यादव)

अक्ष पर नचैत (संस्मरण: जीवकान्तक पत्रक बहाने)

बहुआयामी किसुनजी (सम्पादन)

गुलो: कला आ भाषा (सम्पादन)

किसुन समग्र-१ (सम्पादन)

किसुन समग्र-२ (सम्पादन)

अपना नजरि मे (सम्पादन)

सृजन केर दीप पर्व (सम्पादन)

भारती मंडन अंक-१६ (सम्पादन)

महेन्द्र (CIIL/ केदार कानन)

जुआयल कनकनी

बहुआयामी किसुनजी (सम्पादन)

बाबा बैद्यनाथ (सौजन्य- बाबा बैद्यनाथ)

पहरा इमानपर (गजल संग्रह)

अरविन्द ठाकुर (सौजन्य- अरविन्द ठाकुर/ CIIL)

परती टूटि रहल अछि (कविता संग्रह)

अन्हारक विरोध मे (लघु कथा संग्रह)

बहुरुपिया प्रदेश मे (गजल संग्रह)

सबद मितारथ धाय्या

रोशनाइक लोकपक्ष (कथेतर गद्य)

जड़ताक प्रतिवाद मे (सोल्हकन-दीठक आरोहण गाथा- दीर्घ कविता)

सृजन केर दीप पर्व (सम्पादन)

विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांक

स्वतंत्रचेता- अरविन्द ठाकुर: व्यक्तित्व-कृतित्व (सम्पादक आशीष अनचिन्हार)

[विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांकक प्रिण्ट रूप]

नरेन्द्र झा (सौजन्य- नरेन्द्र झा)

चपल चरन चित चंचल भान

विकास ओ अर्थतंत्र

राजेश्वर झा (मैथिली साहित्य संस्थान आर्काइव)

मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास

सुरेन्द्र झा सुमन (आर्काइव डॉट कॉम)

दत्त-वती (मूल)

गोविंद झा ((IGNCA Site आर्काइव)

Maithili-English Dictionary

डॉ शैलेन्द्र मोहन झा (आर्काइव डॉट कॉम/ CIIL)

परिचय निचय

मैथिली गद्य संग्रह- सं

रमानाथ झा (CIIL Site **आर्काइव)**

प्रबन्ध संग्रह

रमानाथ मिश्र "मिहिर" (आर्काइव डॉट कॉम)

मैथिली मुहावरा एवम् लोकोक्ति प्रकाश

आनन्द मिश्र (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मिथिला भाषाक सुबोध व्याकरण

श्यामानन्द झा (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मैथिली गीत चन्द्रिका

मैथिली संदेश (विभिन्न कविक कविता-सम्पादित)

पं लक्ष्मीपति सिंह (सौजन्य रमानन्द झा "रमण")

हिन्दी-मैथिली-शिक्षक

भवप्रीतानन्द ओझा (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

पदावली

गणनाथ-विन्ध्यनाथ पदावली (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

गणनाथ-विन्ध्यनाथ पदावली

रूपनारायण झा "राकेश" (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मनमोहन लड्डू

भोला लाल दास (आर्काइव डॉट कॉम)

मैथिली सुबोध व्याकरण

खड्ग वल्लभ दास 'स्वजन' (सौजन्य- हेमन्त दास "हिम")

सीता-शील

डॉ. मदनेश्वर मिश्र (सौजन्य- पञ्जीकार विद्यानन्द झा)

एक छलीह महारानी

यात्री (नागार्जुन) (सौजन्य- मिथिला सांस्कृतिक परिषद)

बलचनमा

कालीकान्त झा "बूच"

कलानिधि- कविता-संग्रह

उपेन्द्रनाथ झा "व्यास" (सौजन्य- मयंक झा)

रूबाइयात-ए-ओमर खैयाम (मैथिली पद्यानुवाद)

प्रतीक (कविता संग्रह)

संन्यासी (काव्य)

रमेश नारायण (सौजन्य- शेफालिका वर्मा)

पाथरक नाव (लघुकथा संग्रह)

गोपालजी झा "गोपेश" (सौजन्य- गोपालजी झा "गोपेश")

गुम्म भेल ठाढ़ छी

विजय नाथ झा (सौजन्य- विजय नाथ झा)

अहींक लेल (गीत-गजल संग्रह)

कामायनी (अनुवाद)

नगेन्द्र कुमर (सौजन्य- प्रसन्न कुमार झा)

ससरफानी

प्रबोध नारायण सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

अन्हेर नगरी (अनुवाद)

चयनिका (सम्पादन)

वैजयन्ती (कविता)

हाथीक दाँत

टटका गप (सम्पादित कथा संकलन)

प्रेमक रोग (नाटक)

मानक मैथिली (हिन्दी शोध प्रबन्ध)

अमरनाथ (सौजन्य- अमरनाथ)

क्षणिका- विहनि कथा संग्रह

प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'

पंचदेवोपासक भूमि मिथिला पृ. १००१-१०८०

डॉ. गंगेश गुंजन (सौजन्य- गंगेश गुंजन)

राधा (१-३०) पृ. १३७३-१५८०

प्रथम-चौबटिया-नाटक *(बुधिबधिया)*

नाटक आइ भोर

कथा-संग्रह उचितवक्ता

गीत-गजल दुखक दुपहरिया

कमलधर दास (सौजन्य- कमलधर दास)

मैथिल कर्ण कायस्थक गोत्र, प्रवर, मूल आ वैवाहिक सम्बन्ध

कीर्तिनारायण मिश्र (सौजन्य- कीर्तिनारायण मिश्र)

ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप

सीमान्त

आदमीकेँ जोहैत

अपन एकान्त मे

स्मृतियात्राक एकान्तमे

राजनाथ मिश्र

Mithila_Painting-Modern Art-Photos

प्रेमशंकर सिंह (सौजन्य- प्रेमशंकर सिंह/ मिथिला दर्पण प्रकाशन)

मैथिली भाषा साहित्य:बीसम शताब्दी (आलोचना)

विद्यापति कृत व्याडीभक्तितरङ्गिनी (सम्पादन)

डॉ. रमण झा (सौजन्य- रमण झा)

मैथिली काव्यमे अलङ्कार

अलङ्कार-भास्कर

मैथिली काव्यमे ज्योतिष

भिन्न-अभिन्न

अहिरावण-वध (खण्ड काव्य)

पारिजात-मञ्जरी

डॉ. रमानन्द झा 'रमण' (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण"/ CIIL Site **आर्काइव)**

हिआओल

सगर राति दीप जरय

राजू आ टाकाक गाछ (अनुवाद)

अखियासल

केदार नाथ चौधरी (सौजन्य- केदार नाथ चौधरी)

चमेलीरानी

माहुर

करार

अबारा नहितन

अयना

हीना

विदेह केदार नाथ चौधरी विशेषांक

योगेन्द्र पाठक "वियोगी" (सौजन्य- योगेन्द्र पाठक "वियोगी")

विज्ञानक बतकही

विज्ञानक बतकही भाग-२

नरक विजय (सम्पूर्ण)

नरक विजय (संशोधित)

हमर गाम (बाल उपन्यास)

पिरामिडक देशमे

अकटा मिसिया (कथा संग्रह)

रोबोट (अनूदित साइंस-फिक्शन नाटक)

किछु तीत मधुर (यात्रा वृत्तांत)

सुशील (सौजन्य- सुशील)

घराड़ी (उपन्यास) (१९७३)

गामबाली (उपन्यास) (१९८२)

भामती (नाटक) (पहिल मंचन १९९१, प्रकाशन २०१३)

अस्मिता (लघुकथा संग्रह) (२०१६)

कामेश्वर झा 'कमल' (सौजन्य- नबोनारायण मिश्र)

कमल-ताल (गीत संग्रह)

रामलोचन ठाकुर (सौजन्य- रामलोचन ठाकुर)

जे कहब साँच कहब

आँखि मुनने आँखि खोलने (संस्मरण)

स्मृतिक धोखरल रंग (संस्मरण)

अपूर्वा (कविता संग्रह)

इतिहासहन्ता (कविता संग्रह)

देशक नाम छलै सोन चिड़ैया (कविता संग्रह)

लाख प्रश्न अनुत्तरित (कविता संग्रह)

प्रतिध्वनि (विदेशी भाषाक कविताक मैथिली रूपान्तरण)

पद्मानदीक माझी (अनूदित उपन्यास)

मैथिली लोककथा

आजुक कविता (सम्पादित कविता संग्रह)

बेताल कथा (हास्य-व्यंग)

देसिल बयना (अख़बार)

विदेह रामलोचन ठाकुर विशेषांक

डॉ. देवशंकर नवीन (सौजन्य- देवशंकर नवीन)

आधुनिक साहित्यक परिदृश्य

डॉ बचेश्वर झा

निवन्ध-निकुञ्ज

जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" (सौजन्य- जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल")

आँखिमे चित्र हो मैथिली केर (आत्मकथा- जारी)

धारक ओइ पार (दीर्घ कविता)

गीत गंगा (गीत संग्रह)

गजल गंगा (गजल संग्रह)

तोरा अंगना मे (गीत संग्रह)

तोरा अंगना मे (गीत संग्रह)- मूल

विदेह जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक

राज किशोर मिश्र

चाननि (कविता संग्रह)

सप्तपर्ण (कविता संग्रह)

रबीन्द्र नारायण मिश्र (सौजन्य- रबीन्द्र नारायण मिश्र)

भोरसँ साँझ धरि (आत्म कथा)

प्रसंगवश (निवंध)

स्वर्ग एतहि अछि (यात्रा प्रसंग)

फसाद (कथा संग्रह)

नमस्तस्यै (उपन्यास)

विविध प्रसंग (निवंध)

महराज (उपन्यास)

लजकोटर (उपन्यास)

सीमाक ओहि पार (उपन्यास)

समाधान (निवंध संग्रह)

मातृभूमि (उपन्यास)

स्वप्नलोक (उपन्यास)

शंखनाद (उपन्यास)

इएह थिक जीवन (संस्मरण)

ढहैत देबाल (उपन्यास)

पाथेय (संस्मरण)

हम आबि रहल छी (उपन्यास)

प्रलयक परात (उपन्यास)

बीति गेल समय (उपन्यास)

प्रतिबिम्ब (उपन्यास)

बदलि रहल अछि सभ किछु (उपन्यास)

राष्ट्र मंदिर (उपन्यास)

संयोग (कथा संग्रह)

नाचि रहल छलि वसुधा (उपन्यास)

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' (सौजन्य- नन्द कुमार मिश्र 'नन्द')

गामघर (कथा संग्रह)

सुजाता (उपन्यास)

महारानी कैकेयी (प्रवचनात्मक निबन्ध)

गुदरीक लाल (उपन्यास)

अनठिया कुकुर (उपन्यास)

आडम्बर (कथा संग्रह)

दिल्लीक पार्क (शब्द चित्र)

सुकन्या (उपन्यास)

स्वर्ण कमल (बाल उपन्यास)

काव्य सरिता (मैथिली काव्य संग्रह)

परिवार (संस्मरणात्मक उपन्यास)

याचक के नञि (मैथिली शब्द-चित्र)

सत्यानन्द पाठक (सौजन्य- सत्यानन्द पाठक)

हमर गाम (उपन्यास)

डॉ. उदय नारायण सिंह "नचिकेता" (सौजन्य- नचिकेता)

नो एण्ट्री : मा प्रविश

आन्दोलन

एक छल राजा

जनक आ' अन्यान्य एकांकी

नाटक क लेल

नायक क नाम जीवन

प्रत्यावर्त्तन

रामलीला

प्रियंवदा (एकांकी)

नचिकेता विविध (मैथिली, बांग्ला, हिन्दी आ अंग्रेजी)

मैथिली कविता-त्रैमासिक (अप्रैल १९६९)

मैथिली कविता-त्रैमासिक (जुलाइ १९६९)

मिथिला दर्शन मार्च २०२१

मिथिला दर्शन नवम्बर २०२१

रवि भूषण पाठक

रिहर्सल (नाटक)

विदेह:सदेह २९ (रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३५० सँ)

विदेह:सदेह २७ (गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठकक आन भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३५० सँ)

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

विदेह:सदेह २९ (रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३५० सँ)

कुमार मनोज कश्यप

विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३५० सँ)

डॉ. शम्भु कुमार सिंह

(तुकाराम रामा शेटक कोंकणी उपन्यासक मैथिली अनुवाद डॉ शम्भु कुमार सिंह द्वारा) पाखलो

विदेह:सदेह २६ (डॉ शम्भु कुमार सिंह आ डॉ अरुण कुमार सिंह अंक १-३५० सँ)

डॉ. अरुण कुमार सिंह

विदेह:सदेह २६ (डॉ शम्भु कुमार सिंह आ डॉ अरुण कुमार सिंह अंक १-३५० सँ)

कुमार पवन (सौजन्य- अंतिका)

पइठ (मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ कथा)

डायरीक खाली पन्ना

केशव भारद्वाज

अजगुत अफ्रीका (अफ्रीका डायरी) पृ. २१४-४६६

किछु पढ़ल आ किछु सुनल- ईदी अमीन पृ. ४८८-५४८

खेलौना पृ. ४६७-४८७

पैबन्द पृ. ५४९-७९८

किछु कथा ५०-४६३

गोपाल झा 'अभिषेक' (सौजन्य- गोपाल झा 'अभिषेक')

आउ स्वप्न साझी करी (कविता संग्रह)

आमोद कुमार झा (सौजन्य- आमोद कुमार झा)

बिम्बक पथार (कविता संग्रह)

किशन कारीगर (सौजन्य- किशन कारीगर)

किछु फुरा गेल हमरा

मुन्नाजी

मोकाम दिस (बीहनि कथा संग्रह)

प्रतीक (विहनि कथा संग्रह)

माँझ आंगनमे कतिआएल छी (मैथिली गजल संग्रह)

हम पुछैत छी (साक्षात्कार)

तीन टा बाल नाटक (मैथिली बाल साहित्य)

खुरलुच्ची (मैथिली बाल कविता- बाल साहित्य)

घाह (हाइकू-टंका संग्रह)

सन्दीप कुमार साफी

बैशाखमे दलानपर (पहिल मैथिली दलित आत्मकथा सहित)

ओम प्रकाश झा

कियो बूझि नै सकल हमरा (गजल, रुबाइ आ कता संग्रह)

अमित मिश्र

नव अंशु (गजल-हजल, रुबाइ संकलन)

चन्दन कुमार झा

मोनक बात (गजल, हजल,बाल गजल, रुबाइ आ कताक संकलन)

डॉ. अनमोल झा

समय साक्षी थिक (विहनि कथा संग्रह)

ई जे समय अछि (विहनि कथा संग्रह)

बिनय भूषण (सौजन्य- आशीष अनचिन्हार)

उजरा परवाक खोज (कविता संग्रह)

आनन्द कुमार झा

टाकाक मोल (नाटक)

कलह (नाटक)

बदलैत समाज (नाटक)

धधाइत नवकी कनियाँक लहास (नाटक)

हठात् परिवर्तन (नाटक)

मुक्ति यात्रा (नाटक)

शिव कुमार झा "टिल्लू"

क्षणप्रभा-कविता-संग्रह

अंशु-समालोचना

देवांशु वत्स

नताशा -मैथिली बाल चित्रशृंखला (कौमिक्स)

डॉ. विनीत उत्पल

हम पुछैत छी (कविता संग्रह)

रेहन पर रग्घू - काशीनाथ सि हक हिन्दी उपन्यासक विनीत उत्पल द्वारा मैथिली अनुवाद

मन्त्रद्रष्टाऋष्यश्रृङ्ग- लेखक हरिशंकरश्रीवास्तव "शलभ" (हिन्दीसं मैथिली अनुवाद विनीत उत्पल द्वारा)

मोहनदास- उदय प्रकाशक हिन्दी उपन्यासक विनीत उत्पल द्वारा मैथिली अनुवाद

मोहनदास (मैथिली-देवनागरी) मोहनदास (मैथिली-मिथिलाक्षर) मोहनदास (मैथिली-ब्रेल)

जगदानन्द झा "मनु" (सौजन्य- जगदानन्द झा "मनु")

नढ़िया भुकैए हमर घराड़ीपर (गजल संग्रह)

तोहर कतेक रंग (विहनि कथा संग्रह)

चोनहा- (बाल उपन्यास)

व्यथा- (कविता-गीत संग्रह)

राजदेव मण्डल

अम्बरा-कविता-संग्रह

हमर टोल (उपन्यास)

बसुंधरा(कविता संग्रह)

जाल (पटकथा)

लाज (एकांकी)

जल भंवर (उपन्यास)

त्रिवेणीक रंग (विहनि आ लघु कथा संग्रह)

पंचैती (लघु पटकथा)

वापसी

Rajdeo Mandal- Maithili Writer by Gajendra Thakur

दुर्गानन्द मण्डल

संचयिका

कथा कुसुम (विहनि आ लघु कथा संग्रह)

चक्षु

राम विलास साहु

अंकुर- लघुकथा संग्रह

रथक चक्का उलटि चलै बाट (कविता/ टनका संग्रह)

कर्म बिनु जग सुन्ना (दोसर कविता/ टनका संग्रह)

स्कूलक खिचड़ी (विहनि/ लघु कथा संग्रह)

दूधबेचनी (लघु कथा संग्रह)

मनक मैल

नारायण यादव (सौजन्य- उमेश मण्डल)

खाली घर

रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"

हमरा बिनु जगत सूना छै

गीतांजलि झारू

कपिलेश्वर राउत

उलहन (विहनि - लघु कथा संग्रह)

नंद विलास राय

सखारी-पेटारी(लघुकथा संग्रह)

मदन अमर (दोसर लघु कथा संग्रह)

मरजादक भोज (तेसर लघुकथा संग्रह)

भरदुतिया

छठिक डाला

हमर चारूधाम

असल पूजा

ललन कुमार कामत (सौजन्य- उमेश मण्डल)

दुध-पानि फराक-फराक (कथा एवं पाण्डुलिपि जगदीश प्रसाद मण्डल)-(छाया एवं सम्पादन- उमेश मण्डल)

हिन्दुस्तानी मुसलमान और हिन्दुस्तानियत - मूल हिन्दी लेख- गीतेश शर्मा, मैथिली अनुवाद- उमेश मण्डल

उमेश मण्डल द्वारा मैथिली लेखकक रचना संसारसँ बीछल विचारक पाम्फलेटक पोथी

जगदीश प्रसाद मण्डल राजदेव मण्डल डॉ. शिव कुमार प्रसाद रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार" राम विलास साहु नन्द विलास राय कपिलेश्वर राउत प्रीतम कुमार निषाद

मिथिलाक सभ जाति आ धर्मक संस्कार, लोकगीत आ व्यवहार गीत :सौजन्य) (उमेश मंडल

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43

अन्तर्ध्वनि चयन एवम् -गोट बीछल कथा जगदीश प्रसाद मण्डलक १५) (उमेश मण्डल -सम्पादन

....

जगदीश प्रसाद मण्डल

गामक जिनगी (लघुकथा संग्रह)

मिथिलाक बेटी (नाटक)

मौलाइल गाछक फूल (उपन्यास)

जिनगीक जीत (उपन्यास)

उत्थान-पतन (उपन्यास)

जीबन-मरन (उपन्यास)

जीवन-संघर्ष (उपन्यास)

तरेगन (बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह)

पंचवटी (एकांकी-संचयन)

अर्द्धांगिनी..सरोजनी.. सुभद्रा.. भाइक सिनेह इत्यादि (लघुकथा संग्रह)

कम्प्रोमाइज (नाटक)

झमेलिया बिआह (नाटक)

इन्द्रधनुषी अकास (पद्य संग्रह)

शंभुदास (तीनटा दीर्घ कथा मइट्टुग्गर, शंभुदास आ फाँसी)

गीतांजलि (गीत संग्रह)

राति-दिन (कविता संग्रह)

सतभैंया पोखरि (लघु कथा संग्रह)

तीन जेठ एगारहम माघ (गीत संग्रह)

बजन्ता-बुझन्ता (विहनि कथा संग्रह)

रत्नाकर डकैत (नाटक)

बड़की बहिन (उपन्यास)

भकमोड़ (लघुकथा संग्रह)

उलबा चाउर (लघुकथा संग्रह)

सरिता (कविता संग्रह)

सुखाएल पोखरिक जाइठ (गीत संग्रह)

नै धाड़ैए (बाल उपन्यास)

स्वयंवर (नाटक)

पतझाड़ (लघु कथा संग्रह)

फलहार (लघु कथा संग्रह)

गामक शकल सूरत (लघु कथा संग्रह)

लजबिजी (लघु कथा संग्रह)

बटेसर काका (लघु कथा संग्रह)

आमक गाछी

अप्पन गाम

दिवालीक दीप

पंचदेव सीरीज

पंचदेव-१ पंचदेव-२ पंचदेव-३ पंचदेव-४ पंचदेव-५ पंचदेव-६ पंचदेव-७ पंचदेव-८ पंचदेव-९ पंचदेव-१० पंचदेव-२० पंचदेव-३० पंचदेव-४० पंचदेव-५० पंचदेव-६० पंचदेव-७० पंचदेव-८० पंचदेव-९० पंचदेव-१००

दुध-पानि फराक-फराक (कथा एवं पाण्डुलिपि जगदीश प्रसाद मण्डल)- (छाया एवं सम्पादन- उमेश मण्डल)

जगदीश प्रसाद मण्डल जीक ६५ टा पोथीक नव संस्करण विदेहक २३३ (Videha_01_09_2017) सँ २५० (Videha_15_05_2018) धरिक अंकमे धारावाहिक प्रकाशन नीचाँक लिंकपर पढ़ू:-

VIDEHA 233	VIDEHA 234	VIDEHA 235	VIDEHA 236	VIDEHA 237	VIDEHA 238
VIDEHA 239	VIDEHA 240	VIDEHA 241	VIDEHA 242	VIDEHA 243	VIDEHA 244
VIDEHA 245	VIDEHA 246	VIDEHA 247	VIDEHA 248	VIDEHA 249	VIDEHA 250

पंगु (उपन्यास)- साहित्य अकादेमी मूल पुरस्कार २०२१ सँ सम्मानित पोथी

पंगु (हिन्दी अनुवाद रामेश्वर प्रसाद मण्डल)

अप्पन साती (लघुकथा संग्रह)

मोड़पर (उपन्यास)

सुचिता (उपन्यास)

सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल (लघुकथा संग्रह)

डॉ. शशिधर कुमर

....

गजेन्द्र ठाकुर

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (IPA)
दूषण पञ्जी- The Black Book
दूषण पञ्जी- The Black Book (मिथिलाक्षर)
पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल (बीहनि, लघु आ दीर्घ कथा संग्रह)
पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल (मिथिलाक्षर)
पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल (कैथी)
पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल (नेवाड़ी)
पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल (IPA)
स्वप्नमे मिज्झर होइत
The_Science_of_Words
Rajdeo Mandal- Maithili Writer (Now with Supplement I & II)
JAGDISH PRASAD MANDAL- Maithili Writer
नित नवल सुभाष चन्द्र यादव
नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (मिथिलाक्षर)
जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी
जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी (हिन्दी अनुवाद रामेश्वर प्रसाद मण्डल)
गंगा ब्रिज (नाटक)
उल्कामुख (नाटक)
संकर्षण (नाटक)
धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ (रुबाइ, कता आ गजल संग्रह)
सहस्रजित् (पद्य संग्रह)
सहस्राब्दीक चौपड़पर (पद्य संग्रह)

त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन (दूटा गीत प्रबन्ध)
सहस्रबाढ़नि (उपन्यास)
सहस्रबाढ़नि_ब्रेल-मैथिली (मैथिलीक पहिल ब्रेल पोथी)
सहस्रशीर्षा (उपन्यास)
गल्प-गुच्छ (विहनि आ लघु कथा संग्रह)
शब्दशास्त्रम् (लघुकथा संग्रह)
बाल मण्डली/ किशोर जगत (बाल नाटक, लघुकथा, कविता आदि)
कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक
देवनागरी वर्सन तिरहुता वर्सन ब्रेल वर्सन
Learn Maithili Sign Language
Learn Mithilakshar Script
Learn Braille through Mithilakshar Script
Learn International Phonetic Script through Mithilakshar Script
Learn Kaithi
Learn Newari
Learn Calligraphic Newari (Ranjana)
Learn Urdu Script
Learn Tibetan Script
Learn Japanese Script for Haiku
Learn Brahmi
Learn Kharoshthi
मिथिला रत्न/ मिथिला चित्रकला/ मिथिलाक पाबनि तिहार (कथा) आ मिथिलाक संगीत

जलोदीप (बाल-नाटक संग्रह)

अक्षरमुष्टिका (बाल-लघुकथा संग्रह)

बाङक बङौरा (बाल-पद्य संग्रह)

नाराशंसी (गीत-प्रबन्ध)

मचण्ड (नाटक)

बाल साहित्य (मूल)- गजेन्द्र ठाकुर

भऽ जाएब छू(*मैथिलीक २०१२ मे प्रकाशित पहिल क्लाइमेट-फिक्शन प्ले- Maithili's first climate-fiction play originally published in 2012)*

कमलाक भगता

तरहरिमे परीलोक

बेसी छुट्टी कम इसकूल

बड़द करैए दाउन ने यौ

बाल गजल

फिनिश लाइन

अनूदित साहित्य (आन भाषासँ)- गजेन्द्र ठाकुर

विदेह:सदेह २७ (गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठकक आन भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३५० सँ)

बाल साहित्य (अनुवाद- द्विभाषिक- मैथिली-अंग्रेजी)- गजेन्द्र ठाकुर

मसाई केर परिवर्तनकारी रेबेका

शेष ४० टा बाल चित्र-पोथी नीचाँक लिंकपर:-

सुनू	घर सभ	एकटा नीक दिन	चलू हम तँ ठीक छी ने!	की अहाँ ऐ चिडै सभकेँ देखने छी?
टोस्ट	बड़ीटा! कनियेटा!	एतऽ हम सभ रहै छी	भारतोल्लक राजकुमारी	भारतोल्लक राजकुमारी (बिनु शब्दक)
वुयो	कचकच- कचाक	चुन्नूमुन्नूक- नहेनाइ	नेना जे बैलूनसँ डेराइत छल	अद्भुत फिबोनाची अंक-शृंखला
हारू	अखन नै, अखन नै!	जन्मदिनक उत्सव भोज	मोट राजा पातर-दुब्बड कुकुड	बचिया जे अपन हँसी नै रोकि सकैत छलि
अंग्रेजी	हम सूंघि सकै छी	छोट लाल-टुहटुह डोरी	करू नीक, भोगू नीक	ई सभटा बिलाड़िक दोख अछि!
चोभा आम!	हमर टोलक बाट	जखन इकडू स्कूल गेल	माछी फेर आउ टाटा!	अमाचीक जुलुम मशीन सभ

टिंग टोंग	पाउम्याऊ--वाह	कुकुड़क एकटा दिन	हमरा नीक लगैए	रीताक नव-स्कूलमे पहिल दिन
कनी हँसियौ ने!	लाल बरसाती	भूतप्रेतक नाट्यशाला-	आउ पएर गानी	कतऽ अछि ई अंक ५?

विदेह मैथिली-अंग्रेजी टॉकिंग रीड-अलाउड ऑडियो बुक

https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF (मसाई केर परिवर्तनकारी रेबेका)

https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (चलू हम तँ ठीक छी ने!)

https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo (एकटा नीक दिन)

https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घर सभ)

https://bloomlibrary.org/player/dAzC0Fubt7 (की अहाँ ऐ चिड़ै सभकेँ देखने छी?)

NTA-UGC/ UPSC/ BPSC Maithili Optional- गजेन्द्र ठाकुर

मैथिली समीक्षाशास्त्र
मैथिली समीक्षाशास्त्र (तिरहुता)
मैथिली समीक्षाशास्त्र (भाग-२, अनुप्रयोग)
मैथिली प्रतियोगिता
[Place of Maithili in Indo-European Language Family/ Origin and development of Maithili language (Sanskrit, Prakrit, Avhatt, Maithili) भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान/ मैथिली भाषाक उद्भव ओ विकास (संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, मैथिली)]
(Criticism- Different Literary Forms in Modern Era/ test of critical ability of the candidates)
(ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददास सिलेबसमे छथि आ रसमय कवि चतुर चतुरभुज विद्यापति कालीन कवि छथि। एतय समीक्षा शृंखलाक प्रारम्भ करबासँ पूर्व चारू गोटेक शब्दावली नव शब्दक पर्याय संग देल जा रहल अछि। नव आ पुरान शब्दावलीक ज्ञानसँ ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददासक प्रश्नोत्तरमे धार आओत, संगहि शब्दकोष बढ़लासँ खाँटी मैथिलीमे प्रश्नोत्तर लिखबामे धाख आस्ते-आस्ते खतम होयत, लेखनीमे प्रवाह आयत आ सुच्चा भावक अभिव्यक्ति भय सकत।)
(बद्रीनाथ झा शब्दावली आ मिथिलाक कृषि-मत्स्य शब्दावली)
(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति)
(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- विद्यापति)
(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- पद्य समीक्षा- बानगी)
(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- लोक गाथा नृत्य नाटक संगीत)
(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- यात्री)
(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली रामायण)
(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली उपन्यास)
(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- शब्द विचार)
(तिरहुता लिपिक उद्भव ओ विकास)
अनुलग्नक-१-२-३ अनुलग्नक- ४-५

(मैथिली आ दोसर पुबरिया भाषाक बीचमे सम्बन्ध (बांग्ला, असमिया आ ओड़िया) [यू.पी.एस.सी. सिलेबस, पत्र-१, भाग-"ए", क्रम-५])
[मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली- बिहार लोक सेवा आयोग (बी.पी.एस.सी.) केर सिविल सेवा परीक्षाक मैथिली (ऐच्छिक) विषय लेल]
मैथिली

बांग्ला

असमिया

ओड़िया

हिन्दी

उर्दू

नेपाली

संस्कृत

संथाली

NTA_UGC_NET_Maithili_01- गजेन्द्र ठाकुर
NTA_UGC_NET_Maithili_02- गजेन्द्र ठाकुर
Test Series-1- गजेन्द्र ठाकुर
Test Series-2- गजेन्द्र ठाकुर
GS (Pre)
Topic 1 - गजेन्द्र ठाकुर

गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादन)

विदेह-सदेह १-२५ www.videha.co.in *विदेह ई-पत्रिकाक अंक १-३५० सँ- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन*	
देवनागरी	**मिथिलाक्षर**
विदेहसदेह १:	विदेहतिरहुता सदेह १ :

विदेह-सदेह २६-३६ www.videha.co.in

विदेह ई-पत्रिकाक अंक १-३५० सँ-

थीम आधारित मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ मूल आ अनूदित गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन	
विदेह:सदेह २६ (डॉ शम्भु कुमार सिंह आ डॉ अरुण कुमार सिंह अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह २६ तिरहुता
विदेह:सदेह २७ (गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठकक आन भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह २७ तिरहुता
विदेह) सदेह २८:अनूदित गद्य आ पद्य --अंक १३५० सँ(	विदेह: सदेह २८ तिरहुता
विदेह:सदेह २९ (रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह २९ तिरहुता
विदेह:सदेह ३० (स्कूल-कॉलेजक विद्यार्थी लेल- अंक १-३५० सँ)	विदेहतिरहुता सदेह ३० :
विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३१ तिरहुता
विदेह:सदेह ३२ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-१- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३२ तिरहुता
विदेह:सदेह ३३ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-२- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३३ तिरहुता
विदेह:सदेह ३४ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-३- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३४ तिरहुता
विदेह:सदेह ३५ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-४- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३५ तिरहुता
विदेह:सदेह ३६ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-५- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३६ तिरहुता

....

यू.पी.एस.सी. आ आन प्रतियोगिता परीक्षा लेल देखू:

विदेह:सदेह १७	विदेह:सदेह २१	विदेह:सदेह २३	विदेह:सदेह २६	विदेह:सदेह २९
विदेह:सदेह ३०	विदेह:सदेह ३२	विदेह:सदेह ३३	विदेह:सदेह ३४	विदेह:सदेह ३५

....

Videha-Sadeha

भाषापाक -विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

विदेह पुरान अंकक आर्काइव

Videha 1-50

Videha 51-100

Videha 101-149

Videha 150-250

Videha 251-Onwards

Audio Archive Folder

Mithila_Painting-Modern Art-Photos

Videha Old Issues Folder

Videha Classical Sites Folder

....

गजेन्द्र ठाकुर आ आशीष अनचिन्हार (सम्पादन)

मैथिलीक प्रतिनिधि गजल

मैथिली गजल: आगमन ओ प्रस्थान बिंदु (गजलक आलोचना-समालोचना-समीक्षा)

....

गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा (सम्पादन)

जीनोम मैपिंग (४५० ए.डी.सँ २००९ ए.डी.)--मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध

जीनियोलोजिकल मैपिंग (४५० ए.डी.सँ २००९ ए.डी.)--मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध -भाग-२

पंजी (११००० मूल मिथिलाक्षर ताड़पत्र)

11000 PALM LEAF PANJI INSCRIPTIONS (VOLUME I TO XXII) Compiled, Scanned & Catalogued by Preeti Thakur

MAITHILI-ENGLISH DICTIONARIES

Maithili-English Dictionary Vol.I

Maithili-English Dictionary Vol.II

ENGLISH-MAITHILI DICTIONARIES

Videha English Maithili Dictionary

English-Maithili Computer Dictionary

....

दिनेश कुमार मिश्र (सौजन्य दिनेश कुमार मिश्र)

बन्दिनी महानन्दा

बागमती की सद्गति!

दुइ पाटन के बीच में.. (कोसी नदी की कहानी)

न घाट न घर

बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी

भुतही नदी और तकनीकी झाड़-फूंक

The Kamla River and People On Collision Course

Bhutahi Balan- Story of a ghost river and engineering witchcraft

Refugees of the Kosi Embankments

....

पत्रिका-जर्नल-स्मारिका

मिथिला मिहिर (मिथिलाङ्क) १९३६ (सौजन्य- सुरेन्द्र झा सुमन/ भीमनाथ झा)

मैथिली कविता-त्रैमासिक (सौजन्य- नचिकेता)

मैथिली कविता-त्रैमासिक (अप्रैल १९६९)

मैथिली कविता-त्रैमासिक (जुलाइ १९६९)

कौशिकी (सौजन्य- पञ्जीकार विद्यानन्द झा)

कौशिकी (१९७१-७२)

देसिल बयना (अखबार) (सौजन्य- रामलोचन ठाकुर)

देसिल बयना (अख़बार)

मिथिला दर्शन (सौजन्य- नचिकेता)

मार्च २०२१

नवम्बर २०२१

Society Today (सौजन्य- सुमित आनन्द)

अंक ११

संकल्प (सौजन्य- योगानन्द झा)

अंक ५ १९८८

अंतिका (सौजन्य- गौरीनाथ)

जुलाइ-सितम्बर २००८ (हरिमोहन झा विशेषांक) अक्टूबर २०१०सँ मार्च २०११ अक्टूबर २०११ सँ मार्च २०१२

भारती मंडन (सौजन्य- केदार कानन)

अंक-१६

सन्धान (सौजन्य- अशोक)

सन्धान १

सन्धान २

सन्धान ३ प्रभास विशेष

सन्धान ४

मिथिलांगन (सौजन्य मुकेश दत्त)

अप्रैल-सितम्बर २०२२

मैलोरंग (सौजन्य- प्रकाश झा)

अंक२-३

धूआ-धजा (सौजन्य- परमेश्वर कापड़ि)

अंक ७ अंक १४ अंक १५ अंक १६ अंक १८ अंक १० जून २०१२ अंक २४ जून २०१२ 23February2016 २५ जुलाइ २०१२ ०५ अगस्त २०१२ आसिन २०७३

स्मारिका (सौजन्य- रामभरोस कापड़ि भ्रमर)

स्मारिका (२०१०)

आंगन (सौजन्य- रामभरोस कापड़ि भ्रमर)

आंगन अंक-४ (२०१२) सलहेस विशेषांक

आँजुर (सौजन्य- रामभरोस कापड़ि भ्रमर)

आँजुर (अंक वर्ष ३६, अंक ३) सोमदेव विशेष

गामघर (सौजन्य- रामभरोस कापड़ि "भ्रमर")

गामघर-३०-०८-२०१८

गामघर-०४-१०-२०१८

गामघर-१६-०५-२०१९

गामघर-२७-०६-२०१९

दूधमती- (नेपाली आ मैथिलीमे) (सौजन्य- सुजीत कुमार झा)

अंक ३१ अंक ३२ अंक ३३ अंक ३४ अंक 35 अंक 36 अंक 37 अंक 38 अंक 39 अंक 40 अंक 41

घर-बाहर (सौजन्य- चेतना समिति)

अप्रैल-जून २०११

रचना (सौजन्य- सुभाष चन्द्र यादव)

दिसम्बर "०५ मार्च "०६राजकमल चौधरी: मोनोग्राफ

पल्लव (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

पल्लव- १ गजल अंक

पूर्वोत्तर मैथिल (सौजन्य- प्रेमकान्त चौधरी)

अप्रैल-जून 2010 जुलाइ-सितम्बर 2010 जनवरी सँ मार्च 2011 अप्रैल-जून २०११ जुलाइ-सितम्बर २०११

लालदास भावांजलि स्मारिका २०२२ (सौजन्य डॉ संजीव शमा)

………………

किछु मैथिली पोथी डाउनलोड साइट (ओपन सोर्स)

NCERT BHASHA SANGAM

NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)

मैथिली-हिन्दी वार्तालाप (३ घण्टा)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

https://youtu.be/TebuC-lrSs8

https://ncert.nic.in/bs-2021.php

Sahitya Akademi

प्रकाशन

डिजिटल-पोथी

CIIL

अखियासल (रमानन्द झा रमण)

जुआयल कनकनी- महेन्द्र

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (बी.पी.एस.सी. सिलेबस)

सृजन केर दीप पर्व- सं केदार कानन आ अरविन्द ठाकुर

मैथिली गद्य संग्रह- सं शैलेन्द्र मोहन झा

Archive.Org (विजयदेव झा)

Videha Maithili eBooks/ eJournals/ Audio-Video Archive

IGNCA

Maithili English Dictionary

विज्ञान रत्नाकर

मिथिला दर्शन

तीरभुक्ति

OLE Nepal's e-Pustakalaya

पोथीक लिंक

IGNCA-ASI (search keyword Mithila)

History of Navya-Nyaya in Mithila

Studies in Jainism and Buddism in Mithila

Mithila in the Age of Vidyapati

Cultural Heritage of Mithila

Mithila under the Karnatas

Temple Survey Project ASI- English आ Hindi

मैथिली साहित्य संस्थान

दर्शनीय मिथिला (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 1 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 2 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 3 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 4 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 5 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

ब्लूम लाइब्रेरी मैथिली

अरिपन फाउण्डेशन

Pratham Books Maithili Storyweaver

मैथिली ऑडियो बुक्स

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

पोथी डॉट कॉम

I Love Mithila (पोथी डाउनलोड लिंक)
online maithili journal
owner I Love Mithila
प्यारे मैथिल चैनल- किरण चौधरी आ संगीता आनन्द

मिथिला चैप्टर
खिस्सा-पिहानी नेना भुटका लेल
जानकी एफ.एम समाचार

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल

…………
JNU
मैथिली
मैथिली लेक्सिकन

……………
Videha e-Learning YouTube Channel

………………

विदेह सम्मान*:* **सम्मानसूची-** (समानान्तर साहित्य अकादेमी, समानान्तर ललित कला अकादेमी आ समानान्तर संगीत /नाटक अकादेमी सम्मान- (पुरस्कार नामसँ विख्यात

....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रेरित बुझाइत अछि, से एकर एकरा एक उखड़ाहामे उनटा-पुनटा दियौ, ततबे धरि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेल सेहो ई पर्याप्त अछि, से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेने छथि से एकर एकटा आर फास्ट-रीडिंग दोसर-उखड़ाहामे करथि|

IGNOU इग्नू *BMAF-001*

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should

not have difficulty accessing these contents/ documents.

३. मैथिली ऑडियो-वीडियोक संकलन Maithili Audios-Videos

विदेह ऑडियो-वीडियो

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

Search for Audio-Video related information (including Print, Audio-Visual & Sign Language) relating to Mithila/ Maithili

https://books.google.com/



"Videha" Ist Maithili Fortnightly ejournal Archive of Audios-Videos 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका ऑडियो-वीडियो आर्काइव मैथिली ऑडियो-वीडियोक संकलन (पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र एकेडमिक प्रयोग लेल)ऑडियो-वीडियो देखबाक लेल सबधित लिंककें क्लिक करू। For viewing audios-videos click the respective links.

....

मिथिलाक सभ जाति आ धर्मक संस्कार, लोकगीत आ व्यवहार गीत (सौजन्य: उमेश मंडल)

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43

....

गुवाहाटी विद्यापति पर्व २०१०

पहिल भाग दोसर भाग तेसर भाग चारिम भाग पाँचम भाग

गुवाहाटी अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन आ विद्यापति पर्व २०११

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46

....

मैथिली फिल्म

ममता गाबय गीत (सौजन्य- Saregama)

कन्यादान (सौजन्य- BEJOD)

Maithili Movies on Rent

BEJOD

गामक घर

धुइन

चौबटिया (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

चौबटिया

सौभाग्य मिथिला

ललका पाग भाग-१

ललका पाग भाग-२

....

मिनाप-१

बुधियार छौड़ा आ राक्षस

मिनाप-२

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४

....

NCERT BHASHA SANGAM

NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)

पं लक्ष्मीपति सिंह (सौजन्य रमानन्द झा "रमण")

हिन्दी-मैथिली-शिक्षक

मैथिली-हिन्दी वार्तालाप (३ घण्टा)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

https://youtu.be/TebuC-lrSs8

https://ncert.nic.in/bs-2021.php

प्यारे मैथिल चैनल- किरण चौधरी आ संगीता आनन्द

मिथिरंग लोक तरंग

मिथिला चैप्टर

खिस्सा-पिहानी नेना भुटका लेल

मिनाप

मैलोरंग

मिथिलांगन

भंगिमा

मैथिली रंगमंच

कोकिल मंच

मिथिला दर्शन

मिथिला मिरर

स्मृति एंटरटेनमेंट

BEJOD

अचल चित्र

नीलम मैथिली

मैथिली गंगा

मिथिला जंक्शन

मैथिली क्लास

मैथिली समाचार (जनता टेलीविजन)

मैथिली टॉक्स

अप्पन टी.वी.

टी.वी. टुडे, जनकपुर

दृश्यम मीडिया

संस्कार मिथिला

सारेगामा मैथिली

नवरस मीडिया

ज्योति एंटरटेनमेंट

इजोरिया फिल्म्स

अयोध्यानाथ चौधरी

रेडियो जनकपुर

मिथिला टी.वी.

मधुर मैथिली

मैथिली-नेपाली सीखू

अपन मैथिली

मैथिली पाठ

सुरेन्द्र राउत

मिथिलांचल

अमित झा

प्रवेश मल्लिक

आदित्य फिल्म्स एण्ड म्यूजिक

नेपाल टेलीविजन

आकाशवाणी मैथिली समाचार

आकाशवाणी अमृत महोत्सव

रश्मि दत्त

प्रिया मल्लिक

अनामिका झा

रफ कट्स, नचिकेता

कुञ्ज बिहारी

राम बाबू झा

वी. जे., विकास झा

तिरहुत मिथिला

आइ लव मिथिला

लोक कला केन्द्र

रजनी पल्लवी

पूनम मिश्र

रंजना झा

जूली झा

मैथिली ठाकुर

अनुपम मिश्र पॉडकास्ट एपीसोड ४० कीर्तिनाथ झा

ब्लूम लाइब्रेरी मैथिली

अरिपन फाउण्डेशन

Pratham Books Maithili Storyweaver

मैथिली ऑडियो बुक्स

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF (मसाई केर परिवर्तनकारी रेबेका)

https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (चलू हम तँ ठीक छी ने!)

https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo (एकटा नीक दिन)

https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घर सभ)

https://bloomlibrary.org/player/dAzC0Fubt7 (की अहाँ ऐ चिड़ै सभकेँ देखने छी?)

जानकी एफ.एम समाचार

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल

I Love Mithila

online maithili journal

owner I Love Mithila

....

बृखेश चन्द्र लाल, जनकपुरक सौजन्यसँ

झिझिया

ढोल-पिपही

पवनकान्त झा (काश्यप कमल), भटसिमरि, मधुबनीक सौजन्यसँ

रसनचौकी

....

विद्यापति गीत

तूलिका

गीत-गोविन्ददास (गायन दीक्षा भारती)

गोविन्ददास-१

गोविन्ददास-२

गोविन्ददास-३

गोविन्ददास-४

गोविन्ददास-५

गोविन्ददास-६

....

मैथिली गजल (गजल- गजेन्द्र ठाकुर, गायन दीक्षा भारती)

बहरे मुतकारिब

गजल-२

गजल-३

गजल-४

....

७१म सगर राति दीप जरए (०२ अक्टूबर २०१०), गाम बेरमा , जिला मधुबनी (संयोजक- जगदीश प्रसाद मंडल)

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५ भाग-६

82 म सगर राति दीप जरए, स्थान- गजेन्द्र ठाकुर जीक निज आवास, गाम- मेंहथ, जिला- मधुबनी। दिनांक- 31 मई 2014 (शनि दिन), समए- संध्या छह बजेसँ। गोष्ठीक नाओं- कथा बौद्ध सिद्ध मेहथपा सगर राति दीप जरए। आयोजनक खेप- ८२ म आयोजन, संयोजक- गजेन्द्र ठाकुर। विशेषता- बाल साहित्यपर केन्द्रित।

....

मैलोरंग-१ (सौजन्य- प्रकाश झा)

नचिकेताक एक छल राजा - भाग-1

नचिकेताक एक छल राजा - भाग- 2

काठक लोक- महेन्द्र मलंगिया भाग-1

काठक लोक- महेन्द्र मलंगिया भाग-2

मैलोरंग-२

कोसी सेमीनार 12 सितम्बर 2008 भाग-१

कोसी सेमीनार 12 सितम्बर 2008 भाग-२

....

मिथिलांगन

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव

यू ट्यूब लिंक

विदेह मैथिली साहित्य/ नाट्य/ कविता/ परिचर्चा उत्सव

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान समारोह

जनकपुर- विद्यापति पर्व

जितेन्द्र झा, जनकपुर

रामभद्र

सामा चकेवा 1

सामा चकेवा 2

मैथिली कवि सम्मेलन (मिथिला कल्चरल ऑर्गेनाइजेशन, यू.के.)

रिपब्लिक डे 2009 (भारत)

सगर राति दीप जरए, कबिलपुर, जून २०१०

भाग-१ भाग-२

कृष्ण कुमार कश्यपसँ गजेन्द्र ठाकुर द्वारा लेल साक्षात्कार

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७

प्रबोध सम्मान: राजमोहन झा

(स्लाइडरकेँ बीचमे ल' जाउ, अदहाक बाद राजमोहन झासँ विनीत उत्पलक साक्षात्कार छन्हि।)

साहित्य अकादमी पुरस्कार: मन्त्रेश्वर झा

मिथिलाक खोज

1.गौरीशकर

भाग-१ भाग-२

2. बाइसी-बसैटी

वर्षकृत्य

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८ भाग-९ भाग-१०

समन्वय २-४ नवम्बर २०१२ इण्डिया हैबीटेट सेन्टर भारतीय भाषा महोत्सव

Samanvay 2-4 November 2012 IHC Indian Languages' Festival. Venue: India Habitat Centre, Lodhi Road, New Delhi -- 110 003.

3rd November 2012 Maithili- Love's Own Language/ Brahminism in Maithili/ Pre-Jyotirishwar Non-Brahmin Vidyapati

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८ भाग-९ भाग-१०

भाग-११ भाग-१२

2nd November 2012 Ugna Re- By Shovna Narayan (Pre-Jyotirishwar Non Brahmin Vidyapati's Life Episode)

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८

७५म सगर राति दीप जरए मे मुन्नाजीक पहिल विहनि कथा पोस्टर प्रदर्शनी

मिथिलाक मूड़न- (रसनचौकीक स्वरक संग)

हृदयनारायण झा

भाग-१ भाग-२ भाग-३

रंजन चौधरी आ हनी मिश्र (तबला)

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८ भाग-९

ललित रंग आ हनी मिश्र (तबला)

भाग-१ भाग-२ भाग-३

दीक्षा भारती

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४

सुषमा

बटगमनी

नन्द कुमार मिश्रक गजल पाठ

नन्द कुमार मिश्र जीक कविता पाठ

भाग-१ भाग-२

मैथिली- भोजपुरी अकादमी, नई दिल्ली

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

मैथिली- भोजपुरी अकादमी, नई दिल्ली सेमीनार 29 मार्च 2009

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८ भाग-९

मैथिली- भोजपुरी अकादमी, द्वारका, नई दिल्ली सेमीनार

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६

....

विदेह सम्मान: **सम्मान-सूची** (समानान्तर साहित्य अकादेमी, समानान्तर ललित कला अकादेमी आ समानान्तर संगीत-नाटक अकादेमी सम्मान/ पुरस्कार नामसँ विख्यात)

....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रेरित बुझाइत अछि, से एकर एकरा एक उखड़ाहामे उनटा-पुनटा दियौ, ततबे धरि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेल सेहो ई पर्याप्त अछि, से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेने छथि से एकर एकटा आर फास्ट-रीडिंग दोसर-उखड़ाहामे करथि|

IGNOU इग्नू **BMAF-001**

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

४.मैथिली शिशु, बाल आ किशोर साहित्य Maithili Children Literature

विदेह शिशु, बाल आ किशोर उत्सव

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

Search for Children Literature (including Audio-Visual & Sign Language) relating to Mithila/ Maithili

https://books.google.com/



Videha Archive of Maithili Children Literature विदेह मैथिली शिशु, बाल आ किशोर साहित्यक आर्काइव (पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र एकेडमिक प्रयोग लेल) सभ पोथी पी.डी.एफ. डाउनलोड लेल क्रमानुसार नीचाँक लिंक सभपर उपलब्ध अछि। All the books are available for pdf download at the respective links below

....

NCERT BHASHA SANGAM

NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)

पं लक्ष्मीपति सिंह (सौजन्य रमानन्द झा "रमण")

हिन्दी-मैथिली-शिक्षक

मैथिली-हिन्दी वार्तालाप (३ घण्टा)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

https://youtu.be/TebuC-lrSs8

https://ncert.nic.in/bs-2021.php

विदेह मैथिली शिशु उत्सव

कथा बौद्ध सिद्ध मेहथपा (बाल साहित्य केन्द्रित) मेंहथमे भेल ८२ म सगर राति दीप जरयमे पठित कथा सभक संकलन

कथा बौद्ध सिद्ध मेहथपा

नेना भुटकाकेँ रातिमे सुनेबा लेल किछु लोककथा

भोला लाल दास (आर्काइव डॉट कॉम)

मैथिली सुबोध व्याकरण

डॉ. रमानन्द झा 'रमण' (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

राजू आ टाकाक गाछ (अनुवाद)

योगेन्द्र पाठक "वियोगी" (सौजन्य- योगेन्द्र पाठक "वियोगी")

विज्ञानक बतकही

विज्ञानक बतकही भाग-२

नरक विजय (सम्पूर्ण)

नरक विजय (संशोधित)

हमर गाम (बाल उपन्यास)

पिरामिडक देशमे

रोबोट (अनूदित साइंस-फिक्शन नाटक)

रामलोचन ठाकुर (सौजन्य- रामलोचन ठाकुर)

मैथिली लोककथा

कीर्तिनाथ झा (सौजन्य- कीर्तिनाथ झा)

कुरल: मैथिली भावानुवाद

जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" (सौजन्य- जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल")

बाल कविता

मुन्नाजी

तीन टा बाल नाटक (मैथिली बाल साहित्य)

खुरलुच्ची (मैथिली बाल कविता- बाल साहित्य)

देवांशु वत्स

नताशा -मैथिली बाल चित्रशृंखला (कौमिक्स)

जगदानन्द झा "मनु" (सौजन्य- जगदानन्द झा "मनु")

चोनहा (बाल उपन्यास)

जगदीश प्रसाद मण्डल

तरेगन (बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह)

नै धाड़ैए (बाल उपन्यास)

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' (सौजन्य- नन्द कुमार मिश्र 'नन्द')

स्वर्ण कमल (बाल उपन्यास)

बृषेश चन्द्र लाल (सौजन्य- बृषेश चन्द्र लाल)

ढोलक (बाल कविता संग्रह)

सुजीत कुमार झा (सौजन्य- सुजीत कुमार झा)

कोइली घूरि आउ (बाल लघु-विहनि कथा संग्रह)

डॉ. शशिधर कुमर

उड़ि ने सकी पर चिड़ै छी हम (भाग १-२) (पृ. १०५४-१०९५)

खिस्सा अण्टार्कटिका केर (पृ. १०५४-१०९५)

बाल कविता (पृ. ९९३-१२१५)

बाल कविता (पृ. १००४-११७३)

सचित्र बाल कविता (पृ. ७४७-८३४)

सचित्र बाल कविता (पृ. १४६८-१८५१)

डॉ शशिधर कुमर आ सुप्रिया बेबी कुमारी

भूकम्प (पृ. ६३८-६७४)

कनकमणि दीक्षित (मूल नेपालीसँ मैथिली अनुवाद रूपा धीरू आ धीरेन्द्र प्रेमर्षि, बाल साहित्य) (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

भगता बेङक देश-भ्रमण

अणिमा सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

शिशु गीत खेल

कल्पना झा (सौजन्य- कल्पना झा)

नशामुक्ति हित गाबी गीत

निनियाँ

मुन्नी कामत (सौजन्य- मुन्नी कामत)

चुक्का (बाल कथा संग्रह)

प्रीति ठाकुर

गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा -पहिल मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मिथिलाक लोकदेवता (बाल साहित्य)

विद्यापतिक पुरुष परीक्षा (बाल साहित्य)

रेस (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

ए बी सी डी- प्रकृति अक्षर पोथी (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

सभ खाइत अछि (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

बो म्याउ बाह (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

रङ सभ (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(०६) छोट आ पैघ (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(०७) माल-जाल आ जानवर दिस देखू (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(१७) हमर परिवार (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

रश्मि प्रिया (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

कैयो सकै छी, नहियो कऽ सकै छी

सुनीता ठाकुर (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

बण्टी आ बबली

नीलिमा चौधरी (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर सभसँ नीक संगी

स्वास्तिका ठाकुर (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

गप्पू बुते नाचल नै होइ छै

तूलिका (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमरा ओ चाही!

मधूलिका मिश्र (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

ओंघाइत भीमा

लक्ष्मी ठाकुर

जानवर सभ संगे भेँट-घाँट

पूनम मण्डल

सुतै कालक खिस्सा

गजेन्द्र ठाकुर

बाल साहित्य (मूल)- गजेन्द्र ठाकुर

बाल मण्डली/ किशोर जगत (बाल नाटक, लघुकथा, कविता आदि)

Learn Mithilakshar Script

जलोदीप (बाल-नाटक संग्रह)

अक्षरमुष्टिका (बाल-लघुकथा संग्रह)

बाङक बङौरा (बाल-पद्य संग्रह)

भऽ जाएब छू*(मैथिलीक २०१२ मे प्रकाशित पहिल क्लाइमेट-फिक्शन प्ले- Maithili's first climate-fiction play originally published in 2012)*

कमलाक भगता

तरहरिमे परीलोक

बेसी छुट्टी कम इसकूल

बड़द करैए दाउन ने यौ

बाल गजल

फिनिश लाइन

बाल साहित्य (अनुवाद- द्विभाषिक- मैथिली-अंग्रेजी)- गजेन्द्र ठाकुर

मसाई केर परिवर्तनकारी रेबेका

सुनू

घर सभ

एकटा नीक दिन

चलू हम तँ ठीक छी ने!

की अहाँ ऐ चिड़ै सभकेँ देखने छी?

टोस्ट

बड़ीटा! कनियेटा!

एतऽ हम सभ रहै छी

भारतोल्लक राजकुमारी

भारतोल्लक राजकुमारी (बिनु शब्दक)

वुयो

कच-कच कचाक

चुन्नू-मुन्नूक नहेनाइ

नेना जे बैलूनसँ डेराइत छल

अद्भुत फिबोनाची अंक-शृंखला

हारू

अखन नै, अखन नै!

जन्मदिनक उत्सव भोज

मोट राजा पातर-दुब्बड़ कुकुड़

बचिया जे अपन हँसी नै रोकि सकैत छलि

अंग्रेजी

हम सूंघि सकै छी

छोट लाल-टुहटुह डोरी

करू नीक, भोगू नीक

ई सभटा बिलाड़िक दोख अछि!

चोभा आम!

हमर टोलक बाट

जखन इकड़ू स्कूल गेल

माछी फेर आउ टाटा!

अमाचीक जुलुम मशीन सभ

टिंग टोंग

पाउ-म्याऊ-वाह

कुकुड़क एकटा दिन

हमरा नीक लगैए

रीताक नव-स्कूलमे पहिल दिन

कनी हँसियौ ने!

लाल बरसाती

भूत-प्रेतक नाट्यशाला

आउ पएर गानी

कतऽ अछि ई अंक ५?

विदेह मैथिली-अंग्रेजी टॉकिंग रीड-अलाउड ऑडियो बुक

https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF (मसाई केर परिवर्तनकारी रेबेका)
https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (चलू हम तँ ठीक छी ने!)
https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo (एकटा नीक दिन)
https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घर सभ)
https://bloomlibrary.org/player/dAzC0Fubt7 (की अहाँ ऐ चिड़ै सभकेँ देखने छी?)

गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादन)

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]

विदेह: सदेह ९ तिरहुता

गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा (सम्पादन)
English-Maithili Computer Dictionary
डॉ. कमला चौधरी (सौजन्य- कमला चौधरी)
मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली २००८
डॉ योगानन्द झा (सौजन्य- योगानन्द झा)
मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली २००९
डॉ. ललिता झा (सौजन्य- ललिता झा)

मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली २०११

गोविंद झा)(IGNCA Site आर्काइव)

Maithili-English Dictionary

रामदेव झा (शंकरदेव झा -सौजन्य)

मैथिली शब्द संचय

……………

किछु मैथिली पोथी डाउनलोड साइट (ओपन सोर्स)

Videha Maithili eBooks/ eJournals/ Audio-Video Archive

विज्ञान रत्नाकर

OLE Nepal's e-Pustakalaya

पोथीक लिंक

IGNCA-ASI (search keyword Mithila)

History of Navya-Nyaya in Mithila

Studies in Jainism and Buddism in Mithila

Mithila in the Age of Vidyapati

Cultural Heritage of Mithila

Mithila under the Karnatas

Temple Survey Project ASI- English आ Hindi

मैथिली साहित्य संस्थान

दर्शनीय मिथिला (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 1 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 2 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 3 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 4 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 5 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

ब्लूम लाइब्रेरी मैथिली

अरिपन फाउण्डेशन

Pratham Books Maithili Storyweaver

मैथिली ऑडियो बुक्स

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

पोथी डॉट कॉम

खिस्सा-पिहानी नेना भुटका लेल

जानकी एफएम समाचार.

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल

....

विदेह सम्मान*:* **सम्मानसूची-** (समानान्तर साहित्य अकादेमी, समानान्तर ललित कला अकादेमी आ समानान्तर संगीत /नाटक अकादेमी सम्मान- (पुरस्कार नामसँ विख्यात

....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रेरित बुझाइत अछि, से एकर एकरा एक उखड़ाहामे उनटा-पुनटा दियौ, ततबे धरि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेल सेहो ई पर्याप्त अछि, से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेने छथि से एकर एकटा आर फास्ट-रीडिंग दोसर-उखड़ाहामे करथि|

IGNOU इग्नू *BMAF-001*

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for

accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

५.विदेह स्त्री कोना

विदेह स्त्री कोना

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

Search for Works (including Audio-Visual & Sign Language) relating to Mithila/ Maithili by Female Writers/ Artists

https://books.google.com/

(पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र एकेडमिक प्रयोग लेल) सभ पोथी पी.डी.एफ. डाउनलोड लेल क्रमानुसार नीचाँक लिंक सभपर उपलब्ध अछि। All the books are available for pdf download at the respective links below.

....

सखुआवाली (नारी विमर्श केन्द्रित) भपटियाहीमे भेल ८३ म सगर राति दीप जरयमे पठित कथा सभक संकलन

सखुआवाली

अणिमा सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

शिशु गीत खेल

इलारानी सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

प्रेम- एक कविता (अनूदित नाटक)

अरुन्धती देवी (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मिथिलाक विदुषी महिला

डॉ. कमला चौधरी (सौजन्य- कमला चौधरी)

मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली २००८

समय-संकेत (कथा-संग्रह) २०१०

डॉ. ललिता झा (सौजन्य- ललिता झा)

मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली २०११

प्रोमिशा मिश्रा

रामभरोस कापड़ि भ्रमर व्यक्तित्व एवं)कृतित्व(

सुस्मिता पाठक (सौजन्य- केदार कानन)

परिचिति (कविता संग्रह)

कनोजड़ि (कथा संग्रह)

नन्दिनी पाठक (सौजन्य- केदार कानन)

पाथरक शहर (कविता संग्रह)

पन्ना झा (सौजन्य- नरेन्द्र झा)

अनुभूति (लघुकथा संग्रह)

कल्पना झा (सौजन्य- कल्पना झा)

गोसाउनिक गीत

नशामुक्ति हित गाबी गीत

निनियाँ

यायावरी- शेफालिका वर्मा (हिन्दी अनुवाद कल्पना झा)

मुन्नी कामत (सौजन्य- मुन्नी कामत)

सुखल मन तरसल आँखि (पद्य आ गद्य)

सुखल मन तरसल आँखि (कविता)

अंततः (कविता संग्रह)

चुक्का (बाल कथा संग्रह)

नीता झा (सौजन्य- नीता झा)

बिलाइ मौसी (बाल लघुकथा संग्रह)

शेफालिका वर्मा (सौजन्य- शेफालिका वर्मा)

यायावरी (यात्रावृत्तान्त)

यायावरी (हिन्दी अनुवाद- कल्पना झा)

अर्थयुग (लघुकथा संग्रह)

एकटा अकास (लघुकथा संग्रह)

भावांजलि (गद्य गीत)

किस्त-किस्त जीवन (आत्म कथा)

आखर-आखर प्रीत

नागफांस (उपन्यास)

Naagphans (In English)

विभा रानी

विभा रानीक दूटा नाटक (भाग रौ आ बलचन्दा)

सुशीला झा (सौजन्य- प्रभा खेतान/ सुशीला झा)

छिन्नमस्ता- प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यासक मैथिली अनुवाद

कुसुम ठाकुर

प्रत्यावर्तन (आत्मकथा)(पृ. ४५९-५७२)

डॉ. कामिनी कामायनी

विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३५० सँ)

प्रीति ठाकुर

गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा -पहिल मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)
मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)
मिथिलाक लोकदेवता (बाल साहित्य)
विद्यापतिक पुरुष परीक्षा (बाल साहित्य)
रेस (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
ए बी सी डी- प्रकृति अक्षर पोथी (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
सभ खाइत अछि (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
बो म्याउ बाह (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
रङ सभ (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
(०६) छोट आ पैघ (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
(०७) माल-जाल आ जानवर दिस देखू (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
(१७) हमर परिवार (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
जानवर (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
पोथी १३: १...२...३... (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
बाजाक अबाज (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
पंजी (११००० मूल मिथिलाक्षर ताड़पत्र)
11000 PALM LEAF PANJI INSCRIPTIONS (VOLUME I TO XXII) Compiled, Scanned & Catalogued by Preeti Thakur

गजेन्द्र ठाकुर आ प्रीति ठाकुर (समालोचना)

नीतू कुमारी

मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

किरण चौधरी (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर बाल-वाड़ी

आर्या कॉकपिट मे

दीपा करमाकर- सही संतुलन मे

जंगल मे अहाँक स्वागत अछि

व्हेल छथि आकाश मे

भैया के मुस्कान के चोरौलक

बीज संचयक

अचंभित करय "फिबोनाची"

शौचालयक खिस्सा

लाल बरसाती

गुल्लीक जादुई पेटी

समीराक विकठ भोजन

विवाह मे जाई छी

प्रियंका झा (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर माँछ! नै हमर माँछ!

रश्मि प्रिया (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

कैयो सकै छी, नहियो कऽ सकै छी

सुनीता ठाकुर (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

बण्टी आ बबली

नीलिमा चौधरी (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर सभसँ नीक संगी

स्वास्तिका ठाकुर (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

गप्पू बुते नाचल नै होइ छै

तूलिका (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमरा ओ चाही!

मधूलिका मिश्र (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

ओंघाइत भीमा

लक्ष्मी ठाकुर

जानवर सभ संगे भेँट-घाँट

पूनम मण्डल

सुतै कालक खिस्सा

कनकमणि दीक्षित (मूल नेपालीसँ मैथिली अनुवाद **रूपा धीरू** आ धीरेन्द्र प्रेमर्षि, बाल साहित्य) (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रेमर्षि)
भगता बेङक देश-भ्रमण
डॉ शशिधर कुमर आ **सुप्रिया बेबी कुमारी**
भूकम्प (पृ. ६३८-६७४)
....
लेखकक आमंत्रित रचना आ ओइपर आमंत्रित समीक्षकक समीक्षा सीरीज

१. **कामिनी**क पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

Videha_01_09_2016

३. **मुन्नी कामत**क एकांकी "जिन्दगीक मोल" आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_354

पसुपुलेटी गीता

एडिटर्स चोइस सीरीज-१

मीना झा

एडिटर्स चोइस सीरीज-२

जगदीश चन्द्र ठाकुर (३ टा बाल कविता जइमे **२ टा कविता बेबी चाइल्डपर**)

एडिटर्स चोइस सीरीज-३

....

विद्यापति गीत

तूलिका

गीत-गोविन्ददास (गायन **दीक्षा भारती**)

गोविन्ददास-१

गोविन्ददास-२

गोविन्ददास-३

गोविन्ददास-४

गोविन्ददास-५

गोविन्ददास-६

मैथिली गजल (गजल- गजेन्द्र ठाकुर, गायन **दीक्षा भारती**)

बहरे मुतकारिब

गजल-२

गजल-३

गजल-४

प्यारे मैथिल चैनल- **किरण चौधरी** आ **संगीता आनन्द**

सौम्या झा

रश्मि दत्त

प्रिया मल्लिक

अनामिका झा

रजनी पल्लवी

पूनम मिश्र

रंजना झा

जूली झा

दीपशिखा झा

मैथिली ठाकुर

अनुपम मिश्र पॉडकास्ट

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

६. विदेह ई-लर्निङ्ग

विदेह ई-लर्निङ्ग



[संघ लोक सेवा आयोग/ बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षा लेल मैथिली (अनिवार्य आ ऐच्छिक) आ आन ऐच्छिक विषय आ सामान्य ज्ञान (अंग्रेजी माध्यम) हेतु सामिग्री] [एन.टी.ए.- यू.जी.सी.-नेट-मैथिली लेल सेहो]

....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

<u>भाषापाक</u>

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रेरित बुझाइत अछि, से एकर एकरा एक उखड़ाहामे उनटा-पुनटा दियौ, ततबे धरि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेल सेहो ई पर्याप्त अछि, से जे विद्यार्थी मैथिली

(कम्पलसरी) पेपर लेने छथि से एकर एकटा आर फास्ट-रीडिंग दोसर-उखड़ाहामे करथि|

IGNOU इग्नू BMAF-001

....

Maithili (Compulsory & Optional)

UPSC Maithili Optional Syllabus

BPSC Maithili Optional Syllabus

मैथिली प्रश्नपत्र- यू.पी.एस.सी. (ऐच्छिक)

मैथिली प्रश्नपत्र- यू.पी.एस.सी. (अनिवार्य)

मैथिली प्रश्नपत्र- बी.पी.एस.सी.(ऐच्छिक)

....

यू. पी. एस. सी. (मेन्स) ऑप्शनल: मैथिली साहित्य विषयक टेस्ट सीरीज

यू.पी.एस.सी. क प्रिलिमिनरी परीक्षा सम्पन्न भऽ गेल अछि। जे परीक्षार्थी एहि परीक्षामे उत्तीर्ण करताह आ जँ मेन्समे हुनकर ऑप्शनल विषय मैथिली साहित्य हेतन्हि तँ ओ एहि टेस्ट-सीरीजमे सम्मिलित भऽ सकैत छथि। टेस्ट सीरीजक प्रारम्भ प्रिलिम्सक रिजल्टक तत्काल बाद होयत। टेस्ट-सीरीजक उत्तर विद्यार्थी स्कैन कऽ editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकैत छथि, जँ मेलसँ पठेबामे असोकर्ज होइन्हि तँ ओ हमर ह्वाट्सएप नम्बर 9560960721 पर सेहो प्रश्नोत्तर पठा सकैत छथि। संगमे ओ अपन प्रिलिम्सक एडमिट कार्डक स्कैन कएल कॉपी सेहो वेरीफिकेशन लेल पठाबथि।

परीक्षामे सभ प्रश्नक उत्तर नहि देमय पड़ैत छैक मुदा जँ टेस्ट सीरीजमे विद्यार्थी सभ प्रश्नक उत्तर देताह तँ हुनका लेल श्रेयस्कर रहतन्हि। विदेहक सभ स्कीम जेकाँ ईहो पूर्णतः निःशुल्क अछि।- गजेन्द्र ठाकुर

संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सिविल सर्विसेज परीक्षा (मुख्य), मैथिली आ २ १ -पत्र-प्रश्न /लेल टेस्ट सीरीज (ऐच्छिक)

Test Series-1- गजेन्द्र ठाकुर

Test Series-2- गजेन्द्र ठाकुर

....

NTA-UGC/ UPSC/ BPSC Maithili Optional- गजेन्द्र ठाकुर

मैथिली समीक्षाशास्त्र
मैथिली समीक्षाशास्त्र (तिरहुता)
मैथिली समीक्षाशास्त्र (भाग-२, अनुप्रयोग)
मैथिली प्रतियोगिता

[Place of Maithili in Indo-European Language Family/ Origin and development of Maithili language (Sanskrit, Prakrit, Avhatt, Maithili) भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान/ मैथिली भाषाक उद्भव ओ विकास (संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, मैथिली)]

(Criticism- Different Literary Forms in Modern Era/ test of critical ability of the candidates)

(ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददास सिलेबसमे छथि आ रसमय कवि चतुर चतुरभुज विद्यापति कालीन कवि छथि। एतय समीक्षा श्रृंखलाक प्रारम्भ करबासँ पूर्व चारू गोटेक शब्दावली नव शब्दक पर्याय संग देल जा रहल अछि। नव आ पुरान शब्दावलीक ज्ञानसँ ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददासक प्रश्नोत्तरमे धार आओत, संगहि शब्दकोष बढ़लासँ खाँटी मैथिलीमे प्रश्नोत्तर लिखबामे धाख आस्ते-आस्ते खतम होयत, लेखनीमे प्रवाह आयत आ सुच्चा भावक अभिव्यक्ति भय सकत।)

(बद्रीनाथ झा शब्दावली आ मिथिलाक कृषि-मत्स्य शब्दावली)

(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- विद्यापति)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- पद्य समीक्षा- बानगी)

(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- लोक गाथा नृत्य नाटक संगीत)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- यात्री)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली रामायण)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली उपन्यास)

(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- शब्द विचार)

(तिरहुता लिपिक उद्भव ओ विकास)

अनुलग्नक-१-२-३ अनुलग्नक- ४-५

(मैथिली आ दोसर पुबरिया भाषाक बीचमे सम्बन्ध (बांग्ला, असमिया आ ओड़िया) [यू.पी.एस.सी. सिलेबस, पत्र-१, भाग-'ए', क्रम-५])

[मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली- बिहार लोक सेवा आयोग (बी.पी.एस.सी.) केर सिविल सेवा परीक्षाक मैथिली (ऐच्छिक) विषय लेल]

मैथिली-हिन्दी वार्तालाप (३ घण्टा)

मैथिली

बांग्ला

असमिया

ओड़िया

हिन्दी

उर्दू

नेपाली

संस्कृत

संथाली

NTA_UGC_NET_Maithili_01

NTA_UGC_NET_Maithili_02

GS (Pre)

Topic 1

……………………

यू.पी.एस.सी. आ आन प्रतियोगिता परीक्षा लेल देखू:

विदेह:सदेह १७	विदेह:सदेह २१	विदेह:सदेह २३	विदेह:सदेह २६	विदेह:सदेह २९
विदेह:सदेह ३०	विदेह:सदेह ३२	विदेह:सदेह ३३	विदेह:सदेह ३४	विदेह:सदेह ३५

……………………

General Studies

NCERT-Environment Class XI-XII

NCERT PDF I-XII

Sansad TV

http://prasarbharati.gov.in/

http://newsonair.com/

………………

Other Optionals

IGNOU eGyankosh

………………

पेटार (रिसोर्स सेन्टर)

....

मैथिली मुहावरा एवम् लोकोक्ति प्रकाश- रमानाथ मिश्र मिहिर (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

डॉ. कमला चौधरी-मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

डॉ योगानन्द झा- मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

डॉ. ललिता झा- मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

मैथिली शब्द संचय- डॉ श्रीरामदेव झा (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

दत्त-वतीक वस्तु कौशल- डॊ. श्रीरामदेवझा

परिचय निचय- डॊ शैलेन्द्र मोहन झा

English Maithili Computer Dictionary (Complete)- Gajendra Thakur

Maithili English Dictionary- गोविंद झा

अणिमा सिंह -शिशु गीत खेल

आनन्द मिश्र (सौजन्य श्री रमानन्द झा 'रमण')- मिथिला भाषाक सुबोध व्याकरण

मैथिली सुबोध व्याकरण- भोला लाल दास

राधाकृष्ण चौधरी- A Survey of Maithili Literature

राधाकृष्ण चौधरी- मिथिलाक इतिहास

जयकान्त मिश्र- A History of Maithili Literature Vol. I

राजेश्वर झा- मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास (मैथिली साहित्य संस्थान आर्काइव) (यू.पी.एस.सी. सिलेबस)

दत्त-वती (मूल)- श्री सुरेन्द्र झा सुमन (यू.पी.एस.सी. सिलेबस)

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (बी.पी.एस.सी. सिलेबस) CIIL Site

सुभाष चन्द्र यादव-राजकमल चौधरी: मोनोग्राफ

शिव कुमार झा 'टिल्लू' अंशु-समालोचना

डॉ बचेश्वर झा- निवन्ध-निकुञ्ज

डॉ. देवशंकर नवीन- आधुनिक साहित्यक परिदृश्य

प्रेमशंकर सिंह- मैथिली भाषा साहित्य:बीसम शताब्दी (आलोचना)

डॉ. रमानन्द झा 'रमण'

हिआओल

अखियासल CIIL Site

दुर्गानन्द मण्डल-चक्षु

फेर एहि मनलग्गू फाइल सभकेँ सेहो पढ़ू:-

रामलोचन ठाकुर- मैथिली लोककथा

कुमार पवन (साभार अंतिका)

पइठ (मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ कथा)

डायरीक खाली पन्ना

केदारनाथ चौधरी

अबारा नहितन	चमेलीरानी	माहुर	करार	अयना	हीना

डॉ. रमण झा

भिन्न-अभिन्न	मैथिली काव्यमे अलङ्कार	अलङ्कार-भास्कर	मैथिली काव्यमे ज्योतिष	अहिरावण-वध	पारिजात-मञ्जरी

योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

विज्ञानक बतकही	विज्ञानक बतकही भाग-२	अकटा मिसिया (कथा संग्रह)
नरक विजय (सम्पूर्ण)	नरक विजय (संशोधित)	किछु तीत मधुर (यात्रा वृत्तांत)
हमर गाम	पिरामिडक देशमे	रोबोट (अनूदित साइंस-फिक्शन नाटक)

अनूदित साहित्य (आन भाषासँ)- गजेन्द्र ठाकुर

विदेह:सदेह २७ (गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठकक आन भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३५० सँ)

बाल साहित्य (अनुवाद- द्विभाषिक- मैथिली-अंग्रेजी)- गजेन्द्र ठाकुर

मसाई केर परिवर्तनकारी रेबेका

शेष ४० टा बाल चित्र-पोथी नीचाँक लिंकपर:-

सुनू	घर सभ	एकटा नीक दिन	चलू हम तँ ठीक छी ने!	की अहाँ ऐ चिड़ै सभकेँ देखने छी?
टोस्ट	बड़ीटा! कनियेटा!	एतऽ हम सभ रहै छी	भारतोल्लक राजकुमारी	भारतोल्लक राजकुमारी (बिनु शब्दक)
वुयो	कचकच- कचाक	चुन्नूमुन्नूक- नहेनाइ	नेना जे बैलूनसँ डेराइत छल	अद्भुत फिबोनाची अंक-शृंखला
हारू	अखन नै, अखन नै!	जन्मदिनक उत्सव भोज	मोट राजा पातर-दुब्बड़ कुकुड़	बचिया जे अपन हँसी नै रोकि सकैत छलि
अंग्रेजी	हम सूंघि सकै छी	छोट लाल-टुहटुह डोरी	करू नीक, भोगू नीक	ई सभटा बिलाडिक दोख अछि!
चोभा आम!	हमर टोलक बाट	जखन इकड़ू स्कूल गेल	माछी फेर आउ टाटा!	अमाचीक जुलुम मशीन सभ
टिंग टोंग	पाउम्याऊ--वाह	कुकुडक एकटा दिन	हमरा नीक लगैए	रीताक नव-स्कूलमे पहिल दिन
कनी हँसियौ ने!	लाल बरसाती	भूतप्रेतक ना-व्यशाला	आउ पएर गानी	कतऽ अछि ई अंक ५?

विदेह मैथिली-अंग्रेजी टॉकिंग रीड-अलाउड ऑडियो बुक

https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF (मसाई केर परिवर्तनकारी रेबेका)
https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (चलू हम तँ ठीक छी ने!)
https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo (एकटा नीक दिन)
https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घर सभ)
https://bloomlibrary.org/player/dAzC0Fubt7 (की अहाँ ऐ चिड़ै सभकेँ देखने छी?)

....

किछु मैथिली पोथी डाउनलोड साइट (ओपन सोर्स)

NCERT BHASHA SANGAM

NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)

पं लक्ष्मीपति सिंह (सौजन्य रमानन्द झा "रमण")

हिन्दीशिक्षक-मैथिली-

मैथिली(घण्टा ३) हिन्दी वार्तालाप-

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित(मैथिलीमे पहिल बेर -

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

https://youtu.be/TebuC-lrSs8

https://ncert.nic.in/bs-2021.php

Sahitya Akademi

प्रकाशन

डिजिटल-पोथी

CIIL

अखियासल (रमानन्द झा रमण)

जुआयल कनकनी- महेन्द्र

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (बी.पी.एस.सी. सिलेबस)

सृजन केर दीप पर्व- सं केदार कानन आ अरविन्द ठाकुर

मैथिली गद्य संग्रह- सं शैलेन्द्र मोहन झा

Archive.Org (विजयदेव झा)

Videha Maithili eBooks/ eJournals/ Audio-Video Archive

IGNCA

Maithili English Dictionary

विज्ञान रत्नाकर

मिथिला दर्शन

तीरभुक्ति

OLE Nepal's e-Pustakalaya

पोथीक लिंक

IGNCA-ASI (search keyword Mithila)

History of Navya-Nyaya in Mithila

Studies in Jainism and Buddhism in Mithila

Mithila in the Age of Vidyapati

Cultural Heritage of Mithila

Mithila under the Karnatas

Temple Survey Project ASI- English आ Hindi

मैथिली साहित्य संस्थान

दर्शनीय मिथिला (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 1 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 2 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 3 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 4 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 5 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

ब्लूम लाइब्रेरी मैथिली

अरिपन फाउण्डेशन

Pratham Books Maithili Storyweaver

मैथिली ऑडियो बुक्स

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

पोथी डॉट कॉम

I Love Mithila (पोथी डाउनलोड लिंक)

online maithili journal

owner I Love Mithila

प्यारे मैथिल चैनल- किरण चौधरी आ संगीता आनन्द

मिथिला चैप्टर

खिस्सा-पिहानी नेना भुटका लेल

जानकी एफ.एम समाचार

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल

आकाशवाणी मैथिली समाचार

आकाशवाणी अमृत महोत्सव

सुरेन्द्र राउत

....

JNU

मैथिली

मैथिली लेक्सिकन

....

Videha e-Learning YouTube Channel

....

विदेह सम्मान***:*** **सम्मानसूची-** (समानान्तर साहित्य अकादेमी, समानान्तर ललित कला अकादेमी आ समानान्तर संगीत /नाटक अकादेमी सम्मान- (पुरस्कार नामसँ विख्यात

....

Maithili eBooks/ eJournals/ Audios-Videos can be downloaded from: **Maithili eBOOKS/ eJournals/ Audios-Videos**

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

७.विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण (including Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement)

विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण (including Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement)

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

Search for Information relating to Mithila/ Maithili

https://books.google.com/

Top of Form

सूचना

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.

- Robert Louis Stevenson

....

Videha: Maithili Literature Movement

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published

online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

१

"विदेहक जीवित लेखक-सम्पादक, आन्दोलनी, सार्वजनिक जीवन जीनिहार, कला-संगीत-रंगमंचकर्मी आ रंगमंच-निर्देशक पर विशेषांक श्रृंखला"

विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांक

स्वतंत्रचेता- अरविन्द ठाकुर: व्यक्तित्व-कृतित्व (सम्पादक आशीष अनचिन्हार) [विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांकक प्रिण्ट रूप]

विदेह जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक

विदेह रामलोचन ठाकुर विशेषांक

विदेह राजनन्दन लाल दास विशेषांक

विदेह रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक

विदेह केदार नाथ चौधरी विशेषांक

विदेह प्रेमलता मिश्र प्रेम विशेषांक

विदेह शरदिन्दु चौधरी विशेषांक

विदेह कला-विमर्श विशेषांक (सन्दर्भ- संजू दास, कृष्ण कुमार कश्यप, शशिबाला, एस.सी.सुमन आ श्वेता झा चौधरी)

विदेह रचनाकार अशोक विशेषांक

विदेह राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक

विदेह अपन जीवित लेखक-सम्पादक, आन्दोलनी, सार्वजनिक जीवन जीनिहार, रंगमंचकर्मी आ रंगमंच-निर्देशक पर विशेषांक शृंखलाक अन्तर्गत (१)अरविन्द ठाकुर, (२)जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल, (३)रामलोचन ठाकुर, (४) राजनन्दन लाल दास, (५)रवीन्द्र नाथ ठाकुर, (६) केदार नाथ चौधरी, (७) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम', (८) शरदिन्दु चौधरी, (९) रचनाकार अशोक आ (१०) राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक निकालने अछि। ऐ १० मे सँ रामलोचन ठाकुर, राजनन्दन लाल दास आ रवीन्द्र नाथ ठाकुर आब हमरा सभक बीच नै छथि। शेष ७ गोटे माने (१)अरविन्द ठाकुर, (२)जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल, (३) केदार नाथ चौधरी, (४) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम', (५) शरदिन्दु चौधरी, (६) रचनाकार अशोक आ (७) राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' केर स्टेटस विदेहमे 'लाइफटाइम फेलो' सन रहत। ओ अपन नव रचना कथा), कविता बा कथेतर गद्यबा (पद्य-रंगमंच] नव पोथी बा नव प्रोडक्शन, सड़क नाटक बा अन्य कोनो -ऑडियो) विजुअल सहितनिकललाक बादक हुअय बा विदेहपर नै हुअय जे विशेषांक [(प्रकाशन करब आ ओइपर पाठक-पठा सकै छथि। ओकर हम समीक्षा सहित ई, स्रोता, द्रष्टाक मध्य सम्वादक प्रारम्भ लेल प्रस्तुत करब।

"विदेहक जीवित लेखकसम्पादक-, आन्दोलनी, सार्वजनिक जीवन जीनिहार, कला रंगमंचकर्मी-संगीत-आ रंगमंचक चयन "पर विशेषांक शृंखला निर्देशक- प्रक्रियाक विधि निम्न प्रकारसँ अछि।

निअम:

१) लगभग पाँच-छह मास पहिनेसँ विदेह अपन पाठककेँ सुझाव देबा लेल लेल सूचना दैत अछि।

२) आएल सुझावमेसँ विदेह मात्र जीवित लोकक चयन करैत अछि।

३) ऐ सभ लोकक लेखनकाज / एवं आचरणक साम्यता देखल जाइत अछि। जिनकर लेखन/ काज ओ आचरणमे बेसी साम्यता (कम फाँक) भेटैए तेहन छह टा नाम चयनित होइत अछि।

४) छह नाम एलापर ई तुलना कएल जाइत छै जे ई छहो गोटेकेँ लेखनकाज /क एवजमे समाजसँ की भेटलनि।

५) जिनका सभसँ कम भेटल बुझाइत अछि तइ तीन लोककेँ अगिला चरण लेल राखि लेल जाइत अछि।

६) ऐ तीन चयनित जीवित लोकक रचना, काज आ उद्देश्य आदिक बीचमे परस्पर तुलना कएल जाइत अछि।

७) अंतिम रूपसँ विदेह द्वारा एकटा नाम चुनि सालक अंतमे घोषणा कएल जाइत अछि आ नियत समयपर ई विशेषांक निकालबाक प्रयास कएल जाइत अछि।

प्रश्न उठि सकैए जे की ऊपरका निअम एहन छै जइमे अंतिम रूपसँ सभ सुयोग्य जीवित लोक केर चयन समयपर भऽ जेतनि? तऽ एकर उत्तर छै नै। विदेहक पाठक लग सेहो अपन सीमा छनि। मुदा अही सीमाक संगे हमरा सभकेँ अपन

बेस्ट देबाक अछि आ मैथिली लेल एकटा एहन रस्ता बना देबाक छै जइसँ आबय बला ५००६००- बर्खक साहित्य विदेहक लीकसँ प्रेरणा पाबय।

अही विचारक संग विदेह ओहन संस्था, पत्रिका, लेखक, कलाकार, स्वयंसेवी बा सार्वजनिक जीवन जीनिहारपर अपन धेआन सेहो केंद्रित कऽ रहल अछि जे सुयोग्य छथि मुदा जिनकापर विदेहक विशेषांक कोनो कारणवश नै प्रकाशित भऽ सकल। एकर नाम भेल विदेहक "नित नवल सिरीज", जकर विवरण नीचाँ "नित नवल सिरीज"मे देल जा रहल अछि। -गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

२

"विदेह द्वारा एक बेरमे कोनो एकटा जीवित संस्था, पत्रिका बा संस्था-पोथी-पत्रिकासँ जुड़ल स्वयंसेवीक समग्र मूल्यांकन शृंखला"

विदेह अंक ३७१ (०१ जून २०२३) "मिथिला स्टूडेंट यूनियन (एम.एस.यू.)" विशेषांक

निअम:

१) संस्था कैटेगरी- संस्थाक काज माला आदि पहिरेनाइ, पत्रिका-स्मारिका आदि छपेनाइ, जे मात्र रेकॉर्ड बनेबाले हुअय, नै हुअय। संस्था द्वारा जातिवादी कट्टरता नै बढ़ाओल जेबाक शर्त रहत, संस्था पॉकेट संस्था नै हेबाक चाही आ जीवित हेबाक चाही।

२) संस्था-पोथी-पत्रिकासँ जुड़ल स्वयंसेवी कैटेगरी- लेखक-प्रकाशकसँ इतर आन जे लोक पोथी-पत्रिका केर बिक्री कऽ अपन जीवय-यापनक संग

मैथिलीक प्रचारमे सहायक छथि, संगमे संस्था (रंगमंच संस्था सहित) सभसँ सम्बन्धित स्वयंसेवी, तिनको मूल्यांकन विदेह विशेषांक निकालि कऽ करत। ३) पत्रिका कैटेगरी- मैथिलीक कोनो पत्रिकाक ऊपर विदेह विशेषांक प्रकाशित करत। मुदा ऐलेल ओइ पत्रिकाक सभ अंक विदेहपर डाउनलोड लेल ओइ पत्रिकाक संपादक बा कॉपीराइट धारक देता, से शर्त अछि।

चयन प्रक्रियाक निअम "विदेहक जीवित लेखक-सम्पादक, आन्दोलनी, सार्वजनिक जीवन जीनिहार, कला-संगीत-रंगमंचकर्मी आ रंगमंच-निर्देशक पर विशेषांक शृंखला"क चयन प्रक्रियाक निअम सन रहत।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

३

"विदेह मोनोग्राफ" शृंखला

विदेह अपन जीवित लेखक-सम्पादक, आन्दोलनी, सार्वजनिक जीवन जीनिहार, रंगमंचकर्मी आ रंगमंच-निर्देशक पर विशेषांक शृंखलाक अन्तर्गत (१)अरविन्द ठाकुर, (२)जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल, (३)रामलोचन ठाकुर, (४) राजनन्दन लाल दास, (५)रवीन्द्र नाथ ठाकुर, (६) केदार नाथ चौधरी, (७) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम', (८) शरदिन्दु चौधरी, (९) रचनाकार अशोक आ (१०) राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक निकालने अछि। अही सन्दर्भमे हिनका सभपर "विदेह मोनोग्राफ" शृंखला अन्तर्गत "मोनोग्राफ" आमंत्रित कयल जा रहल अछि। "विदेह मोनोग्राफ" शृंखलाक विवरण निम्न प्रकार अछि:

(१) इच्छुक लेखक ऊपरमे कोनो एक गोटेपर अपन मोनोग्राफ लिखबाक इच्छा editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकै छथि।
(२) विदेह लेखकक नाम मोनोग्राफ लिखबाक लेल चयनित कऽ ओकर सार्वजनिक घोषणा करत।
"विदेह मोनोग्राफ" लिखबाक निअम:
(१) मोनोग्राफ पूर्ण रूपेँ सम्बन्धित लोकपर केन्द्रित हुअय। साहित्य अकादेमी, एन.बी.टी. आ किछु व्यक्तिगत रूपेँ लिखल मोनोग्राफ/ बायोग्राफीमे लेखक संस्मरण आ व्यक्तिगत प्रसंग जोड़ि कय सम्बन्धित लोकक बहन्ने अपन-आत्म-प्रशंसा लिखै छथि। "विदेह मोनोग्राफ" फीफा वर्ल्ड कप फुटबाल सन रहत। फीफा वर्ल्ड कप फुटबाल एहेन एकमात्र टूर्नामेण्ट अछि जतय कोनो "ओपेनिंग" बा "क्लोजिंग" सेरीमनी अलगसँ नै होइ छै, पहिल आ अन्तिम मैचक सङे होइ छै आ तकर कारण छै जे अलगसँ कएल "ओपेनिंग" बा "क्लोजिंग" मे टूर्नामेण्टमे नै खेला रहल लोक मुख्य अतिथि/ अतिथि होइ छथि आ फोकस खिलाड़ी सँ दूर चलि जाइ छै। फीफा मात्र आ मात्र फुटबाल खिलाड़ीपर केन्द्रित रहैत अछि से ओकर टूर्नामेण्ट "ओपेनिंग सेरीमनी" नै वरन् सोझे "ओपेनिंग मैच" सँ आरम्भ होइत अछि आ ओकर समापन "क्लोजिंग सेरीमनी"सँ नै वरन् "फाइनल मैच आ ट्राफी"सँ खतम होइत अछि आ फोकस मात्र आ मात्र खिलाड़ी रहैत छथि। तहिना "विदेह मोनोग्राफ" मात्र आ मात्र सम्बन्धित लोकपर केन्द्रित रहत आ कोनो संस्मरण आदि जोड़ि कऽ फोकस अपनापर केन्द्रित करबाक अनुमति नै रहत।
(२) मोनोग्राफ लेल "विदेह पेटार"मे उपलब्ध सामग्रीक सन्दर्भ सहित उपयोग कएल जा सकैए।
(३) विदेहमे ई-प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि। सम्पादक 'विदेह' ई-पत्रिकामे प्रकाशित रचनाक प्रिंट-वेब

आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ मूल आ अनूदित आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ऐ ई-पत्रिकामे कोनो रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै।
(४) "विदेह मोनोग्राफ"क फॉर्मेट: सम्बन्धित लोकक परिचय (सम्बन्धित लोकक जन्म, निवास-स्थान आ कार्यस्थलक भौगोलिक-सांस्कृतिक विवेचना सहित) आ रचना/ काजक विवरण (समीक्षा सहित)।

घोषणा: "विदेह मोनोग्राफ" शृंखला अन्तर्गत (१) राजनन्दन लाल दास जी पर मोनोग्राफ निर्मला कर्ण, (२) रवीन्द्र नाथ ठाकुर पर मुन्नी कामत आ (३) केदार नाथ चौधरी पर प्रेम मोहन मिश्र द्वारा लिखल जायत। शेष ७ गोटेपर निर्णय शीघ्र कएल जायत।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

४ (१)
विदेहक "नित नवल सिरीज"

विदेह द्वारा जे विशेषांक प्रकाशित होइ छै तकर संगे विदेह ओहन संस्था, पत्रिका, लेखक, कलाकार, स्वयंसेवी बा सार्वजनिक जीवन जीनिहारपर अपन धेआन सेहो केंद्रित करत जिनकापर विदेहक विशेषांक कोनो कारणवश नै प्रकाशित भऽ सकल। एकर प्रक्रिया आ कार्यान्वयनक विवरण एना अछि।

<u>निअम आ कार्यान्वयन:</u>
१) हम एकटा कोनो संस्था, पत्रिका, लेखक, कलाकार, स्वयंसेवी बा सार्वजनिक जीवन जीनिहारपर समग्र आलोचना करब जकर भाषा मैथिली अथवा अंग्रेजी

रहत। ऐ पोथीक पहिल रूप ई-बुक केर रूपमे ऐत आ प्रयास रहत जे एकर प्रिंट सेहो आबय जे परिस्थितिपर निर्भर करत।

२) ऐ शृंखलामे:-

(i) सुभाष चंद्र यादवपर केंद्रित "नित नवल सुभाष चंद्र यादव",

(ii) राजदेव मंडलपर केंद्रित "Rajdeo Mandal- Maithili Writer" आ

(iii) जगदीश प्रसाद मण्डल केन्द्रित "Jagdish Prasad Mandal- Maithili Writer" प्रकाशित भेल अछि।

पहिल दुनू पोथीक लोकार्पण ३१ दिसम्बर २०२२ केँ १११म सगर राति दीप जरय मे कएल गेल। तेसर पोथीक लोकार्पण २५ मार्च २०२३ केँ ११२ म सगर राति दीप जरय मे कएल गेल।

(iv) "नित नवल दिनेश कुमार मिश्र" आ

(v) "नित नवल सुशील" जारी अछि।

आगाँक घोषणा लेल http://videha.co.in/investigation.htm देखैत रही।

पूर्वपीठिकासमय समाज आ :मैथिली उपन्यास" कमलानन्द झाक पोथी : क शीर्षक भ्रामक अछि। ई हुनकर किछु सवर्ण (२०२१) "सवाल उपन्यासकारपर किछु सिण्डिकेटेड कथित समीक्षात्मक आलेखक संग्रह अछि, २६३ पन्नाक ई पोथी हार्डबाउण्डमे लाइब्रेरीकेँ मात्र बेचल जा सकत, जतऽ ई सड़ि जायत, अमेजनसँ हम ई चारि सय पाँच टाकामे किनलौं मुदा ऐमे पाँचो पाइक सामिग्री नै अछि।

एतऽ एकटा भूल सुधार अछि, एकटा गएर सवर्ण लेखक सुभाष चन्द्र यादवक उपन्यास 'गुलो'केँ बिनु पढ़ने ओ दू पाँति लिखलन्हि आ निपटा देलन्हि, ओ दुनू पाँति हम एतऽ अहाँक मनोरंजनार्थ प्रस्तुत कऽ रहल छी। अहाँ गुलो पढ़नहिये हएब, जँ नै पढ़ने छी तँ पहिने पढ़ि लिअ, कारण तखन बेशी मनोरंजक अनुभव हएत, गुलो सुभाष चन्द्र यादव जीक अनुमति सँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवपर ऐ http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर।

"उपन्यासक कमजोरी अछि लेखकक राजनीतिक पूर्वाग्रह। राजनीति विशेषक पक्षधरता रचनाक संग न्याय नहि कऽ पबैत अछि।"

जइ उपन्यासमे राजनीति दूर दूर धरि नै छै ओतऽ-'राजनैतिक पूर्वाग्रह' आ 'राजनीति विशेषक पक्षधरता'क तँ प्रश्ने नै छै। राजनीतिक पूर्वाग्रह बा पक्षधरताक सोङर धूमकेतु आ यात्री प्रयुक्त केलन्हि। सुभाष चन्द्र यादव जीक 'भोट' जे २०२२मे आयल जे सुभाष चन्द्र यादव जीक अनुमति सँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवपर ऐ http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर, से राजनीतिपर अछि मुदा ओतहुओ सुभाषजीक भगता शैलीकेँ राजनीतिक पूर्वाग्रह बा पक्षधरताक सोङरक आवश्यकता नै पड़लै। पढ़ू हमर पोथी 'नित नवल सुभाष चन्द्र यादव' जे उपलब्ध अछि ऐ http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर।

कमलानन्द झाक बिनु पढ़ने सुभाष चन्द्र यादवक विरुद्ध ब्राह्मणवादी जातिगत पूर्वाग्रह एकटा खतराक घण्टी अछि। जइ हिसाबे ब्राह्मणवादकेँ आगाँ बढ़बैले कमलानन्द झा वामपंथक सोङर पकड़ै छथि आ सामाजिक न्यायक बलि चढ़बऽ चाहै छथि, तकर प्रति समानान्तर धारा सचेत अछि। ई अपन बायोडाटामे गएर सवर्णसँ छीनि कऽ, समानान्तर धाराक लोकक हककेँ मारि कऽ लेल साहित्य अकादेमीक मैथिल अनुवाद असाइनमेण्टक गर्वसँ चर्चा करैत छथि। आ ई

असाइनमेण्ट हिनका मेरिटसँ नै जातिगत टाइटिलसँ भेटल छन्हि, अही सभ किरदानीक एवजमे भेटल छन्हि। हिनका सन लोक लेल मैथिली बायोडेटाक एकटा पाँति अछि, समानान्तर धारा लेल जीवनमरणक प्रश्न।-

आब अहाँ पुछब जे तकर प्रतिकार समानान्तर धारा केना केलक, ओ तँ कन्नारोहट नै करैए, तँ तकर उत्तर अछि हमर ३ टा पोथी जे १११म सगर राति दीप जरय मे लोकार्पित भेल ३१ दिसम्बर २०२२ कैँ, वएह सगर राति दीप जरय जकरा साहित्य अकादेमी गत दस बर्खसँ गीड़ि लेबाक प्रयास कऽ रहल अछि। अहाँसँ ऐ तीनू पोथीपर टिप्पणी ई-पत्र सङ्केत editorial.staff.videha@gmail.com पर आमंत्रित अछि। पहिल दू पोथी मे राजदेव मण्डल आ सुभाष चन्द्र यादवक साहित्यक समीक्षा अछि जे हमर तेसर पोथी मैथिली समीक्षशास्त्रक सिद्धांतक आधारपर कएल गेल अछि। तकरा बाद जगदीश प्रसाद मण्डल जी पर पोथी लिखल गेल (११२ सगर राति दीप जरय मे लोकार्पण) सभटा पोथीक लिंक नीचाँ देल गेल अछि। 'नित नवल दिनेश कुमार मिश्र' आ 'नित नवल सुशील' जारी अछि।

Rajdeo Mandal- Maithili Writer (Now with Supplement I & II)

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (मिथिलाक्षर)

JAGDISH PRASAD MANDAL- Maithili Writer

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (जारी)

नित नवल सुशील (जारी)

मैथिली समीक्षाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (तिरहुता)

संगमे पढ़ू कमलानन्द झा क ब्राह्मणवादपर प्रहार:

दूषण पञ्जी- The Black Book

दूषण पञ्जी- The Black Book (मिथिलाक्षर)

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

४(२)

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र

दिनेश कुमार मिश्रक 'दुइ पाटन के बीच मे' कोसी नदीक ऐतिहासिक आत्मकथा थीक, ओ मिथिलाक आन धार सभक ऐतिहासिक आत्मकथा सेहो लिखने छथि जेना बन्दिनी महानन्दा, बागमती की सद्गति!, दुइ पाटन के बीच मेंकोसी नदी) .. (की कहानी, न घाट न घर, बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी, भुतही नदी और तकनीकी झाड़फूंक-, The Kamla River and People On Collision Course, Bhutahi Balan- Story of a ghost river and engineering witchcraft, Refugees of the Kosi Embankments। साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य पंकज झा पराशर द्वारा हिनकर पोथी सभसँ पैराक पैरा मैथिली अनुवाद कऽ अपना नामे उपन्यास छपबाओल गेल अछि, जकरा छद्म समीक्षक कमलानन्द झा ऐ चोर लेखकक रिसर्च कहै छथिएतऽ स्पष्ट कऽ दी जे ई चोर !

लेखक आ छद्म समीक्षक दुनू अलीगढ़ मुस्लिम विद्यालयक हिन्दी विभागमे छथि। ई रिसर्च दिनेश कुमार मिश्रक थीक, जे आइ खड़गपुरसँ .टी.आइ. १९६८मे आ स्ट्रक्चरल इन्जीनियरिङमे .टेक .सिविल इन्जीनियरिङ मे बी .एमटेक१९७०मे केने छथि ., आ ओइ रिसर्च लेल क्वालिफाइड छथि। जखन कोनो विषयमे नामांकन नै होइ छै तखन लोक हारिथाकि हिन्दीमे नामांकन - लइए, नै तँ कमलानन्द झा कैँ बुझऽ मे आबि जइतन्हि जे ई रिसर्च कोनो सिविल इन्जीनियरेक भऽ सकैत अछि, भऽ सकैए बुझलो होइन्ह। हिन्दी मूल आ मैथिलीक स्क्रीनशॉट आँगा संलग्न अछि।

दिनेश कुमार मिश्र मिथिलाक नै छथि मुदा मिथिलाक सभ धारक कथा ओ लिखने छथि, हम सभ हुनका प्रति कृतज्ञ छी आ हुनकर ऋणसँ मिथिलावासी कहियो उऋण नै भऽ सकता, मुदा मूलधाराक पुरस्कार आ पाइ लोलुप लोकसँ कृतघ्नते भेटत से फेर सिद्ध भेल। ऐ लेखककेँ दस बारह बर्ख पहिने सेहो तारानन्द वियोगी उद्धारक भेटल छलखिन्ह जे लिखने रहथिन्ह जे ओ कवितामे प्रभावित भऽ अनायासे अपन रचनामे दोसरक सामिग्री चोरि कऽ लइ छथि, एहने सन। आब ऐ कमलानन्द झा क आश्रय तकलन्हि मुदा दुर्भाग्यजइ हिसाबे ब्राह्मणवादकेँ ! आगाँ बढ़बैले कमलानन्द झा वामपंथक सोङर पकड़ै छथि आ सामाजिक न्यायक बलि चढ़बऽ चाहै छथि, तकर प्रति समानान्तर धारा सचेत अछि। सीलिंगसँ बचबा लेल जमीनजत्थाबला लोक कम्यूनिस्ट बनल-ा आ आब ब्राह्मणवाद बचेबालेल वामपंथक शरण, एहेन लोक सभसँ कम्यूनिज्मकेँ बहुत नुकसान भेल छै।

दिनेश कुमार मिश्रक सभटा पोथी आब हुनकर अनुमतिसँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे:

http://videha.co.in/pothi.htm

एतऽ एकटा गप मोन पाड़ि दी जे जखन बिल गेट्सकेँ पूछल गेलन्हि जे की ओ एक्स बॉक्स भारतमे पाइरेशीक डरसँ देरीसँ आनि रहल छथि? तँ हुनकर उत्तर रहन्हि जे माइक्रोसॉफ्ट पाइरेशीक डरे कोनो उत्पाद देरीसँ नै उतारने अछि। से विदेह पेटारमे हम सभ ऐ तरहक रिस्क रहितो एकरा आर समृद्ध करैत रहब, कारण समानान्तर धारामे सड़ल माँछ द्वारे पोखरिक सभ माँछ नै सड़ैए, एतुक्का मलाह गोटगोट कऽ सड़ल माँछ निकालैत रहल छथि-, निकालैत रहता।

सिण्डीकेटेड समीक्षापर अन्तिम प्रहार।

मूल दिनेश कुमार मिश्र :(२००६ ...दुइ पाटन के बीच में) यह ध्यान देने की बात है कि 1923 से 1946 के बीच कोसी क्षेत्र में मलेरिया से 5,10,000, कालाजार से 2,10,000, हैजे से 60,000 तथा चेचक से 3,000 मौतें (कुल 7,83,000) हुईं।
चोर पंकज झा पराशर)**साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य(** [जलप्रांतर २०१७ :[(१०३ .पृ)

ने अँग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

मूल दिनेश कुमार मिश्र दुइ)पाटन के बीच में:(२००६ ... भारतवर्ष में बिहार में कोसी नदी को बांधने का काम 12वीं शताब्दी में किसी राजा लक्ष्मण द्वितीय ने करवाया था और इस काम के लिए उसने प्रजा से 'बीर' की उपाधि पाई और नदी का तटबन्ध 'बीर बांध' कहलाया। इस तटबन्ध के अवशेष अभी भी सुपौल जिले में भीम नगर से कोई 5 किलोमीटर दक्षिण में दिखाई पड़ते हैं। डॉ. फ्रांसिस बुकानन (1810-11) का अनुमान था कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा के लिए बनी बाहरी दीवार रहा होगा क्योंकि यह बांध धौस नदी के पश्चिमी किनारे पर तिलयुगा से उसके संगम तक 32 किलोमीटर की दूरी में फैला हुआ था। डॉ.

डब्लू.डब्लू. हन्टर (1877) बुकानन के इस तर्क के साथ सहमत नहीं थे कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा दीवार था। स्थानीय लोगों के हवाले से हन्टर का मानना था कि अधिकांश लोग इसे किले की दीवार नहीं मानते और उनके हिसाब से यह कुछ और ही चीज थी मगर वह निश्चित रूप से कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। फिर भी जो आम धारणा बनती है वह यह है कि यह कोसी नदी के किनारे बना कोई तटबन्ध रहा होगा जिससे नदी की धारा को पश्चिम की ओर खिसकने से रोका जा सके। लोगों का यह भी कहना था कि ऐसा लगता था कि इस तटबन्ध का निर्माण कार्य एकाएक रोक दिया गया होगा।

छद्म समीक्षक कमलानन्द झा द्वारा चोर उपन्यासकारक पीठ ठोकब, देखू छद्म समीक्षक कमलानन्द झा द्वारा उद्धृत चोर पंकज झा पराशर मैथिली उपन्यास), समय, समाज आ सवाल पृ:(२५८-२५७ .

पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर'(2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दाँव-पेंच आदिक विस्तृत व्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ व्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पढ़ुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़बैत पढ़ुआ कका कहैत छथिन, ''पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे

चोर पंकज झा पराशर)**साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य(** [जलप्रांतर २०१७ :[(३१ .पृ)

पढ़ुआ कका पछिला गप केँ आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू, कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा केँ लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयनेँ छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवत: कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पढ़ुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन ? लोक केँ बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पढ़ुआ कका केँ आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

जलप्रांतर / 31

मूल दिनेश कुमार मिश्र :(२००६ ...दुइ पाटन के बीच में) कोसी के प्रवाह कि भयावहता की एक झलकफिरोजशाह तुगलक की फौज के सन् 1354 में बंगाल से दिल्ली लौटने के समय मिलती है। बताया जाता है कि जब सुल्तान की फौजें कोसी के किनारे पहुँचीं तो देखा कि नदी के दूसरे किनारे पर हाजी शम्सुद्दीन इलियास की फौजें मुकाबले के लिए तैयार खड़ी हैं। यह वही हाजी शम्सुद्दीन थे जिन्होंने हाजीपुर तथा समस्तीपुर शहर बसाये थे। फिरोज की फौजें शायद कुरसेला के आस पास किसी जगह पर कोसी के-किनारे सोच में पड़ गईं। नदी की रफ्तार उन्हें आगे बढ़ने से रोक रही थी। आखिरकार फैसला हुआ कि नदी के

साथसाथ उत्तर की ओर बढ़ा जाय और जहाँ नदी पार करने लायक हो जाय - वहाँ पानी की थाह ली जाये। सुल्तान की फौजें प्रायः सौ कोस ऊपर गईं और जियारन के पास, जो कि उसी स्थान पर अवस्थित था जहाँ नदी पहाड़ों से मैदानों में उतरती थी, नदी को पार किया। नदी की धारा तो यहाँ पतली जरूर थी पर प्रवाह इतना तेज था कि पाँचपाँच सौ मन के भारी पत्थर नदी में तिनकों की - तरह बह रहे थे। जहाँ नदी को पार करना मुमकिन लगा उसके दोनों ओर सुल्तान ने हाथियों की कतार खड़ी कर दी और नीचे वाली कतार में रस्से लटकाये गये जिससे कि यदि कोई आदमी बहता हुआ हो तो इस रस्सों की मदद से उसे बचाया जा सके। शम्सुद्दीन ने कभी सोचा भी न था कि सुल्तान की फौजें कोसी को पार कर लेंगी और जब उस को इस बात का पता लगा कि सुलतान की फौजों ने कोसी को पार करने में कामयाबी पा ली है तो वह भाग निकला।

चोर पंकज झा पराशर)**साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य(** [जलप्रांतर २०१७ :[(१०५ .पृ)

'बेश, तँ सुनू। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र-शस्त्र ल' कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौनैं रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवतः कुरसेला के आस-पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना कैँ नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ' रहल छलै। अंततः तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे-किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कनैं कम बूझि पड़य, ओतय पानिक थाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कनैं शिकस्त बुझेलै। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच-पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खढ़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति कैँ जतय नदी पार करब कनैं आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी कैँ ठाढ़ क' देल गेल। नीचाँ वला लाइन मे बड़का-बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जँ क्यो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहेँ फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचनैं छल,जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन कैँ पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।'

(... शीघ्र अही लिंकपर आर स्क्रीनशॉट अपडेट कएल जायत।(

विदेहक ३६३ म अंक दिनांक ०१ फरबरी २०२३ सँ प्रारम्भ... नित नवल दिनेश कुमार मिश्र

http://videha.co.in/ विदेह पत्रिका-प्रथम मैथिली पाक्षिक ई :ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) पर।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

४ (३)

नित नवल सुशील

कमलानन्द झाकेँ हम किए छद्म समीक्षक कहलियनि?

कारण ओ छद्म समीक्षक छथि।

ओ लिखै छथियात्राक लगभग सय वर्षक बाद मैथिल -मैथिली उपन्यास" -अन्तरजातीय विवाहक सपना, संघर्ष आ विडम्बना पर गरिमायुक्त उपन्यास लिखबाक श्रेय गौरीनाथकेँ जाइत छनि।"

तँ की कमलानन्द झा सुशीलसँ ई श्रेय छीनि लेलनि? की ई हुनकर ब्राह्मणवादी संस्कारक अहंकार -जे हम ककरो चढ़ा सकै छिऐ आ ककरो उतारि सकै छिऐ -केर पराकाष्ठा थीक, आकि हुनकर अध्ययनक अभावक प्रमाण?

चलू अहाँकेँ लऽ चली कमलानन्द झा केर स्वार्थी दुनियाँसँ दूर, छलछद्मसँ दूर -सुशीलक जादूबला साहित्यक निश्छल दुनियाँमे।

अहाँक स्वागत अछि सुशीलक साहित्यक दुनियाँमे।

प्रस्तुत अछि सुशीलक 'गामबाली' (१९८२जे आब उपलब्ध अछि विदेह (आर्काइवमे लिंक http://videha.co.in/pothi.htm पर।

पहिल पाँतीमे उपन्यास आरम्भसँ पहिनहिये 'गामबाली' उपन्यासक सम्बन्धमे सुशील लिखै छथि-

"विधवा विवाह आ अन्तर्जातीय विवाहक समर्थनमे।"

आ उपन्यास आरम्भ।

गामबालीक मृत्यु आ तखने झमेला, गामबालीक दाह संस्कार के करतै? ब्राह्मण समाज कि जादव समाज?

मैथिलीक सिण्डीकेटेड समीक्षापर अन्तिम प्रहार।

विदेहक ३६३ म अंक दिनांक ०१ फरबरी २०२३ सँ प्रारम्भ... **नित नवल सुशील**

http://videha.co.in/ विदेह पत्रिका-प्रथम मैथिली पाक्षिक ई :ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) पर।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

५

विदेहक "साहित्यिक भ्रष्टाचार विशेषांक"

विदेह "साहित्यिक भ्रष्टाचार विशेषांक" लेल निम्नलिखित विषयपर आलेख ई-मेल editorial.staff.videha@gmail.com पर आमंत्रित अछि।

१. साहित्य, कला आ सरकारी अकादमीः-
(क) पुरस्कारक राजनीति
(ख) सरकारी अकादेमीमे पैसबाक गएर-लोकतांत्रिक विधान
(ग) सत्तागुट आ अकादमी केर काज करबाक तरीका
(घ) सरकारी सत्ताक छद्म विरोधमे उपजल तात्कालिक समानांतर सत्ताक कार्यपद्धति
(ङ) अकादेमी पुरस्कारमे पाइ फैक्टरः मिथक बा यथार्थ
२. व्यक्तिगत साहित्य संस्थान आ पुरस्कारक राजनीति
३. प्रकाशन जगतमे पसरल भ्रष्टाचार आ लेखक
४. मैथिलीक छद्म लेखक संगठन आ ओकर पदाधिकारी सबहक आचरण
५. स्कूल-कॉलेजक मैथिली विभागमे पसरल साहित्यिक भ्रष्टाचारक विविध रूप-
(क) पाठ्यक्रम
(ख) अध्ययन-अध्यापन
(ग) नियुक्ति
६. साहित्यिक पत्रकारिता, रिव्यू, मंच-माला-माइक आ लोकार्पणक खेल-तमाशा
७. लेखक सबहक जन्म-मरण शताब्दी केर चुनाव , कैलेंडरवाद आ तकरा पाछूक राजनीति
८. दलित एवं लेखिका सबहक संगे भेद-भाव आ ओकर शोषणक विविध तरीका
९. कोनो आन विषय।

६

विदेह ब्रॉडकास्ट लिस्ट

विदेह WWW.VIDEHA.CO.IN सम्बन्धी सूचना लेल अपन whatsapp नम्बर हमर whatsapp no +919560960721 पर पठाउ, ओकर प्रयोग मात्र विदेह सम्बन्धी समाचार देबाक लेल कएल जाएत।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

....

मैथिली आ मिथिलासँ संबंधित किछु मुख्य साइट:- आन लिंकक विषयमे सूचना editorial.staff.videha@gmail.com केँ ई मेलसँ पठाबी।

http://www.videha.co.in/ ("विदेह" प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका)

http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html (इंटरनेटपर मैथिली भाषाक प्राचीनतम उपस्थिति/ मैथिलीक पहिल ब्लॉग- मैथिली भाषा ब्लॉगक एग्रीगेटर, ५ जुलाइ २००४)

http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html (इंटरनेटपर मैथिली भाषाक प्राचीनतम उपस्थिति/ मैथिलीक पहिल ब्लॉग- मैथिली भाषा ब्लॉगक एग्रीगेटर, ५ जुलाइ २००४)

भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html, http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html *(किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback*

machine of https://web.archive.org/web//videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)* केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्रचीनतम उपस्थितिक रूपमे विद्यमान अछि। ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ "विदेह" पड़लै।इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA पल्लवमिथिला (धीरेन्द्र प्रेमर्षि) २०५९ माघे संक्रान्ति- २००३ जनवरी मैथिलीक दोसर इंटरनेट पत्रिका अछि जे ऐ लिंक www.pallavmithila.mainpage.net पर छल मुदा आब ई उपलब्ध नै अछि। ई टिप्पणी मात्र इतिहास शुद्धता लेल अछि।

....

http://videha-aggregator.blogspot.com/ (मैथिली भाषा ब्लॉगक एग्रीगेटर)

http://www.videha.com/ (इंटरनेटपर मैथिली भाषाक सभसँ पुरान उपलब्ध उपस्थिति/ लोकप्रिय ब्लॉग- मैथिली भाषा ब्लॉगक एग्रीगेटर ५ जुलाइ २००४ www.gajendrathakur.blogspot.com)

http://esamaad.blogspot.com/ (पूनम मंडल आ प्रियंका झाक पहिल मैथिली न्यूज पोर्टल, ९ अगस्त २००४ सँ)

http://prakarantar.blogspot.com/ (प्रकारांतर मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग, फरबरी २००५)

http://vidyapati.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग, अगस्त २००५)

http://www.vidyapati.org/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग, अगस्त २००५)

http://hellomithila.blogspot.com/ (हेलो मिथिला- धीरेन्द्र प्रेमर्षि, सम्पादक-प्रकाशक, रूपा झा, सम्पादन सहयोग, पल्लव, मैथिली साहित्यिक, ३ मइ २००६)

http://pallav.blogsome.com/ (हेलो मिथिला- धीरेन्द्र प्रेमर्षि, सम्पादक-प्रकाशक, रूपा झा, सम्पादन सहयोग, पल्लव, मैथिली साहित्यिक, १७ मइ २००६)

http://hellomithilaa.blogspot.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल, सितम्बर २००७)

http://www.hellomithila.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल, सितम्बर २००७)

http://shampadak.wordpress.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल, जनवरी-फरबरी २००८)

http://www.esamaad.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल, जनवरी-फरबरी २००८)

http://hellomithilaa.wordpress.com/

http://premarshi.wordpress.com/ (धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

....

http://anchinharakharkolkata.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय गजलक ब्लॉग)

https://mithilastudentunion.com/ (Mithila Student Union)

....

https://vigyanprasar.gov.in/vigyan-ratnakar/ (विज्ञान रत्नाकर)

JNU

http://sanskrit.jnu.ac.in/maithili/index.jsp

http://sanskrit.jnu.ac.in/student_projects/lexicon.jsp?lexicon=maithili

....

ALL INDIA RADIO DOORDARSHAN आकाशवाणी दूरदर्शन

http://prasarbharati.gov.in/

http://newsonair.com/

https://doordarshan.gov.in/

आकाशवाणी मैथिली पोडकास्ट http://prasarbharati.gov.in/podcast.php?filterlang=Maithili&from=1947-08-15&fromwp=2020-08-29&to=2050-12-31&search=GO

आकाशवाणी पटना/ दरभंगा मैथिली रेजनल न्यूज टेक्स्ट डाउनलोड-1 http://newsonair.com/RNU-NSD-Audio-Archive-Search.aspx

आकाशवाणी पटना/ दरभंगा मैथिली रेजनल न्यूज टेक्स्ट डाउनलोड-2 http://newsonair.com/Regional-Text.aspx

आकाशवाणी दरभंगा http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=282

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल https://www.youtube.com/channel/UCGdNveEFmv4pPolWiTEMxVA

आकाशवाणी भागलपुर http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=359

आकाशवाणी पूर्णियाँ http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=256

आकाशवाणी पटना http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=122

ALL INDIA RADIO ENGLISH NEWS

ALL INDIA RADIO NEWS ARCHIVE

ALL INDIA RADIO TALKS AND CURRENT AFFAIRS

RAJYA SABHA TV NEWS DISCUSSIONS

SANSAD TV

VIDEHA e-LEARNING YOUTUBE CHANNEL

https://www.youtube.com/@videha-elearning

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

....

http://bramhanews.blogspot.com/ (मैथिली समाचार)

http://www.mithilakhabar.com/ (नेपालक मैथिली ई पत्रिका)

http://mithilanews.com/

http://www.maithilinews.blogspot.com/ (मिथिला आ मैथिलीक समाचारक साइट)

http://www.hamargam.in/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

http://mithiladotcom.blogspot.com/ (मैथिली राष्ट्रीय दैनिक)

https://mppdainik.com/ (मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश, मैथिली दैनिक)

http://mithilasamad.blogspot.com/ (मिथिला समाद, मैथिली दैनिक)

http://janakpurnews.blogspot.com/ (मिथिला आ मैथिलीक समाचारक साइट)

http://www.mithilalok.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

http://mithimedia.blogspot.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

http://www.mithimedia.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

https://mithiladharohar.blogspot.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

https://simanchal.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

https://maithilijindabaad.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

....

https://kirtinath.blogspot.com/ (कीर्तिनाथ झा ब्लॊग)

http://jct27novmaithili.blogspot.com/ (जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" क ब्लॉग)

http://brikhesh.blogspot.com/ (बृषेश चन्द्र लाल)

http://www.chetnasamiti.org/ (चेतना समिति, पटनाक वेबसाइट)

http://shiva-pustak-bhandar.blogspot.com/ (मैथिली पोथी कीनू)

https://mishrarn.blogspot.com/ (भोरसँ साँझ धरि)

https://rjanakpuri.blogspot.com/ (साहित्यपुरी)

http://bataahmaithil.in/

http://maithilpravahika.org/

http://ganeshbawra.blogspot.com/

http://maithilinews.com/

http://anandjhakavitakahani.blogspot.com/

http://chaaywala.blogspot.com/

http://maithilputr.blogspot.com/

http://maithilputramanu.blogspot.com/

http://mithilanchalpatrika.blogspot.com/

http://mithilakbat.blogspot.com/

http://maithilitimesonline.blogspot.com/

http://mithilavidehavajjitirhut.blogspot.com/

http://samadiya.blogspot.com/

http://jitumaithili.blogspot.com/

http://pratipadamaithili.blogspot.com/

http://bhatsimar.blogspot.com/

http://maithilirangmanch.blogspot.com/

http://www.mithilavaani.blogspot.com/

http://www.maithilisongsjagat.co.in/

http://mithilablog.com/

http://www.lahakchahak.com/

http://www.jaimithila.com/

http://www.dahejmuktmithila.org/

http://mithilavaani.blogspot.com/

http://www.chamundanagarpachahi.com/

http://kisunsankalplok.wordpress.com/

http://www.kisunsankalplok.co.nr/

http://maithilisongshub.blogspot.com/

http://www.rajnipallavi.com/

https://maithilinewsnetwork.com/

https://mithilamirror.com/

https://www.emithila.in/

http://csts.org.in/ (CSTS)

http://www.samaysaal.com/ (समय साल)

https://www.maithili.org.in/ (रोशन चौधरी)

https://doorvaksata.org/ (मिशन दूर्वाक्षत)

http://mithilaksharshikshaabhiyan.in.net/ (मिथिलाक्षर शिक्षा अभियान)

http://mithilakshar.in/ (मिथिलाक्षर शिक्षा अभियान)

https://missionmithilakshar.blogspot.com/ (सिद्धिरस्तु- मिशन मिथिलाक्षर लिपि)

https://mithilani.in/ (मिथिलानी)

https://www.maithilmanch.in/ (मैथिल मंच)

http://madhubani.co.in/

http://www.premkumarmallik.com

http://apandalan.wordpress.com/

http://www.mithilaworld.tk/

http://www.mithilachowk.com/

http://maithilisongsgeet.blogspot.com/

http://rayprabhatbhatt.blogspot.com/

http://amitmohanjha83.blogspot.com/

https://maithiliswasthyaparicharcha.blogspot.com/ (मैथिली स्वास्थ्य परिचर्चा- रमाकर चौधरीक ब्लॉग)

http://maithili-darpan.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://mithilatol.blogspot.com (मिथिलाटोल मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://maithilicinema.blogspot.com/ (मैथिली फिल्म्स)

http://maithilifilms.blogspot.com/ (मैथिली फिल्म्स)

http://maithili-drama.blogspot.com/ (विदेह मैथिली नाट्य उत्सव- बेचन ठाकुरक ब्लॉग)

http://mjnk.co.cc/ (ई जनकपुर न्यूज़, तराई मॉडल, मिथिला इन्फोर्मेशन)

http://www.TeraiNepal.co.cc/ (तराई नेपाल मिथिला जनकपुर मधेश हालचाल Anytime Anywhere see)

http://maithilaurmithila.blogspot.com/ (मैथिलक आ मिथिलाक लोकप्रिय ब्लॉग)

https://www.mithiladainik.in/ (मिथिला दैनिक)

http://www.mithilaamanch.blogspot.com (मिथिला मंच)

http://maithilisong.blogspot.com/ (मिथिला आ मैथिलीक समाचारक ब्लॉग)

http://maithilifoundation.blogspot.com/ (मैथिली फाउन्डेशन)

http://maithilibhasha.blogspot.com/ (काश्यप कमलक ब्लॉग)

http://rkjteoth.blogspot.com/ (रूपेश कुमार झा "त्योंथ"क ब्लॉग)

http://paraati.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://singarhaar.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://vaachik.wordpress.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://mithilainfo.blogspot.com (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://mithlasamachaar.blogspot.com (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://pilakhwar.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://desilbayna.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://maithilynjha.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://gaam-ghar.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://mithila-mihir.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://www.maithililekhaksangh.blogspot.com/ (मैथिली लेखक संघक जालस्थल)

http://www.maithili.co.uk/ (मिथिला कल्चरल ऑर्गेनाइजेशन, यू.के.)

http://minapjanakpur.org/ (मिनाप, जनकपुर)

http://www.airdarbhanga.org/ (आकाशवाणी दरभंगाक साइट)

http://mithilangan.org/ (मिथिलांगनक साइट)

http://www.desilbayana.com/ (देसिल बयना, हैदराबाद)

http://www.vmym.in/ (विद्यपति मैथिल युवा मंच)

http://www.jaimithila.com/ (मिथिलाक सभ्यता, संस्कृति, विभूति, गीत-संगीत आ बहुत रास जानकारीक लेल)

http://sobhagyamithilatv.com/ (सौभाग्य मिथिला- पहिल मैथिली चैनल)

http://kashyap-mithila.blogspot.com/

https://kashyapartschool.wordpress.com/ (कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबालाक साइट)

http://mithilapaintingtraining.blogspot.com/

http://dularuababumaithilifilm.blogspot.com/

http://senuraklaajmaithilifilm.blogspot.com/

http://maithlivideosongs.blogspot.com/

http://kalikantjhabuch.org/ (काली कांत झा "बूच")

http://saketanands.blogspot.com/ (साकेतानन्दजीक जालवृत्त)

http://gunjang.blogspot.com/ (गुंजनजीक जालवृत्त)

http://darihare.blogspot.com/ (श्याम दरिहरेक जालवृत्त)

http://deoshankarnavin.blogspot.com/ (देवशंकर नवीनक जालवृत्त)

http://www.udayanarayana.com/ (नचिकेताक साइट)

http://www.indianembassy.org.np/ (भारतीय दूतावास नेपाल)

http://www.purvottarmaithilsamaj.com/ (पूर्वोत्तर मैथिल समाज)

http://www.purvottarmaithil.blogspot.com/ (मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समितिक त्रैमासिक पत्रिका)

http://apanmithladhaam.blogspot.com/

http://maithilikavita.blogspot.com/

http://pankajjha23.blogspot.com/

http://maithili-haiku.blogspot.com/

http://manak-maithili.blogspot.com/

http://mithilauday.org/

http://dsal.uchicago.edu/lsi/ (Linguistic Survey of India, Gramophone recordings)

http://dsal.uchicago.edu/lsi/taxonomy/term/1718 (Linguistic Survey of India, Gramophone recordings, Maithili)

http://music2.cooltoad.com/music/category.php?id=10576

http://maithiliacademy.org/

https://maithiliacademybihar.org/ (मैथिली अकादमी, पटना)

मैथिली भोजपुरी अकादमी, दिल्ली

http://artandculture.delhigovt.nic.in/wps/wcm/connect/doit_art/Art+Culture+and+Language/Home/Maithili-Bhojpuri+Academy/

http://maithili.sourceforge.net/

http://ansiss.org/

http://fedoraproject.org/

https://fedorahosted.org/fuel/wiki/fuel-maithili

http://l10n.gnome.org/teams/mai

http://translate.fedoraproject.org/languages/mai

http://www.biharlokmanch.org/ (मिथिला-मैथिली पोथी ऑनलाइन कीनू)

http://www.biharlokmanch.org/mithila_products_online.php (Buy Mithila-Maithili books online)

http://mithila-haat.com/ (Buy Mithila-Maithili books/ other materials online)

http://www.antikaprakashan.com/ (अंतिका प्रकाशनक साइट- मैथिली प्रकाशक)

https://shashiprakashan.blogspot.com/ (शशि प्रकाशन- - मैथिली प्रकाशक)

https://pallavipublication.blogspot.com/ (पल्लवी प्रकाशन- - मैथिली प्रकाशक)

http://www.navarambh.com/ (नवारम्भ- - मैथिली प्रकाशक)

http://www.gorkhapatra.org.np/

http://www.sajha.org.np/

http://www.kantipuronline.com/

http://mithilahyd.org/

http://www.jyoticonsultant.com/ (मैथिलक नौकरी डॉट कॉम)

http://www.mithilamanthan.com/

http://www.brandbihar.com/

http://www.biharbrains.org/

http://maithilijokes.blogspot.com/

http://www.rdo91fm.blogspot.com/

http://www.kfm961.com/ (हेल्लो मिथिला कार्यक्रम प्रत्येक शनिकेँ नेपाली समयानुसार राति ९.३० बजेसँ ११ बजेधरि आ राजनीतिक विषयवस्तुपर केन्द्रित चौबटिया कार्यक्रम प्रत्येक सोमकेँ राति १० सँ ११ बजेधरि प्रसारण)

http://www.radiokantipur.com/ (हेल्लो मिथिला कार्यक्रम प्रत्येक शनिकेँ नेपाली समयानुसार राति ९.३० बजेसँ ११ बजेधरि आ राजनीतिक विषयवस्तुपर केन्द्रित चौबटिया कार्यक्रम प्रत्येक सोमकेँ राति १० सँ ११ बजेधरि प्रसारण)

http://www.jumptv.com/en/channel/nepal1/ (नेपाल1 टी.वी.-जम्प टी.वी. मैथिली कार्यक्रम सूचना)

http://janakifm.org.np/ (जानकी एफ.एम., मैथिली समाचार रेडियो)

http://www.mithilaradio.com/ (मैथिली रेडियो)

http://www.youtube.com/user/Janakifm (जानकी एफ.एम., मैथिली समाचार रेडियो Youtube channel)

http://www.radiomithila.org/ (मैथिली रेडियो)

http://www.appanmithila.org/ (रेडियो अप्पन मिथिला ९४.४ MHZ)

http://www.janakpurtoday.com.np/

http://madanpuraskar.org/

http://www.madheshuk.org/ (एसोशिएशन ऑफ नेपाली मधेसीज इन यू.के.)

http://www.mithilaart.com/ (श्रीमति प्रभा झाक साइट)

http://www.mithilavihar.com/

http://www.sugatisopan.com/

http://www.maithilsamaj.org.in/

http://www.maithilsamaj.com/

http://www.janakpurcity.com/

http://www.janakpur.com.np/

http://home.att.net/~maithils/

http://shyamprakashjha.com/

http://ramanathjha.com/

http://www.ramajha.com/

http://sudhakar.co.in/maithili

http://www.maithils.net/

http://www.getpredictiononline.com/

http://www.bihartimes.com/

http://www.bihar.ws/

http://www.patnadaily.com/

http://www.krraman.blogspot.com/

http://www.adi-maithili-kavita.blogspot.com/

http://www.mithilasevasamiti.blogspot.com/

http://www.jankitoday.blogspot.com/

http://opjha.blogspot.com/

http://chitthajagat.in/ (देवनागरी लिपिक ब्लॉगक एग्रीगेटर)

http://mailorang.blogspot.com/ (मैलोरंग नाट्य संस्थाक ब्लॉग)

http://mailorang.in/ (मैलोरंग)

http://mailorang.com/ (मैलोरंग)

http://vandanasgeet.blogspot.com/

http://www.darbhangaraj.blogspot.com/

http://mithila_samachar.tripod.com/mithilasamachar/ (मिथिला आ मैथिलीक समाचारक साइट)

http://www.ciilcorpora.net/maisam.htm

http://www.ildc.in/Maithili/MIindex.aspx (मैथिली अओजार आ फॉन्ट)

http://www.mithilaarts.com/

http://www.mithilapainting.org/

http://www.maithili.net/ (मिथिला-मैथिल-मैथिलीक लोकप्रिय साइट)

http://www.mithilaonline.com/ (मिथिला-मैथिल-मैथिलीक लोकप्रिय साइट)

http://www.onlinemithila.in/ (मिथिला-मैथिल-मैथिलीक लोकप्रिय साइट)

http://www.nnl.gov.np/

http://www.nepalacademy.org.np/

http://www.karnagoshthi.org/

http://surmasti.com/

http://www.maithiliworld.com/

http://www.mithila-museum.com/aboutMM/Eindex.html

http://www.tribhuvan-university.edu.np/

http://www.swastifoundation.com/ (स्वस्ति फाउन्डेशनक साइट)

http://foundationsaarcwriters.com/

http://www.opmcm.gov.np/

http://www.moe.gov.np/ (नेपाल सरकारक साइट)

http://lnmu.bih.nic.in/

http://gov.bih.nic.in/ (बिहार सरकारक साइट)

http://www.india.gov.in/

http://rajbhasha.nic.in/

http://www.hindinideshalaya.nic.in/

http://themithila.tripod.com/

http://www.mithilaconnect.com/

http://www.esabha.net/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.maithilvivah.com/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.kanyadan.net/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.maithilbrahminvivahbandhan.org/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.mithilashaadi.com/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.kalyanifoundation.org/

http://www.madhubani.com/

http://www.janakpur.org/

http://www.darbhanga-friends.com/

http://www.hindisansthan.org/

http://www.biharassociation.net/

http://www.nationallibrary.gov.in/ (नेशनल लाइब्रेरी कोलकाता)

http://dpl.gov.in/ (दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी)

http://www.connemarapubliclibrarychennai.com/ (कोनेमारा पब्लिक लाइब्रेरी)

http://rrrlf.nic.in/ (राजा राम मोहन राय लाइब्रेरी फाउंडेशन)

http://www.sahitya-akademi.gov.in/(साहित्य अकादमीक साइट)

http://www.nbtindia.org.in/ (नेशनल बुक ट्रस्टक साइट)

http://www.csuchico.edu/anth/mithila/

http://web.mac.com/nadjagrimm/iWeb/JWDC/Mithila%20Art%20.html

http://www.southasianist.info/india/mithila/index.html

http://www.mithilalive.com/

http://www.ethnologue.com/show_language.asp?code=mai

http://linguistlist.org/forms/langs/LLDescription.cfm?code=mai

http://www.languageshome.com/English-Maithili.htm

http://www.rosettaproject.org/archive/mai

http://www.nepalgov.gov.np/

http://maithili-mp3-songs.folkmusicindia.com/

http://www.ciil.org/ (भारतीय भाषा संस्थानक साइट)

http://www.ciillibrary.org/

http://www.lisindia.net/Maithili/Maithili.html

http://www.ntm.org.in/languages/maithili/default_maithili.asp (राष्ट्रीय अनुवाद मिशन)

http://www.samsung.com/in/news/localnews/2012/tagore-literature-awards-bring-together-india-best-literary-talent (TAGORE LITERATURE AWARD)

http://www.samsung.com/in/news/localnews/2011/samsung-felicitates-the-winners-of-tagore-literature-awards-2010 (TAGORE LITERATURE AWARD)

http://www.samsung.com/in/Tagore-Awards/index.html (TAGORE LITERATURE AWARD)

http://jnanpith.net/ (भारतीय ज्ञानपीठक साइट)

http://bparishad.in/ (भारतीय भाषा परिषद, कोलकाताक साइट)

http://www.bharatiyabhashaparishad.com/ (भारतीय भाषा परिषद, कोलकाताक वागर्थ)

http://www.themanbookerprize.com/ (मैन-बुकर पुरस्कारक साइट)

http://www.commonwealthfoundation.com/ (कॉमनवेल्थ फाउन्डेशनक साइट)

http://www.crossword.in/ (वोडाफोन-क्रॉसवर्डक साइट)

http://www.pulitzer.org/ (पुलित्जर पुरस्कारक साइट)

http://nobelprize.org/ (नोबेल पुरस्कारक साइट)

http://www.goakonkaniakademi.org/akademi/aims.htm (गोवा कोंकणी अकादमीक साइट)

http://www.museindia.com/

http://www.asiawrites.org

http://indianorway.wordpress.com/

http://samanvayindianlanguagesfestival.org/

http://jaipurliteraturefestival.org/

http://dscprize.com/

http://www.hindu.com/lr/2011/04/03/stories/2011040350010100.htm

http://southasianlitfest.com/

http://www.varnamala.org/

http://india.poetryinternationalweb.org/

http://www.fortunecity.com/victorian/charcoal/49/

http://www.tarainews.com.np/

VIDEHA IST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

http://videha-archive.blogspot.com/

विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मैथिली पोथीक आर्काइव

http://videha-pothi.blogspot.com/

विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका ऑडियो आर्काइव

http://videha-audio.blogspot.com/

विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका वीडियो आर्काइव

http://videha-video.blogspot.com/

विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

http://videha-paintings-photos.blogspot.com/

विदेह ई पत्रिकाक सभटा पुरान अंक-Videha e journal's all old issues

http://sites.google.com/a/videha.com/videha/

विदेह ईअंक पत्रिकाक पहिल ५०-

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-i/
विदेह ईम अंक पत्रिकाक ५०म सँ १४९-

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-ii/
विदेह ईपत्रिकाक १५०म आ आगाँक अंक-

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-iii/

मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi

मैथिली ऑडियो संकलन Maithili Audio Downloads

http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio

मैथिली वीडियोक संकलन Maithili Videos

http://sites.google.com/a/videha.com/videha-video

मिथिला चित्रकला आधुनिक चित्रकला आ चित्र /Mithila Painting/ Modern Art and Photos

http://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/

सगर राति दीप जरय

http://sagarraatideepjaray.blogspot.com/
http://sagarraatideepjaray.wordpress.com/

विदेह मैथिली क्विज :
http://videhaquiz.blogspot.com/

विदेह मैथिली जालवृत्त एग्रीगेटर :

http://videha-aggregator.blogspot.com/
विदेह मैथिली साहित्य अंग्रेजीमे अनूदित

http://madhubani-art.blogspot.com/
विदेहक पूर्व-रूप "भालसरिक गाछ" :

http://gajendrathakur.blogspot.com/
विदेह इंडेक्स :

http://videha123.blogspot.com/
विदेह फाइल :

http://videha123.wordpress.com/

Maithili Sign Language- पहिल मैथिली संकेत लिपि ब्लॉग

https://maithili-sign-language.blogspot.com/

विदेह ब्राह्मी- ब्राह्मी लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग

https://maithili-brahmi.blogspot.com/

विदेह खरोष्ठी- खरोष्ठी लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग

https://maithili-kharoshthi.blogspot.com/

विदेह कैथी लिपिमे- मैथिलीक कैथी लिपिमे पहिल ब्लॉग

https://maithili-kaithi.blogspot.com/

विदेह नेवाड़ी लिपिमे- मैथिलीक नेवाड़ी लिपिमे पहिल ब्लॉग

https://maithili-newari.blogspot.com/

विदेह आइ.पी.ए. लिपिमे- मैथिलीक आइ.पी.ए.मे पहिल ब्लॉग

https://maithili-ipa.blogspot.com/

विदेह- उर्दू नस्तालिक लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग

https://maithili-urdu.blogspot.com/

विदेह- तिब्बती लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग

https://maithili-tibetan.blogspot.com/

विदेह: सदेह : पहिल तिरहुता (मिथिलाक्षर) जालवृत्त (ब्लॉग)

http://videha-sadeha.blogspot.com/

विदेह:ब्रेल: मैथिली ब्रेलमे: पहिल बेर विदेह द्वारा

http://videha-braille.blogspot.com/

विदेह गूगल-ग्रुप

https://groups.google.com/g/videha

विदेह फेसबुक ग्रुप

https://www.facebook.com/groups/7436498043

https://www.facebook.com/groups/10299304978

https://www.facebook.com/groups/videha

गजेन्द्र ठाकुर इडेक्स

http://gajendrathakur123.blogspot.com

नेना भुटका

http://mangan-khabas.blogspot.com/

Videha Radio विदेह रेडियो कविता आदिक पहिल-मैथिली कथा:पोडकास्ट साइट

http://videha123radio.wordpress.com/

http://videha.listen2myradio.com/

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव

http://maithili-drama.blogspot.com/

समदिया

http://esamaad.blogspot.com/

मैथिली फिल्म्स

http://maithilifilms.blogspot.com/

मैथिली हाइकू

http://maithili-haiku.blogspot.com/

मानक मैथिली
http://manak-maithili.blogspot.com/

विहनि कथा

http://bihanikatha.blogspot.com/

मैथिली कविता

http://maithili-kavita.blogspot.com/

मैथिली कथा
http://maithili-katha.blogspot.com/

मैथिली समालोचना
http://maithili-samalochna.blogspot.com/
Maithili Literature in English

http://madhubani-art.blogspot.com/

तिरहुता- कैथी फॉण्ट/ मैथिल ब्राह्मणक पञ्जी आधारित इतिहास

https://deepblue.lib.umich.edu/bitstream/handle/2027.42/110341/pandey_1.pdf?sequence=1 (उत्तर-बिहारक मैथिल ब्राह्मणमे जाति)

https://www.unicode.org/L2/L2009/09329-maithili.pdf (यूनीकोड तिरहुता फॉण्ट लेल आवेदन ३० सितम्बर २००९- विदेहक सहयोग)

https://www.unicode.org/L2/L2011/11175r-tirhuta.pdf (यूनीकोड तिरहुता फॉण्ट लेल आवेदन ५ मई २०११- विदेहक सहयोग)

http://www.tirhutalipi.4t.com/ (देवनागरी-तिरहुता फॉण्ट- वेस्टर्न आधारित)

http://www.anujha.co.cc/ (देवनागरी यूनीकोड आधारित तिरहुता फॉन्ट-मिथिला)

"विकीपीडिया"मे मैथिली

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator

http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai

http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai

http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai

अंतिम पाँचू साइट विकी मैथिली प्रोजेक्टक अछि। एहि लिंक सभ पर जा कय प्रोजेक्टकेँ आगाँ बढ़ाऊ।

विकीपीडिया/ गूगल ट्रन्सलेट/ मिथिलाक्षर (तिरहुता) आ आन फॉण्ट/ कीबोर्ड प्रोजेक्ट प्रारम्भ:
विकीपीडिया ०१ फरबरी २००८ लिंक
https://books.google.co.in/books?id=VC-BD5Ad6z4C&lpg=PA1&pg=PA1#v=onepage&q&f=false (मैथिली देवनागरी)
https://books.google.co.in/books?id=cTezCU59bJwC&lpg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false (मैथिली तिरहुता)
https://books.google.co.in/books?id=3zKudz6wAO8C&lpg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false (मैथिली ब्रेल)
गूगल ट्रन्सलेट २३ जून २०११क लिंक
https://www.facebook.com/groups/videha/permalink/138489416229195/
गूगल ट्रांसलेशन टूलमे
"बिहारी" भाषाक बदलामे मैथिली लेल अलग ट्रांसलेशन टूल बनेबाक आवेदन विदेहक सदस्यगण द्वारा देल गेल अछि। अपन योगदान गूगल ट्रांसलेट लेल करू,
आ कएल सम्पादन बदलबा काल कारण मे (अंग्रेजीमे) "बिहारी" नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक चर्चा करू। ऐ लिंकपर अनुवाद करु; गूगल एकाउंटसँ लॉग इन केलाक बाद ।
http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject
http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity?project=gws&langcode=bh (link closed)

मिथिलाक्षर (तिरहुता) फॉण्ट लेल आवेदन ३० सितम्बर २००९ आ फेर संशोधित आवेदन ५ मई २०११ कैं श्री अंशुमन पाण्डेय द्वारा देल गेल आ दुनू बेर ऐमे विदेहक सहयोगक वर्णन भेल। ११ जूनकैं श्री अंशुमन पाण्डेय एकर स्वीकृतिक सूचना विदेहक फेसबुक ग्रुपपर देलनि। आब ई फॉण्ट बनि कऽ तैयार अछि आ नीचाँक लिंकपर डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि।

तिरहुता, नेवाड़ी आ कैथी फॉण्ट डाउनलोड Google's Noto Fonts project/ GitHub

तिरहुता नोटो फॉण्ट	कैथी ओटीएफ	कैथी टीटीएफ	नेवाड़ी ओ.टी.एफ.	नेवाड़ी टी.टी.एफ.

https://fonts.google.com/ (Google Open Fonts download)

Tirhuta Offline Keyboard download

Keyman Tirhuta/ Vedic Devanagari Keyboards Download

https://malarproject.gitlab.io/tirhuta (Tirhuta Keyboard Online)

https://keymanweb.com/?_ga=2.7155890.1818820209.1675749426-2042013574.1675749426#mai-tirh,Keyboard_tirhuta

https://keymanweb.com/?_ga=2.241635586.1818820209.1675749426-2042013574.1675749426#mai-tirh,Keyboard_malar_tirhuta

https://aksharamukha.appspot.com/converter (Script/ Website Convertor)

https://aksharamukha.appspot.com/keyboards [Input (IME]

https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts (fonts- opensource)

https://www.cdac.in/ (Tirhuta/ Unicode Typing Tool)

यूनीकोड तिरहुता फॉण्ट, "विकीपीडिया"मे मैथिली आ आब मैथिली "गूगल ट्रान्सलेट"/ बिंग-माइक्रोसॉफ्ट ट्रान्सलेटरमे सेहो। अगिला लक्ष्य "अमेजन अलेक्सा"

गूगल बार्ड/ गूगल ट्रान्सलेट (मैथिली)

https://bard.google.com/ (गूगल बार्ड)
गूगल ट्रान्सलेटक लिंक
https://translate.google.com/?sl=en&tl=mai&op=translate
गूगल ट्रान्सलेटकैं आर पुष्ट करबाक खगता छै तइ लेल अगिला काज अढ़ा रहल छी:
https://translate.google.com/about/contribute/
Crowdsource Maithili Community
Please fill the form
Next Step
Download the Crowdsource app from android play store and start contributing
or go to web on the following link for contributing:
https://crowdsource.google.com/about/
Crowdsource by Google is a gamified platform that empowers users to directly train Google's artificial intelligence systems and make Google products work equally well for everyone, everywhere.

चैट जी.पी.टी- जी.पी.टी.-४/ माइक्रोसॉफ्ट बिंग ट्रान्सलेट (मैथिली)

https://openai.com/

https://openai.com/gpt-4

https://openai.com/chatgpt

https://www.bing.com/translator
https://translator.microsoft.com/
CONTRIBUTE VOICE CLIPS TO MICROSOFT TRANSLATOR
GO TO https://translator.microsoft.com/
Download Microsoft Translator APP- (Android/ IOS)
Click three horizontal lines in the left top corner.

Click "on" to Contribute Voice Clips to contribute clips to teach Microsoft's speech technology more about Maithili. Your contribution start confirmation date/ time appears, which could be sent to your email too.

अमेजन अलेक्सा मैथिली (शीघ्र....)

किछु मैथिली विकिपिडिया पेजक लिंक:

विदेह (पत्रिका) https://mai.wikipedia.org/s/kgv
इन्टरनेटक संसारमे मैथिली भाषा https://mai.wikipedia.org/s/s6h

भालसरिक गाछ https://mai.wikipedia.org/s/ipm

विदेह https://mai.wikipedia.org/s/ie1

विदेहक फेसबुक भर्सन https://mai.wikipedia.org/s/iu1

विदेह सम्मान https://mai.wikipedia.org/s/jc2

विदेह आर्काइभ https://mai.wikipedia.org/s/jc0

विदेह मिथिला रत्न https://mai.wikipedia.org/s/jc3

विदेह मिथिलाक खोज https://mai.wikipedia.org/s/jc4

विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण https://mai.wikipedia.org/s/jc5

श्रुति प्रकाशन https://mai.wikipedia.org/s/iu7

अनचिन्हार आखर https://mai.wikipedia.org/s/ion

मैथिली गजल https://mai.wikipedia.org/s/idz

मैथिली बाल गजल https://mai.wikipedia.org/s/iex

मैथिली भक्ति गजल https://mai.wikipedia.org/s/if1

....

किछु मैथिल पोथी, ऑडियो-वीडियो, कलाकृति/ यू ट्यूब चैनल डाउनलोड साइट (ओपन सोर्स)
NCERT BHASHA SANGAM
NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)
मैथिली-हिन्दी वार्तालाप (३ घण्टा)
मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर)
https://www.youtube.com/@videha_ejournal
https://youtu.be/TebuC-lrSs8
https://ncert.nic.in/bs-2021.php
SAHITYA AKADEMI

http://sahitya-akademi.gov.in/publications/e-books.jsp

http://sahitya-akademi.gov.in/general/Digitalbooks.jsp

CIIL

http://corpora.ciil.org/maisam.htm

अखियासल (रमानन्द झा रमण)

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI1.pdf

जुआयल कनकनी- महेन्द्र

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI2.pdf

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (बी.पी.एस.सी. सिलेबस)

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI3.pdf

सृजन केर दीप पर्व- सं केदार कानन आ अरविन्द ठाकुर

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI4.pdf

मैथिली गद्य संग्रह- सं शैलेन्द्र मोहन झा

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI5.pdf

ARCHIVE.ORG (विजयदेव झा)

https://archive.org/details/vijay_deo_jha

Videha Maithili eBooks/ eJournals/ Audio-Video Archive

http://videha.co.in/archive.htm

IGNCA

http://ignca.nic.in/coilnet/mithila.htm

http://ignca.nic.in/coilnet/kalyani.htm (MAITHILI ENGLISH DICTIONARY)

मिथिला दर्शन

https://mithiladarshan.com/ (online pdf of Maithili journal)

तीरभुक्ति

https://archive.org/details/@teerbhukti_journal

OLE NEPAL's E-PUSTAKALAYA (https://pustakalaya.org/en/)

पोथीक लिंक

आइ.जी.एन.सी.ए.- ए.एस.आइ. https://ignca.gov.in/divisionss/asi-books/

https://ignca.gov.in/Asi_data/16612.pdf (History of Navya-Nyaya in Mithila)
https://ignca.gov.in/Asi_data/42365.pdf (Studies in Jainism and Buddism in Mithila)
https://ignca.gov.in/Asi_data/63227.pdf (Mithila in the Age of Vidyapati)
https://ignca.gov.in/Asi_data/64994.pdf (Cultural Heritage of Mithila)
https://ignca.gov.in/Asi_data/72754.pdf (Mithila under the Karnatas)

ए.एस.आइ.अंग्रेजी https://tspasibhopal.nic.in/assets/pdf/publication/temples_of_mithila_english.pdf

ए.एस.आइ.हिन्दी https://tspasibhopal.nic.in/assets/pdf/publication/temple_of_mithila_hindi.pdf

मैथिली साहित्य संस्थान https://www.maithilisahityasansthan.org/resources

दर्शनीय मिथिला (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 1 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 2 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 3 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 4 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक(

Brochure 5 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक(

https://bloomlibrary.org/language:mai (ब्लूम लाइब्रेरी मैथिली)

अरिपन फाउण्डेशन (http://www.aripanafoundation.org/)

PRATHAM BOOKS MAITHILI STORYWEAVER

https://www.youtube.com/playlist?list=PLAT74nNc2fmYaW29mRVAIgzRq63_9zWbI (मैथिली ऑडियो बुक्स(

https://www.youtube.com/channel/UCE1HEUJEzc-NUbMsHzklHLw (विदेह मैथिलीअलाउड ऑडियो बुक आ संगमे मैथिली संकेत -अंग्रेजी टॉकिंग रीड-(दुनू मैथिलीमे पहिल बेर -भाषा

https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF (मसाई केर परिवर्तनकारी रेबेका(
https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (चलू हम तँ ठीक छी ने(!
https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo (एकटा नीक दिन(

https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घर सभ(
https://bloomlibrary.org/player/dAzC0Fubt7 (की अहाँ ऐ चिड़ै सभकेँ देखने छी?)

पोथी डॉट कॉम

https://store.pothi.com/browse/free-ebooks/?language=Maithili

I LOVE MITHILA

https://www.ilovemithila.com/maithili-books-pdf-free-download/ (पोथी डाउनलोड लिंक)

https://www.ilovemithila.com/ *(online maithili journal)*

https://maithili.com.np/ *(owner I Love Mithila)*

मैथिली फिल्म

https://youtu.be/4jhaQ3Nw38I (ममता गाबय गीत, सौजन्य- Saregama(

https://youtu.be/V3KWthhB6Kg (कन्यादान, सौजन्य- BEJOD)

https://www.bejod.in/ (Maithili Movies on Rent)

https://mubi.com/films/gamak-ghar (Maithili Movies on Rent)

https://mubi.com/films/dhuin (Maithili Movies on Rent)

प्यारे मैथिल

https://www.youtube.com/channel/UCq30Llck2tNw8BI4t8jjzQg (*प्यारे मैथिल चैनल- किरण चौधरी आ संगीता आनन्द)*

https://www.youtube.com/@mithiranglоktarang677 (मिथिरंग लोक तरंग)

https://www.youtube.com/MithilaChapter (मिथिला चैप्टर)

https://www.youtube.com/soumyajha (खिस्सा-पिहानी नेना भुटका लेल)

https://www.youtube.com/@maithilirangmanch9536 (मैथिली रंगमंच)

https://www.youtube.com/@kokilmanch4330 (कोकिल मंच)

https://www.youtube.com/@mithilanatyakalaparishadmi5636 (MINAP)

https://www.youtube.com/@mlrmedia3097 (मैलोरंग)

http://www.youtube.com/user/mailorang (मैलोरंग)

https://www.youtube.com/@praakshjha (मैलोरंग)

https://www.youtube.com/@mithilangan109 (मिथिलांगन)

https://www.youtube.com/@bhangimamaithilitheatre9509 (भंगिमा)

https://www.youtube.com/@MithilaDarshan (मिथिला दर्शन)

https://www.youtube.com/@MithilaMirror (मिथिला मिरर)

https://www.youtube.com/@SmritiEntertainmentMaithili (स्मृति एंटरटेनमेंट)

https://www.youtube.com/@achalchitra (अचल चित्र)

https://www.youtube.com/@Bejod (BEJOD)

https://www.youtube.com/@neelammaithili (नीलम मैथिली)

https://www.youtube.com/@maithiliganga4714 (मैथिली गंगा)

https://www.youtube.com/@MithilaJunction (मिथिला जंक्शन)

https://www.youtube.com/playlist?list=PLgmlEgU89nhRIGV-rG2SXY3uuhnXGT-j5 (दीपशिखा झा)

https://www.youtube.com/playlist?list=PLT8LMrml4tPHxM64K8Iov_Arr_3uPaPgf [मैथिली समाचार (जनता टेलीविजन)]

https://www.youtube.com/@maithilitalks (Maithili Talks)

https://www.youtube.com/@AppanTV (Appan TV)

https://www.youtube.com/@TVTODAYJANAKPUR (TV Today, Janakpur)

https://www.youtube.com/@drishyambiharlok7552 (Drishyam Media)

https://www.youtube.com/@sanskarmithila (संस्कार मिथिला)

https://www.youtube.com/@saregamaapanmaithili3522 (सरेगामा मैथिली)

https://www.youtube.com/@NavrassMedia (नवरस मीडिया)

https://www.youtube.com/@jyotient778 (ज्योति एंटरटेनमेंट)

https://www.youtube.com/@RKSMAITHILIPRODUCTION (इजोरिया फिल्म्स)

https://www.youtube.com/@ayodhyanathchoudhary345 (अयोध्यानाथ चौधरी)

https://www.youtube.com/@RadioJanakpur97MhzOfficial (रेडियो जनकपुर)

https://www.youtube.com/@mithilatv1 (मिथिला टी.वी.)

https://www.youtube.com/@Madhurmaithilichannel (मधुर मैथिली)

https://www.youtube.com/@sktutorials8921 (मैथिली-नेपाली सीखू)

https://www.youtube.com/playlist?list=PL_HQDKXbaRKq3YTS7-Pkks1Y-UIL33fiD (अपन मैथिली)

https://www.youtube.com/playlist?list=PLH1UiGl69_SLRhxZMZ1TSxUi-JXcHhAZr (मैथिली पाठ)

https://www.youtube.com/@maithiliforiassurendraraut1589 (सुरेन्द्र राउत)

https://www.youtube.com/@UdayaSingh (रफ कट्स, नचिकेता)

https://www.youtube.com/@kunjbiharimithilaratna (कुञ्ज बिहारी)

https://www.youtube.com/@RAMBABUJHA (राम बाबू झा)

https://www.youtube.com/@VJEntertainments008 (वी. जे., विकास झा)

https://www.youtube.com/@user-ib7pn3li5q (तिरहुत मिथिला)

https://www.youtube.com/c/ilovemithila (आइ लव मिथिला)

https://www.youtube.com/@LokKalaKendra (लोक कला केन्द्र)

https://www.youtube.com/@rajnipallavi (रजनी पल्लवी)

https://www.youtube.com/@PoonamMishra (पूनम मिश्र)

https://www.youtube.com/@ranjanajhasangeetdivyam2908 (रंजना झा)

https://www.youtube.com/@julijhaofficial8057 (जूली झा)

https://www.youtube.com/@maithilithakur (मैथिली ठाकुर)

https://podcasters.spotify.com/pod/show/anupam-mishra04/episodes/Episode-40-e135mlu/a-a5uoe0r (अनुपम मिश्र पॉडकास्ट(

जानकी एफ.एम समाचार

https://www.youtube.com/user/Janakifm/videos (जानकी एफ.एम समाचार)

https://www.youtube.com/@AmitJhaOfficial (Amit Jha)

https://www.youtube.com/@PMPCORNER (Pravesh Mallick)

https://www.youtube.com/@AdityaFilmsandmusic (Aditya Films & Music)

https://www.youtube.com/@NepalTelevision (Nepal Television)

https://www.youtube.com/playlist?list=PLEqde8-nxNTHL78RKSiuTGeeTJXot3YrY (AIR MAITHILI NEWS)

https://www.youtube.com/playlist?list=PLJuuojdiqz3NMKxKUbbcO7cT3sPrgRejS (AIR AMRIT MAHOTSAV)

https://www.youtube.com/@Mithilanchal (Mithilanchal)

https://www.youtube.com/channel/UCsB8UkEYLZe471GrcAlcG1A (Rashmi Dutt)

https://www.youtube.com/channel/UCVYE4fcasReMXTpbXWgp2mg (Priya Mallick)

https://www.youtube.com/@AnamikaJhaOfficial (Anamika Jha)

Videha e-Learning

https://www.youtube.com/@videha-elearning

संघ लोक सेवा आयोग/ बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षा लेल मैथिली (अनिवार्य आ ऐच्छिक) आ आन ऐच्छिक विषय आ सामान्य ज्ञान (अंग्रेजी माध्यम) हेतु सामिग्री [एन.टी.ए.- यू.जी.सी.-नेट-मैथिली लेल सेहो]

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

....

http://www.youtube.com/user/ggajendra71(विदेह)

https://www.youtube.com/gunjanshree

http://www.youtube.com/user/Maithilinews
http://www.youtube.com/user/jitumaithil (जितेन्द्र झा, जनकपुर)
http://www.youtube.com/user/sobhagya8 (सौभाग्य मिथिला)
http://www.youtube.com/user/bhaskaranjha (भाष्कर झा)
http://www.youtube.com/user/mahakalijha
http://www.youtube.com/user/karia1885
http://www.youtube.com/user/omuniv
http://www.youtube.com/user/sumankumar137
http://www.youtube.com/user/gyansjha
http://www.youtube.com/user/bclalan
http://www.youtube.com/user/gareri1986
http://www.youtube.com/user/avinashjha84
http://www.youtube.com/user/chandankumarjha1
http://www.youtube.com/user/chandanmishra2010

http://www.youtube.com/user/nirmaana

http://www.youtube.com/user/Janakifm1

http://www.youtube.com/watch?v=XpSuVHtbaQ8&feature=mfu_in_order&list=UL

http://www.youtube.com/user/gxcng

http://www.youtube.com/user/gautamkrishna85

http://youtu.be/3i3OG5Nf3y8

http://youtu.be/sJnxSe-ckmo

http://www.youtube.com/user/jitmohanjha

http://www.youtube.com/user/MiTJnPNN

http://www.youtube.com/watch?v=-9KaC8ji9t4

http://www.youtube.com/user/luvvivek2k7

http://www.youtube.com/user/bindassatyandra

http://www.youtube.com/user/rustymind1

http://www.youtube.com/user/MrDeveshKarna

http://www.youtube.com/user/rambabushah

http://www.youtube.com/user/mukeshjha84

http://www.youtube.com/user/Mauahi
www.youtube.com/user/MrBasantjha
http://www.youtube.com/user/themadan
http://www.youtube.com/user/sentukhu

http://www.youtube.com/user/yarowjha

http://www.youtube.com/user/mkoxp
http://www.youtube.com/user/luvvick21

http://www.youtube.com/user/njyclubashok

http://www.youtube.com/user/MrRamkisor

http://www.youtube.com/user/pratyushsangita/
http://www.youtube.com/user/hellomithilaa

http://www.youtube.com/user/mariyoshj

http://www.youtube.com/user/dearshantanu/

www.youtube.com/user/RajuPrasadRajbanshi

www.youtube.com/user/premarshi
http://www.youtube.com/user/Dhipre (धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

http://www.youtube.com/user/TheShubhaprabhat

http://www.youtube.com/user/njyclubashok

http://www.youtube.com/user/mithilaconnect

http://www.youtube.com/user/NAYAKSAURABH80

http://www.youtube.com/user/Rabindra888

http://www.youtube.com/user/uday88mandal

http://www.youtube.com/user/nimesdeath

http://www.youtube.com/user/pawanks6102
http://www.youtube.com/user/sahayogee
http://www.youtube.com/user/sunilkumarpawan

http://www.youtube.com/user/videhuk

http://www.dailymotion.com/video/xjophq_documentary-kosi-katha_shortfilms#from=embed

http://blackbuddhas.com/

http://youtu.be/CPwpkn5YI1I

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement

Issue No. 88 (November-December 2019) of Muse India at http://museindia.com/ displays Maithili literature in an extremely poor light. Moreover, it wrongly claims to be a representative review of Maithili Literature, whereas it was only in line with the Sahitya Akademi, Delhi; a mere representation of the so-called "dried main drain". It is expected that Muse India will correct itself by announcing an issue exclusively devoted to the parallel tradition of Maithili literature.

T.K. Oommen writes in the "Linguistic Diversity" Chapter of "Sociology", 1988, page 291, National Law School of India University/ Bar Council of India Trust book: "... the Maithili region is found to be economically and culturally dominated by Brahmins and if a separate Maithili State is formed, they may easily get entrenched as the political elite also. This may not be to the liking and advantage of several other castes, the traditionally entrenched or currently ascendant castes. Therefore, in all possibility the latter groups may oppose the formation of a separate Maithili state although they

also belong to the Maithili speech community. This type of opposition adversely affects the development of several languages."

T.K. Oomen further writes: "... even when a language is pronounced to be distinct from Hindi, it may be treated as a dialect of Hindi. For example, both Grierson who undertook the classic linguistic survey of India and S. K. Chatterjee, the national professor of linguistics, stated that Maithili is a distinct language. But yet it is treated as a dialect of Hindi". (Ibid, page 293)

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. - Robert Louis Stevenson

...

Videha: Maithili Literature Movement

Parallel Literature

The references to parallel literature are found in Vedas, where Narashanshi is referred to as parallel literature.

Parallel Literature in Maithili

The need for parallel literature in Maithili arose due to the constant onslaught on literature and dignity by the Public and Private Academies, for example, Maithili-Bhojpuri Akademi of Delhi, Maithili Akademi of Patna, Sahitya Akademi of Delhi, Nepal's Prajna Pratishthan, all of which are government Academies. In addition to these Academies, the onslaught on Maithili Literature and dignity was constantly done by the so-called literary associations which were recognised by the Sahitya Akademi and were the main tool for usurping all the literary space meant for this language. Besides these, the funding to these and other parochial associations and organisations led to the presentation of an interface in the name of Maithili, which was mediocre and non-representative.

The Book of Bihari Literature (Abhay K. Editor)

This book contains five translations from non-representative Maithili short stories into English by Vidyanand Jha. Nagarjun (Maithili's Yatri) and Usha Kiran Khan are from the Hindi quota though both got the Sahitya Akademi prize from the Maithili quota. Vibha Rani and Rajkamal Chaudhary are from the Maithili quota though both wrote in Hindi also.

This book is edited by Abhay K. who has read Samskrit only up to high school. Yet he pretends to translate Arthashastra directly from Samskrit into English. I am Kovid in Samskrit and from the quality of the translation, I can presume that he has used some intermediary language in translating Samskrit texts into English. It is a matter of ethics to acknowledge the source.

Vidyanand Jha's translation is below par, for example, he has no inkling what would be the English word for 'olak sanna', and there are plenty of such instances. I have some suggestions for him: First, read A Bird's Eye View on Mithila by Rajnath Mishra, it mentions all the terms for which you could not find English equivalents. Then go to the Videha archive (www.videha.co.in) and look for Umesh Mandal's Picture Dictionary containing vegetation, animals and skill sets of Mithila, here you will find the actual photographs too. Further, under A Parallel History of Maithili Literature (Videha www.videha.co.in), you will find sample English translations of some Maithili short stories. Therefore, what Vidyanand Jha is presenting as exotic is the original thing of the Maithili Language (but not that

of Maithili literature, as was two decades ago). Interestingly his choice of short stories reminds me of Contemporary Maithili Short Stories (Maithili short stories translated into English) edited by Murari Madhusudan Thakur and published by the Sahitya Akademi in 2005. It seems that the stories in this selection are leftover material from that collection. Rip Van Winkle awoke after two decades but Vidyanand Jha is still in slumber not realizing the changes that have happened during the period.

If you compare the translation of this selection vis-a-vis the English translation of Latin American Spanish literature, you would be able to understand the difference.

But these types of selections are not known for their literary excellence, Harper Collins publishes these types of selections for five-star hotels and Airport lounges. The publishers announced this book on March 22, 2022. So, in 6-7 months, you will get old materials only.

The Bride: The Maithili Classic Kanyadan by Harimohan Jha (1908-1984) translated into English by Lalit Kumar (Assistant Professor,

Department of English, Deen Dayal Upadhyaya College, University of Delhi)- Harper Perennial (Harper Collins Publishers)

I had pre-ordered the book, which was scheduled to be delivered to my kindle account on the 1st of December 2022, but the delivery date was postponed, and it was delivered to my account on the 14th of December 2022.

When Maithili was recognised by the Sahitya Akademi (National Academy of Letters- of India) way back in 1965, Late Ramanath Jha stated that his Maithili language is saved now (Maithilik Vartman Samasya, Ramanath Jha).

Sh. Harish Trivedi has committed the same mistake. In his foreword Harish Trivedi writes- "In Hindi, the language to which Maithili is the closest (and of which it was indeed an integral part until it was granted recognition as a separate language by the constitution in 1993) ..."

Harish Trivedi refers to the inclusion of Maithili in the eighth schedule of the constitution of India. Here the year mentioned should be 2003 instead of 1993. Moreover, Maithili was a separate language in 2003,

1993, and 1965 and during the time of pre-Jyotirishwara Vidyapati. The status granted to Maithili by Sahitya Akademi and the Constitution of India, on the other hand, strengthened the hands of the obscurantist elements like Ramanath Jha, Shardananda Jha (he is not a famous person but why I have taken his name, I will explain it later) and others who gaslighted Harimohan Jha. Harimohan Jha's Khattar Kakak Tarang, Pranamya Devata, Rangshala and Charchari all these books were eligible for the Sahitya Akademi Award initiated in 1966 for Maithili (because of recognition given to Maithili by Sahitya Akademi in 1965. But a philosophy treatise was awarded the prize in 1966, this philosophy book itself is a horrific one, and if one has read the book to understand the nuances of Indian Philosophy, then he will have to unlearn first to be able to grasp the philosophical concepts from a new book on Indian Philosophy. In 1967 no award was given for the Maithili Language.

Ramanath Jha's obscurantism vis-a-vis Panji is evident from one example (because Lalit Kumar also seems to have followed in his footstep, though he gives credit for his ignorance to some other writers).

He was casteist, conservative and confused. The inter-caste marriage in Panji was well known to him (but he chose to keep the Dooshan Panji secret- which has been released by us on google books in 2009), and it was apparent that the great navya-nyaya philosopher Gangesh Upadhyaya married a "Charmkarini" and was born five years after the death of his father (see our Panji Books Vol I & II available at http://videha.co.in/pothi.htm). Sh. Dinesh Chandra Bhattacharya writes in the "History of Navya-Nyaya in Mithila"-

"The family which was inferior in social status is now extinct in Mithila- Gangesha's family is completely ignored and we are not expected to know even his father's name.", which is a total falsehood. He writes further that all this information was given to him by Prof. R. Jha. So how would this casteist-conservative-confused allow the award to be given to Sh Harimohan Jha? So, the Sahitya Akademi saved the Maithili Language by recognizing it, as asserted by Prof. R. Jha, is wrong and so is the assertion made by Sh. Harish Trivedi.

Mr Lalit Kumar is a young person, but he is being misused by some obscurantist elements, who

gaslighted Harimohan Jha. Harimohan Jha stopped writing in Maithili following the recognition of it by Sahitya Akademi and was awarded the Sahitya Akademi prize for his autobiography in 1985, after his death, which means nothing.

Mr Lalit Kumar writes- "Yoganand Jha's Bhalmanusha (1944) and Shardananda Jha's Jayabara (1946) attack such social divisions that played a decisive role in marriages." Yoganand Jha's Bhalmanusha (1944) was indeed a pathbreaking novel, but Shardananda Jha's novel was reactionary. Prof Radha Krishna Choudhary rightly observes- "Yoganand Jha's 'Bhalamanusa' deals with the social problems connected with the problem of marriage. As a reply to this novel, Shardanand Jha wrote a second-rate novel 'Jayabara,' having little literary merit. (RADHAKRISHNA CHOUDHARY A Survey of Maithili Literature)

Mr Lalit Kumar for his Panji-related ignorance gives credit to Mm. Parmeshwar Jha's ''Mithila Tattva-Vimarsha." Prof Radha Krishna Choudhary rightly observes- "Mm. Parmeshwar Jha's 'Mithila Tattva-Vimarsha' is the history of Mithila in Maithili prose and is based mainly on tradition. Mm. Mukunda Jha

Bakshi's 'Mithilabhashamaya Itihas' gives an account of the Khandawala dynasty. From the point of view of modern Maithili prose, these two works are important, though from the historical point of view, are unreliable. (RADHAKRISHNA CHOUDHARY A Survey of Maithili Literature)

The following excerprt from Our Panji Paband ((part I&II) is being reproduced below for ready-reference: -

महाराज हरसिंहदेव- मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरसिंहदेव नायक आकि राजा छलाह। 1294 ई. मे जन्म आ 1307 ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ 1324-25 ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन। मिथिलाक पज्जी-प्रबन्धक ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य आधिकारिक स्थापक, मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त एहि हेतु प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हरसिंहदेवक प्रेरणासँ- आ ई हरसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छलाह, जे नान्यदेव कार्णाट वंशक १००९ शाकेमे स्थापना केने रहथि- नन्दैद शुन्यं शशि शाक वर्षे (१०१९ शाके)... मिथिलाक पण्डित लोकनि शाके १२४८ तदनुसार १३२६ ई. मे पज्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। पुनः वर्तमान स्वरूपमे थोडे बुद्धि विलासी लोकनि मिथिलेश महाराज माधव सिंहसँ १७६० ई. मे आदेश करबाए पज्जीकारसँ शाखा पुस्तकक प्रणयन करबओलन्हि। ओकर बाद पाँजिमे (कखनो काल वर्णित १६०० शाके माने १६७८ ई. वास्तवमे माधव सिंहक

बादमे १८०० ई.क आसपास) श्रोत्रिय नामक एकटा नव ब्राह्मण उपजातिक मिथिलामे उत्पत्ति भेल।

So, the Srotriyas as a sub-caste arose around 1800 CE as per authentic panji files.

Sh. Anshuman Pandey [Gajendra Thakur of New Delhi provided me with digitized copies of the genealogical records of the Maithil Brahmins. The panjīkara-s whose families have maintained these records for generations are often reluctant to allow others to pursue their records. It is a matter of 'intellectual property' to them. I was fortunate enough to receive a complete digitized set of panjī records from Gajendra Thakur of New Delhi in 2007. [Recasting the Brahmin in Medieval Mithila: Origins of Caste Identity among the Maithil Brahmins of North Bihar by Anshuman Pandey, A dissertation submitted in partial fulfilment of the requirements for the degree of Doctor of Philosophy (History) in the University of Michigan 2014]. Later these Panji Manuscripts were uploaded to google books in 2009).

The so-called Maharajas of Darbhanga were permanent settlement zamindars of Cornwallis, and there were so many in British India, but in Nepal

there were none. In the annexure of our book (Panji Prabandh vol I&II), we have attached copies of genealogy-based upgradation orders (proof of upgradation for cash). So, before 1800 CE, there was no srotriya sub-caste in British India and there is no such sub-caste within Maithil Brahmins in Nepal part of Mithila even today. Srotriya before that referred to following some education stream in British India, in Nepal it still has that meaning.

Mr Lalit Kumar further tries to put his agenda by writing- "Harimohan choose a middle ground in his reformist agenda." He gives laughable reasons for his contention viz. "he espouses the significance of local traditions, languages, scripts, education system, and moral values" thereby meaning that these are conservative values!

(All the referred books are available for free pdf download from the link http://videha.co.in/pothi.htm)

VIDEHA MAITHILI LITERATURE MOVEMENT AND A PARALLEL HISTORY OF MAITHILI LITERATURE

Therefore, the missing portions, the ignored and non-represented aspects of society, started to be

chronicled. It led to the depiction marked by the richness of vocabulary and experiences and was a revolution in literature and art as far as people speaking Maithili are concerned. The quality now has not remained mediocre. The real power of the Maithili language was realised by the native speakers, mediocrity was replaced by excellence. This attempt at the writing of History of Parallel Literature for the Maithili Language arose as the mediocre agency (private and governmental) funded so-called mainstream literature, which has no readership, and no acceptance among the speakers of Maithili continued to be presented by these Akademies as representative literature. The mediocre interface of Maithili literature was presented by the government radio and television stations also. Literary journals like Museindia (www.museindia.com) & Publishers like Harper Collins were also used for their sinister design.

Pseudo-criticism in Maithili and the case of Kamalananda Jha

The title of Kamalanand Jha's book "Maithili Novel: Time, Society and Questions" (2021) is misleading. It is a collection of some syndicated so-called critical

articles on some of his caste novelists. The 263-page book can only be sold in hardbound to libraries where it will rot. Here is a correction, a non-caste writer's work, i.e., Subhash Chandra Yadav's novel 'Gulo', has been dealt with by him in two lines, of course without reading it. I am presenting those two lines here for your entertainment. You must have read *Gulo*, if you haven't already, read it first because then you will have a more entertaining experience. Gulo is available on Videha Archive with the permission of Subhash Chandra Yadav at this link http://videha.co.in/pothi.htm.

"The weakness of the novel is the author's political bias. The partisanship towards a particular politics does not do justice to the work."

In a novel where politics is not remotely involved, there is no question of 'political bias and partisanship of a particular politics'. Dhumketu and Yatri used political bias or partisanship. Subhash Chandra Yadav's 'Vote' which came out in 2022 and is available with permission of Subhash Chandra Yadav on Videha Archive at this link http://videha.co.in/pothi.htm, is on politics but even there Subhashji's enchanting style obviates the

need of any political bias... Read my book 'Nit Naval Subhash Chandra Yadav' which is available at this link http://videha.co.in/pothi.htm. On the other hand, Mr Kamlanand Jha sounds like a spokesperson of some political party or a casteist organisation rather than a literary critic. Kamalananda Jha's Brahministic bias against Subhash Chandra Yadav is an alarm bell. The parallel stream is conscious of how Kamalananda Jha takes the leftist stance to promote Brahminism and wants to sacrifice social justice. In his biodata, he proudly mentions the Maithili translation assignment bestowed on him by the Sahitya Akademi, and this assignment was allotted to him not on account of merit but solely on the ground of his caste title and in lieu of these deeds. For people like him, Maithili-related work is merely a line in their *curriculum vitae*, but it is a question of life and death for the people of the parallel stream. Why did I call Kamalananda Jha a pseudo-critic? Because he is a pseudo-critic. He writes: "After nearly a hundred years of journey, Gaurinath is credited with writing a dignified novel on the dreams, struggles and ironies of inter-caste marriage. So, did Kamalananda Jha take away this credit from Sushil? Is this the

culmination of the arrogance of his Brahministic upbringing ("*Through my whims and fancies I can place some literature on top and can downgrade some to the bottom*") or is this the evidence of his lack of study? Let me take you away from the selfish world of Kamalananda Jha, away from deception and disguise to the sincere world of Sushil's magical literature. Welcome to the world of Sushil's literature. Here is Sushil's 'Gambali' (1982) which is now available in the Videha Archive at the link http://videha.co.in/pothi.htm. In the first line of this novel, even before the novel begins, Sushil writes about the novel 'Gambali': "In support of widow marriage and inter-caste marriage" and here begins the novel. The death of a village woman and then the trouble ensues, who will cremate this village woman? Brahmin community or Yadav community of the village? Dinesh Kumar Mishra's 'Dui Patan Ke Bich Me' is a historical biography of the Kosi River. He has also written historical biographies of other rivers of Mithila like 'Bandini Mahananda,' 'Bagmati Ki Sadgati!', 'Dui Patan Ke Bich Me... (Story of the Kosi River)', Na Ghat Na Ghar, Kamla River, 'Bhutahi River and Technical Herbalism', The Kamla River

and People on Collision Course, Bhutahi Balan- Story of a Ghost River and Engineering Witchcraft, Refugees of the Kosi Embankments. Pankaj Jha Parashar, a member of the Maithili Advisory Committee of the Sahitya Akademi, Delhi has plagiarised paragraph after paragraph from his books and has published a novel in Maithili in his name, which pseudo-critic Kamalananda Jha mentions as research of this thief author Pankaj Jha Parashar! Let me clarify here that both the thief writer and the pseudo-critic are in the Hindi department of Aligarh Muslim University. This research is done by Dinesh Kumar Mishra, who is a graduate of IIT, Kharagpur in Civil Engineering (in 1968) and M. Tech in Structural Engineering (in 1970) and is qualified for that research. In Hindi, the cut-off for admission is the lowest across universities, otherwise, Kamalananda Jha would have known that this research could be done by a civil engineer only. The Hindi original and Maithili screenshots are attached below. Dinesh Kumar Mishra is not from Mithila, but he has authored the story of all the streams of Mithila. We are grateful to him, and the people of Mithila will remain indebted to him for

this. This thief writer Pankaj Jha Parashar is a habitual offender. More than a decade ago he found a saviour in Mr Taranand Viyogi who wrote that he (thief writer Pankaj Jha Parashar) gets influenced involuntarily stole others' material in his works. Now he has found another saviour in Kamalananda Jha. The parallel stream is conscious of how Kamalananda Jha takes the leftist side to promote Brahminism and wants to sacrifice social justice. Communism has suffered a lot from people who became communists to escape the land ceiling.

All books by Dinesh Kumar Mishra are now available in the Videha Archive with his permission:

http://videha.co.in/pothi.htm

Let us recall here that when Bill Gates was asked whether he was delaying the introduction of the X-Box in India for fear of piracy. His answer was Microsoft never delays the launch of products for fear of piracy. We will continue enriching Videha Archive (http://www.videha.co.in/archive.htm), despite such risks because not all the fish in the pond rot by some rotten fish in parallel streams. The

fishermen here have been and will continue to remove such rotten fish.

The final blow to syndicated pseudo-literary criticism in Maithili.

Original Dinesh Kumar Mishra (Dui Patan Ke Beech Me... 2006): It is noteworthy that between 1923 and 1946, 5,10,000 people died of malaria, 2,10,000 from Kala Azar, 60,000 of Cholera and 3,000 of smallpox in the Kosi region (783,000 total deaths). Thief Pankaj Jha Parashar (Member of Maithili Advisory Committee of Sahitya Akademi, Delhi) [Jalpranthar 2017 (p. 103)]:

ने अँग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

Original Dinesh Kumar Mishra (Dui Patan Ke Beech Me... 2006): On the Kosi River in Bihar, India, a dam was built by King Laxman II in the 12th century and for this, he received the title of 'Bir' from the people and the embankment of the river was called 'Bir Dam' The remains of this embankment are still visible in Supaul district, about 5 km south of Bhim Nagar. Dr Francis Buchanan (1810-11) speculated that the dam must have been an outer wall built to

protect a fort as it stretched over a distance of 32 kilometres from Tilyuga to its confluence on the western bank of the Dhaus river. Dr W.W. Hunter (1877) did not agree with Buchanan's contention that the dam was the protective wall of a fort. Quoting locals, Hunter believed that most people did not consider it a fortress wall and according to him it was something else but he was not in a position to say anything. Yet the common impression is that it must have been an embankment built along the Kosi River to prevent the river's current from sliding westwards. People also said that it seemed that the construction of the embankment had suddenly stopped.

The pseudo-critic Kamalananda Jha's saviour of the habitual offender thief Pankaj Jha Parashar quoted the plagiarised work as follows: (Maithili Novel, Time, Society and Questions pp. 257-258):

पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर'(2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दाँव-पेंच आदिक विस्तृत व्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ व्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पढ़ुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़बैत पढ़ुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे

Thief Pankaj Jha Parashar (Member of Maithili Advisory Committee of Sahitya Akademi, Delhi) [Jalpranthar 2017 (p. 31)]:

पढ़ुआ कका पछिला गप कें आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू, कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा कें लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयनें छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवतः कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पढ़ुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन? लोक कें बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पढ़ुआ कका कें आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

जलप्रांतर / 31

Original Dinesh Kumar Mishra (Dui Patan Ke Beech Me... 2006): A glimpse of the horrors of the Kosi River can be seen in the event when the army of Feroz Shah Tughlaq returned to Delhi from Bengal. It is said that when the troops of the Sultan reached the banks of the Kosi, they saw that on the other side of the river, the troops of Haji Shamsuddin Ilyas were waiting, ready for a battle. This was the same Haji Shamsuddin who founded the cities of Hajipur and Samastipur. Feroze's troops were stranded on the banks of the Kosi somewhere around Kursela. The speed of the river was preventing them from moving forward. It was finally decided to proceed northward along the river and to locate the water where it was

navigable. The troops of the Sultan went up about a hundred *kos* and crossed the river near Ziaran, situated at the same place where the river descended from the mountains into the plains. The river was thin, but the flow was so fast that heavy stones weighing five hundred *manas* were floating like straws in the river. On either side of the river where it was found possible to cross it the Sultan erected a row of elephants, and ropes were hung in the bottom row so that if a man loses control he could be rescued with the help of these ropes. Shamsuddin never thought that Sultan's troops would be able to cross the Kosi and when he came to know that Sultan's troops had managed to cross the Kosi, he fled.

Thief Pankaj Jha Parashar (Member of Maithili Advisory Committee of Sahitya Akademi, Delhi) [Jalpranthar 2017 (p. 105)]:

'बेश, तँ सुनू। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र-शस्त्र ल' कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौनैं रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवतः कुरसेला के आस-पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना कैँ नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ' रहल छलै। अंततः तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे-किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कनैं कम बूझि पड़य, ओतय पानिक थाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कनैं शिकस्त बुझेलै। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच-पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खढ़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति कैँ जतय नदी पार करब कनैं आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी कैँ ठाढ़ क' देल गेल। नीचाँ वला लाइन मे बड़का-बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जँ क्यो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहेँ फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचनैं छल,जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन कैँ पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।'

A Parallel History of Maithili Literature

I

Introduction

FESTIVAL OF LETTERS OR FESTIVAL OF SHAME

SAHITYA AKADEMI AND the DOWNFALL OF INDIAN LANGUAGES (IN SPECIAL CONTEXT OF MAITHILI LANGUAGE)

When Maithili was recognised by the Sahitya Akademi (National Academy of Letters- of India) way back in 1965, Late Ramanath Jha stated that his Maithili language is saved now (Maithilik Vartman Samasya, Ramanath Jha).

He was wrong on this on two counts. What he referred to as applicable, if it applied at all, only to the part of Maithili speaking area, geographically located in India. Maithili is spoken, natively, in India and Nepal. After the treaty of sugauli (ratified in 1816), which was in the aftermath of the Anlo-

Nepalese war of 1814-16, the hilly regions were incorporated in British India, including the Nepalese-speaking Darjeeling Area. Similarly in 1816 and 1860, the Britishers ceded some Terai region to Nepal. As a result, part of Maithili speaking Area, which was earlier ruled by Malla Kings (when Maithili was an official language of the region), was ceded to Nepal. Even today some Maithili scholars (!!) refer to the golden period of Maithili as the period of "Nepali (!!)" Malla Kings (Ramanath Jha, Introduction to Maithili Sahityak Itihas by Dr Durganath Jha "Shreesh").

Ramanath Jha himself admits that during his visit to "Vir Library" of Nepal (Kathmandu) he came to know about the Nepal legacy (his monograph on kirtaniya Natak, which he wrongly presents as Kirtaniya Nach) in respect of Maithili. So, he cannot be blamed for his lack of knowledge in this respect. He was wrong on the second count also, and this second count was an artificial creation. He began a tradition of elitism and conservatism in Sahitya Akademi, as the first convener of the Maithili language. The tradition got stronger and stronger in the last 55 years of the Existence of Maithili in that

Akademi. So, he ensured that liberal writers, like Sh. Harimohan Jha, attacking casteism and conservatism did not get the award, even though the year 1967 went unrewarded and the Ist award in 1966 was given to a non-literary book in Maithili (academic book of Philosophy!!!).

He was casteist, conservative and confused. The inter-caste marriage in Panji was well known to him, and it was apparent that the great navya-nyaya philosopher Gangesh Upadhyaya married a "Charmkarini" and was born five years after the death of his father. But he informed Sh. Dinesh Chandra Bhattacharya in a distorted way. Sh. Dinesh Chandra Bhattacharya writes in the "History of Navya-Nyaya in Mithila".

"The family which was inferior in social status is now extinct in Mithila-Gangesha's family is completely ignored and we are not expected to know even his father's name.", and he writes further that all this information was given to him by Prof. R. Jha. So how would this casteist-conservative-confused allow the award to be given to Sh? Harimohan Jha. So, the Sahitya Akademi saved the Maithili Language by

recognizing it, as asserted by Prof. R. Jha, was wrong on those two counts.

Now come to Nepal, the Prajna Pratisthan and other organizations often recognize Indian Maithili writers, but Sahitya Akademi of India does not recognize Nepalese Maithili writers, be it the Seminars or the poets meet, be it an anthology of poems or prose published by the Akademi. Regarding the treatment of Nepalese Maithili writers by Sahitya Akademi Sh. Ram Bharos Kapari "Bhramar" laments that there is demand in Nepal that they should also not award Indian Maithili writers/ publish them in their anthologies as reciprocity demands this.

The narrow-mindedness of the Maithili advisory board of the Indian Sahitya Akademi has its origin in the organizations that are recognized by the Sahitya Akademi, the basis of which is extra-literary credentials. These are pseudo-organizations running on paper, political organizations or casteist organizations pocket-run by a few. The complete list is:

MAITHILI LITERARY ASSOCIATIONs (!!!) RECOGNIZED by SAHITYA AKADEMI

1. The Secretary, All India Maithili Sahitya Samiti, Tirbhukti, 1/1B, Sir P.C. Banerjee Road, Allahabad-211 002.

2. The General Secretary, Akhil Bharatiya Maithili Sahitya Parishad, C/o Dr. Ganapati Mishra, Lalbag, Darbhanga-846 004.

3. The Secretary, Chetna Samity, Vidyapati Bhawan, Vidyapati Marg, Patna-800 001.

4. The Secretary, Mithila Sanskritik Parishad, 6 B, Kailash Saha Lane, Kolkata-700 007.

5. The Secretary, Vidyapati Seva Sansthan, Mithila Bhavan Parishar, Darbhanga-846 004.

6. The Secretary, Centre for the Study of Indian Traditions, Tantrabati Geeta Bhavan; Ranti House, Ranti, Madhubani-847 211

Now the Literary Association lists read as under. Serial no. 1 & 6 above have been derecognised and has been replaced by other non-literary associations at sr no 5, 6 & 7 below.

(1) The General Secretary, Akhil Bharatiya Maithili Sahitya Parishad, Professors' Colony, Digahi West, Opp. of Primary School, Darbhanga-846 004, (Bihar)

2) The Secretary, Chetna Samiti, Vidhya Pati Bhavan, Vidyapati Marg, Patna-800 001 (Bihar)

3) The Secretary, Mithila Sanskritik Parishad, 6B, Kailash Saha Lane, Kolkata-700 007, (West Bengal)

4) The Secretary, Vidhya Pati Sewa Sansthan, Mithila Bhavan Parishar, Darbhanga-846 004, (Bihar)

5) The Secretary, Anand, Samajik Sanskritik Sahityik Manch, Rajkumarganj (Mirzapur Chowk), Darbhanga-846 004, (Bihar)

6) The General Secretary, Mithila Sanskritik Parishad, Rosebery 5032, Sahara Garden City, Adityapur-2, Jamshedpur-831 014, (Jharkhand)

7) The General Secretary, Akhil Bharatiya Mithila Sangh, G-6, Hans Bhavan, Wing 2 I.T.O., Bahadurshah Zafar Marg, New Delhi-110 002, (Delhi)

What is the literary credential of the Centre for the Study of Indian Traditions (now recognised and replaced by another pocket association)? Chetna Samiti and Vidyapati Seva Sansthan are casteist political outfits, vehemently displaying the casteist attire of a great ancient poet, whose caste is still uncertain (VIDYAPATI), but who was certainly not

Brahmin. All India Maithili Sahitya Samiti (now derecognised and replaced by a non-literary association) became non-existent even during the lifetime of the Late Jaykant Mishra, same is the case with Akhil Bhartiya Maithili Sahitya Parishad. Mithila Sanskritik Parishad has done a crime through an investiture ceremony of the great Vidyapati, they tried to convert Vidyapati and "Maithili" language to the language of only the Brahmins (the name of the artist who sketched the Vidyapati has still not been disclosed by this organisation). When these non-existent organizations exercise voting powers granted by Sahitya Akademi and chose a convener, it is not a coincidence that for successive times only conservative people among the Maithil Brahmin caste, are chosen. The complete list is:

1. Ramanath Jha, 2. Jaykant Mishra, 3. Surendra Jha Suman, 4. Sureshwar Jha, 5. Ramdeo Jha, 6. Chandranath Mishra Amar, 7. Vidyanath Jha Vidit, 8. Veena Thakur, 9. Prem Mohan Mishra, 10. Ashok Avichal.

The result is now for everybody to see. The complete list of Sahitya Akademi awards (till 2019) is:

Total booty distribution- 50 times, Maithil Brahmins- 42 times, Kayasthas- 6 times, Rajpoots- 3 times; Others- 0 times!!! (Now in 2021 Sh. Jagdish Prasad Mandal has been awarded this prize for his novel "Pangu", so the count is now not zero but one.

The result is not based on the quality of the books but solely upon the caste-based other considerations and the disease has its root in the faulty seedling that the Sahitya Akademi of India found through the faulty literary associations.

What were the objectives of the setting of this Akademi?

Sahitya Akademi was established (National Academy of Letters to be called Sahitya Akademi) by Government of India resolution No F-6-4/51G2(A) dated December 1952 "to set high literary standards, to foster and co-ordinate literary activities in all the Indian languages and to promote through them all the cultural unity of the country; to promote good taste and healthy reading habits, to keep alive the intimate dialogue among the various linguistic and literary zones and groups through seminars, lectures, symposia, discussions, readings and

performances, to increase the pace of mutual translations through workshops and individual assignments and to develop a serious literary culture through the publications of journals, monographs, individual creative works of every genre, anthologies, encyclopedias, dictionaries, bibliographies, who's who of writers and histories of literature."

The Akademi boasts of publishing "one book every thirty hours" and holding "at least thirty seminars every year" at regional, national, and international levels, " along with the workshops and literary gatherings-about two hundred in number per year".

The Akademi recognises " Besides the twenty-two languages enumerated in the Constitution of India", English and Rajasthani as languages. Sahitya Akademi has constituted twenty-four language Advisory Boards "to render advice for implementing literary programmes in these 24 languages".

The Akademi gives prizes in twenty-four languages recognised by it for original and translated works. It gives " special awards called Bhasha Samman to a significant contribution to the languages not

formally recognized by the Akademi as also for contribution to classical and medieval literature"; "It has also a system of electing eminent writers as Fellows and Honorary Fellows and has also established a fellowship in the names of Dr Anand Coomaraswamy and Premchand".

FESTIVAL OF LETTERS (SHAME)!!!!

In February every year, Sahitya Akademi "holds a week-long Festival of Letters; It begins with the ceremony to present the Akademi's Annual Awards for creative writing".

In February every year, there is a need to examine whether Sahitya Akademi is fulfilling its objective and whether Sahitya Akademi is aware of the rich cultural and linguistic variety prevalent in India.

On scrutiny it is revealed that Sahitya Akademi believes in "forced standardisation of culture through a bulldozing of levels and attitudes" and it is not "conscious of the deep inner cultural, spiritual, historical and experiential links that unify India's diverse manifestations of literature".

The Akademi boasts of publishing "one book every thirty hours" and holding "at least thirty seminars every year" at regional, national, and international levels, "along with the workshops and literary gatherings-about two hundred in number per year". If we see the data in respect of Maithili it comes out that every year around twelve books should have been published in Maithili and the Maithili writers might have attended thirty seminars every year at regional, national, and international levels and might have participated in eight literary gatherings every year. The number of Maithili books published by the Akademi is pathetically low, and when we see the assignments, through which these books get artificially prepared (be it translation, anthology or monograph), then the people getting these assignments are often related to the members of the advisory board (as the answer to RTI application by Sh. Vinit Utpal brings forth). The quality suffers, and as a result, there is no readership.

How this Akademi failed? And why this Akademi failed? And what action should be taken against Akademi for its intentional failure?

Firstly, Akademi is not the name of a man or woman. Akademi or its member of the Advisory Board consists of persons, and if the group of persons is failing the Akademi, that language itself is to blame! But again, the language is not the name of a man or woman. So, the people speaking that language are to be blamed for the failures of the Akademi. Really!!

Even if it is partially true, the Sahitya Akademy cannot shirk its responsibilities. How an advisory committee can be considered representative of Maithili-speaking people (even that of India), when the Convener of that language is nominated by six organisations (recognised by the Sahitya Akademi for reasons best known to it), having no remote connection with literature? Sahitya Akademi sowed seeds of Acacia and expected Mango fruit. Having said that it is also true that the Akademi or any organisation can transform itself, but only when the conservative people representing these find pressure from the literary fraternity, change themselves or are replaced.

What is the solution?

The literary fraternity has already taken initiative by establishing parallel Sahitya Akademi awards and parallel literary meets. It should be taken further. All legal means should be explored to take the Akademi to the task. On all available forums, the fact is made clear that the literature being prepared by Sahitya Akademi through assignments is not grammatically correct, that it is not up to mark and is of inferior quality. On all available forums, it should be made clear that the thin, casteist-looking (quantitatively and qualitatively) and pale Maithili literature, which is being shown by the Sahitya Akademi of India to the world, has no readership or respect in its native speaking area of India and Nepal. And that Maithili has moved not because of Sahitya Akademi but despite it.

Demand

The six organisations representing Maithili should be derecognized with immediate effect and an inquiry initiated to ascertain their genuineness. A committee should be set up to scrutinize the work done by the Sahitya Akademi (in respect of Maithili) in the last 55 years. The awards should be kept in abeyance till the

results of the inquiry are made public and corrective steps are taken.

II

THE CELEBRATION BEGINS

Videha Ist Maithili Fortnightly International e-journal has e-published more than three hundred issues to date. Meanwhile, we will enumerate the problems faced and the solutions found by us. The Journey began in the year 2000 at yahoo Geocities- the first words on the internet in Maithili were written by me on the yahoo Geocities sites (now yahoo has discontinued Geocities) towards the end of 2000 when I suffered a major accident which kept me confined to crutches for one and a half years. But that shaped my destiny. I could concentrate on my Maithili writings and my research on Tirhuta Manuscripts. On 5th July 2004, the first blog in Maithili came (gajendrathakur.blogspot.com) as "Bhalsarik Gachh", which was rechristened as Videha ejournal from 1st January 2008. From Ist January 2008 it came to be published as a fortnightly journal. The first rechristened issue brought the story

of the life and creations of a forgotten Maithili poet Late Ramji Choudhary (1878-1952).

Till the eighth issue of Videha the columns on Music, Mithila Painting, Children column, learn samskrit through Maithili got strengthened. Moreover, the projects on digitalisation of Maithili Classics and Panji Manuscript-leafs got started. The searchable dictionary (Maithili-English_Maithili) was designed and strengthened. From the eighth issue, a latest unpublished Maithili Play of Nachiketa "No Entry Maa Pravish" began its e-publication in Videha. Nachiketa, the greatest dramatist of Maithili Literature was silent for the last 25 years, as far as the drama was concerned.

Technology has two aspects, bad (its chances of misuse) and good (its effective use). It is a great leveller; it challenges status quo forces. It is applicable in all areas of knowledge. So, school-going children today have a clearer understanding of the universe and atoms than the Aryabhata or Sir Issac Newton had. After mass-scale use of printing education and literature expanded its wings, but only after the "Internet and electronic transformation of tools of knowledge", it has become universal, it has

jumped geographical boundaries. All shackles unfurled, the weak links of the chain were identified, and the chain which tried to capture knowledge, which tried to thwart its expansion, started breaking down. And the greatest beneficiary became the Maithili Literature. What is Videha, nothing, it is only its commitment to the Maithili Language, which helped it expand its base, and Videha became the means that were able to bind together the Maithili-speaking areas in both parts of the boundary (India & Nepal). Videha gave Maithili a batch of committed writers and a batch of committed readers. It challenged the status quo and casteist forces. It challenged confused writers, who were using Maithili as a tool to ride the ladder of Hindi. The lack of criticism, the lack of teeth in criticism was the reason that some writers and dramatists were using Hindi-Mix Maithili for cheap popularity, they were using derogatory language for the so-called lower castes of their society (some were finding plea in Natyashastra- when even the modern-day Samskrit Drama is not using Prakrit etc.!!), and for their mimicry, those castes started keeping distance with this kind of literature. And once the confusion of the

confused thinned, a new type of awakened literature, stage, and drama (top-class) became the norm.

Videha is regularly getting some excellent brains. Since its inception, Videha, the idea factory, is dependent upon them. As far as their versatile qualities are concerned, people associated with Videha are different. All are known for their perseverance and resilience. All are known for their arduous work. All are known for their quality work. All are known for their discipline. And all are committed; committed to Maithili and the Mithila. The cumulative force resulted in a natural revolution. A revolution in the field of Maithili Literature, art, music, craft, stage, and drama. The only international e-journal in Maithili started this quality movement in Maithili. Nothing less than world standard was acceptable. The awards were instituted to recognize the parallel field of Maithili Literature, art, music, craft, stage, and drama. Only the best was selected, there was no scope for the second best. The participation of readers in the decision-making processes was encouraged. The readers got full access to the digitalised Maithili Literature. More than five hundred Maithili books

and around 11000 palm-leaf mithilakshar manuscripts were digitalised and made available online under the "Videha Archive" section of www.videha.co.in (and the number is increasing every day). The audio-video-paintings-photographs were archived, and all these archived "art and lifestyle" of the people of Mithila were then placed online. The Videha Archive is a unique gift to the world.

So, what is the ideology of people associated with Videha? Is it collective thinking? No, of course not. In Videha all are welcome. Here all are welcome to discuss their respective ideology. Having said this, it needs emphasis that there are some basic human principles where no compromise is possible. The casteists, those having genetic superiority complex (which is another name for an inferiority complex), the practitioners of plagiarism, those who are unable to take part in a healthy discussion and persons who are not able to withstand the criticism of their creation, Videha is not a platform for them. The ideology of people associated with Videha may have different tinges, not all need to toe the line taken by any member of the editorial board. Videha believes

in the individuality of ideas and the editorial board never imposes its ideology upon its members. At the same time, it is being emphasized that each member of the Videha editorial board has a strong ideological leaning, the ideology of humanism is practised by all.

Videha-Maithili Literature Movement has its roots in the year 2000 when I started making Maithili Websites on Yahoo Geocities. After Yahoo Closed Geocities these sites were automatically deleted. However, the early form of Videha "Bhalsari Gachh" was started on 5 July 2004, and it is the earliest presence of Maithili on the internet. Videha and its vibrant members did their utmost in translating lacs of words on Wikipedia, and they successfully opposed the nomenclature "Bihari Languages" (Gerard M accepted the role of Umesh Mandal, the co-editor of Videha, go to Gerard M's blog and click the Dasipat Aripan photo from Videha archive (Preeti Thakur) placed at his blog, you will reach http://videha.co.in/). In Google translate/Wikipedia localisation drive, in Tirhuta and Kaithi script research and the localisation of Braille in consonance with the Maithili Language, Videha shouldered the responsibility as a pioneer in technology viz-a-viz

Maithili Language. It was a pioneer in many respects. It started for the first time a Maithili Websites Aggregator at http://videha-aggregator.blogspot.com/, the first braille site in Maithili, the first mithilakshar site in Maithili among others (total list).

Videha has organised several dozen Maithili book fairs to date. The 16th Videha Maithili book fair was held at Sagar Rati Deep Jaray, Patna on 10-11th December 2011 and the 17th Videha Maithili book fair was held at Guwahati, on 22-23 December next year at the Vidyapati Parv organised by Mithila Sanskritik Samanvay Samiti. The detailed list of all the venues (datewise). Videha also organised a parallel Sahitya Akademi Kavi Sammelan, besides awarding parallel Sahitya Akademi prizes, as corrective measures, as the awards and Kavi Sammellans of Sahitya Akademi were awarded/ organised in a unilateral manner where merit took a beating. Videha has, thus, fulfilled its obligation by interfering in the murky affairs of government organisations. Videha cannot remain a silent spectator, be it plagiarism or copyright violations. So, the authors like Pankaj Parashar, and Ashok Sahu,

who were engaged in lifting other articles/ stories/ poems were banned after verifying the sources and target writings.

Literature in translation is a major issue with Videha. Lack of translation in America resulted in Americans lagging in quality literature. We practise literature in translation in both directions- from Maithili into English and from other languages into Maithili. As far as translations from other languages into Maithili are concerned English, Nepali, Sanskrit and Hindi function as buffer languages in the process. Direct translations into Maithili are limited; and it is done directly only from English, Sanskrit, Hindi, Nepali and Bengali, although there are some exceptions. As far as the question of translations from Maithili into other languages is concerned, directed translations are again limited; and it is again done directly only into English, Hindi, Sanskrit, Bengali and Nepali, barring some exceptions. Videha contacted some notable personalities of class literature, took permission, and translated that literature into Maithili. Most of the time English was used as a buffer language and translation work from English, Hindi, Konkani, Telugu, Gujarati, Odia, Kannada,

Nepali and Telugu into Maithili was completed; and these works were regularly published in Videha. Maithili novels, poems, and short stories, on the other hand, were translated from Maithili into English and were published regularly in Videha.

VIDEHA became a Maithili Literature movement. No, VIDEHA was from day one of the Maithili Literature movement. Many established misconceptions got cleared through VIDEHA. The well-known facts, the not-so-obvious plot of some people to kill Maithili through its twin institutions the Sahitya Akademi and the CIIL was unearthed. The Right to Information came in handy. Sri Vinit Utpal asked for information from Sahitya Akademi through his RTI application dated 23.09.2011 (file no. RTI-125) and sought information on "Assignment assigned by Maithili Advisory Board, Sahitya Akademi under the convener ship of Sri Vidyanath Jha 'Vidit'". The information included a proposal received, a proposal rejected, and a proposal kept in abeyance." The statutory mandatory information supplied by the Sahitya Akademi unearthed a vicious circle of Maithili-speaking so-called litterateurs, hell-bent upon making Maithili a language- "of the Maithil

Brahmin, for the Maithil Brahmin and by the Maithil Brahmin". More than 90% of the assignments went to the friends, relatives, and acquaintances of the 10-member Maithili Advisory Board. No assignment to Sh. Jagdish Prasad Mandal, Sh. Rajdeo Mandal, Sh. Bechan Thakur (the greatest Short-story-novel writer of Maithili, the greatest living poet of Maithili and the greatest living Maithili dramatist; respectively), Sh. Umesh Paswan, Sh. Umesh Mandal, Sh. Ramdev Prasad Mandal "Jharudar", Sh. Durganand Mandal, Sh. Sandeep Kumar Safi or to Sh. Anand Kumar Jha. When every member of the Maithili advisory board is hand in glove with the Sahitya Akademi to kill the Maithili language then where lies the hope? The demand for Mithila state by these people will see that 10 Maithil Brahmin families would loot the Mithila state. Then where lies the hope? Here lies hope. Sh. Bechan Thakur has created a parallel Maithili stage and theatre, a slap on the existing slapstick humouristic Maithili theatre. Sh. Umesh Paswan is a discovery of the Parallel Sahitya Akademi Poetry festival organised by Videha. Sh. Jagdish Prasad Mandal, Sh. Rajdeo Mandal, Sh. Jharudar, Sh. Sandeep Kumar Safi and Sh Umesh Mandal have

pumped their energy, wealth, and time into our Maithili Language. This language will live...proofs are given below: -

Google Translate:

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject

then Wikipedia translate:

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator
http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai
http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai

http://ultimategerardm.blogspot.com/2011/05/bihari-wikipedia-is-actually-written-in.html)

[Monday, May 09, 2011

The #Bihari #Wikipedia is written in #Bhojpuri

This is the kind of article that has many people's eyes glazed over. It is about standards and scientific documents, and it is about languages most of my readers have never heard about. For the people that do speak one of the languages that are considered Bihari, it is extremely relevant, and it has implications for Wikipedia.

This is information provided by Umesh Mandal that explains the "Bihari group of languages" with the Maithili language:

Kellogg (1876/1893) and Hoernle (1880) regarded Maithili as a dialect of Eastern Hindi; Beames (1872/reprint 1966: 84-85), regarded Maithili as a dialect of Bengali, Grierson has done a great service to the Maithili language, however, he erred when he gave a false notional term of "Bihari" language after that western linguists started categorizing Maithili as a dialect of "Bihari" language; although there is nothing known as "Bihari Language" and both Maithili and Bhojpuri are spoken in Bihar (of India) as well as in Nepal.

Umesh is working on the localisation of MediaWiki for the Maithili language and as this language is currently in the Incubator, the language committee does its due diligence and trying to understand if Maithili can have a place in the Bihari Wikipedia. The information provided by Umesh makes it quite clear: "no".

This still leaves us with the misnomer that is the Bihari Wikipedia. The language used for the localisation and the articles is Bhojpuri. Bhojpuri has the ISO-639-3 code "bho".

Are you still following all this? Ok, there is one question I am not asking: How about the Kaithi script?

Thanks, GerardM]

Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22; Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/."Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."-Anshuman Pandey.] ।

TIRHUTA UNICODE See the final UNICODE Mithilakshara Application (May 5, 2011) by Sh. Anshuman Pandey at Page 23 of the Videha 80th issue (Tirhuta version) is attached"Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22" and at Page 12 Videha is included in References Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/. and role of Videha's

editor is acknowledged on Page 12 "Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."]

The Maithili Speaking area is shrinking. It is shrinking due to a conscious-subconscious policy of the Governments of India and Nepal, and the situation became critical due to the invasion of Hindi and Nepali media and the biased educational system in Maithili-speaking areas, and due to the large-scale migration, which has happened in one single generation. The question of Hindi saw to it that Vajjika, Angika and now Thethi, Surjapuri etc. languages should get the tacit support of supporters of Hindi, first in the name of religion and second in the name of caste. Through this they did not support Vajjika, Angika, Thethi or Surjapuri; but they tried to weaken Maithili, which resulted in the weakening of Vajjika, Angika, Thethi and Surjapuri. For all this, the Maithili-speaking people, more so the officials (I will explain it later), are also responsible, as they tried to

delimit Maithili within the two castes and four districts. All other people and areas, than these, were considered northern, southern, eastern, and western deviations of so-called pure Maithili, which was fictitiously considered as being spoken by these Maithil Brahmins/ Karna Kayasthas of Madhubani, Darbhanga, Saharsa and Supaul districts. For the last 45 years the officials, yes, I call them officials, the officials of the Maithili Department of Sahitya Akademi, did not try to accommodate the people outside this fictitiously delimited domain. But the major problem lies somewhere else. The slow poisoning was given in many disguises, be it the faulty top-heavy education system, which neglected primary and middle school education through the Mother Language Maithili, or be it through the concept of dialect, which initially conveniently declared languages like Maithili as dialects. Elementary education through Maithili was a non-starter because the Maithili books published by the Bihar State Textbook Publishing Corporation Limited seemed to be in Avahatt, it was not fit for children. Further, the authors and subjects selected for these books had a casteist bias. Maithili became a tool for

caste-based politics, as once Hindi had been a tool for religion-based politics. Still, these officials, of the Maithili Department of Sahitya Akademi, are residing in their own built ghetto, bereft of any thinking or vision. Another reason for the present plight of Maithili is the policy undertaken by the tax collectors of Mithila (permanent settlement Zamindars of Cornwallis), whom the sycophants call King or the great king (Raja/ Maharaja) or Mithilesh (King of Mithila) these were mere tax collectors, the right for which were given to the highest bidders permanently; and there was not one such Mithilesh (tax collectors), but many within the borders of Mithila. These tax collectors employed mostly those two castes from four districts in their merchandise venture, and as the selection was based on sycophancy, so the work suffered. So, they imported the lathiyals from outside the Mithila region. The masses of Mithila suffered a blow from the double-edged weapon. First, from their people who did not consider them as their own and second, the outsiders looted them. Now after some time these outsiders, the non-Maithili speaking people, found it convenient to declare the masses (not belonging to

the two castes from four districts) as non-Maithili speaking people, and the officials/ sycophants from those two castes from four districts tacitly agreed to it. Now these outsiders, the non-Maithili speaking people, formed a majority in many places of Mithila, and they led the rumour that Maithili, like Samskrit, is an upper-caste phenomenon, and thus they legitimized their anti-Maithili stance (all these facts have been brilliantly dealt with in the Maithili Novels of Sh. Jagdish Prasad Mandal) and they propagated the case of Hindi, first based on religion and second based on caste. But why our people fell into their trap, why these tax-collector Maharajas did not consider the masses of Mithila as their own and imported the perpetrators to loot their masses? The simple answer is that merit took a downward leap in auction-based tax collection rights allocation.

We started from one and reached number three, then thirty and now three hundred!! and we are growing-... and are three hundred not out and are creating a grand history. http://www.videha.co.in/ Videha Ist Maithili Fortnightly e-Journal ISSN 2229-547X has e-published its 300th issue recently. When I began this venture in the year 2000 with a Samsung

TV net appliance, and when the existing was posted on 5th of July 2004, I moved all alone. Then on 31st January 2007, I suddenly thought to include the public, as after some groundwork I was ready for it. I decided to e-publish Videha and did publish it, on a fortnightly basis, the first issue that came on 1st January 2008 tried to include all the previous posts.

From all corners of this planet earth, the people tried to change the destiny of Mithila and Maithili. Now Sh. Ashish Anchinhar, Sh. Munnaji (Manoj Kumar Karn), are part of our team; and together we are three hundred not out now. With three hundred plus issues, 30,000 pages of Maithili literature (one hundred lac words corpora) creation and 11000 Tirhuta manuscript transcription we maintained a 50000-word Maithili-English vocabulary database. Now we are 350 strong, with 350 authors.

Videha has faced challenges and has withstood them. We never shirk from any question and/ or problem. The question of the state of Mithila is one such question which often comes calling. We are in favour of the states of Mithila within the sovereign borders of India and Nepal. We are in favour of Mithila. But which type of Mithila, that type that we had during

the Zamindari Raj, where means of sustenance and avenues of existence remained limited for a few castes? Or that culture that existed within "Aryavarta-Indian Nation newspaper" and other Industries during that Raj. A dozen families of Mithila galloped all these mostly from a single caste!! No, we are not in support of that Mithila, that Mithila where Maithili would be swallowed, as it is being swallowed by the Sahitya Akademi and the CIIL, swallowed by another dozen families. We are not in favour of that Mithila where the proceeding of the legislative assembly would be held in a language other than Maithili. Till the misgivings of the people of Mithila are addressed, we cannot support any Mithila state movement. So the people striving hard for Mithila state should sit on a protest before the advisory board members of the Sahitya Akademi/ CIIL and sing patriotic songs in front of their houses, and pressurise them not to misuse government funds by unscrupulously awarding functions of Akademi outside Mithila and not to misuse the power of assigning translation and other rights to themselves and to those people who are hell-bent upon destroying our language. The RTI application by Sh.

Vinit Utpal has thwarted an attempt to strangulate Maithili, but if the supplementary work is not done the sinister design would resurface again. We request the Maithili advisory board members of Sahitya Akademi immediately return their assignments taken in their name and the name of the members of their family. Otherwise, pressure should be mounted to force these 10-member Maithili Advisory Board members to voluntarily resign from their membership in the larger interest of Maithili. So, what is our answer viz-a-viz demand of Mithila state: it is a categorical Yes.

The technology-centric venture called Videha became a success. The native speakers of Maithili reside in Bihar (of India) and South-East Nepal. The net connectivity had been extremely poor in these areas. Then how the authors, new and old, started using Unicode for writing for Videha. The Nepal Side of Mithila had been using Preeti, Kantipur, Himala etc. fonts, the Kolkata Maithili-speaking population had been using the Marathi fonts and the rest had been using the fonts based on the old Remington keyboard. All these three types of fonts are ASCII fonts. We researched these fonts and provided font

converters to our Nepal-based authors. We also provided phonetic and Remington-based Unicode writers to all Maithili authors, who asked for them. We asked the authors if they may send their creations in any font, but at the same time, we encouraged them to use Unicode fonts. The technical support that we provided resulted in numerous receipts of typed entries from persons like Sh. Gangesh Gunjan, who in earlier stages had been sending their creations in their handwritings. As Sh. Gangesh Gunjan was well versed in Remington keyboard typing, so he made wonderful use of the Remington Unicode typewriter. He sent that software to some of his friends too and he was courteous enough to intimate about this to us, although there was no need for that. Sh. Saketanand also used that software and sent his short story कालरात्रिश्च दारुणा in Unicode, and it was published in one of the issues of Videha. The technology-centric venture called Videha became a success because we made it simple and intelligible at a time when even the technologists were not sure about the future of this Unicode. The virtual medium was being seen with anxiety by the literary fraternity, and the copy-paste system of theft

was rampant in those days. But we assured the authors that with Videha they may rest assured that the copyright thieves would not be spared, while at the same time we were firm, that only for fear of misuse of technology we should not stop our venture midway. With the internet and technology, the geographic barrier became non-existing. The end of the problem of distribution in Maithili literature became possible due to our technology-friendly attitude and it proved a boon for our Maithili language. And it made the technology-centric venture called Videha a success... It is the success of the parallel Maithili literature movement.

III

HONOUR KILLING OF GANGESH UPADHYAYA (FIRST BY RAMANATH JHA, THEN BY UDAYANATH JHA 'ASHOK' *(A PARALLEL HISTORY OF MITHILA AND MAITHILI LITERATURE, WHY TODAY ITS NEED BEING FELT MORE INTENSELY?)*

I was not surprised, though I must have been when I saw a monograph on Gangesh Upadhyaya, whose copyright is being held by Sahitya Akademi, the author of the monograph is Udayanath Jha ' Ashok'.

I thought that Udayanath Jha ' Ashok', who has been given Bhasha Samman also, by the same Sahitya Akademi, would do some justice. But truth and research seem elusive in Sahitya Akademi monographs, at least that I found in this monograph.

I searched and searched through chapters, that now the author will show courage. But the author like Ramanath Jha seems ashamed of the roots and offspring of Gangesh Upadhyaya. He tries to confuse the issue, but there is no confusion now at least since 2009. But in 2016 Sahitya Akademi seems to carry out the casteist agenda. Udayanath Jha mockingly pretends to search his name, lineage etc, where nothing is there to search for, yet he could not muster the courage, to tell the truth, and ends up just repeating the facts in 2016 that Dineshchandra Bhattacharya already has published way back in 1958.

The honour killing of Gangesh Upadhyaya by Prof. Ramanath Jha is being taken forward by Sahitya Akademi, Delhi in a most hypocritical way.

Ramanath Jha's obscurantism *vis-a-vis* Panji is evident from one example. The inter-caste marriage

in Panji was well known to him (but he chose to keep the Dooshan Panji secret- which has been released by us in 2009), and it was apparent that the great navya-nyaya philosopher Gangesh Upadhyaya married a "Charmkarini" and was born five years after the death of his father (see our Panji Books Vol I & II available at http://videha.co.in/pothi.htm). Sh. Dinesh Chandra Bhattacharya writes in the "History of Navya-Nyaya in Mithila". (1958)

" *The family which was inferior in social status is now extinct in Mithila----- Gangesha's family is completely ignored and we are not expected to know even his father's name-----...As there is no other reference to Gangesa we can assume that the family dwindled into insignificance again and became extinct soon after his son's death.*" [1958, Chapter III pages 96-99), which is a total falsehood. He writes further that all this information was given to him by Prof. R. Jha, and he seemed thankful to him.

The following excerpt from Our Panji Prabandh (parts I&II) is being reproduced below for ready reference:

-

महाराज हरसिंहदेव- मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरसिंहदेव नायक आकि राजा छलाह। 1294 ई. मे जन्म आ 1307 ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ 1324-25 ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन। मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्धक ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य आधिकारिक स्थापक, मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त एहि हेतु प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हरसिंहदेवक प्रेरणासँ- आ ई हरसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छलाह, जे नान्यदेव कार्णाट वंशक १००९ शाकेमे स्थापना केने रहथि- नन्दैद शुन्यं शशि शाक वर्षे (१०१९ शाके)... मिथिलाक पण्डित लोकनि शाके १२४८ तदनुसार १३२६ ई. मे पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। पुनः वर्तमान स्वरूपमे थोडे बुद्धि विलासी लोकनि मिथिलेश महाराज माधव सिंहसँ १७६० ई. मे आदेश करबाए पञ्जीकारसँ शाखा पुस्तकक प्रणयन करबओलन्हि। ओकर बाद पाँजिमे (कखनो काल वर्णित १६०० शाके माने १६७८ ई. वास्तवमे माधव सिंहक बादमे १८०० ई.क आसपास) श्रोत्रिय नामक एकटा नव ब्राह्मण उपजातिक मिथिलामे उत्पत्ति भेल।

So, the Srotriyas as a sub-caste arose around 1800 CE as per authentic panji files. *Sh. Anshuman Pandey [Gajendra Thakur of New Delhi provided me with digitized copies of the genealogical records of the Maithil Brahmins. The panjikara-s whose families have maintained these records for generations are often reluctant to allow others to pursue their records. It is a matter of 'intellectual property' to them. I was fortunate enough to receive*

a complete digitized set of panji records from Gajendra Thakur of New Delhi in 2007. [Recasting the Brahmin in Medieval Mithila: Origins of Caste Identity among the Maithil Brahmins of North Bihar by Anshuman Pandey, A dissertation submitted in partial fulfilment of the requirements for the degree of Doctor of Philosophy (History) in the University of Michigan 2014].

Later these Panji Manuscripts were uploaded to Videha Pothi at **www.videha.co.in** and google books in 2009).

The so-called Maharajas of Darbhanga were permanent settlement zamindars of Cornwallis, and there were so many in British India, but in Nepal there were none. In the annexure of our book (Panji Prabandh vol I&II), we have attached copies of genealogy-based upgradation orders (proof of upgradation for cash). So, before 1800 CE, there was no srotriya sub-caste in British India and there is no such sub-caste within Maithil Brahmins in Nepal part of Mithila even today. Srotriya before that referred to following some education stream in British India, in Nepal it still has that meaning.

ORIGINAL PANJI REFERENCES ARE PLACED BELOW:

DOOSHAN PANJI- THE BLACKBOOK

४९.

१८८/२	चर्मकारिणी	माण्डर	वभनियाम	छादन
तत्त्वचिंतामणि कारकगंगेश	छादनगंगेशक	नाँई	*रत्नाकरक-मातृक (अज्ञात)*	गंगेश
	वल्लभा	भवाइ	माहेश्वर	
			जीवे	

२१//१० छादनसँ तत्व चिन्तामणि कारक जगद्गुरु गंगेश

छादनसँ तत्व चिन्तामणि कारक

गंगेशक वल्लभा चर्मकारिणी पितृ परोक्षे पञ्च वर्ष व्यतीते तत्व चिन्तामणि कारक गंगेशोत्पत्ति- **चर्मकारिणी मेधाक सन्तानक लागिमे छलन्हि**

छादन सँ तत्व चिन्तामणि कारक मōमō गंगेश

''तत्व चिन्तामणि कारक म. म. पा. गंगेशक विषयक लेख प्राचीन पञ्जीसँ उपलब्ध�।।

पितृ परोक्षे पंच वर्ष व्यतीते गंगेशोत्पत्तिः इति प्राचीन लेखनीयः कुत्रापि

देवानन्द पञ्जी ३९-२ छादनसँ जगदगुरू गुंरू गंगेश सुताय वभनियामसँ जयादित्य सुत साधुकर पत्नी

देवानन्द पञ्जी ३३९-३ जगदगुरू गंगेश सुत सुपन दौ भण्डारिसमसँ हरादित्य दौ.।। पुत्र सुताच गोरा जजिवाल सँ जीवे पत्नी ए सुत सन्दगहि भवेश्वर। अत्रस्थाने सुपनभ्रातृ हरिशर्म्म दारिति क्वचित् जजिवाल ग्राम

देवानन्द पञ्जी ३०=५ छादनसँ उपायकारक म.म. पा. वर्द्धमान सुताच खण्डवलासँ विश्वनाथ सुत शिवनाथ पत्नी गंगेश- म.म. वर्द्धमान/ सुपन/ हरिशर्म्म

Gangesh, the author of the Tattvachintamani, wrote one text equivalent to 12,000 texts. Now come to the fact mentioned in the Panji- it clearly states that Gangesh of Tattvachintamani was born five years after the death of his father and he married a tanner, so why did Ramanath Jha hide this from Dinesh Chandra Bhattacharya? Vardhamana, son of Gangesh, calls Gangesh *sukavikairavakananenduh*. But the conspiracy under which the poems of a famous scholar like Gangesh are not available today is clear from the example given above. Vasudev of Bengal was a classmate of Pakshadhar Mishra of Mithila, he came to study in Mithila, passed the *shalaka* examination and received the title of *sarvabhaum.* Vasudeva memorised the *tattvachintamani* of Gangesh and the *nyayakusumanjali karika* of Udayana. Pakshadhar and other Mithila teachers did not allow writing (copying) *tattvachintamani*. Raghunath

Shiromani, a disciple of Vasudeva, took the right of certification after he defeated his guru Pakshadhar Mishra in a scriptural debate *(shastrartha).* The *Navya Nyaya* school was founded in Navadvipa by Vasudeva-Raghunath. Pakshadhar Mishra was a contemporary of Vidyapati (distinct from the Padavali writer who was of the pre-Jyotirishwar period) who wrote in Sanskrit and Avahatta. And the arrival of Mithila students of Bengal from Bengal stopped after Raghunath Shiromani. Gangesh Upadhyaya enjoyed *'param guru'* as well as *'jagad guru'* titles, the highest titles of the time and as per Panji only Vacaspati Mishra II was the other person who enjoyed the title of *'param guru'.* The extinction of Navya-Nyaya School from Mithila, as described above, was a revenge of nature against the honour killing of Gangesh Upadhyaya and his family.

[Translation of the Maithili Short Story, 'Shabdashastram' (based on the true Panji records of Gangesh Upadhyaya) was done by the author Gajendra Thakur himself: published as 'The Science of Words' Indian Literature Vol. 58, No. 2 (280) (March/April 2014), pp. 78-93 (16 pages) Published By: Sahitya Akademi]

3

Kamlanand Jha has written a book on Nagarjun (Maithili's Yatri) where he credits him with giving a new direction to Maithili literature. Chandradhar Sharma Guleri wrote 'Usne kaha tha', a marvellous short story in Hindi, the best one of its time. But his literary corpora is very little in quantity, so if anyone tried to give him credit for giving direction to Hindi short story writing would make himself a laughing stock. And Yatri's Maithili literary corpora is even thinner than Guleri's. Moreover, Rajkamal Chaudhary calls him of the medieval age (Rajkamal Monograph, Subhash Chandra Yadav, Page no 14). He wrote Chitra (25 poems). He wrote, rather hurriedly published his 'Patrahin Nagn Gachh' (44 poems) for Sahitya Akademi Award in Maithili, which he got in 1968. After that he stopped writing in Maithili, so how can he influence anybody when after getting the award one stops writing in that language? This is one example of his instability so far as his ideology is concerned. He became a Buddhist monk when he left for Sri Lanka and became a Brahmin again when he returned after a 2nd sacred thread ceremony performed in his village. This is

another example of his instability so far as his ideology is concerned. Kamlanand Jha does not know Maithili literature. His comments should be exposed, as he tries to give a bad name to the great tradition of Maithili literature. There were mainstream writers, but there were writers of parallel tradition also (see below Annexures 1 & 2). He has confused the Sanskrit and Avahatt Vidyapati Thakkurah with the Padavali writer pre-Jyotirishwar Vidyapti. He should read the writing of Vijay Kumar Thakur, a leftist historian, who has given ample light on pre-Jyotirishwar Vidyapati. [*My article on Vidyapati in Prabandh Nibandh Samalochna Vol.II (available in Videha Archive) covers all these, the logo of Videha is the photograph of Pre-Jyotirishwar Vidyapati, sketched by Panak Lal Mandal, recipient of Videha Samman for fine arts.*]

Annexure 1

चन्दा झा (१८३१-१९०७), मूलनाम चन्द्रनाथ झा, ग्राम- पिण्डारुछ, दरभंगा। कवीश्वर, कविचन्द्र नामसँ विभूषित। ग्रिएर्सनकेँ मैथिलीक प्रसंगमे मुख्य सहायता केनिहार। कृति- मिथिला भाषा रामायण, गीति-सुधा, महेशवाणी संग्रह, चन्द्र पदावली, लक्ष्मीश्वर विलास, अहिल्याचरित आऽ विद्यापति रचित संस्कृत पुरुष-परीक्षाक गद्य-पद्यमय अनुवाद।

१

न्यायक भवन कचहरी नाम।

सभ अन्याय भरल तेहि ठाम॥

सत्य वचन विरले जन भाष।

सभ मन धनक हरन अभिलाष॥

कपट भरल कत कोटिक कोटि।

ककर न कर मर्यादा छोटि॥

भन कवि 'चन्द्र' कचहरी घूस।

सभ सहमत ककरा के दूस।

२

रतिया दिन दुरगतिया हे भोला!

गैया जगतक मैया हे भोला

कटय कसैया हाथ

हाकिम भेल निरदैया हे भोला

कतय लगायब माथ

बरसा नहि भेल सरसा हे भोला

अरसा कए गेल मेह

रतिया दिन दुरगतिया हे भोला

जन तन जिवन संदेह

मुखिया बड़ बड़ सुखिया हे भोला

अन्नबक दुखिया डोल

के सह कान कनखिया हे भोला

सुखिया बिरना टोल

३

अस्त्र शस्त्र रोक आब मामिलाक मारि।

भाइ भाइकैँ पढ़ैछ नित्य नित्य गारि॥

ठक्क लोक हक्क पाब साधु कैँ उजारि।

दैव जे ललाट लेख के सकैछ टारि?

चाही नहि धन, ललितवाम, पकवान जिलेबी,

मनोविनोदक हेतु अमरपति सदन न टेबी।

ई अन्तर अभिलाष हमर करुणामयि देवी

भक्ति भाव सँ सतत अहिंक पदपंकज सेवी॥

अन्न महग, डगमग अछि भारत, हयत कोना निस्तारा

उत्तर पश्चिम भूमि अगम्या पर्वत असह तुषारा।

धर्म-विरोधी सहसह करइछ, कुमत कथा विस्तारा

करथु कृपा जगजननी देवी महिसीवाली तारा॥

मिथिला की छलि की भय गेलि,

याज्ञवल्क्य मुनि, जनक नृपतिवर

ज्ञान भक्ति सौं गेलि।

वाचस्पति मिश्रादि जगद्गुरु

निर्जित बौद्ध झमेलि

से शारदा स्वर्ग जनि गेली

बढ़ल कुविद्या केलि।

वर्णाश्रम विधि ककरहु रुचि नहि

श्रुति श्रद्धाकैं ठेलि

पूजा पाठ ध्यान वकमुद्रा

सभटा वंचन खेलि।

कह कविचन्द्र कचहरी भरिदिन

बहुत भोग कर जेलि,

कलह कराय धर्म धन नाशे

कलिक दरिद्रा चेलि।

४

मय केहन भेल घोर हे शिव!

गोधन विपति, धरम अवनति देखि कत हिय करब कठोर॥

साधु समाज राजसँ पीड़ित अति हरषित-चित चोर।

अकुलिन लोकेँ धरणि परिपूरित कुलिन समादर थोड़॥

धरम सुनीति प्रीति ककरहु नहि, खलहिक चलइछ जोर।

कन्द-मूल-फल सेहो अब दुरलभ अन्न गेल देशक ओर॥

किछु शुभ साधन बनि नहि पड़इछ थाकल मन, मति भोर।

कह कवि चन्द्र हमर दुख मेटत होयत कृपा शिव तोर॥

५

सुमरु सुमरु मन! शंकर समय भयंकर जानि।

ककर हृदय नहि कलुषित शासन कलि नृप पानि॥

केवल शिव करुणाकर सेवयित नहि जन हानि॥

भक्ति कल्पलति जानह परम परशमनि खानि॥

कतहु विषयमे न लागह त्यागह अनुचित मानि।

सुखसौँ अन्त विलसबह 'चन्द्र' चूड़ रजधानि॥

ANNEXURE 2

१

फतुरीलालक अकाली कविताअकाली कवित्त /

फतूरीलालक फसली बर्ख १२८१ .ई ७४-१८७३)सनसालक अकाली कविता (

[ग्रियर्सन [(मैथिली क्रेस्टोमैथी एण्ड वोकाबुलेरी)

साल एकासिक वर्णन सुनूचौदिस पड़ल अकाल /
भेल बरिसात खिन्न ऐ सालककहाँ लगि वरनौं हाल /
रोहिणि आदि थीक बरिसातक /जेहिँ एला तेहिँ गेला
म्रिगिसिरा मन पुरल मनोरथदै झीसा किछु गेला /
अरदड़ा आडम्बर भारीगरजत हैं चहु ओर /
पुख रुख राखल धरती केरभेल बरखा केर ओर /
पुनर्वसु थिक बड़ पुनीताओहो बड़ा कसरेस /
बिआ बिड़ारक जे किछु उपटलधनि बरिसल असरेस /
मघा भेल मंगाहिआ कल्लरजगभरि के नै जान /
पुरबा पूर पछ नै राखलककरा करब बखान /
उत्तरा आइ जाय घर बैसलसपतौं लै नै बून /
हथिआ श्रृंग मुँड़ दै मूनलतनिकौं लागल घून /
चितरा चित मित नै राखलओहो भेल डाकू धाती /
नाक रंगौलन्हि सभै नछत्तरदोम नुकौलन्हि खाती /
जोतिष पढ़िसाधि भूगोल-साधि /पढ़ि जे जन ऐलाह-
रेखागणित बीजसौं ओआकिफतनि कौं कच्ची बोल /
श्रीराम कृपागति ओहो ने जानथिजाहि कृपा सभ काज /
पानिक प्रश्न कबौं जौं पुछिऐन्हिसेहो कहैत होइन्हि लाज /
जेहिखन नदी नाल नै भरलेतेहिखन रौदी सरती /
बिना जले जग किछु नै उपजलदगध भेल छथि धरती /
ते नर रौदीक आगम बूझलजे छल कृषि किसान /
दैव बेपच्छ पच्छ नै राखलजड़ि कटौलक धान /

कोदो मड़ुआ एको ने उपजलनै उपजल किछु साम /
गम्भड़ी गद्दरि खेतहि सुखाएलभेल विधाता वाम /
मर्तभुवनमे के कर रच्छाकहाँ जाइ कैं भागि /
सुखल पताल हाल नै ओतहुँलागल आगि सगरहुँ /
धृक जीवन ओइ नृपति इन्द्रकैंजे रोकल गहि पानि /
जीवाजन्-तु विकल पुहमीमेताकैं हो नै आनि /
रवीने खेढ़ी औ चीन /राय एको नै उपजल-
घरदुरदिन भेल अब बीन /नारी-घर सोच करै नर-
धनिक लोक सभ मनहि मगन छथिराखथि बहुतो ढेरि /
हसोथि रुपैया घर कै राखथिसेर महगी भेल अब /
केओ कुरथी खेत मासु बेसाहलजाहि कौड़ि छल अपना /
कतेक जना हरिवासर ठानलभात बहुत कै सपना /
कतेक जना मिलि जनेर बेसाहलनिरधन बैसल तकइ /
भेल धनन्तिरि दूइ फसिल जगराहड़ि आओर मकइ /
काल पड़ल तिरहुतिमे भारीतैं ई बहि गेल हावा /
घरफाँकि मकइ केर लावा /नारी-घर मगन करै नर-
मालिक और महाजन सभकैंघर ढेरी अन्न-घर /
लोक बुझाओन ओहो तकै छथिमूँह / गरीबक सन
समै देखि बनिआँ सभ सनकलडरैं लगौलक टट्टी /
सुन्न दोकान सहरमे परि गेलसुन्न भेल सभ चट्टी /
सूखल गात बात भौ लटपटकतेक बात अब सहना /
नर नारी सभ सान तेआगलबिकरी भेल अब गहना /
मँगटीका खूटी औ तड़कीनकमुन्नी नै नाक /
कटसरि बिछिआ औ झिमझिमिआँबाजूबन्द औ बाक /

चन्द्रहार, हैकल औ सिकड़ीऔर घमौरिक दाना /
सूति, नवग्रह औ पचखँड़ीलशुनी भेल निदाना /
तापर दर्बजात नै बचलेकरम भेल निखट्ट /
तमघैल, अढ़ैआ औ पिकदानीनै तसला औ तटू /
बाटी, बट्टा औ पनबट्टाभोजन करैक थारी /
माधव सीहि सहित सोबरनानै बचले घर झाड़ी /
धन संपति घर किछु नै बचले/ सभटा पड़ि गेल बंधक
तैओ भूख छुटल नै ककरोएहन पेट भेल खंधक /
दैब अंश अबतरल कम्पनीजा पर राम सहाए /
मिथिलापुर बूड़न जब लागयसे सुनि पहुँचल धाए /
खरिद अनाज जहाजहिँ बोझलभरती करि करि बोरा /
सदर तिलंगा ओआ पर भरतीऔर ओलाइति गोरा /
हाजीपुरमे लाख हजारमकै लाखन हइ पटना /
बाजितपुर सुलतानपुर गोलानै जानत हौँ केतना /
गाड़ी, बैल, छकड़, ऊँट बिहारेउबहत हइ सभ दाना /
मिसर कन्हैआ कैँ पोखरन मेपहिलुक अड़ी ठेकाना /
श्री लक्ष्मीश्वर सिंह नृपतिमहाराज मिथिलेश /
अचल राज दड़िभंगाश्रीपति हरहिं कलेश /
गाड़ी बैल लाखन हजारनताकैँ परे घड़ेर /
पहिलुक गोला मधुबन, भौड़ाजफरा और अड़ेर /
बेनीपट्टी, औ पचमहलाकुम्हरौल औ कमतौल /
हरिहरपुर, पिड़ारुछ बरनौंकारज केतेकाँ बरिऔल /
बारि पोखरि, बिरसायर बरनौंपण्डौल को नै जान /
नवहद, सरिसो ओ भटपुरा, ता सौँ दक्षिण उजान

झंझारपुर, महरैल, कन्हौलीमधेपुर हइ खास /
बेनीपुर, कमान, नरैहिओबरनौं फूलपरास /
झमना हइ जगजानित जगमेमहथा और बछौर /
दुहबी औ महिनाथपुरऔर जैनगर तक हइ दौर /
बलदेबपुर औ ढंगा बरनौंमिरजापुर लघु हाट /
सीबीपटी औ कपसीआसदर गोला सौराठ /
गुरबाकैँ परबरसी हाकिमकर तिरहुतमे आके /
नै तो मरते कत नर नारीबाले बचे सुखा के /
कत मुरदा गरदा मै मिलतेअसंख जीव चल जाता /
सर समधी कैँ संभा ने लम्भननै बचते जलदाता /
सभकैँ सभ उपछै भै गेलधुर पोखर औ सड़क /
रहि गेल ब्राह्मण सोती पण्डितकायथ पछिमा ठाकुर फरक /
केओ ओरसिअर नाम लिखाओलभैँट केओ मोहर्रिर /
धर्म्मकार्यमे लुटथि रुपैआतैँ भेल सभ केर भैँट /
केओ जमानत दैकैँ बचलाहजिनका अमला नेही /
ककरो मारि कैँत पिठि तोड़ैन्हिउतरैन्हि जन्मक ठेही /
ककरहुँ गारत गात सुखाओलबहुतो होअय चलाना /
मातुपिता घर परिजन रोवयबाबू गेलाह जहलखाना /
ककरहुँ घर भेल खानातलासीभेट मोहर्रिर घोँछ /
केओ अदालतिमे डिड़िआइ छथिककरहुँ उपरैन्हि मोँछ /
एतना सुनि हाकिम रिसिआओलतैँ लागल जन ठीका /
नाक रंगौलन्हि सभै मोहर्रिरलागल चूनक टीका /
जोग, बिकौआ,लौकिक वंशककिरिआमंत सुकूल /
गाछी, बाँस, बैल औ महिसिजगह कैल भकफूल /

ताहि रुपैआ सौँ करा गजररीन लै कोरट सौँ /
तेँ कारन बहुतो घर झगड़ाभाइ भतीजा भीन /
आए लाट बहादुर औ /दड़िभंगा धाम
बाबू औ बबुआन सहित मिलिकीन्ह कुमैटी खान /
......
......
......
एह सभ संग बैठि कैजाय कुमैटी भेल /
अजब कार सरकार केतिरहुत पहुँचल रेल /
बाजितपुरसँ सड़क निकालैआये दौड़िह दौड़ी /
हहेया गंडक पुल बन्हाएआए चौरही चौरी /
धर्म्मधीर, बलबीर, कम्पनी जानत हइ /जगदीशन
लछमी सागर के पोखरिमेताहि कीन्ह इसटीसन /
बड़ा लाट कलकत्तेवालेश्रीदुर्गा होए संग /
आगरा के छोटा लाल बहादुरबैठे सभ एकरंग /
जुटे कमिश्नर और कलट्टरबोलहिं बात नेअंट /
एह पाचो इजलास पर बैठेऐह जंट संग जात /
खबरि गए अखबार मौँमैथिल के एह हाल /
सुनहु फिरंगी अवण दैकेँमेटहु दुख के जाल /
हुकुम दीन्ह दोउ लाट कोसुनहु हमारे बैन /
मदति करहु रेआआनकोक्या बैठे हौ चैन /
बड़ा लाट दोउ बीर उठाएसाहेब औ जरनैल /
मेजर मजिस्टर और कलट्टरसंगजात करनैल /
देस देससौँ अन्न मंगाओलदीन्ह सभनि के दाम /

महामूँग, गहुम औ चाउरबजड़ा और बदाम /
डोली, पटना औ भटसारेदीली औ अजमेर /
आगरा और कान्हपुर ढाकाजहाँ अन्न के ढेर /
भए रमाना अन्न तिरहुतिमेलादि गाड़ी और बैल /
गज, तुरंग, गदहा औ छकड़संग सिपाही छैल /
छत्री औ पैठान मोगल सभबाँकाबीर रजपूत /
सोभा बरनि नजात हइजैसे हनुमन्त दूत /
आगे सफर ओ मैनापलटन वीर जमान /
बरछी औ तरुआरि गहैकर गहै तीर कमान /
चढ़ि तुरंग पर करै कवाइतजमादार होए संग /
सोभा बरनि न जात हइदेखि तखनुक रंग /
करत काम सभ धाममेटूट अट सभ लूट /
ढाहि भीड़ गाछी सहितबान्धै सड़क औ पूल /
जिले पटने औ भटसारेप्रगन्ना महिसौर /
तहाँ बसहिँ एक सज्जनतेहि घर जा लक्ष्मी दौड़ /
श्री द्वारिका प्रशादितधर्म्मधीर बुद्धिमान /
तहसीलदार कोरट के खासाजानहिं सकल जहान /
बाबु इसरी प्रसाद दियौटीसो मधुबनमे आए /
हुकुम दीन्ह सुपरनडेंटकैँटोले टोले होए जाए /
मन पँचा मनगर भै लिएखैरात बहुतो लिए /
धन्य धन्य अंगरेज बहादुरसभकैँ जूटल गात /
गरिब, गनी, गुरबा, करु जै, जैब्राह्मण देत असीस /
श्री रघुनाथ बढ़ै बदसाहीगदी लाख बरीस /

फतुर लाल कवि बरनत हैंएह रौदी के हाल /
गौरमिंट गौरनल बहादुरतिरहुति राखहिँ बहाल /

२

राधाकृष्ण चौधरी (मिथिलाक इतिहास) (विदेह पेटारमे उपलब्ध(

"१७७० क अकाल मिथिलाक इतिहासमे अद्वितीय छल आ मिथिलाक जनसंख्या घटिकैँ एक दम्म कम्म भऽ गेल छल। १८७३मे पुनः एकटा ओहने ७४-अकाल मिथिलामे भेल छल जकर विवरण हमरा फतुरी लाल कविक अकाली कवित्तसँ भेटइयै, अकाली कवित्त अप्रकाशित अछि। अकालकैँ दूर करबाक हेतु आ मजूरकैँ रोजी देबाक हेतु ताहि काल रेलगाड़ीक योजना चलाओल गेल जकरा सम्बन्धमे फतुरीलाल लिखैत छथि-

'कम्पनी अजान जान कलनको बनाय शान।
पवन को छकाय मैदानमे धरायो है॥
छोड़त है अड़ादार बड़ा बीच धाय धाय।
सभेलोग हटाजात केताजात खड़ा है॥
तारकी अपारकार खबरि देत वार वार।
चेत गयो टिकसदार रेल की उवाई है॥
करत है अनोर शोर पीछे कत लगत छोर।
जोर की धमाक से मशीन की बड़ाई है॥
कम्पूसन पहरदार कोथी सब अजबदार।
कोइला भर करल कार धूआँसे उड़ायो है॥
बाजा एक बजन लाग हाथी अस।
पिकन लाग जैसा जो चढ़नदार वैसाधर पायो है॥

गंगाकेँ भरल धार उतरि गयो फतूर पार गाड़ीकी।
अजबकार कवित्त यह बनाया है॥' "

-Gajendra Thakur, editor, Videha (be part of Videha www.videha.co.in -send your WhatsApp no to +919560960721 so that it can be added to the Videha WhatsApp Broadcast List.)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

८.विदेह मिथिलाक खोज

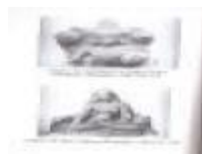
विदेह मिथिलाक खोज

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

प्रस्तुत अछि विदेह, मिथिला, तीरभुक्ति आ तिरहुतक नामसँ विख्यात वर्त्तमान भारत आ नेपालमे पसरल माटिक प्राचीन आ नव स्थापत्य, चित्रांकित अभिलेख आ मूर्त्तिकलाक एकटा छोट संग्रह। ऐ संग्रहकेँ पूर्ण करबाक हेतु अपन बहुमूल्य संग्रह editorial.staff.videha@gmail.com केँ पठाउ। आर्काइवक सर्वाधिकार रचनाकार, सम्बन्धित फोटोग्राफर आ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि। फोटो सभ पठेबा लेल धन्यवाद पाठकगण। साभार। विशेष विवरण देखबा लेल क्लिक करू, ***दर्शनीय मिथिला, Brochure 1, Brochure 2, Brochure 3 , Brochure 4, Brochure 5 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक), IGNCA ASI (Cultural Heritage of Mithila-*** *search keyword Mithila),* ***Temple Survey Project ASI- English*** *आ* ***Hindi*** *.पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र एकेडमिक प्रयोग लेल।*

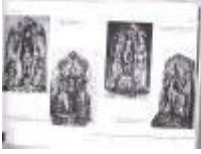
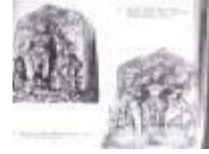
 भुवनेश्वरी भगवतीपुर (Madhubani, Bihar) बौद्ध तारा सँ समानता नाकमे कुण्डल देखू	 सूर्य भगवतीपुर (Madhubani Bihar)	 विष्णु भगवतीपुर (Madhubani, Bihar)
 दुर्गा, पोखरिसँ भेटल, ओतहि बहेरी मन्दिर	 हरद्वार मन्दिर घनश्यामपुर	 गौरीशंकर, जमथरि, हैंठी बाली, मधुबनी

(बजारसँ दक्षिण)मे स्थापित	(दरभंगा)- चोरि भऽ गेल	
गौरीशंकर, जमथरि, हैंठी बाली, मधुबनी	गौरीशंकर, जमथरि, हैंठी बाली, मधुबनी	गौरीशंकर, जमथरि, हैंठी बाली, मधुबनी
गौरीशंकर, जमथरि, हैंठी बाली, मधुबनी	गौरीशंकर, जमथरि, हैंठी बाली, मधुबनी	बाइसी-बसैटी, अररिया मिथिलाक्षर ताम्रलेख
बाइसी-बसैटी, अररिया मिथिलाक्षर ताम्रलेख	बाइसी-बसैटी, अररिया मिथिलाक्षर ताम्रलेख	बाइसी-बसैटी, अररिया मिथिलाक्षर ताम्रलेख
धरहरा, बनमनखी, पूर्णियाँ, नरसिंह अवतार	धरहरा, बनमनखी, पूर्णियाँ, नरसिंह अवतार	पूरणदेवी, पूर्णियाँ

 बिदेश्वर स्थान अभिलेख, मधुबनी	 अन्ध्राठाढी अभिलेख, मधुबनी	 बुद्ध अष्टधातु, सिसव बसंतपुर, बगहा
 12 शताब्दी, कोइलख, मधुबनी	 अग्नि बिदेश्वर स्थान, मधुबनी बुद्ध, मुंगेर	 अहिल्या स्थान
 अन्ध्राठाढी, मधुबनी	 अशोक स्तंभ, बसाढ, वैशाली	 बुद्ध
 अवलोकितेश्वर तारा, भागलपुर	 बसाढ, वैशाली	 बुद्ध भूमिस्पर्श
		

बुद्ध, ताम्र	बुद्ध मस्तक, सुलतानगंज	वैशाली मूर्त्ति
चामुण्डा नाग- नागिनी, मुंगेर	मुकुटधारी बुद्ध, अंतीचक, भागलपुर	नाचैत गणेश, 10म शताब्दी, दरभंगा
दरभंगा म्युजियम	दरभंगा म्युजियम	दुर्गा, कार्त्तिकेय
10म शताब्दी, भीट भगवानपुर, अन्ध्रा ठाढी	गणेश बुद्ध	गौतम बुद्ध, वैशाली
हरिहर बुद्ध	चिड़ैकँ खुआबैत महिला, राजमहल	लौरिया नन्दनगढ, अशोक स्तंभ

<table>
<tr><td>
लोमश सुदामा गुफा</td><td>
मुंगेर</td><td>
नागराज तीर्थंकर</td></tr>
<tr><td>
कुमारिल भटट फेकेलाह, नालन्दा</td><td>
विक्रमशिला विश्वविद्यालय, भागल पुर</td><td>
ठाढ बुद्ध</td></tr>
<tr><td>
पार्वती</td><td>
रामायण</td><td>
रामपुरवा वृषभ</td></tr>
<tr><td>
रामपुरवा</td><td>
बुद्धक अवशेष</td><td>
संकिसा</td></tr>
<tr><td>
सप्तमातृका</td><td>
सर्वतो भद्र मण्डल</td><td>
सूर्य</td></tr>
</table>

 सूर्य	 सूर्यक संगी	 सूर्य, मधुबनी आ भागलपुर
 मूर्त्ति	 मूर्त्ति	 मूर्त्ति, वैशाली
 उमा माहेश्वर, कल्याणसुन्दर	 वैशाली वृषभ शीर्ष	 वैशाली, शालभंजिका भागलपुर
 विष्णु बुद्धा	 पाँखियुक्त महिला	 अहिल्या
 अष्टयोगिनी मन्दिर, सहरसा	 बनगंगा	 दरभंगा

 दरभंगा नगर, 1934	 दरभंगा मेडिकल कॉलेज	 दुल्हदुल्हिन मन्दिर, जनकपुर
 गण्डीश्वर	 गंगासागर पोखरि, मधुबनी	 हनुमान मन्दिर, मधुबनी
 हरिहरस्थान	 मधुबनी हॉस्पीटल	 जनकपुर जानकी मन्दिर
 जानकी मन्दिर	 जानकी मन्दिर, सीतामढी	 जानकी मन्दिर, सीतामढी
 जिला स्वास्थ्य कार्यालय राजबिराज, नेपाल	 कलनेश्वर बाबा	 कपिलेश्वर

 कोषलेखाकार्यालय, राजबिराज, नेपाल	 मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा	 लक्ष्मीश्वर पैलेस, 1934
 माध्यमिकविद्यालय , जनकपुर	 महेन्द्र चौक, जनकपुर	 जनकपुर मंडप
 मिथिला, 1988 भूकम्प	 पगलाबाबा धर्मशाला, जनकपुर, नेपाल	 पंडौल अहल्या
 मधुबनी बस स्टैंड	 राज हेड ऑफिस, 1934	 राज हॉस्पीटल, दरभंगा, 1934
		

सौराठ सभा	शिव मन्दिर, 1934	शिवशंकर सिनेमा, मधुबनी
श्यामा मन्दिर	विद्यापति मूर्त्ति, बिस्फी	उग्रतारा, तारास्थान, महिषी, सहरसा
विद्यापति स्मारक, बिस्फी	विस्फी, उदना महादेव	बिस्फी, विश्वेश्वरी भगवती
अहल्या मन्दिर, अहियारी	अशोक स्तंभ, वैशाली	स्तूप अशोक स्तंभ, वैशाली
बलिराजपुर किला पूर्वी गेट	बलिराजपुर किला मीनार	चण्डी स्थान, बिराटपुर, सहरसा

गाँधी पोखरि, ढाका, मोतिहारी	गाँधी विद्यालय, ढाका, मोतिहारी	गिरिजा स्थान, मधुबनी
 हरिहर मन्दिर, सोनपुर	 जैन मन्दिर, भागलपुर	 जैन मन्दिर, वैशाली
 कमलादित्य स्थान	 कपिलेश्वर शिव मन्दिर	 लौरिया नन्दनगढ
 मदनेश्वर शिव मन्दिर	 मन्दार पर्वत, बाँका	 मोतिहारी सत्याग्रह स्मारक
 परमेश्वरी मन्दिर, ठाढी, मधुबनी	 रामजानकी मन्दिर, सीतामढी	 सत्याग्रह स्मारक, सीतामढी
		

शांति स्तूप, वैशाली	उच्चैठ भगवती	उच्चैठ मन्दिर
सिंघेश्वर स्थान, मधेपुरा	सूर्यधाम, परसा	उग्रतारा मन्दिर, महिषी, सहरसा
वैशाली स्तूप	विक्रमशिला विश्वविद्यालय, भागलपुर	विराटपुर मन्दिर, मधेपुरा
वृषभ शीर्ष, रामपुरवा	सिंह शीर्ष, रामपुरवा	शरभ, नेपाल
पाँखियुक्त देवी, वैशाली	बाबा बडेश्वर, देवना, बनगाँव	वट वृक्ष, बनगाँव

भगवान विष्णु, देवना, बनगाँव	शास्त्रार्थ स्थल,तारास्थान महिषी	शास्त्रार्थ स्थल,तारास्थान महिषी
तारास्थान महिषी	माता तारा, तारास्थान महिषी	उग्रतारा (खादर वाणी तारा) मूर्ति, महिषी
वशिष्ठ मुनि, तारास्थान महिषी	आवर्धित काली उच्चैठ	बौद्धदेवी तारा वारी समस्तीपुर
भगवती देकुली	भगवती गिरिजा फुल्हर	भगवती मृणमूर्ति गन्धबारि
भगवती वारी समस्तीपुर	भुवनेश्वरी कोर्थ	देवीकाली कोर्थ

गंगामूर्ति नगरडीह दरभंगा	गोसाउनि मन्दिर कोर्थ	हैहट्ट देवी हाबीडीह
काली उच्चैठ	महिषासुरमर्दिनी बहेरी दरभंगा	महिषासुरमर्दिनी हाबीडीह
महिषासुरमर्दिनी नाहर-भगवतीपुर	उमा म्लेच्छमर्दिनी मिर्जापुर दरभंगा	यमुना भैरव बलिया मधुबनी
भैरव, भैरव-बलिया	नटराज, तारालाही	शिव-पार्वती मन्दिर, कपिलेश्वरस्थान
शिव-पार्वती मन्दिर, कपिलेश्वरस्थान	शिव मन्दिर, सिंगिया, विस्पी	उमामाहेश्वर, महादेवमठ

 उमामाहेश्वर, तिरहुत	 विष्णु, भवानीपुर	 विष्णु, भीठ भगवानपुर
 विष्णु, जयनगर	 विष्णु, लदहो	 विष्णु, साहो- पररी, हाबीडीह
 शेषशायी विष्णु, सवास, मुजफ्फरपुर	 वराह मूर्ति, तिलकेश्वरस्थान	 मिथिलाक्षर अभिलेख, विष्णु बुद्ध मू र्ति
 भगवती उच्चैठ, बेनीपट्टी	 भगवती वाणेश्वरी, भंडारीसम	 चामुण्डा मन्दिर, कटरा, मुजफ्फरपुर
 अष्टभुज गणेश, हाबीडीह	 अष्टभुज गणेश, कोर्थ	 गंगा, आन्ध्रा-ठाढ़ी

 महिषासुरमर्दिनी, दुर्गा	 म्लेच्छमर्दिनी मन्दिर, मिर्जापुर, दरभंगा	 नटराज
 राममन्दिर, अहिल्यास्थान	 सेहनी, वैशाली, विष्णु तिलक-यज्ञोपवीतधारी	 रूपनगर शिव मन्दिर
 सूर्य, देकुली	 सूर्य मूर्ति, डिलाही	 सूर्य मूर्ति, विष्णु, बरुआर
 उमामाहेश्वर	 यमुना, आन्ध्रा-ठाढ़ी	 सिमरौनागढ़ मूर्ति
		

आदि काली, चैनपुर सहरसा चैनपुर सहरसा- मिथिलाक एकमात्र नीलकंठ मन्दिर, संगमे आदिकालीन भव्य काली- मन्दिर सेहो एहि गाममे अछि। महाशिवरात्रि आ कालीपूजा बड़ धूमधामसँ चैनपुरमे होइत अछि।	त्योथागढ़क स्वामी माध्वानन्द कौलाचार्य काली मन्दिर त्योथा गढ़ लग। पुरान गढ़। एकर पूबमे ब्रह्मपुराक बाबा हरिहरनाथ महादेव मन्दिर आ दक्षिणमे उच्चैठ भगवती छथि।	त्योथागढ़क दसमुखी काली त्योथा गढ़ लग। पुरान गढ़। एकर पूबमे ब्रह्मपुराक बाबा हरिहरनाथ महादेव मन्दिर आ दक्षिणमे उच्चैठ भगवती छथि।
 कोइलख (मधुबनी) देवीक मन्दिर	 अकौर, बेनीपट्टी, भगवती दुर्गा, भगवतीपीठ	 अकौर, बेनीपट्टी, भगवती दुर्गा, भगवतीपीठ
 १.अष्टभुज गणेश, कोर्थ २.शिव मन्दिर, सिंघिया, बिस्फी	 १. बौद्ध देवी तारा, वारी, समस्तीपुर २.उग्रतारा मन्दिर, महिषी, सहरसा	 १.भगवती, वारी २.भगवती, देकुली
 १. भगवती गिरिजा, फुलहर २.काली, उच्चैठ	 १. भैरव, भैरव बलिया २. उमामाहेश्वर, महादेवमठ	 १. देवीकाली, कोर्थ २. गुसाउनि स्थल मन्दिर, कोर्थ



१. गणेश, लहेरियासराय २.उमामाहेश्वर ३. नटराज, ४. विष्णु, तिलक, जनउ धारी, सेहान, वैशाली



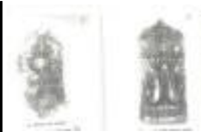
१. गंगा मूर्ति, नगरडीह, दरभंगा २. भगवती मृण्मूर्ति, गन्धवारि



१. हैहट्ट देवी, हाबीडीह २.भुवनेश्वरी, कोर्थ



१. कथित काली, उच्चैठ, २.अष्टभुज गणेश, कोर्थ



१. महिषासुर मर्दिनी, हाबीडीह, २.उमा, म्लेच्छमर्दिनी, मिर्जापुर, दरभंगा



१.महिषासुरमर्दिनी, भगवतीपुर, नाहर, महिषासुर मर्दिनी, बहेरी, दरभंगा



१. म्लेच्छमर्दिनी भगवती, मिर्जापुर, दरभंगा २. राम मन्दिर, अहिल्यास्थान



१. म्लेच्छमर्दिनी भगवती, मिर्जापुर, दरभंगा २.सिंहेश्वर स्थान, मधेपुरा



१. नटराज, तारालाही २. उमामाहेश्वर



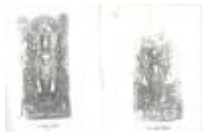
१_शेषसायी, सवास, मुजफ्फरपुर, २_नटराज_तारालाही ३_ भगवती ४_ उमा माहेश्वरी



१-
शिव पार्वती मन्दिर, कपिलेश्वर स्थान २. सूर्य मूर्ति डिलाही



१_ सूर्यमूर्ति, विष्णु बरुआर २. गंगा, आन्ध्रा ठाढ़ी

 १_उच्चैठ भ्हगवती, बेनीपट्टी २_महिषासुरमर्दिनी, दुर्गा ३_ चामुण्डा मन्दिर, कटरा, मुजफ्फरपुर ४._भगवती वानेश्वरी, भण्डारिसम	 १. वराहमूर्ति, तिलकेश्वरस्थान, २.विष्णु, भवानीपुर	 १. विष्णु, जयनगर २.विष्णु, भीठ भगवानपुर
 १_विष्णु, लदहो, २.सूर्य, देकुली	 १_विष्णु_साहो परड़ी, स्थापित-हाभीडीह २.बुद्ध-विष्णु मूर्ति अभिलेख	 १_विष्णु, सेहान, २_वराह ३_गणेश ४.शिव मन्दिर_रूपनगर
 १_यमुना, आन्ध्रा ठाढ़ी, २.अष्टभुज गणेश, हाबीडीह	 १_यमुना, भैरव बलिया, २_शेषसायी, सवास, मुजफ्फरपुर, ३_नटराज_तारालाही ४_ भगवती ५_ उमा माहेश्वरी	 कथित, काली, उच्चैठ, बेनीपट्टी
 मूर्ति (मिथिला क्षेत्र)	 सम्भवतः सूर्य	 वेणुगोपाल, मिथिला



विष्णु, जाले, दरभंगा



विष्णु



विष्णु, ओझौल, दरभंगा

मिथिलाक खोज

ई आलेख हमर दशकसँ ऊपरक मिथिलाक यात्राक उपरान्तक सूत्र-वृत्तान्त अछि आ ऐमे ऐ सभ स्थानक स्थानीय निवासी आ गाइड सभक अकथनीय योगदान छन्हि । कखनो कालतँ भाड़ाक गाड़ीक ड्राइवर लोकनि सेहो नीक गाइड सिद्ध भेला।-गजेन्द्र ठाकुर

"मिथिलायदयश्च मध्यंते रिपवो इति मिथिला नगरी" - मिथिला जतऽ शत्रुकेँ मथल जाइत अछि- पाणिनीक विवरण।

किला आ गढ़

बलिराजपुर किला- मधुबनी जिलाक बाबूबरही प्रखण्डसँ ५ किलोमीटर पूब बलिराजपुर गाम अछि। एकर दक्षिण दिशामे एकटा पुरान किलाक अवशेष अछि। किला चारि किलोमीटर नमगर आ एक किलोमीटर चाकर अछि। दस फीटक मोट देबालसँ ई घेरल अछि।

असुरगढ़ किला- मिथिलाक दोसर किला मधुबनी जिलाक पूब आ उत्तर सीमा पर तिलयुगा धारक कातमे महादेव मठ लग ५० एकड़मे पसरल अछि।

जयनगर किला- मिथिलाक तेसर किला अछि भारत नेपाल सीमा पर प्राचीन जयपुर आ वर्त्तमान जयनगर लग। दरभंगा लग पंचोभ गामसँ प्राप्त ताम्र अभिलेख पर जयपुर केर वर्णन अछि।

नन्दनगढ़- बेतियासँ १२ मील पश्चिम-उत्तरमे ई किला अछि। तीन पंक्तिमे १५ टा ऊँच डीह अछि।

लौरिया-नन्दनगढ़- नन्दनगढ़सँ उत्तर स्थित अछि, एतऽ अशोक स्तंभ आ बौद्ध स्तूप अछि।

देकुलीगढ़- शिवहर जिलासँ तीन किलोमीटर पूब हाइवे केर कातमे दू टा किलाक अवशेष अछि। चारू दिस खधाइ अछि।

कटरागढ़- मुजफ्फरपुरमे कटरा गाममे विशाल गढ़ अछि, देकुली गढ़ जकाँ चारू कात खधाइ खुनल अछि।

नौलागढ़-बेगुसरायसँ २५ किलोमीटर उत्तर ३५० एकड़मे पसरल ई गढ़ अछि।

जयमंगलगढ़- बेगूसरायमे बरियारपुर थानामे काबर झीलक मध्य एकटा ऊँच डीह अछि। एतऽ ई गढ़ अछि। नाओकोठी (मझौल) गाम लग ई गढ़ अछि।

मंगलगढ़- समस्तीपुर जिलामे हसनपुर ब्लॉकमे दुधपुरा बजार लग देओढ गाम लग। भगवान बुद्धक उपदेश एतऽ भेल, स्थानीय राजा मंगलदेवक आग्रहपर बुद्ध किछु दिन एतऽ निवास सेहो केलन्हि।

अलौलीगढ़- खगड़ियासँ १५ किलोमीटर उत्तर अलौली गाम लग १०० एकड़मे पसरल ई गढ़ अछि।

कीचकगढ़- पूर्णिया जिलामे डेंगरघाटसँ १० किलोमीटर उत्तर महानन्दा नदीक पूबमे ई गढ़ अछि।

बेनूगढ़- टेढ़गाछ थानामे कवल धारक कातमे ई गढ़ अछि।

वरिजनगढ़- बहादुरगंजसँ छह किलोमीटर दक्षिणमे लोनसवरी धारक कातमे ई गढ़ अछि।

नेऊरी- दरभंगाक बिरौल प्रखण्डसँ १३ किलोमीटर पश्चिममे एकटा गढ़ अछि जे लोरिकक मानल जाइत अछि।

बुद्ध

कुन्दग्राम- हाजीपुरसँ बत्तीस किलोमीटर उत्तर-पूर्वमे बसाढ़-वैशाली आ लगमे वासोकुण्ड लग गाम गढ़-टीलासँ २ कि.मी. उत्तर-पूर्व अछि कुन्दग्राम , जतऽ जैनक २४म तीर्थंकर महावीरक जन्म भेल छलन्हि। एतऽ बुद्धक छाउर, अभिषेक पुषकरणी (राजा अभिषेकसँ पूर्व एतऽ नहाइत रहथि), अशोक स्तम्भ आ संसद-भवन (राजा विशालक गढ़) अछि।

पजेबागढ़ वनही टोल- एतऽ एकटा बुद्ध मूर्त्ति भेटल छल, मुदा ओकर आब कोनो पता नै अछि। ई स्थल सेहो रखबारी गामक लगे अछि।

मंगलगढ़- समस्तीपुर जिलामे हसनपुर ब्लॉकमे दुधपुरा बजार लग देओढ गाम लग। भगवान बुद्धक उपदेश एतऽ भेल, स्थानीय राजा मंगलदेवक आग्रहपर बुद्ध किछु दिन एतऽ निवास सेहो केलन्हि।

मुसहरनियां डीह- अंधरा ठाढ़ीसँ ३ किलोमीटर पश्चिम पस्टन गाम लग एकटा ऊँच डीह अछि। बुद्धकालीन एकजनियाँ कोठली, बौद्धकालीन मूर्त्ति, पाइ, बर्त्तनक टुकड़ी आ पजेबाक अवशेष एतऽ अछि।

अकौर- मधुबनीसँ २० किलोमीटर पश्चिम आ उत्तरमे अकौर गाममे एकटा ऊँच डीह अछि, जतऽ बौद्धकालक मूर्त्ति अछि।

लौरिया-नन्दनगढ़- नन्दनगढ़सँ उत्तर स्थित अछि, एतऽ अशोक स्तंभ आ बौद्ध स्तूप अछि।

विक्रमशिला- भागलपुरमे स्थित प्राचीन विश्वविद्यालय। भागलपुर जिलाक अंतीचक गाममे राजा धर्मपालक बनाओल बुद्ध विश्वविद्यालय अछि। १०८ व्याख्याता लेल रहबाक स्थान आ बाहरसँ पढ़य बला लेल सेहो स्थान एतऽ निर्मित अछि।

चम्पानगर- भागलपुरक पश्चिममे, आब नगरसँ सटि गेल अछि। ई जैन लोकनिक एकटा पवित्रस्थल अछि, एतऽ महावीर तीनटा बस्सावास केने रहथि। दू टा जैन मन्दिर एतऽ अछि, जे जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथकेँ समर्पित अछि। महावीर विदेहमे छह टा बस्सावास बितेलन्हि। बर्खा ऋतुमे चारि मास एक ठाम निवासकेँ बस्सावास कहल जाइ छल। बुद्ध एकोटा बस्सावास विदेहमे नै बितेलन्हि, मुदा वैशाली नगरीमे आम्रपालीक उद्यानमे लिच्छवीगणकेँ सन्देश देने छला। आम्रपालीसँ भिक्षा ग्रहण कऽ बुद्ध गेला वेणुमती करय चारि मासक बस्सावास।

अभिलेख

गौरी-शंकर स्थान, मधुबनी जिलाक जमथरि गाम आ हैंठी बाली गामक बीच ई स्थान गौरी आ शङ्करक सम्मिलित मूर्त्ति आ ऐपर मिथिलाक्षरमे लिखल पालवंशीय अभिलेख। बिदेश्वरस्थानसँ २-३ किलोमीटर उत्तर दिशामे ई स्थान अछि।

भीठ-भगवानपुर अभिलेख- राजा नान्यदेवक पुत्र मल्लदेवसँ संबंधित अभिलेख एतऽ अछि। मधुबनी जिलाक मधेपुर थानामे ई स्थल अछि।

भगीरथपुर- पण्डौल लग भगीरथपुर गाममे अभिलेख अछि जइसँ ओइनवार वंशक अंतिम दुनू शासक रामभद्रदेव आ लक्ष्मीनाथक प्रशासनक विषयमे सूचना भेटैत अछि।

मंदार पर्वत- बांका स्थित स्थलमे मिथिलाक्षरक गुप्तवंशीय ७म् शताब्दीक अभिलेख अछि। समुद्र मंथनक हेतु मंदारक प्रयोग भेल छल। निकटमे बौंसीमे जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथक दूटा मूर्त्ति अछि, पैघ मूर्ति लाल पाथरक अछि तँ दोसर काँसाक जकर सोझाँ दूटा पदचिन्ह अछि। जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथक जन्म चम्पानगरमे आ निर्वाण एत्तै भेल छलन्हि।

बिदेश्वर- मधुबनी जिलामे लोहनारोड स्टेशन लग स्थित शिवधामक स्थापना महाराज माधवसिंह केलन्हि। तइ युगक मिथिलाक्षरक अभिलेख सेहो एतऽ अछि।

बसैटी (बाइसी-बसैटी), अररिया अभिलेख - पूणियाँमे श्रीनगर लग मिथिलाक्षरक ई अभिलेख मिथिलाक पहिल महिला शासक रानी इद्र्रावतीक राज्यकालक वर्णन करैत अछि। रानी इन्द्रावती (१७८४-१८०२) जे अकालक समय फूड-फॉर-वर्क आ अन्य कल्याणकारी कार्यक प्रारम्भ केने रहथि।

जयनगर किला- मिथिलाक तेसर किला अछि भारत नेपाल सीमा पर प्राचीन जयपुर आ वर्त्तमान जयनगर लग। दरभंगा लग पंचोभ गामसँ प्राप्त ताम्र अभिलेख पर जयपुर केर वर्णन अछि।

विष्णु

हुलासपट्टी- मधुबनी जिलाक फुलपरास थानाक जागेश्वर स्थान लग हुलासपट्टी गाम अछि। कारी पाथरक विष्णु भगवानक मूर्त्ति एतऽ अछि।

पिपराही- लौकहा थानाक पिपराही गाममे विष्णुक मूर्त्तिक चारू हाथ भग्न भऽ गेल अछि।

मधुबन- पिपराहीसँ १० किलोमीटर उत्तर नेपालक मधुबन गाममे चतुर्भुज विष्णुक मूर्त्ति अछि।

कमलादित्य स्थान- अंधरा ठाढ़ी लगमे कमलादित्य स्थानक विष्णु मंदिर कर्णाट राजा नान्यदेवक मंत्री श्रीधर दास द्वारा स्थापित भेल।

झंझारपुर अनुमण्डलक रखबारी गाममे वृक्षक नीचाँ राखल विष्णु मूर्त्ति, गांधारशैली मे बनाओल गेल अछि।

मटिहानी- विष्णु मन्दिर

जनकपुर- बृहद् विष्णुपुराणमे मिथिलामाहात्म्यमे जनकपुर क्षेत्रक वर्णन अछि। सत्रहम शताब्दीमे संत सूर किशोरकेँ अयोध्यामे सरयू धारमे राम आ जानकीक दू टा भव्य मूर्त्ति भेटलन्हि, जकरा ओ जानकी मन्दिर, जनकपुरमे स्थापित कऽ देलन्हि। वर्त्तमान मन्दिरक स्थापना टीकमगढ़क महारानी द्वारा १९११ ई. मे भेल। नगरक चारूकात यमुनी, गेरुखा आ दुग्धवती धार अछि। राम नवमी (चैत्र शुक्ल नवमी),जानकी नवमी (वैशाख शुक्ल नवमी) आ विवाह पंचमी (अगहन शुक्ल पंचमी) पर एतऽ मेला लगैए।

अंधरा-ठाढ़ीक स्थानीय वाचस्पति संग्रहालय- गौड़ गामक यक्षिणीक भव्य मूर्त्ति एतऽ राखल अछि।

गौतम तीर्थ- कमतौल स्टेशनसँ ६ किलोमीटर पश्चिम ब्रह्मपुर गाम लग एकटा गौतम कुण्ड पुष्करणी अछि।

मुंगेरक पूब 'सीता-कुण्ड'गर्म कुण्ड अछि, सीता जी एत्तै पृथ्वीमे समाहित भेल छली। ठंढ़ा जलक कुण्ड 'रामकुण्ड', लक्ष्मण कुण्ड, भरत कुण्ड, आ शत्रुघ्न कुण्ड सेहो अछि, भैयारीमे बड्ड मिलान। से मिलान बाबू गढ़ नारिकेलमे सेहो छै, बेसी पढ़ल लिखल गाममे से आब कहाँ?

हलावर्त्त- जनकपुरसँ ३५ किलोमीटर दक्षिण पश्चिममे सीतामढ़ी नगरमे हलवेश्वर शिव मन्दिर आ जानकी मन्दिर अछि। एतसँ डेढ़ किलोमीटर पर पुण्डरीक क्षेत्रमे सीताकुण्ड अछि। हलावर्त्तमे जनक द्वार हर चलेबा काल सीता भेटलि छली। राम नवमी (चैत्र शुक्ल नवमी) आ जानकी नवमी (वैशाख शुक्ल नवमी) पर एतऽ मेला लगैए।

फुलहर-मधुबनी जिलाक हरलाखी थानामे फुलहर गाममे जनकक पुष्पवाटिका छल जतऽ सीता फूल लोढ़ै छली।

धनुषा- जनकपुरसँ १५ किलोमीटर उत्तर धनुषा स्थानमे पीपरक गाछक नीचाँ एकटा धनुषाकार खण्ड पड़ल अछि। रामक तोड़ल ई धनुष अछि। ऐसँ पूब वाणगंगा धार बहैए जे लक्ष्मण द्वारा वाणसँ उद्घाटित भेल छल।

सुग्गा- जनकपुर लग जलेश्वर शिवधामक समीप सुग्गा ग्राममे शुकदेवजीक आश्रम अछि। शुकदेवजी जनकसँ शिक्षा लेबाक हेतु मिथिला ऐल छला- ऐ ठाम हुनका ठहरेबाक व्यवस्था भेल छल।

सिंहेश्वर- मधेपुरासँ ५ किलोमीटरपर गौरीपुर गाम लग सिंहेश्वर शिवधाम अछि।

कपिलेश्वर- कपिल मुनि द्वार स्थापित महादेव मधुबनीसँ ६ किलोमीटर पश्चिममे अछि।

कुशेश्वर- समस्तीपुरसँ उत्तर-पूब, लहेरियासरायसँ ६० किलोमीटर दक्षिण-पूब आ सहरसासँ २५ किलोमीटर पश्चिम ई एकटा प्रसिद्ध शिवस्थान अछि। एतऽ चिड़ै-

अभ्यारण्य सेहो अछि जतऽ उज्जर आ कारी गैबर, लालसर, दिघौछ, मैल, नकटा, गैरी, गगन, सिल्ली, अधानी, हरिअल, चाहा, करन, रतबा चिड़ै सभ नवम्बरसँ मार्च धरि देखबामे अबैए।

सिमरदह- थलवारा स्टेशन लग शिवसिंह द्वारा बसाओल शिवसिंहपुर गाम लग ई शिवमन्दिर अछि।

सोमनाथ- मधुबनी जिलाक सौराठ गाममे सभागाछी लग सोमदेव महादेव छथि।

मदनेश्वर- मधुबनी जिलाक अंधरा ठाढ़ीसँ ४ किलोमीटर पूब मदनेश्वर शिव स्थान अछि।

चण्डेश्वर- झंझारपुरमे हरड़ी गाम लग चण्डेश्वर ठाकुर द्वारा स्थापित चण्डेश्वर शिवस्थान अछि।

शिलानाथ- जयनगर लग कमला धारक कातमे शिलानाथ महादेव छथि।

उग्रनाथ- मधुबनीसँ दक्षिण पण्डौल स्टेशन लग भवानीपुर गाममे उगना महादेवक शिवलिंग अछि। विद्यापतिकेँ प्यास लगलन्हि तँ उगनारूपी महादेव जटासँ गंगाजल निकालि जल पियेलखिन्ह। विद्यापतिक हठ केलापर ऐ स्थान पर उगना हुनका अपन असल शिवरूपक दर्शन देलखिन्ह।

उच्चैठ छिन्नमस्तिका भगवती- कमतौल स्टेशनसँ १६ किलोमीटर पूर्वोत्तर उच्चैठमे कालिदास भगवतीक पूजा करैत छला। भगवतीक मौलिक मूर्त्ति मस्तक विहीन अछि।

उग्रतारा- मण्डन मिश्रक जन्मभूमि महिषीमे मण्डनक गोसाउनि उग्रतारा छथि।

भद्रकालिका- मधुबनी जिलाक कोइलख गाममे भद्रकालिका मंदिर अछि।

चामुण्डा- मुजफ्फरपुर जिलामे कटरागढ़ लग लक्ष्मणा वा लखनदेइ धार लग दुर्गा द्वारा चण्ड-मुण्डक वध कएल गेल। ओइ स्थानपर ई मन्दिर अछि।

परसा सूर्य मन्दिर- झंझारपुरमे सग्रामसँ पाँच किलोमीटर पूर्व परसा गाममे साढ़े चारि फीटक भव्य सूर्य मूर्त्ति भेटल अछि।

चैनपुर सहरसा- मिथिलाक एकमात्र नीलकंठ मन्दिर, संगमे आदिकालीन भव्य काली-मन्दिर सेहो ऐ गाममे अछि। महाशिवरात्रि आ कालीपूजा बड़ धूमधामसँ चैनपुरमे होइत अछि।

धरहरा, बनमनखी, पूर्णियाँमे नरसिंह अवतारक स्थान अछि, एकटा खोह जकाँ पैघ पाया अछि जइमे जे किछु फेकबै तँ बड़ी काल धरि गों-गोँ अबाज होइत रहत। ई स्थान आब नरसिंह भगवानक मूर्ति आ मन्दिरक कारणसँ बेस विकसित भऽ गेल अछि। एत्तै नरसिंह पाया फाड़ि अवतरित भेल छला।

बिसफी- मधुबनी जिलाक बेनीपट्टी थानामे कमतौल रेलवे स्टेशनसँ ६ किलोमीटर पूब आ कपिलेश्वर स्थानसँ ४ किलोमीटर पश्चिम बिसफी गाम अछि। ज्योतिरीश्वर पूर्व महाकवि विद्यापतिक जन्म-स्थान ई गाम अछि।

मिथिलाक बीस टा सिद्ध पीठ- १.गिरिजास्थान (फुलहर, मधुबनी), २.दुर्गास्थान (उचैठ, मधुबनी), ३.रहेश्वरी (दोखर, मधुबनी), ४.भुवनेश्वरीस्थान (भगवतीपुर, मधुबनी), ५. भद्रकालिका (कोइलख, मधुबनी), ६.चमुण्डा स्थान (पचाही, मधुबनी), ७.सोनामाइ (जनकपुर, नेपाल), ८.योगनिद्रा (जनकपुर, नेपाल), ९.कालिका स्थान (जनकपुर स्थान), १०.राजेश्वरी देवी (जनकपुर, नेपाल), ११.छिनमस्ता देवी (उजान, मधुबनी), १२.बनदुर्गा (खररख, मधुबनी), १३.सिधेश्वरी देवी (सरिसव, मधुबनी), १४.देवी-स्थान (अंधरा ठाढ़ी, मधुबनी), १५.कंकाली देवी (भारत नेपाल सीमा आ रामबाग प्लेस, दरभंगा), १६.उग्रतारा

(महिषी, सहरसा), १७.कात्यानी देवी (बदलाघाट, सहरसा), १८.पुरन देवी(पूर्णियाँ), १९.काली स्थान (दरभंगा), २०.जैमंगलास्थान(मुंगेर), ५२. जनकपुर परिक्रमाक १५ स्थल आ ओतुक्का मुख्य देवता १. हनुमाननगर- हनुमानजी, २.कल्याणेश्वर- शिवलिंग, ३.गिरिजा-स्थान- शक्ति, ४.मटिहानी- विष्णु मन्दिर, ५.जालेश्वर- शिवलिंग, ६.मनाई- माण्डव ऋषि, ७. श्रुव कुण्ड- ध्रुव मन्दिर, ८.कंचन वन- कोनो मन्दिर नै मात्र मनोरम दृश्य, ९.पर्वत- पाँच टा पर्वत, १०.धनुषा- शिव धनुषक टुकड़ी, ११.सतोखड़ी- सप्तर्षिक सात टा कुण्ड, १२.हरुषाहा- विमलागंगा, १३. करुणा- कोनो मन्दिर नै मात्र मनोरम दृश्य, १४. बिसौल- विश्वामित्र मन्दिर आ १५.जनकपुर।

दरभंगा कैथोलिक चर्च- १८९१मे स्थापित ई चर्च १८९७ केर भूकम्पमे क्षतिग्रस्त भऽ गेल। एकरा होली रोजेरी चर्च सेहो कहल जाइए। सेंट फांसिस ऑसिसी चर्च मुजफ्फरपुरमे अछि।

भिखा सलामी मजार- गंगासागर पोखरि दरभंगाक महारपर ई मजार अछि। मकदूम बाबाक मजार:ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय आ कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगाक बीच स्थित ई मजार हिन्दू आ मुस्लिम मतावलम्बीक एकटा पावन स्थान अछि। दरभंगा टावर मस्जिद इस्लाम मतावलम्बीक एकटा भव्य मस्जिद आ धार्मिक स्थल अछि।

९.विदेह मिथिला रत्न

विदेह मिथिला रत्न

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

भारत आ नेपालक माटिमे पसरल मिथिलाक धरती प्राचीन कालेसँ महान पुरुष ओ महिला लोकनिक कर्मभूमि रहल अछि। प्रस्तुत अछि मिथिला रत्नक एकटा छोट संग्रह। ऐ संग्रहकेँ पूर्ण करबाक हेतु अपन बहुमूल्य संग्रहकेँ editorial.staff.videha@gmail.com केँ पठाउ। आर्काइवक सर्वाधिकार रचनाकार, सम्बन्धित फोटोग्राफर आ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि। फोटो सभ पठेबा लेल धन्यवाद पाठकगण। साभार। पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र एकेडमिक प्रयोग लेल। विशेष विवरण देखबा लेल क्लिक करू **VIDEHA_346**, **VIDEHA_347**, **VIDEHA_366**, **VIDEHA_373** *आ* **मिथिला रत्नआ मिथिलाक संगीत (कथा) मिथिलाक पाबनि तिहार /मिथिला चित्रकला /** ।



वैदिक जनक

'वैदेह राजा' ऋगवेदिक कालक नमी सप्याक नामसँ छलाह, यज्ञ करैत सदेह स्वर्ग गेलाह, ऋगवेदमे वर्णन अछि। ओ इन्द्रक संग देलन्हि असुर नमुचीक विरुद्ध आ ताहिमे इन्द्र हुनका बचओलन्हि।शतपथ ब्राह्मणक विदेघमाथव आ पुराणक निमि दुनू गोटेक पुरोहित गौतम छथि से दुनू एके छथि आ एतएसँ विदेह राज्यक प्रारम्भ। माथवक पुरहित गौतम मित्रविन्द यज्ञक/ बलिक प्रारम्भ कएलन्हि आ पुनः एकर पुनःस्थापना भेल महाजनक-२ क समयमे याज्ञवल्क्य द्वारा। निमि



वाल्मीकि



सीतापति राम

गौतमक आश्रमक लग **जयन्त** आ मिथि -जिनका मिथिला नामसँ सेहो सोर कएल जाइत छन्हि, **मिथिला** नगरक निर्माण कएलन्हि। निमीक जयन्तपुर वर्तमान जनकपुरमे छल, मिथीक मिथिलानगरीक स्थान एखन धरि निर्धारित नहि भए सकल अछि, अनुमानित अछि जनकपुरक लग । �सीरध्वज जनक� सीताक पिता छथि आ एतयसँ मिथिलाक राजाक सुदृढ़ परम्परा देखबामे अबैत अछि। �कृति जनक� सीरध्वजक बादक 18म पुस्तमे भेल छलाह। कृति हिरण्यनाभक पुत्र छलाह आ जनक बहुलाश्वक पुत्र छलाह। याज्ञवलक्य हिरण्याभक शिष्य छलाह, हुनकासँ योगक शिक्षा लेने छलाह। कराल जनक द्वारा एकटा ब्राह्मण युवतीक शील-अपहरणक प्रयास भेल आ जनक राजवंश समाप्त भए गेल (संदर्भ अश्वघोष- बुद्धचरित आ कौटिल्य-अर्थशास्त्र)।



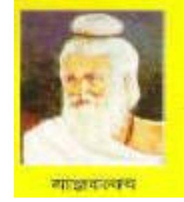
लव कुश



विदेघ माथव

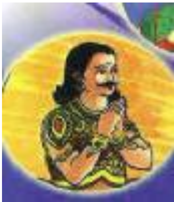
शतपथ ब्राह्मणक विदेघ माथवक विदेह आगमन, आगिक सदानीरासँ आगाँ नहि बढ़बाक चर्च।

शतपथ ब्राह्मणक विदेघमाथव आ पुराणक निमि दुनू गोटेक पुरोहित गौतम छथि से दुनू एके छथि आ एतएसँ विदेह राज्यक प्रारम्भ।



वाजसनेयी याज्ञवल्क्य

याज्ञवल्क्य मिथिलाक दार्शनिक राजा कृति जनकक दरबारमे छलाह। हुनकर माताक वा पिताक नाम सम्भवत: वाजसनी छलन्हि। ओना हुनकर पिता देवरातकेँ मानल जाइत छन्हि। याज्ञवल्क्य १. शुक्ल यजुरवेद, २. शतपथ ब्राह्मण, ३.बृहदारण्यक उपनिषद आ ४.याज्ञवल्क्य स्मृतिक दृष्टा/लेखक छथि।



अंगराज कर्ण



वैशेषिक दर्शन कणाद



वैशेषिक दर्शन कणाद

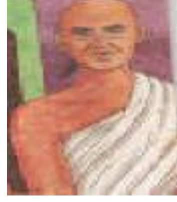
महावीर जैन 599-527

महावीर विदेहमे छह टा बस्सावास बितेलन्हि।



गौतम बुद्ध BC 563-483

ओना तँ महावीर विदेहमे छह टा बस्सावास बितेलन्हि मुदा बुद्ध एकोटा नै मुदा मिथिलामे बौद्ध धर्मक प्रभाव पछाति बढ़ल। बुद्ध वैशाली नगरीमे आम्रपालीक उद्यानमे लिच्छवीगणकेँ सन्देश देने छलाह।



चाणक्य BC 350-283

धर्म आ विधिक क्षेत्रमे कौटिल्यक अर्थशास्त्र आ याज्ञवल्क्य स्मृतिमे बड्ड समानता अछि जे चाणक्यक मिथिलावासी होयबाक प्रमाण अछि।

अर्थशास्त्रमे(१.६ विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे षडोऽध्याय: इन्द्रियजये अरिषड्वर्गत्याग:) कराल जनकक पतनक सेहो चर्चा अछि।

तद्विरुद्धवृत्तिरवश्येन्द्रियश्चातुरन्तोऽपि राजा सद्यो विनश्यति- यथा दाण्डक्यो नाम भोज: कामाद् ब्राह्मण कन्यायमभिमन्यमान: सबन्धराष्ट्रो विननाश करालश्च वैदेह:,...।



चन्द्रगुप्त मौर्य चाणक्यक शिष्य BC 340-293

चाणक्यक शिष्य



आर्यभट्ट वैज्ञानिक 476-550

पञ्जीमे आर्यभट्टक विवरण- (२७) (३४/०८) महिपतिय: मंगरौनी माण्डैर सै पीताम्ब र सुत दामू दौ माण्ड्र सै वीजी त्रिनयनभट्ट: ए सुतो ***आर्यभट्ट:*** ए सुतो उदयभट्ट: ए सुतो विजयभट्ट ए



सिद्ध सरहपाद 700-780

सरहपाद-�सिद्धिरत्थु मइ पढ़मे पढ़िअउ ,मण्ड पिबन्तौं बिसरउ एमइउ�।मिथिलामे अक्षरारम्भ सिद्धिरस्तु जकर पूर्वमे सिद्धिरस्तु, गणेशजीक अंकुश



आदि शंकराचार्य 788-820 मंडन मिश्रसँ शास्त्रार्थ

सुतो सुलोचनभट (सुनयनभट्ट) ए सुतो भट्ट ए सुतो धर्मजटीमिश्र ए सुतो धाराजटी मिश्र ए सुतोब्रह्मजरी मिश्र ए सुतो त्रिपुरजटी मिश्र ए सुत विघुजटी मिश्र ए सुतो अजयसिंह: ए सुतो विजयसिंह: ए सुतो ए सुतो आदिवराह: ए सुतो महोवराह: ए सुतो दुर्योधन सिंह: ए सुतो सोढ़र जयसिंहर्काचार्यास्त्रस महास्त्र विद्या पारङ्गत महामहोपाध्या य: नरसिंह:।।

आँजी, लिखल जाइत अछि। मिथिलामे ई धारणा जे माँड़ पिलासँ स्मरण शक्ति क्षीण होइत अछि; ई सरहपादक मिथिलावासी होएबाक प्रमाण अछि।



म.म.गोनू झा 1050-1150

करमहे सोनकरियाम गोनू झाक वर्णन पञ्जीमे अछि- महामहोपाध्याय धूर्तराज गोनू। पञ्जीक अनुसार पीढ़ीक गणना कएलासँ गोनूक जन्म (गोनूक सोनकरियाम करमहे-वत्समे २४म पीढ़ी चलि रहल अछि) *आर्यभट्टक बाद (आर्यभट्टक माण्डर-काश्यपमे ३१ म पीढ़ी चलि रहल अछि) आ विद्यापतिक पहिने (विद्यापतिक विषएवार बिस्फी-काश्यपमे १४म पीढ़ी चलि रहल अछि)* लगभग १०५० ई.मे सिद्ध होइत अछि। कारण एहि तरहेँ एक पीढ़ीकेँ ४० सँ गुणा केला सँ आर्यभट्टक जन्म लगभग ४७६ ई. आ विद्यापतिक जन्म लगभग १३५० ई. अबैत अछि जे इतिहाससम्मत अछि।



कृष्णाराम आ हाथी सुबरन

मिथिलाक यादव (गुआर) जातिक लोकदेवता कृष्णाराम अपन हाथी सुबरनपर सवार।



वंशीधर ब्राह्मण



छेछन महराज

मिथिलाक डोम जातिक लोकदेवता

दीना- भदरी

मिथिलाक मुसहर जातिक लोकदेवता



ज्योति पँजियार



राजा सलहेस

मिथिलाक दूधवंशी (दुसाध) जातिक लोकदेवता



दुलरा दयाल

गोनू झाक गाम भरौड़ाक राजकुमार, "बहुरा गोढिन नटुआ दयाल" लोककथाक मलाह कथानायक। भरौड़ामे एखनो हिनकर गहबर छन्हि।



कालिदास



बोधि कायस्थ

विद्यापतिक पुरुष-परीक्षामे मृत्युकालमे गंगा नदीक आयब आ बोधि-कायस्थकेँ अपनामे समेबाक खिसा वर्णित अछि जे बादमे विद्यापतिकेँ लऽ कऽ सेहो प्रचलित भेल।



राधाकृष्ण आ करताराम मल्लिक

मिथिलाक अमता घरेनक प्रारम्भिक गबैय्या



महाराज नान्यदेव

मिथिलाक कर्णाट वंशक 1097 ई. मे स्थापना। 1147 ई. मे मृत्यु।



मल्लदेव

मिथिलाक कर्णाट वंशक संस्थापक नान्यदेवक पुत्र। मिथिलाक गंधवरिया राजपूत मल्लदेवकेँ अपन बीजीपुरुष मानैत छथि।



महाराज हरसिंहदेव

मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरसिंहदेव नायक आकि राजा छलाह। 1294 ई. मे जन्म आ 1307 ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ 1324-25 ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन। मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्धक ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य आधिकारिक स्थापक, मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त एहि हेतु



मंत्री गणेश्वर

मिथिलाक कर्णाट वंशक नरेश हरसिंहदेवक मंत्री। *सुगतिसोपान*मे मिथिलाक सांवैधानिक इतिहासक वर्णन।

प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हरसिंहदेवक प्रेरणासँ- आ ई हरसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छलाह, जे नान्यदेव कार्णाट वंशक १००९ शाकेमे स्थापना केने रहथि- नन्दैद शुन्यं शशि शाक वर्षे (१०१९ शाके)... मिथिलाक पण्डित लोकनि शाके १२४८ तदनुसार १३२६ ई. मे पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। पुनः वर्तमान स्वरूपमे थोडे बुद्धि विलासी लोकनि मिथिलेश महाराज माधव सिंहसँ १७६० ई. मे आदेश करबाए पञ्जीकारसँ शाखा पुस्तकक प्रणयन करबओलन्हि। ओकर बाद पाँजिमे (कखनो काल वर्णित १६०० शाके माने १६७८ ई. वास्तवमे माधव सिंहक बादमे १८०० ई.क आसपास) *श्रोत्रिय* नामक एकटा नव ब्राह्मण उपजातिक मिथिलामे उत्पत्ति भेल।



मीरां साहेब

मिथिलाक मुस्लिम लोकनिक बीच प्रसिद्ध लोकगाथाक नायक।



अमर बाबा

मिथिलाक मलाह जातिक लोकदेवता।



गरीबन बाबा

मिथिलाक धोबि जातिक लोकदेवता।



लालबन बाबा

मिथिलाक चर्मकार जातिक लोकदेवता।



बंठा चमार



कारिख पजियार







लोरिक



राय रणपाल



अयाची मिश्र

पन्द्रहम शताब्दीक भवनाथ मिश्र बड पैघ नैय्यायिक छलाह आ कहियो ककरोसँ कोनो वस्तुक याचना नहि कएलन्हि, ताहि लेल सभ हुनका अयाची मिश्र कहए लगलन्हि।



शंकर मिश्र

"बालोऽहं जगदानन्द न मे बाला सरस्वती। अपूर्णे पंचमे वर्षे वर्णयामि जगत्त्रयम् ॥" क वक्ता। पन्द्रहम शताब्दीमे भवनाथ मिश्रक घरमे मधुबनी जिलाक सरिसव ग्राममे शंकर मिश्रक जन्म भेल।शंकर मिश्र महाराज भैरव सिंहक कनिष्ठ पुत्र राजा पुरुषोत्तमदेवक आश्रित छलाह। एकर वर्णन रसार्णव ग्रंथमे भेटैत अछि। शंकर मिश्र कवि, नाटककार, धर्मशास्त्री आ न्याय-वैशेषिकक व्याख्याकार रहथि।शंकर मिश्र ग्रंथावली- १.गौरी दिगम्बर प्रहसन २.कृष्ण विनोद नाटक ३.मनोभवपराभव नाटक४.रसार्णव५.दुर्गा-टीका६.वादिविनोद७.वैशेषिक सूत्र पर उपस्कार८.कुसुमांजलि पर आमोद९.खण्डनखण्ड-खाद्य टीका १०.छन्दोगाह्निकोद्धार ११.श्राद्ध प्रदीप १२.प्रायश्चित प्रदीप।



पक्षधर मिश्र

विद्यापतिक समकालीन जयदेव मिश्र, जे अपन अकाट्य तर्कक कारण पक्षधर मिश्रक नामसँ जानल गेलाह।



मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व)

मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (विद्यापतिक चित्र: विदेह चित्रकला सम्मानसँ पुरस्कृत पनकलाल मण्डल द्वारा)

*कवीश्वर ज्योतिरीश्वर(लगभग १२७५-१३५०)सँ पूर्व (कारण ज्योतिरीश्वरक ग्रन्थमे हिनक चर्च अछि), मैथिलीक आदि कवि। संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति ठक्कुर:सँ भिन्न। सम्भवतः बिस्फी गामक बार्बर कास्टक श्री महेश ठाकुरक पुत्र। समानान्तर परम्पराक बिदापत नाचमे विद्यापति पदावलीक (ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वसँ) नृत्य-अभिनय होइत अछि।*ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापति:- कश्मीरक अभिनव गुप्त (दशम शताब्दीक अन्त आ एगारहम शताब्दीक प्रारम्भ)- ग्रन्थ �ईश्वर प्रत्याभिज्ञा-विभर्षिणी� मे विद्यापतिक उल्लेख करै छथि। श्रीधर दासक सदुक्तिकर्णामृत, (रचना ११ फरबरी १२०६, मध्यकालीन मिथिला, वि.कु. ठाकुर)- श्रीधर दास विद्यापतिक पाँच टा पद उद्धृत केने छथि जे विद्यापतिक पदावलीक भाषा छी।

�जाव न मालती कर परगास

तावे न ताहि मधुकर विलास।� आ

�मुन्दला मुकुल कतय मकरन्द�

ज्योतिरीश्वर (१२७५-१३५०) **षष्ठः कल्लोल-** ॥अथ विद्यावन्त वर्णना॥ **अष्टमः कल्लोलः**- ॥अथ राज्य वर्णना॥ मे उल्लेख।



महाराज शिव सिंह

मिथिला नरेश विद्यापतिक आश्रयदाता ओइनवार वंशक महाराज शिव सिंह।

उगना महादेव

महादेव विद्यापतिक अहिठाम गीत सुनबा लेल उगना नोकर बनि रहैत छलाह।

महाकवि विद्यापति ठाकुर 1350-1435 (मैथिलीक आदि कवि ज्योतिरीश्वर-पूर्व विद्यापतिसँ भिन्न, संस्कृत आ अवहट्ठमे लेखन)

महाकवि विद्यापति ठाकुर 1350-1435

विद्यापति ठक्कुरः 1350-1435 विषएवार बिस्फी-काश्यप (राजा शिवसिंहक दरबारी) आ संस्कृत आ अवहट्ठ लेखक। कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पुरुष परीक्षा, गोरक्षविजय, लिखनावली आदि ग्रंथ समेत विपुल संख्यामे कालजयी रचना। ई मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व)सँ भिन्न छथि।

(चित्रक आधार मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कोलकाता द्वारा कोनो कलाकारसँ बनबाओल , कलाकारक नाम ६०-७० सालसँ अज्ञात कारणसँ गुप्त राखल गेल अछि।)



शंकरदेव 1449-1569

पारिजातहरण।



जगज्ज्योतिर्मल्ल १६१३-३७

हरगौरी विवाह नाटक, कुञ्ज विहार नाटक।



डॉ. सर आशुतोष मुखर्जी १८६४-१९२४

मैथिली प्रेमी। कलकत्ता विश्वविद्यालयमे अपन कुलपतित्वमे मैथिली अध्यापन शुरूसँ स्नातकोत्तर धरि, प्रिन्सिपल आ सबसिडियरी दुनू विषयक रूपमे, सत्र-१९१७-१८ सँ प्रारम्भ केलन्हि। मैथिलीक पहिल बेर विश्वविद्यालयमे अध्यापन शुरू भेल।



मदन मोहन मालवीय १८६१-१९४६



खुद्दी झा १८६७-१९२७

गाम कोइलख। कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिलीक



बबुआ मिश्र १८८१-१९५९

गाम कोइलख। बबुआजी मिश्र (श्रीकृष्ण मिश्र), ज्योतिष

मैथिली प्रेमी। काशी हिन्दू विश्वविद्यालयमे अपन कुलपतित्वमे मैथिली अध्यापनक प्रारम्भ केलन्हि। कलकत्ता विश्वविद्यालयक बाद ई दोसर विश्वविद्यालय भेल जतऽ मैथिलीक अध्यापनक प्रारम्भ भेल।	अध्यापनक १९१७-१८ सत्रमे प्रारम्भ भेलापर गङ्गापति सिंह पहिल अंग्रेजी निष्ठ मैथिली प्राध्यापक आ खुद्दी झा पहिल संस्कृत निष्ठ मैथिली प्राध्यापक नियुक्त भेला।	तीर्थ (कलकत्ता), ज्योतिषाचार्य (बनारस)। कलकत्ता वि.वि. मे प्राचीन भारतीय इतिहास आ संस्कृति विभागमे हिन्दू गणित आ ज्योतिषक प्राध्यापक, संगे कलकत्ता विश्वविद्यालयमे सत्र १९१७-१८ सँ मैथिलीक अध्यापनक प्रारम्भक पछाति मैथिली विभागमे सेहो १९४६ धरि अध्यापन। सुनीति कुमार चटर्जी सङे ज्योतिरीश्व कविशेखराचार्यक 'वर्ण रत्नाकर' क सम्पादन (१९४०)।
 सुनीति कुमार चटर्जी १८९० -१९७७ मैथिली प्रेमी। बबुआ मिश्र (बबुआजी मिश्र) सङे ज्योतिरीश्व कविशेखराचार्यक 'वर्ण रत्नाकर' क सम्पादन (१९४०)।	 अरविन्द घोष १८७२-१९५० मैथिली प्रेमी। विद्यापति गीतक अंग्रेजीमे अनुवाद।	 सर जी. ए. ग्रियर्सन १८५१-१९४१ मैथिली प्रेमी। 'मैथिली ग्रामर' आ 'मैथिली क्रेस्टोमेथी एण्ड वोकाबुलेरी' ।
 कवि चन्दा झा 1831-1907 मूलनाम चन्द्रनाथ झा, ग्राम- पिण्डारुछ, दरभंगा। कवीश्वर, कविचन्द्र नामसँ विभूषित। ग्रिएर्सनकेँ मैथिलीक प्रसंगमे मुख्य सहायता केनिहार। कृति- मिथिला भाषा रामायण, गीति-सुधा, महेशवाणी संग्रह, चन्द्र पदावली, लक्ष्मीश्वर विलास, अहिल्याचरित आऽ	 महाकवि लालदास 1856-1921 हिनक जन्म खड़ौआ ग्राममे १८५६ ई. मे तथा मृत्यु १९२१ ई. मे भेलन्हि । हिनक अनेक रचना उपलब्ध होइत अछि, यथा�रमेश्वर चरित रामायण,� स्त्री शिक्षा,� �सावित्री-सत्यवान,� �चण्डी चरित,� �विरुदावली,� �दुर्गा सप्तशती,� तन्त्रोक्त मिथिला माहात्म्य� आदि । मैथिलीक अतिरिक्त ई संस्कृत, हिन्दी तथा फारसीक ज्ञाता छलाह । कविताक अतिरिक्त गद्यमे सेहो ई रचना कएल । रमेश्वर चरित रामायण हिनक	 म.म. हरप्रसाद शास्त्री (१८५३-१९३१) २३ कवि ५० टा बौद्ध चर्यापद संख्याक नेपाल सँ १९०७ मे विश्लेषण। [लुइपाद १, २९; कुक्कुरीपाद २, २०, ४८; विरुबपाद ३; गुण्डारीपाद ४; चत्तिलपाद ५; भुसुकुपाद ६, २१, २३, २७, ३०, ४१, ४३, ४९; कान्हापाद ७, ९, १०, ११, १२, १३, १८, १९, २४, ३६, ४०, ४२, ४५; कम्बलाम्बरपाद ८; डोम्बीपाद १४; शान्तिपाद १५, २६; महिधरपाद १६; वीणापाद १७; सरहपाद २२, ३२, ३८, ३९; शबरपाद

विद्यापति रचित संस्कृत पुरुष-परीक्षाक गद्य-पद्यमय अनुवाद।

सभसँ विशिष्ट ग्रन्थ अछि । राम-कथाक उल्लेखमे सीताक महिमाक महत्त्व दए मिथिला तथा मैथिलीक प्रति ई अपन श्रद्धा तथा भक्तिकँ व्यक्त कएल अछि ।

२८,५०; आर्यदेवपाद ३१; ढेनढनपाद ३३; दारिकापाद ३४; भादेपाद ३५; ताडकापाद ३७; कनकनापाद ४४; जयनन्दीपाद ४६; धमपाद ४७; तंत्रीपाद २५]



नगेन्द्रनाथ गुप्त (१८६१-१९४०)

विद्यापति पद्यावलीक संकलन आ सम्पादन (१९१०)



म. म. परमेश्वर झा 1856-1924

जन्म 1856 ई. मे तरौनी ग्राम (दरभंगा) जिलामे भेल छलन्हि तथा निधन 1924 ई. मे । संस्कृत व्याकरणक ई दिग्गज विद्वान् छलाह तथा �वैयाकरण केशरी� क उपाधिसँ विभूषित छलाह । मैथिली साहित्यमे अपन कृति �मिथिलातत्त्व विमर्श� तथा �सीमंतिनी आख्यायिका�क कारणे महत्त्वपूर्ण स्थान रखैत छथि । ई महाराज रमेश्वर सिंहक दरवारमे राज-पंडितक पदपर अनेको वर्ष धरि सुप्रतिष्ठित छलाह ।



अवध बिहारी प्रसाद शाही 1859-1929



सर्वतंत्र स्वतंत्र बच्चा झा 1860-1921

मधुबनी जिलांतर्गत लवाणी(नवानी) गाममे हिनकर जन्म भेलन्हि।हिनक कृति सभ अछि। 1. सुलोचन-माधव चम्पू काव्य, 2.न्यायवार्त्तिक तात्पर्य व्याख्यान, 3.गूढार्थ तत्त्वलोक(श्री मदभागवतगीता व्याख्याभूत मधुसूदनी टीका पर) 4.व्याप्तिपंचक टीका 5.अवच्छदकत्व निरुक्ति विवेचन 6.सव्यभिचार टिप्पण 7.सतप्रतिपक्ष टिप्पण 8.व्याप्तनुगन विवेचन 9.सिद्धांत लक्षण विवेक 10.व्युत्पत्तिवाद गूढार्थ तत्वालोक 11.शक्तिवाद टिप्पण 12.खण्डन-ख़ण्ड खाद्य टिप्पण 13. अद्वैत सिद्धि चन्द्रिका टिप्पण 14.कुकुकाञ्जलि प्रकाश टिप्पण।



म. म. शशिनाथ झा 1860-1930



मुंशी रघुनन्दन दास 1860-1945

गाम-सखबार, ज़िला-मधुबनी। "मिथिला नाटक" आ "दूतांगद व्यायोग"क लेखक।



मधुसूदन ओझा 1866-1939



म.म. मुरलीधर झा १८६८ -१९२९

जन्म- गाम- भराम (जिला मधुबनी), अपन मातृक श्यामसीधपमे बसि गेलाह। काशीसँ १९०६ ई. मे ई "मिथिलामोद" नामक मासिक मैथिली पत्रिकाक प्रकाशन शुरु केलन्हि। हितोपदेश (अनुवाद), मैथिली व्याकरण, "अर्जुन तपस्या" (उपन्यास) प्रकाशित।



मुकुन्द झा "बख्शी" 1869-1936

जन्म हरिपुर बख्शी टोल ग्राम (मधुबनी जिला) मे 1869 ई. मे भेल तथा हिनक निधन काशीमे 1937 ई. मे भेलन्हि । हिनक लिखल संस्कृत मे अनेक ग्रंथ अछि । मैथिलीमे हिनक महत्त्वपूर्ण कृति अछि �मिथिला भाषामय इतिहास� । एकर अतिरिक्त मैथिलीमे हिनक स्फुट निबन्ध सभ सेहो प्रकाशित भेल । मिथिलाक ऐतिहासिक वर्णन सभसँ पहिने हिनके प्रकाशित भेल । एहि इतिहासमे मिथिलाक सर्वतोमुखी परिचय प्रस्तुत कएल गेल अछि ।



डॉ. सर गंगानाथ झा 1871-1941

जन्म मधुबनी जिलाक सरिसब-पाही ग्राममे 1871 ई. मे भेल तथा निधन प्रयागमे 1941 ई. मे । ई अपना समयक संस्कृतक प्रकाण्ड विद्वान म. म. चित्रधर मिश्र, म. म. जयदेव मिश्र तथा म. म. शिवकुमार शास्त्नीसँ मीमांसा एवं दर्शनक अध्ययन कएलन्हि तथा दर्शनक विभिन्न दुरूह ग्रंथक अङरेजीमे अनुवाद कए पाश्चात्य संसारक ध्यान आकृष्ट कएलन्हि । ई गवर्नमेन्ट संस्कृत कॉलेज बनारसमे 1917 सँ 1923 धरि प्रिंसिपल छलाह तथा एलाहाबाद विश्वविद्यालयक 1923 सँ 1932 पर्यन्त कुलपति रहलाह । मैथिलीमे हिनक सम्पादित चन्दा झाक �महेशवाणी संग्रह� तथा �गणनाथ-विन्ध्यनाथ पदावली� प्रकाशित अछि । मैथिली साहित्य परिषद् द्वारा प्रकाशित हिनक �वेदान्त दीपक� (दर्शन) विषयक अपूर्व ग्रंथ अछि ।



जनार्दन झा जनसीदन 1872-1951



रासबिहारी लालदास 1872-1940

"मिथिला दर्पण" क लेखक।

एहिसँ भिन्न हिनक निबंध सभ सामयिक मैथिली पत्न-पत्निकामे प्रकाशित अछि ।



रामचन्द्र मिश्र "चन्द्र" 1873-1937 मैथिल प्रभा



महावैय्याकरणाचार्य पं दीनबन्धु झा 1878-1955



भवनाथ मिश्र 1879-1933

मैथिली शब्दकोष "मिथिला शब्द प्रकाश"क लेखक।



कीर्त्यानन्द सिंह



टंकनाथ चौधरी 1884-1928



भवप्रीतानन्द ओझा 1886-1970



कपिलेश्वर मिश्र 1887-1987

गाम सलेमपुर, थाना-उजियारपुर, जिला समस्तीपुर। �सीतादाइ� पुस्तक भंडारसँ प्रकाशित।



बालकृष्ण मिश्र 1888-1948



बलदेव मिश्र 1890-1975

हिनक जन्म सहरसा जिलाक वनगाँव ग्राममे 1890 ई. मे एवं निधन फरवरी, 1975मे भेलन्हि । प्रारम्भमे पं. गेनालाल चौधरीसँ ज्यौतिष पढ़ि ई काशीमे पं. सुधाकर द्विवेदीजीक शिष्य भेलाह । बहुत वर्ष धरि सरस्वती भवन (वाराणसी) मे हस्तलिखित विभागमे कार्य कएल । पश्चात् पटनाक काशीप्रसाद जयसवाल रिसर्च संस्थानमे अनेक प्राचीन तिब्बती हस्तलिपिकेँ देवनारीमे लिप्यन्तरित कएल। �मिथिलामोद� प्रकाशन एवं म.म. मुरलीधर झाक

प्रोत्साहनसँ ज्यौतिषीजी १९१० ई.सँ �मोद�मे लिखए लगलाह। हिनक प्रकाशित रचना अछि��रामायण शिक्षा�, �चन्दा झा�, �संस्कृति�, �भारत शिक्षा�, �गप्प-सप्प विवेक�, �समाज� आदि । पण्डितजी यावत् धरि पटना रहलाह बराबरि �मिहिर�मे लिखैत रहलाह ।



आचार्य रामलोचन शरण 1889-1971

सीतामढ़ीमे जन्म आ दरभंगामे मृत्यु। "मैथिली रामचरित मानस" सहित तुलसीदासक समस्त रचनाक मैथिलीमे लेखन। मिथिलाक्षरमे मैथिलीक प्रकाशनक प्रारम्भ केनिहार। प्रकाशन संस्था "पुस्तक भण्डार", लहेरियासराय, पटनाक संस्थापक।



सीताराम झा 1891-1975

जन्म चौगामा ग्राममे १८९१ ई.मे तथा निधन १९७५ ई. मे भेलन्हि । संस्कृतमे ज्योतिष शास्त्रक अनेक रचनाक .अतिरिक्त मैथिलीमे हिनक �अम्ब चरित� (महाकाव्य), �सूक्ति सुधा,� लोक लक्षण,� �पढुआचरित,� �पूर्वापर व्यवहार,� उनटा बसात,� �अलंकार दर्पण�, �भूकम्प वर्णन�, �काव्य षट-रस�, �मैथिली काव्योपवन�, आदि ग्रन्थ उपलब्ध अछि । हिनक गीताक मैथिली अनुवाद सेहो उपलब्ध अछि । मिथिला मोदक सम्पादन १९२० ई.सँ १९२७ ई. धरि ई कएल ।



ताराचरण झा 1892-1928



बद्रीनाथ झा 1893-1973

जन्म मधुबनी जिलाक सरिसव ग्राममे १८९३ ई. मे भेलन्हि तथा १९१४ ई. मे ई काशी लाभ कएलिन्ह । बहुत दिन धरि ई मुजफ्फरपुरक



जीवनाथ राय 1893-1964



उमेश मिश्र 1895-1967

जन्म मधुबनी जिलाक गजहरा ग्राममे 1895 ई. मे भेल छलन्हि । ई एकहतरि वर्षक आयुमे १९६७ ई. मे प्रयागमे स्वर्गवासी भेलाह । ई अपन

धर्म्म समाज संस्कृत कॉलेजमे साहित्यक अध्यापक छलाह । मैथिलीक विख्यात कवि लोकनि यथा सुमनजी, मधुपजी, मोहनजी आदि हिनक शिष्य छथिन्ह । संस्कृत साहित्यमे हिनक अनेक रचना अछि । जाहिमे राधा परिणय� (महाकाव्य) क स्थान विशिष्ट अछि । मैथिलीमे हिनक �एकावली परिणय� (महाकाव्य) एक नवीन कीर्तिमान स्थापित कएलक। कोनो अलंकारक दृष्टान्त तकबाक हेतु �एकावली परिणय� पर्याप्त अछि ।

स्वनाम-धन्य पिता म. म. जयदेव मिश्र तथा म. म. डा. गंगानाथ झाक सान्निध्यमे विद्यार्जन कएल। १९२३ सँ १९५९ धरि मिश्रजी एलाहाबाद विश्वविद्यालयमे संस्कृतक प्राध्यापक छलाह । दरभंगा �मिथिला शोध संस्थान�क निदेशक पदपर किछु समय कार्य कए १९६२ सँ ६५ धरि कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक कुलपति रहलाह ।म. म. मुरलीधर झासँ प्रभावित भए �मिथिलामोद�मे ई लिखब प्रारम्भ कएलन्हि तथा अपन विविध प्रकारक रचनासँ मैथिलीक गद्यकेँ समृद्ध कएलन्हि । मैथिलीमे हिनक प्रसिद्ध ग्रन्थ अछि��कमला� (शेक्सपीयरक �टेम्पेस्ट�क भावानुवाद), �नलोपाख्यान�, �मैथिली-संस्कृति� तथा अनेक वर्णनात्मक एवं आलोचनात्मक निबन्ध; मनबोधक कृष्णजन्मक सम्पादन, विद्यापतिक कीर्तिलता, कीर्तिपताका, गोरक्ष विजय आदिक अनुवाद-सम्पादन सेहो कएल।



बाबू धनुषधारी दास 1895-1965

मैथिलीमे बिहारी कविक अनुवाद प्रकाशित।



अमरनाथ झा 1897-1955

सरिसब पाहीटोल ग्राममे १८९७ ई. मे भेल । हिनक निधन पटनामे जखन ई बिहार लोक सेवा आयोगक अध्यक्ष छलाह, १९५५ मे भेलन्हि । ई एलाहाबाद विश्वविद्यालयक नओ वर्ष धरि कुलपति रहि पश्चात् हिन्दू विश्वविद्यालयक सेहो कुलपतिक पदकेँ सुशोभित कएलन्हि । ई अंगरेजीक प्रकाण्ड विद्वान् छलाह, ताहि संग हिन्दी, उर्दू, फारसी, संस्कृत, बङला एवं मैथिलीक सेहो अद्भुत विद्वान् छलाह ।मैथिलीमे हिनका द्वारा सम्पादित �हर्षनाथ काव्य ग्रन्थावली� तथा �गोविन्ददासक श्रृङारभजन� महत्त्वपूर्ण अछि । एहिसँ भिन्न हिनक मैथिली साहित्य परिषदक अध्यक्षीय भाषण तथा अन्य लेख प्रकाशित अछि ।



भोलालाल दास 1897-1977

हिनक जन्म दरभंगा जिलाक कसरौर मे भेलन्हि । साहित्य सर्जनाक अतिरिक्त अपन संगठन क्षमता तथा मैथिली साहित्यक सर्वतोमुखी विकासक हेतु सतत तत्पर रहबाक कारणेँ भोला बाबू मैथिली संसारक एक स्तम्भक रूपमे रहलाह । हिनक निधन 1977 ई. मे भेल । मैथिलीक प्रचार-प्रसारमे ई अपन जीवन समपित कएने छलाह। पाठ्यक्रममे मैथिलीकेँ स्थान हो ताहि हेतु ई बीड़ा उठओलन्हि । विद्यालय स्तरक अनेक पोथीक निर्माण कएल । मैथिली साहित्य परिषदक ई संस्थापक मण्डलक सदस्य छलाह । 1931 सँ 1940 ई. पर्यन्त ओकर प्रधान मन्त्री रहलाह । हिनक मन्त्रित्वकालमे �भारती� नामक मासिक पत्नक प्रकाशन भेल । एहिसँ पूर्व (१९२९-३१) कुशेश्वर कुमरजीक संग संयुक्त

सम्पादनमे �मिथिला� नामक पत्न चलाओल । ई नवीन एवं प्रगतिशील विचारक लोक छलाह । ननव लेखककेँ प्रोत्साहित करब, शैलीमे एकरूपता आनब, नव प्रकाशनसँ मैथिलीक साहित्य भंडारक पूर्त्ति करब हिनक कर्त्तव्य बनि गेल छल । हिनक लिखल �मैथिली व्याकरण� तथा हिनकहि द्वारा सम्पादित �गद्यकुसुमांजलि बहुत दिन धरि विद्यालयमे पढ़ाओल जाइत रहल । हिनक लिखल अनेक निबन्ध समालोचना, कविता, संस्मरण, जीवनी-साहित्य मैथिलीक पत्र-पत्निकामे छिड़िआएल अछि ।



कुमार गंगानन्द सिंह 1898-1971

जन्म�बनैली राजपरिवारमे 24-9-1898, मृत्यु:-श्रीनगर पूर्णिञा 17-1-1970 । भूतपूर्व शिक्षामंत्नी, बिहार एबं कुलपति, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय ।रचना�अगिलही (अपूर्ण उपन्यास) तथा अनेक कथा एवं एकांकी । युगक अनुरूप सामाजिक कुरीति आदिकेँ आधार बनाए सुधारवादी दृष्टिएँ कथा सभहिक रचना ।



ब्रजमोहन ठाकुर 1899-1977



भुवनेश्वर प्रसाद 1902-

दरभंगा जिलाक बनौली गाम, निवास रायसाहेब पोखरि लहेरियासराय। सरस्वती स्कूल लहेरियासरायमे १९३०-१९६४ ई. धरि अध्यापन। मैथिलीमे "बाल रामायण� प्रकाशित।



जयनारायण झा 'विनीत' 1902-1991



नरेन्द्र नाथ दास विद्यालंकार १९०४-१९९३



सुधाकर झा "शास्त्री" 1904-1974



दामोदर लाल दास विशारद 1904-1981



बबुआजी झा 'अज्ञात' 1904-1996

२००१- बबुआजी झा �अज्ञात� (प्रतिज्ञा पाण्डव, महाकाव्य)लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।



श्रीवल्लभ झा हाटी 1905-1940



रमानाथ झा 1906-1971

जन्म दरभंगा जिलाक उजान (धर्मपुर) ग्राममे 1906 ई. मे एवं हिनक निधन दरभंगामे १९७१ ई. मे भेलन्हि । 1930 ई. मे अङरेजीमे एम. ए. कएलाक बाद ई कतोक वर्ष धरि मधेपुर उच्च विद्यालयक प्रधानाध्यापक छलाह, तकरा बाद दरभङ्गा-राज-लाइब्रेरीक पुस्तकालयाध्यक्षक रूपमे 1936 सँ अन्तिम समय धरि रहलाह । 1952 सँ 62 चन्द्रधारी मिथिला कॉलेजमे प्रो. झा अङरेजीक प्राध्यापक रूपेँ काजka पश्चात् ओही कॉलेजमे मैथिली विभागाध्यक्ष बनाओल गेलाह । 1965 मे रमानाथ बाबू साहित्य अकादमीक मैथिलीक प्रतिनिधि निर्वाचित भेलाह जाहि पद पर ओ जीवनक अन्त समय तक रहलाह ।

हिनक रचनाक क्षेत्न बहुत व्यापक छल । हिनक अनुसंधानात्मक निबंक दू गोट संग्रह �निबन्धमाला� तथा �प्रबंध संग्रह� प्रकाशित अछि । संकलित सम्पादित पुस्तक सभमे �मैथिली पद्य-संग्रह�, �मैथिली गद्य-संग्रह�, �प्राचीन गीत�, �कथा काव्य�, �नवीन गीत�, �कविता कुसुम�, �कथा



राम इकबाल सिंह राकेश (१९१२-१९९४)

जन्म १४ जुलाइ १९१२, मृत्यु २७ नवम्बर १९९४,हिनकर मैथिली लोकगीत (संग्रह आ सम्पादन) एकटा लेजेण्डरी पोथी बनि गेल अछि।



काशीकान्त मिश्र "मधुप" 1906-1987

१९७०- काशीकान्त मिश्र �मधुप� (राधा विरह, महाकाव्य) पर साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त मैथिलीक प्रशस्त कवि आ मैथिलीक प्रचार-प्रसारक समर्पित कार्यकर्ता �झंकार� कवितासँ क्रान्ति गीतक आह्वान कएलनि । प्रकृति प्रेमक विलक्षण कवि । �घसल अठन्नी कविताक लेल कथ्य आ शिल्प-संवेदना�दुहू स्तर पर चरम लोकप्रियता भेटलनि।

संग्रह� आदि अछि । �कथासरित्सागर�क आधार पर प्राञ्जल गद्य शैलीमे हिनक �उदयन-कथा� तथा �बररुचि-कथा� बेश ख्याति पओलक । व्याकरणक �मिथिला भाषा प्रकाश�, �अलक्ङारप्रवेश� आदि अनेक ग्रन्थ प्रकाशित अछि । �मैथिली साहित्य पत्र� त्रैमासिक पत्रिकाक संपादक।



लक्ष्मीनाथ गोसाई 1793-1872



मेही दास

धरहरा कोठी_बनमनखी_असली नाम_रामानुग्रहलाल दास_आश्रम_मायामोहल्ला, कुप्पाघाट, भागलपुर



बुचन भगत, संत 1928-1991



अभिराम दास

मिथिलाक प्रसिद्ध भागवत वाचक।



स्नेहलता 1909-1993

गाम- डरोड़ी, समस्तीपुर। पूर्ण नाम- कपिलदेव ठाकुर "स्नेहलता"। रामाश्रयी रसिक सम्प्रदायक संत। हिनकर रचित वैदेही विवाह संकीर्तन, विनय पदावली, शिववाणी, चेतावनी, झूला-संकीर्तन, सीतावतरण प्रबन्धकाव्य आ स्नेहशतक- दोहावली-कवित्त आदि मिथिलाक महिला वर्ग आ संकीर्तनकार लोकनिक कंठमे परिव्याप्त अछि आ लोकमंगलक अनुष्ठानमे व्यापक रूपेँ व्यवहृत अछि। हिनक "वैदेही विवाह" मिथिलाक कीर्तनिया नाट्य परम्पराकेँ लोकरुचिक अनुकूल बनौने अछि।



स्वतंत्रता सेनानी स्व. रामफल मण्डल



सुन्दर झा "शास्त्री" 1930-1998

जनकपुर, नेपाल, युवावस्थाक जेलक दुर्लभ फोटो।नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक मानद सदस्यता- स्व. सुन्दर झा शास्त्री।



कांञ्चीनाथ झा "किरण" 1906-1988

जन्म स्थान-धर्मपुर,लोहना रोड, दरभंगा बिहार । मैथिली भाषा आंदोलनमे महत्वपूर्ण भूमिका। �पराशर� महाकाव्य लेल साहित्य अकादमी ओ �कथा किरण� लेल वैदेही पुरस्कारसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति: चंद्रग्रहण (उपन्यास), वीर-प्रसून (बालकथा), जय जन्मभूमि (एकांकी), विजेता विद्यापति (नाटक), कथा-किरण (कथा-संग्रह), किरण-कवितावली, कतेक दिनक बाद (कविता-संग्रह), पराशर (महाकाव्य) ओ किरण-निबंधावली (निबंध-संग्रह) आदि।१९८९- काञ्चीनाथ झा �किरण� (पराशर, महाकाव्य)पर मैथिली मे साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।



श्यामानन्द झा 1906-1949



रमाकांत झा, नेपाल 1907-1971



ईशनाथ झा 1907-1965

बहुमुखी प्रतिभाक कवि । प्राचीन आ नवीन पद्धतिक काव्य-रचनाक विलक्षण संयोग हिनकर कवितामे भेटैत अछि । दलित वर्ग, शोषणक समस्या, स्वदेश प्रेमक यथार्थवादी रचनाक संग संग व्यक्तिनिष्ठ कल्पनाक अनेक विशिष्ट कविता मैथिलीमे लिखलनि ।



भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' 1907-1944

अपन खाढ़ीक बहुमुखी प्रतिभाक कवि । प्राचीन आ नवीन रीतिक कविताक रचना विपुल संख्यामे कएलनि । �भुवन भारती� कविता संकलन प्रकाशनसँ मैथिली ओज आ नव चेतनाक शंख फुकलनि।



हरिमोहन झा 1908-1984

हिनकर मैथिली कृति १९३३ मे �कन्यादान� (उपन्यास), १९४३ मे "द्विरागमन�(उपन्यास), १९४५ मे �प्रणम्य देवता� (कथा-संग्रह), १९४९ मे �रंगशाला�(कथा-संग्रह), १९६० मे �चर्चरी�(कथा-संग्रह) आऽ १९४८ ई. मे �खट्टर ककाक तरंग� (व्यंग्य) अछि। मृत्योपरांत १९८५मे (जीवन यात्रा, आत्मकथा)पर मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।



कालीकान्त झा 1909-

मूल गाम ढंगा (हरिपुर), मधुबनी। फेर मातृक बरदबट्टा,पो. उरलाहा, भाया-मदनपुर, जिला-पूर्णियामे बसि गेलाह। सतघरा (मधुबनी), मदनपुर आ काशीमे पाणिनी व्याकरणक अध्ययन। "हनुमान चरित"क लेखक।



तंत्रनाथ झा 1909-1984

जन्म १९०९ ई मे दरभंगा जिलाक धर्मपुर ग्राममे भेलन्हि मुत्यु ४-५-�८४,चन्द्रधारी मिथिला कॉलेजमे अर्थशास्त्नक प्राध्यापक छलाह । अवकाश ग्रहण क काव्य साधनामे लागल रहलाह । महाकाव्य, मुक्तक, एकांकी सभ विधामे ई सिद्ध हस्त छलाह । हिनक �कीचक वंध� महाकाव्य अङरेजीक �ब्लैक्ङ भर्स� (अमित्नाक्षर छन्द) म लिखल अछि । मैथिलीमे �सौनेट� एवं ब्लैक्ङ भर्स�क ई प्रथम प्रयोक्ता थिकाह । संस्कृत परम्परामे काव्य रचना करितहुँ पाश्चात्य शैलीक नवीनता हिनका रचनामे भेल । हिनक �कीचक वध� ओ �कृष्ण चरित� महाकाव्य��मङ्गल-पञ्चाशिका� एवं �नमस्या� मैथिली साहित्यमे अपन विशिष्ट स्थान रखैछ । तकर अतिरिक्त मुक्तक काव्यमे विषय वस्तुक व्यापकता एवं शिल्प शैलिक प्रचुरता अबैत अछि । एक दिश यदि प्राचीन ढंगक ईश्वर वन्दनाक रचना कएलन्हि तँ दोसर दिस �सौनेट� (चतुर्दशपदी) �बैलेड� आदि लिखबामे पूर्ण सफलता प्राप्त कएलन्हि ।�कृष्ण चरित� महाकाव्य पर हिनका 1979 ई क साहित्यक अकादमी पुरस्कार भेटलन्हि । 1980 ई. मे हिनका अभिनन्दन ग्रन्थसमर्पित कएल गेलन्हि ।



जीवनाथ झा 1910-1977



सुरेन्द्र झा 'सुमन' 1910-2002



पं. रामचन्द्र झा 1910-

गाम तरौनी। काशी मिथिला ग्रन्थमालाक सम्पादक।

जन्म: ग्राम : बल्लीपुर, जिला-समस्तीपुर । प्रकाशित कृति: प्रतिपदा, अर्चना,साओन-भादव,अंकावली, अन्तर्नाद, पयस्विनी, उत्तरा आदि तीससँ अधिक मौलिक कविता-पुस्तक;पुरुष-परीक्षा, अनुगीतांजलि, ॠतु श्रृंगार तथा वर्णरत्नाकर, पारिजात-हरण, कृष्णजन्म, आनन्द-विजय आदि कतिपय ग्रन्थक अनुवाद-संपादन; �मैथिली काव्य पर संस्कृतक प्रभाव� नामक समीक्षा-ग्रंथ। �पयस्विनी� लेल १९७१ मे साहित्य अकादेमी पुरस्कार तथा �उत्तरा� पर १९१८ मे मैथिली अकादेमीक विद्यापति पुरस्कार प्राप्त । मैथिलीक प्रथम दैनिक पत्र �स्वदेश�क लब्धप्रतिष्ठ सम्पादक।१९९५- सुरेन्द्र झा �सुमन� (रवीन्द्र नाटकावली- रवीन्द्रनाथ टैगोर, बांग्ला)लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार। २००० ई.- पं.सुरेन्द्र झा �सुमन�, दरभंगा;यात्री-चेतना पुरस्कार।



'नागार्जुन' वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' 1911-1998

जन्म अपन मामागाम सतलखामे भेलन्हि, जे हुनकर गाम तरौनीक समीपहिमे अछि, जिला-दरभ्गा । मूल नाम: वैद्यनाथ मिश्र । हिन्दीमे नागार्जुन नामे प्रख्यात । प्रकाशित कृति: चित्रा, पत्रहीन नग्न गाछ (मैथिली कविता-संग्रह); पारो, बलचनमा, नवतुरिया (मैथिली उपन्यास); युगधारा, सतरंगे पंखोंवाली, प्यासी पथराई आंखें, खिचड़ी विप्लव देखा हमने, तुमने कहा था, हजार हजार बाहो वाली, पुरानी जूतियो का कोरस, रत्नगर्भा, ऐसे भी हम क्या ! ऐसे भी तुम क्या ! (हिन्दी कविता-संग्रह); रतिनाथ की चाची, बलचनमा, नई पौध, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे, दुखमोचन, कुम्भीपाक, अभिनन्दन, उग्रतारा, इमरतिया (हिन्दी उपन्यास); आसमान में चन्दा तैरे (कहानी संग्रह); भस्मांकुर (हिन्दी खण्ड काव्य); अन्नहीनम् क्रियाहीनम् (निबन्ध-संग्रह); गीत गोविन्द; मेघदूत; विद्यापति के गीत, विद्यापति की कहानियां (अनुवाद) । �पत्रहीन नग्न गाछ� लेल १९६८ मे साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त । यायावरी जीवन । मैथिली प्रतिनिधिक रूपमे रूस भ्रमण । नागार्जुन (**स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र �यात्री�**), हिन्दी आ मैथिली कवि, १९९४ ई.मे **साहित्य अकादेमीक फेलो** (भारत देशक सर्वोच्च साहित्यक पुरस्कार)।



आरसीप्रसाद सिंह 1911-1996

जन्म: ग्राम-एरौत, जिला-समस्तीपुर । प्रकाशित कृति: माटिक दीप, पूजाक फूल, सूर्यमुखी (कविता-संग्रह), मेघदूत (अनुवाद), आरसी, नन्ददास, संजीवनी (हिन्दी काव्य संग्रह)। �सूर्यमुखी� लेल १९८४ मे साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त ।



गुरु जयदेव मिश्र 1911-1991 शिष्य गंगानाथ झा



यशोधर झा

मिथिला वैभव, दर्शन मैथिली पोथीपर 1966 मे पहिल साहित्य अकादमी पुरस्कार मैथिली लेल प्राप्त।



वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु' 1912-1987

१९७६- वैद्यनाथ मल्लिक �विधु� (सीतायन, महाकाव्य) लेल मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कार।



भीम झा 1912-

पूर्णिया जिलाक मदनपुर गामक। जन्म ५ नवम्बर १९१२ ई.। बनैलीक श्री श्यामानन्द सिंहक अध्यक्षतामे �नारायण संकीर्तन महामण्डली�क स्थापना।



राधानाथ दास १९१२-



उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' 1913-1980

जन्म १९१३ ई. मे दरभंगा जिलाक चतरिया ग्राममे भेलन्हि । मृत्यु २४-५-१९८० । संस्कृत शिक्षामे साहित्याचार्य ओ बड़ौदा राजक विद्वत्-परीक्षासँ �साहित्य-रत्न�क उपाधिसँ विभूषित भेलाह । दैनिक आर्यावर्तमे आदिअहिसँ, पश्चात् १९६० सँ मिथिला मिहिरक उप-सम्पादक एवं सह-सम्पादक रूपैँ कार्य करैत १९७७ मे सेवा निवृत भेलाह ।मोहनजी करीब पचास वर्ष साहित्य साधनामे लागल रहलाह ।
विजयानन्द, कुंजरंजन, सुदर्शन, पुण्डरीक, शास्त्नी, बामन आदि छद्म नामसँ पत्न-पत्निकामे विविध विषयपर हिनक लेख सभ प्रकाशित भेल अछि ।मोहन जीक �बाजि उठल मुरली�मे १०१ गोट कविताक संकलन अछि जाहिमे हिनक सुदीर्घ काव्य-आराधनाक विभित्र विचारधाराक ओ विभित्र अनुभूतिक सामग्री उपलब्ध अछि । एहि पुस्तकपर मोहन�जीकेँ १९७८ मे साहित्य अकादम् पुरस्कार भेटलन्हि। एहिसँ बहुत पूर्व हिनक �फुलडाली� नामक कविता संग्रह सेहो प्रकाशित भेल छल ।



जयनाथ मिश्र 1913-1985







श्रीकांत ठाकुर "विद्यालंकार"

पञ्जीकार मोदानन्द झा 1914-1998

लब्ध धौत पञ्जीशास्त्र मार्त्तण्ड पञ्जीकार मोदानन्द झा, शिवनगर, अररिया, पूर्णिया। पिता- स्व. श्री भिखिया झा। गुरु- पञ्जीकार भिखिया झा। पूर्णिया जिलाक बनैली लगक शिवनगर गामक। जन्म २२ सितम्बर १९१४ ई.।सौराठमे अपन मौसा स्व. लूटनझा सँ पंजीशास्त्रक अध्ययन। १९४८-१९५१ ई. धरि दरभंगामे रहि आचार्य रमानाथ झाकेँ पाँजि पढ़ओलनि।शास्त्रार्थ परीक्षा- दरभंगा महाराज कुमार जीवेश्वर सिंहक यज्ञोपवीत संस्कारक अवसर पर महाराजाधिराज(दरभंगा) कामेश्वर सिंह द्वारा आयोजित परीक्षा-1937 ई. जाहिमे मौखिक परीक्षाक मुख्य परीक्षक म.म. डॉ. सर गंगानाथ झा छलाह।

आनन्द झा 1914-1988



टोक्यो हासेगावा, निदेशक मिथिला म्यूजियम, निगाटा



माँगनि खबास 1908-1943 संगीतज्ञ

पचगछियामे जन्म आ अल्प बएसमे मृत्यु। पचगछियाक रायबहादुर लक्ष्मीनारायण सिंहक शिष्य।



रामाश्रय झा 'रामरंग' अभिनव भातखण्डे 1928-2009

जन्म ११ अगस्त १९२८ ई. तदनुसारभाद्र कृष्णपक्ष एकादशी तिथिकेँ मधुबनी जिलान्तर्गत खजुरा नामक गाममे भेलन्हि। अभिनव गीतांजलि, हुनकर उच्चकोटिक शास्त्र रचना अछि।मिथिलावासी श्री रामरंग राग तीरभुक्ति, राग वैदेही भैरव, आऽ राग विद्यापति कल्याण केर रचना सेहो कएने छथि आऽ मैथिली भाषामे हिनकर खयाल �रंजयति इति राग:� केर अनुरूप अछि।



रामचतुर मल्लिक ध्रुपद संगीत 1905-1990



अभयनारायण मल्लिक



कुमार तारानन्द सिंह, संगीतज्ञ



संगीताचार्य रायबहादुर लक्ष्मीनारायण सिंह



पंडित परमानन्द चौधरी, संगीतज्ञ



हृदयनारायण झा



संगीत भाष्कर राजकुमार श्यामानन्द सिंह १९१६-१९९४



गुरुदेव कामत

शास्त्रीय संगीत



मिथिलेश कुमार झा, तबला वादन



नागेश्वर लाल कर्ण, तबला वादक



बाबू साहेब चौधरी 1916-1998

दरभंगा जिलाक दुलारपुर गामक। १९४३ ई. मे जीविकार्थ कलकत्ता अएलाह। नवम कक्षामे स्वराज्य आन्दोलनमे बाझि कए शिक्षाक इतिश्री। कलकत्तामे स्थानीत मैथिल संघमे प्रवेश। कलकक्तामे मैथिली आर्ट प्रेस. ९/१, खिलात घोष लेन, कलकत्ता-७०००06 सँ मैथिली-मिथिला आन्दोलनमे सक्रिय। �कुहेस� आ �चाणक्य� दूटा नाटक। १९७१-७९ धरि �मिथिला दर्शन� आ �मैथिली दर्शन� मैथिली मासिकक सम्पादन।



लक्ष्मण (लखन) झा 1916-2000

मिथिला राज्य अभियानी।



शुद्धदेव झा 'उत्पल' 1916-

गोड्डा जिलाक अलखदत्त-महेनपुरक निवासी। जन्म १६ अक्टूबर १९१६ ई.।



रामचरित्र पाण्डेय "अणु" १९१७-२०१०



लक्ष्मीनाथ झा मिथिला चित्रकला 1917-1990



उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' 1917-2002

जन्म स्थान-हरिपुर वकशीटोल, मधुबनी, बिहार। १९६९- उपेन्द्रनाथ झा �व्यास� (दू पत्र, उपन्यास) लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित। साहित्य अकादेमीक अनुवाद पुरस्कार प्राप्त। प्रकाशित कृति: कुमार, दू पत्र (उपन्यास), विडंबना, भजना भजले (कथा-संग्रह), पतन संन्यासी, प्रतीक (काव्य), महाभारत (पहिल दू पर्व) आदि।



मनमोहन झा 1918-2009

जन्म सरिसबमे, अश्रुकण, वीरभोग्या, मिथिलाक निशापुरमे।२००९- स्व.मनमोहन झा (गंगापुत्र, कथासंग्रह)पर मृत्योपरांत साहित्य अकादमी पुरस्कार।



ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' 1918-1986

जन्म स्थान-बहेड़ा, दरभंगा बिहार। १९७३- ब्रजकिशोर वर्मा �मणिपद्म� (नैका बनिजारा, उपन्यास) लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित। उपन्यासकार, कथाकार ओ कवि। प्रकाशित कृति: कोब्रागर्ल, कनकी, अर्द्धनारीश्वर, लोरिक विजय, नैका-बनिजारा, लवहरि-कुशहरि, राय रणपाल, आदिम गुलाम आदि उपन्यास ओ कंठहार (नाटक) आदि।



पं. सहदेव झा १९१९-

"मिथिला की धरोहर" पोथी प्रकाशित।



बुद्धिधारी सिंह रमाकर 1919-1991

जन्म मधुबनीमे 1919 ई. मे भेल। अपन पिता स्व. क्षेमधारी सिंहसँ विभिन्न विषयक शिक्षा ग्रहण कएलन्हि। ई रामकृष्ण कॉलेज, मधुबनीक



आद्याचरण झा 1920-

मैथिली विभागाध्यक्ष छलाह । जतएसँ अवकाश प्राप्त कएलन्हि । बाल्या-वस्थहिसँ ई कविकार्यमे लागल रहलाह अछि । संस्कृत तथा मैथिली दुनू भाषामे हिनक रचना प्रकाशित अछि । यथा�मैथिलीमे �प्रयास� (कथा-संग्रह), �मधुमती�, �अमरबापू� (कविता-संग्रह), �शरशय्या� (खंड-काव्य) �स्मृति साहसी� (महाकाव्य) आदि ।



चन्द्र भानु सिंह 1922-

२००४- चन्द्रभानु सिंह (शकुन्तला, महाकाव्य)लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।



सुधांशु शेखर चौधरी 1922-1990

जन्म दरभंगाक मिश्रटोलामे 1922 ई. मे भेलन्हि तथा मृत्यु 1990 ई. मे भेलन्हि । किछु दिन विभिन्न जीविकामे रहि पश्चात् साहित्यकारक जीवन प्रारम्भ कएल । किछु दिन �बैदेही�क सम्पादन श्री सुमनजी एवं श्री कृष्णकान्त मिश्रजीक संग कएल तत्पश्चात् 1960 ई. सँ 1982 ई. धरि पटनामे �मिथिला मिहिर��क सफल सम्पादन कएल ।हिनक दू गोट नाट्यकृति- �भफाइत चाहक जिनगी�, लेटाइत आँचर�, तथा �पहिल साँझ� हिनक नाटकक नीक व्यावहारिक अनुभवक परिचायक अछि ।छद्मनामसँ हिनक दू गोट उपन्यास मिहिर� मे प्रकाशित भेल अछि । हिनक उपन्यास ई वतहा संसार� जे मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित भेल आ जाहि पर 1980 क साहित्य अकादमीक पुरस्कार देल गेल ।



जयकान्त मिश्र (१९२२-२००९)

मैथिली साहित्यक एकटा बड़ पैघ विद्वान डॉ. जयकांत मिश्र सन् १९८२ मे इलाहाबाद विश्वविद्यालयक अंग्रेजी आ आधुनिक यूरोपियन भाषा विभागक प्रोफेसर आ हेड पद सँ सेवानिवृत्त भेल छलाह। तकरा बाद ओ चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालयमे भाषा आ समाज विज्ञानक डीन रूपमे कार्य कएलन्हि। स्व. मिश्र अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, इलाहाबादक अध्यक्ष, गंगानाथ रिसर्च इंस्टीट्यूट, इलाहाबादक अवैतनिक सचिव आ

सम्पादक, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागक प्रबन्ध विभागक संयोजक आ साहित्य अकादमी, नई दिल्लीक मैथिली प्रतिनिधि आ भाषा सम्पादक रहल छलाह। मैथिली साहित्यक इतिहास, फोक लिटेरेचर ऑफ मिथिला, कीर्तनिया ड्रामा सभक क्रिटिकल एडीशन,लेक्चर्स ऑन थॉमस हार्डी, लेक्चर्स ऑन फोर पोएट्स आ द कॉम्प्लेक्स स्टाइल इन एंगलिश पोएट्री हिनक लिखित किछु ग्रंथ अछि। हिनकर वृहत मैथिली शब्द कोष मात्र दू खण्ड प्रकाशित भए सकल, जाहिमे देवनागरीक संग मिथिलाक्षर आ फोनेटिक अंग्रेजीमे सेहो मैथिली शब्दक नाम रहए। ३ फरबरी २००९ कैं सात बजे साँझमे हिनकर निधन भऽ गेलन्हि।







उपेन्द्र ठाकुर १९२९-१९९१

History of Mithila, Madhubani Painting, Studies in Jainism and Buddhism in Mithila आदि पोथी प्रकाशित।

गोविन्द झा 1923-

जन्मस्थान- इसहपुर, सरिसब पाही, मधुबनी, बिहार । सिद्ध कथाकार, उपन्यासकार, नाटककार, भाषा वैज्ञानिक ओ अनुवादक। साहित्य अकादेमी पुरस्कार, साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कारसँ सम्मानित। बिहार सरकारसँ कामिल बुल्के पुरस्कार, ग्रियर्सन पुरस्कार आदिसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति: उपन्यास, नाटक, कथा, कविता, भाषा विज्ञान आदि विभिन्न विधामे अड़तीस टा पोथी प्रकाशित । प्रकाशन: सामाक पौती,नेपाली साहित्यक इतिहास (अनु) आदि । १९९३- गोविन्द झा (सामाक पौती, कथा)पुस्तक लेल सहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित ।१९९३- गोविन्द झा (नेपाली साहित्यक इतिहास- कुमार प्रधान, अंग्रेजी) लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार। प्रबोध सम्मान 2006 सँ सम्मानित। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१० (समग्र योगदान लेल)

योगानन्द झा 1923-1986

हिनक जन्म मधुबनी जिलाक कोइलख ग्राममे 1923 ई. मे भेलन्हि । मृत्यु 1986 मे भेलनि । अंग्रेजीमे एम. ए. कएलाक पश्चात् ई किछु दिन चन्द्रधरी मिथिला कॉलेजमे प्राध्यापक रहलाह । बिहार प्रशासनिक सेवामे 1981 धरि विभिन्न पदपर कार्य कएल । तत्पश्चात्मैथिली अकादमीक निदेशक �84 धरि ।योगानन्द झाजी मैथिली साहित्यमे अपन उपन्यास �भलमानुस� एवं �पवित्रा�क हेतु ख्यात छथि । हिनक नाटक �मुनिक मतिभ्रम� एवं कथा संग्रह �उड़ैत वंशी� यथेष्ट प्रतिष्ठा प्राप्त कएने अछि । एकर अतिरिक्त ई महात्मा गान्धीक आत्मकथाक अनुवाद एवं �आमक जलखरी� नामक एक कथा संग्रहक सम्पादन सेहो कएने छथि ।



रामकृष्ण झा 'किसुन' 1923-1970

आधुनिक धाराक विशिष्ट कवि, कथाकार, चिन्तक । प्रकाशित कृति: आत्मनेपद (कविता संग्रह), मैथिली नवकविता (सम्पादन)।



उमानाथ झा 1923-2009

जन्म:-01-01-1923, मृत्यु 07-12-2009 महरैल, भधुबनी ।भूतपूर्व अङरेजी विभागाध्यक्ष एवं प्रति-कुलपति मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा । रचना:- रेखाचित्न, अतीत (कथा संग्रह); मैथिली नवीन साहित्य, इन्द्र धनुष, विद्यापति गीतशती (सम्पादन)।१९८७- उमानाथ झा (अतीत, कथा) पर मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।



ज़टाशंकर दास 1923-2006



प्रबोध नारायण सिंह 1924-2005

हिन्दी, संस्कृत, मैथिली, पाली एवं फारसीक विद्वान्। मिथिला, मैथिल एवं मैथिलीक ई अनन्य भक्त छथि । कलकत्ता रहि मिथिला दर्शन�, मैथिली कविता�, मैथिली रंगमंच� आदि पत्निकाक प्रकाशनक माध्यमसँ श्री प्रबोधजी मैथिलीक जे सेवा कएल अछि तकर वर्णन थोड़मे सम्भव नहि । अनेक बङला कृतिक ई अनुवाद सेहो कएल अछि ।हिन्दीमे सेहो हिनक �कविता संग्रह� प्रकाशित अछि ।कलकत्ता विश्वविद्यालयमे हिन्दीक पूर्व अध्यक्ष। २००२- डॉ. प्रबोध नारायण सिंह (पतझड़क स्वर- कुर्तुल ऐन हैदर, उर्दू) लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



मदनेश्वर मिश्र 1924-2004

"एक छलीह महारानी" प्रकाशित।



अमोघ नारायण झा "अमोघ" 1924-



मुरलीधर सिंह, ब्रजमोहन ठाकुर, शुभंकर झा, मदनेश्वर मिश्र 1924-2004, ललित नारायण मिश्र, देवनाथ राय



मतिनाथ मिश्र मतंग 1924-



आनन्द मिश्र 1924-2007



डॉ. जयमन्त मिश्र १९२५-२०१०



चन्द्रनाथ मिश्र अमर 1925-

जन्म: खोजपुर, मधुबनी । वरिष्ठ कवि, कथाकार-उपन्यासकार । हास्य-व्यंग्यक कवितामे बेजोड़। मैथिलीक लेल



मुक्तिनाथ झा (1926-2009)

जन्म १५-१०-१९२५ मृत्यु ०७-०९-२०१०, गाम-ढंगा-हरिपुर-मजरही।

१९९५- जयमन्त मिश्र (कविता कुसुमांजलि, पद्य) लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार- मैथिली।

समर्पित व्यक्तित्व । पांच दर्जनसं बेसी कथा आ विदागरी, वीरकन्या (उपन्यास) जल समाधि (कथा संग्रह) प्रकाशित ।१९८३- चन्द्रनाथ मिश्र �अमर� (मैथिली पत्रकारिताक इतिहास) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित। एम. एल. एकेडमी, लहेरिरियासरायसं शिक्षकक रूपमे अवकाश प्राप्त। आशा दिशा, गुदगुदी, युगचक्र, उनटा पाल आदि कविता संग्रह प्रकाशित। १९९८- चन्द्रनाथ मिश्र �अमर� (परशुरामक बीछल बेरायल कथा- राजशेखर बसु, बांग्ला) लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार। चन्द्रनाथ मिश्र अमर २०१० मे मैथिली साहित्य लेल **साहित्य अकादेमीक फेलो** (भारत देशक सर्वोच्च साहित्यक पुरस्कार)।



शुभंकर झा 1926-



दीनानाथ पाठक 'बन्धु' 1928-1962



अनंत बिहारी लाल दास "इन्दु" 1928-2010

२००७- अनन्त बिहारी लाल दास �इन्दु� (युद्ध आ योद्धा-अगम सिंह गिरि, नेपाली)लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



कृष्णकान्त मिश्र १९२८ -२०००



जगदानन्द झा 1928-



दुर्गानाथ झा "श्रीश"

हिनकर जन्म मधुबनी जिलाक विट्ठो गाममे १९२९ ई. मे भेलन्हि। हिन्दी आ मैथिलीमे एम.ए. आ बी.एड. केलाक बाद किछु दिन स्कूलमे अध्यापन, फेर मिल्लत कॉलेज, लहेरियासरायमे मैथिली आ हिन्दी विभागक अध्यक्ष। मैथिली भाषामे पहिल पी.एच. डी.। "श्रीश" जीक मैथिलीमे प्रकाशित रचना अछि- "मैथिली साहित्यक इतिहास", "भुवन भारती" (सम्पादन), "महामत्स्य ओ मनु" (कविता), "नाट्य कथा सार"(सम्पादन), "पुरुषार्थ"(पद्य

नाटक) आ अनेक कविता, एकांकी आ आलोचनात्मक निबन्ध।



राजकमल चौधरी 1929-1967

महिषी, सहरसा। रचना:- आदि कथा, आन्दोलन, पाथर फूल (उपन्यास), स्वरगंधा (कविता संग्रह), ललका पाग (कथा संग्रह), कथा पराग (कथा संग्रह सम्पादन)। हिन्दीमे अनेक उपन्यास, कविताक रचना, चौरङ्गी (बङला उपन्यासक हिन्दी रूपान्तर) अत्यन्त प्रसिद्ध।



विश्वनाथ झा "विषपायी" 1929-2005

"राम सुयश सागर" (मैथिली रामायण) १९८० ई. मे प्रकाशित। २५ जनवरी २००५ कैं मृत्यु।



जयधारी सिंह 1929-2007

समीक्षक, कवि । प्रकाशन: बौद्धगानमे तांत्रिक सिद्धांत, समीक्षा शास्त्रा अदि । रामकृष्ण कॉलेज, मधुबनीमै मैथिली विभागक पूर्व अध्यक्ष ।



शैलेन्द्र मोहन झा 1929-1994

१९९२- शैलेन्द्र मोहन झा (शरतचन्द्र व्यक्ति आ कलाकार-सुबोधचन्द्र सेन, अंग्रेजी)लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



विजयनाथ ठाकुर 1929-2008



रमेशचन्द्र वर्मा 1930-



गोपालजी झा 'गोपेश' 1931-2008

जन्म मधुबनी जिलाक मेहथ गाममे १९३१ ई.मे भेलन्हि।हिनकर रचित �सोन दाइक चिट्ठी�,



विवेकानन्द ठाकुर 1931-

२००५- विवेकानन्द ठाकुर (चानन घन गछिया, पद्य)मैथिली लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।



ताराकांत मिश्र 1931-

�गुम भेल ठाढ़ छी�, �एलबम� �आब कहू मन केहन लगैए�, "मखानक पात" प्रकाशित भेल जाहिमे सोनदाइक चिट्ठी बेश लोकप्रिय भेल।२००६ ई.-श्री गोपालजी झा गोपेश, मेंहथ, मधुबनी;यात्री-चेतना पुरस्कार।



ललित 1932-1983

जन्म स्थान बसैठ चानपुरा मधुबनी, बिहार । प्रसिद्ध कथाकार ओ उपन्यासकार । प्रकाशित कृति: प्रतिनिधि, (कथा संग्रह), पृथ्वी-पुत्र (उपन्यास) आदि।



मुरारि मधुसूदन ठाकुर 1932-

ताराशंकर बंदोपाध्यायक बंगला उपन्यास "आरोग्य निकेतन"क मैथिली अनुवाद लेल साहित्य अकादमीक अनुवाद पुरस्कार 1999 भेटल छन्हि।



विद्यानारायण ठाकुर 1933-



धूमकेतु 1932-2000

जन्म स्थान कोइलख, मधुबनी, बिहार । प्रसिद्ध कथाकार, उपन्यासकार ओ कवि । प्रकाशित कृति : दू टा कथा संग्रह ओ एक टा उपन्यास ।



राजमोहन झा 1934-

जन्म स्थान कुमरबाजितपुर, वैशाली, बिहार । प्रख्यात कथाकार ओ संपादक । आइ काल्हि परसू (कथा-संग्रह) लेल १९९६ मे साहित्य अकादेमीसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति : एक आदि एकांत, झूठ साँच, एकटा तेसर, अनुलग्नक, आइ काल्हि परसू (कथा संग्रह), गलतीनामा, भनहि विद्यापति, टीप्पणीत्यादि (आलोचना)। �आरम्भ� पत्रिकाक संपादन।प्रबोध सम्मान 2009 सँ सम्मानित।



डॉ. धीरेन्द्र 1934-2004

जन्म स्थान लोहना, मधुबनी, बिहार । प्रसिद्ध कथाकार,उपन्यासकार ओ कवि । प्रकाशित कृति: कुहेस आ किरण, पझाइत घूरक आगि, शतरूपा ओ मनु अपन मन्दिर (कथासंग्रह) हैंगरमे टाँगल कोट, काल्हि ओ आइ (कविता संग्रह) सहित कैक विधामे विभिन्न पोथी।







रमेश नारायण १९३४- २०११

नाम- रमेश नारायण दास, जन्म १५ मार्च १९३४ कैं मधुबनीक बहेरा गाममे। पिता-श्री हरिवल्लभ लाल दास। शिक्षा मधेपुर, मधुबनी आ पटनामे। १९६१ ई.सँ १९९४ ई. धरि ए.एन. कॉलेज, पटनामे हिन्दी विभागमे अध्यापन। पाथरक नाव (मैथिली कथा संग्रह, १९७२) प्रकाशित। मृत्यु १२ जनवरी २०११ कैं पटनामे।

बाबू श्री सत्यनारायण सिंह आ राघवाचार्य

मायानन्द मिश्र 1934-

हिनक जन्म १७ अगस्त १९३४ ई. कैं सुपौल जिलाक बनैनियाँ गाममे भेलनि।भाङ्क लोटा, आगि मोम आ� पाथर आओर चन्द्र-बिन्दु- हिनकर कथा संग्रह सभ छन्हि। बिहाड़ि पात पाथर , मंत्र-पुत्र ,खोता आ� चिडै आ� सूर्यास्त हिनकर उपन्यास सभ अछि॥ दिशांतर हिनकर कविता संग्रह अछि। एकर अतिरिक्त सोने की नैय्या माटी के लोग, प्रथमं शैल पुत्री च,मंत्रपुत्र, पुरोहित आ� स्त्री-धन हिनकर हिन्दीक कृति अछि।१९८८- मायानन्द मिश्र (मंत्रपुत्र, उपन्यास)पर मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।

प्रबोध सम्मान 2007सँ सम्मानित।



तारानन्द तरुण १९३५-२०११



सोमदेव 1934-

उपन्यासकार ओ कवि । साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति: चानोदाइ, होटल अनारकली (उपन्यास), काल ध्वनि (कविता संग्रह), चरैवेति (गीति नाट्य) सोम सतसइ (दोहा)।२००२- सोमदेव (सहस्रमुखी चौक पर, पद्य) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार। २००१ ई. - श्री सोमदेव, दरभंगा;यात्री-चेतना पुरस्कार, प्रबोध साहित्य सम्मान २०११।



राजनन्दन लाल दास 1934-

"कर्णामृतक"क सम्पादन। "चित्रा-विचित्रा" प्रकाशित।







श्याम चन्द्र 1934-

रमानन्द रेणु 1934-2011

जन्म स्थान
उसमामठ, दरभंगा, बिहार। वरिष्ठ कवि, कथाकार ओ उपन्यासकार। साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित। प्रकाशित कृति: कचोट, त्रिकोण, अंतहीन आकाश (कथा-संग्रह), दूधफूल (उपन्यास), अंततः, ओकरे नाम (कविता-संग्रह)। २०००- रमानन्द रेणु (कतेक रास बात, पद्य)लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०११ (समग्र योगदान लेल)

कालीकांत झा "बूच" 1934-2009

हिनक जन्म, महान दार्शनिक उदयनाचार्यक कर्मभूमि समस्तीपुर जिलाक करियन ग्राममे 1934 ई. मे भेलनि। पिता स्व. पंडित राजकिशोर झा गामक मध्य विद्यालयक प्रथम प्रधानाध्यापक छलाह। माता स्व. कला देवी गृहिणी छलीह। अंतरस्नातक समस्तीपुर काॅलेज, समस्तीपुरसँ कयलाक पश्चात् बिहार सरकारक प्रखंड कर्मचारीक रूपमे सेवा प्रारंभ कयलनि। बालहिं कालसँ कविता लेखनमे विषेश रूचि छल। मैथिली पत्रिका - मिथिला मिहिर, माटि - पानि, भाखा तथा मैथिली अकादमी पटना द्वारा प्रकाशित पत्रिकामे समय - समय पर हिनक रचना प्रकाशित होइत रहलनि। जीवनक विविध विधाकेँ अपन कविता एवं गीत प्रस्तुत कयलनि। साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा प्रकाशित मैथिली कथाक विकास (संपादक डा॰ बासुकीनाथ झा) मे हास्य कथा कारक सूची मे डा॰ विद्यापति झा हिनक रचना ��धर्म शास्त्राचार्यक उल्लेख कयलनि। मैथिली अकादमी पटना एवं मिथिला मिहिर द्वारा प्रशंसा पत्र भेजल जाइत छल।श्रृंगाररस एवं हास्य रसक संग-संग विचार मूलक कविताक रचना सेहो कयलनि। डा॰ दुर्गानाथ झा श्रीश संकलित मैथिली साहित्यक इतिहासमे कविक रूपमे हिनक उल्लेख कएल गेल अछि। **प्रकाशित कृति (मृत्योपरांत) :** कलानिधि- कविता-संग्रह।

उपन्यास "रूपा दीदी" प्रकाशित। गाम मलंगिया, जिला- मधुबनी।



डोरीलाल शर्मा "श्रोत्रिय" १९३५-

"मिथिला की पाण्डित्य परम्परा" पोथी प्रकाशित।



रामभद्र, धनुषा, नेपाल १९३५-२०२०

साहित्य तथा अन्यान्य क्षेत्रक कतोक सफल व्यक्तिसभ अपन प्रेरणास्रोत आ पथ-प्रदर्शक मानैत छथि। मैथिली साहित्य-क्षेत्रमे हिनक



केदारनाथ चौधरी (१९३६-)

मैथिलीक पहिल फिल्म 'ममता गाबय गीत' केर निर्माता द्वयमेसँ एकटा निर्माता छथि केदारनाथ

परिचयक मादे एतबाए कहब पर्याप्त होएत जे मैथिलीक मूर्द्धन्य साहित्यकार डा. धीरेन्द्र हिनका मैथिली साहित्यक सर्वश्रेष्ठ कथाकार मानैत छथि ।हिनक कथामे प्रतीकात्मकताक अदभुत प्रयोगहिटा नहि, अपितु एकटा आदर्श कथाक समस्त वैशिष्टसभविद्यमान रहैत अछि । कथाकारक अतिरिक्त ई उत्कृष्ट समालोचक, नाटककार आ कवि सेहो छथि । नेपालमे मैथिलीक पहिल मोनोड्रामा लिखबाक श्रेय सेहो हिनका जाइत छनि ।सामाजिक कुरीतिसभकँ कुशलतासँ चित्रण करबामे, चिन्तनीय बनएबामे आ मन-मस्तिष्कपर अमिट छाप छोड़बामे रामभद्र सिद्धहस्त छथि । धनुषा जिलाक कुर्था गाममे जनमल रामभद्रक पूर्ण नाम रामभद्र कर्ण छनि । अग्ङरेजी विषयक अवकाशप्राप्त शिक्षक रामभद्र व्याकरण, पाठयपुस्तक आ सहायक पुस्तकसभ लिखबाक काजमे निरन्तर सक्रिय छथि।

चौधरी आ दोसर मदनमोहन दास। बादमे आर्थिक मजबूरीवश तेसर सहनिर्माता भेलखिन उदयभानु सिंह। माता-स्व. कुसुमपरी देवी, पिता- स्व. किशोरी चौधरी, जन्म: ०३/०१/१९३६

ग्रा.+पत्रा. नेहरा (दरभंगा), अन्य पारिवारिक सदस्य-पत्नी-श्रीमती कुमुद चौधरी, संतान- प्रथम पुत्री-श्रीमती किरण झा, द्वितीय पुत्री-श्रीमती अर्चना चौधरी, शिक्षा- १९५८ ई.मे अर्थशास्त्रमे स्नातकोत्तर, १९५९ ई.मे लॉ। १९६९ ई.मे कैलिफोर्निया वि.वि.सँ अर्थस्थास्त्र मे स्नातकोत्तर, १९७१ ई.मे मार्केटिंग एंड डिस्ट्रीब्यूशन विषयमे गोल्डेन गेट यूनिवर्सिटी, सानफ्रांसिस्को, USA सँ एम.बी.ए., १९७८ मे भारत आगमन। १९८१-८६ क बीच तेहरान आ फ्रैंकफुर्तमे। फेर बम्बई, पुणे होइत रिटायरमेंटक बाद २००० सँ लहेरियासराय, दरभंगामे निवास।६ टा उपन्यास- चमेलीरानी २००४, करार २००६, माहुर २००८, अबारा नहितन २०१२, हीना २०१३, अयना २०१८. सम्मान- १) विदेह साहित्य सम्मान, बर्ख-२०१३ (झारखंड मैथिली मंच, राँची द्वारा), २) प्रबोध साहित्य सम्मान, बर्ख-२०१६ आ ३) केदार सम्मान, बर्ख-२०१६,'अबारा नहितन' लेल।



जीवकांत 1936-

नाम- जीवकान्त झा,पिता-गुणानन्द झा, माता-महेश्वरी देवी, जन्म-२५.०७.१९३६ अभुआढ़, जिला-सुपौल। नौकरी-विज्ञान शिक्षक (उ.वि.खजौली १९५७-८१), हिन्दी शिक्षक (उ.वि.डेओढ़ एवं उ.वि.पोखराम १९८१-९८)।पहिल रचना-इजोड़िया आ टिटही (कविता, जनवरी १९६५ मिथिला मिहिर)।पहिल छपल पोथी- दू कुहेसक बाट (उपन्यास १९६८)।नूतन पोथी-खिखिरक बीअरि (२००७ बाल पद्य कथा), अठन्नी खसलइ वनमे (पद्य-



हरिदास १९३६-२०१६

पत्नी महालक्ष्मी संग छायाचित्र। "जनम जुआ मति हारहु" प्रकाशित।



देवकांत झा 1936-

कथा संग्रह) आ पंजरि प्रेम प्रकासिया (जीवन-वृत्तक अंश)।पुरस्कार-साहित्य अकादेमी 1998 तकै अछि चिड़ै, पद्य , किरण सम्मान (१९९८), वैदेही सम्मान (१९८५)।प्रकाशित पोथी-

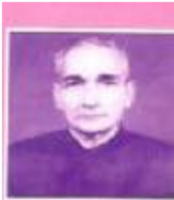
कविता संग्रह:नाचू हे पृथ्वी (७१), धार नहि होइछ मुक्त (९१), तकैत अछि चिड़ै (९५), खाँड़ो (१९९६), पानिमे जोगने अछि बस्ती (९८), फुनगी नीलाकाशमे (२०००), गाछ झूल-झूल (२००४), छाह सोहाओन (२००६), खिखिरिक बीअरि (२००७)

कथा-संग्रह:एकसरि ठाढ़ि कदम तर रे (७२), सूर्य गलि रहल अछि (७५), वस्तु (८३), करमी झील (९८)

उपन्यास:दू कुहेसक बाट(६८), पनिपत(७७), नहि, कतहु नहि (७६), पीयर गुलाब छल (७१), अगिनबान (८१)

हिन्दी अनुवाद- निशान्त की चिड़िया (तकैत अछि चिड़ै, साहित्य अकादमी, दिल्ली २००३)।

प्रबोध सम्मान 2010 सँ सम्मानित।



डॉ अमरेश पाठक 1936-

हिनक जन्म सीतामढ़ी जिलाक अन्तर्गत सामारि ग्राममे १९३६ मे भेलन्हि । १९५७ मे पटना विश्वविद्यालयसँ मैथिलीक एम. ए. परीक्षामे प्रथम श्रेणीमे प्रथमस्थान पाओल । १९५७ सँ १९६० धरि रामकृष्ण महाविद्यालय, मधुबनीमे व्याख्याता रूपेँ तकरा बाद पटना विश्वविद्यालयमे व्याख्याता रूपमे कार्य करए लगलाह । पटना विश्वविद्यालयमे मैथिली विभागाध्यक्ष रूपेँ । मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन� शोध प्रबन्धपर हिनका बिहार विश्व-विद्यालय द्वारा डि. लिट्क उपाधि भेटलन्हि । ई शोध प्रबन्ध पुस्तकाकार रूपेँ सेहो प्रकाशित भेल अछि



बलराम 1936-2008

जन्म स्थान पचही, मधुबनी, बिहार । विशिष्ट कथाकार । प्रकाशित कृति : दकचल देबाल (कथा-संग्रह)।



मैथिलीपुत्र प्रदीप 1936-

ग्राम- कथवार, दरभंगा। प्रशिक्षित एम.ए., साहित्य रत्न, नवीन शास्त्री, पंचाग्नि साधक। हिनकर रचित "जगदम्ब अहीं अवलम्ब हमर" आ "सभक सुधि अहाँ लए छी हे अम्बे, हमरा किए बिसरै छी यै" मिथिलामे लेजेंड भए गेल अछि।

बिहार राष्ट्रभाषा परिषदक विद्यापति ग्रन्थावलीक सम्पादक मण्डलक सदस्य । हिनक अन्य प्रकाशित रचना अछि �निबन्ध संकलन� । एकरा छोड़ि विभित्र पत्न-पत्निकामे हिनक कतेको निबन्ध प्रकाशित छन्हि । मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित कथा-संग्रहक इहो एक सम्पादक छथि । ई अधिकतर उच्च स्तरीय आलोचनात्मक निबन्ध लिखैत छथि । २०००- डॉ. अमरेश पाठक, (तमस- भीष्म साहनी, हिन्दी)लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



रामदेव झा 1936-

कथाकर, समीक्षक, अनुवादक, ग्रंथ सम्पादक । साहित्य अकादेमीक मूल एवं अनुवाद पुरस्कार प्राप्त कर्त्ता ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगाक मैथिली विभागक पूर्व प्राचार्य । प्रकाशन: पसिझैत पाथर, (अनु.) आदि । १९९१- रामदेव झा (पसिझैत पाथर, एकांकी)लेल साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित ।१९९४- रामदेव झा (सगाइ- राजिन्दर सिंह बेदी, उर्दू) लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



रवीन्द्र नाथ ठाकुर 1936-

जन्म पूर्णिआ जिलाक धमदाहा ग्राममे 1936 ई. मे भेलन्हि । नेने अवस्थासँ गीत गएबामे एवं कविता लिखबामे विशेष रुचि । कोनो मंच पर ठाढ़ भेला पर ई सहजहि श्रीताकेँ आह्लादित करैत छथि । हिनक सात गोट मैथिलीक गीत संग्रह, एक मिनी महाकाव्य, एक प्रयोगधर्मी काव्य, एक उपन्यास, एक नाटक �एक राति� एवं एक हिन्दी नाटक, प्रकाशित भेल छन्हि ।



बिनोद बिहारी वर्मा 1937-2003

मैथिल करण कायस्थक पाँजिक सर्वेक्षण, बलानक बोनिहार ओ पल्लवी तथा अन्य कथा (कथा संग्रह)



वीरेन्द्र मल्लिक 1937-

जन्म-
3 जनबरी 1937 ई. परसौनी, मधुबनीमे।कवि, सम्पादक, समीक्षक । आखर, अगनिपत्रक सम्पादन ।अग्नि-शिखा (कविता संग्रह)।



कीर्तिनारायण मिश्र 1937-

जन्म १७ जुलाई १९३७ ई. कैं ग्राम शोकहारा (बरौनी), जिला बेगूसरायमे भेलन्हि। हुनकर प्रकाशित कृति अछि सीमान्त,महानगर (दीर्घ कविता), हम स्तवन नहि लिखब, ध्वस्त होइत शांति स्तूप (एहि पोथीपर साहित्य
अकादमी 1997 पुरस्कार), आदमीकेँ जोहैत (कविता संग्रह)। संस्मरण-अपन



गौरीकांत चौधरीकांत 1937-2001

एकांतमे, स्मृति यात्रा, पत्रक दर्पणमे। सम्पादन- आखर मासिक पत्रिका, आधुनिक मैथिली साहित्य, '63, राजकमल जीवन आ साहित्य, '68, कथा-संकलन- काल कोठरी। आलोचना- अर्थांतर-2004



युगल किशोर मिश्र १९३८-२००७

मैथिली शब्दकोष।



प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' 1938-

ग्राम+पोस्ट- हसनपुर, जिला-समस्तीपुर।मैथिलीमे १.नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास(विराटनगर,१९७२ई.), २.ब्रह्मग्राम(रिपोर्ताज दरभंगा १९७२ ई.), ३.�मैथिली� त्रैमासिकक सम्पादन (विराटनगर,नेपाल १९७०-७३ई.), ४.मैथिलीक नेनागीत (पटना, १९८८ ई.), ५.नेपालक आधुनिक मैथिली साहित्य (पटना, १९९८ ई.), ६. प्रेमचन्द चयनित कथा, भाग- १ आऽ २ (अनुवाद), ७. वाल्मीकिक देशमे (महनार, २००५ ई.)।२००४- डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह �मौन� (प्रेमचन्द की कहानी-प्रेमचन्द, हिन्दी) लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



महेश्वरनाथ मल्लिक 1938-



परशुराम झा १९३८-

गाम- मेंहथ (मधुबनी), कृति- डाइमेन्शन्स ऑफ पीस इन इन्गलिश ड्रामा,क्रिश्चियन पोएटिक ड्रामा।



कुलानन्द मिश्र 1940-2000

जन्म पकड़ी कोठी, सीतामढ़ी, बिहार। सुविख्यात कवि,, संपादक, समालोचक। प्रकाशित कृति- तावत एतबे, भोरक प्रतीक्षामे (कविता संग्रह), भारतक भाषा सर्वेक्षण, पारो, राजकमल चौधरी की ग्यारह कहानियाँ (अनुवाद)।



बिलट पासवान 'विहंगम' 1940-

जन्म मधुबनी जिलाक एकहत्था ग्राममे १९४० ई. मे भेलन्हि।



फजलुर रहमान हासमी 1940-2011

जन्म-पटना जिलाक बराह गाममे। वृत्ति अध्यापक। हिन्दी कविता संग्रह "रश्मि राशि" आ मैथिली कविता संग्रह "निर्मोही" प्रकाशित। १९९६मे अबुलकलाम आजाद- अब्दुलकवी देसनवी, उर्दूसँ मैथिली अनुवादपर साहित्य अकादमीक मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



गुणनाथ झा

गुणनाथ झा "लोक मञ्च" मैथिली नाट्य पत्रिकाक संचालन- सम्पादन केने छथि। मैथिलीमे आधुनिक नाटकक प्रणयन। हुनकर नाटक सभ अछि:

मधुयामिनी: एकाङ्क नाट्य शैलीमे दूटा पात्र, पुरुष संयुक्त परिवारक पक्ष लेनिहार आ स्त्री तकर विरोधी।

पाथेय: एकाङ्क नाट्य शैलीमे रचित, मुदा पूर्णाङ्कक सभ विशेषता ऐमे भेटत। मुख्य अभिनेता मिथिलाक अधोगतिसँ दुखी भऽ गामकेँ कर्मस्थली बनबैत छथि, स्वजन विरोध करै छथि।

लाल-बुझक्कर: एकाङ्क नाट्य शैलीमे रचित। दाही रौदीसँ झमारल निम्न आ मध्य-निम्न वर्ग स्वतंत्रताक पहिनहियो आ बादो जीविकोपार्जन लेल प्रवास करबा लेल अभिशप्त छथि।

सातम चरित्र: एकाङ्क नाट्य शैलीमे रचित। मैथिली रंगमंचपर महिला अभिनेत्रीक अभाव, सातम चरित्रक प्रतीक्षामे पूर्वाभ्यास खतम भऽ जाइत अछि।

शेष नञि: आधुनिक सामाजिक पूर्णाङ्क नाटक। पिता-माताक मृत्युक बाद अग्रजक अनुजक प्रति पितृवत व्यवहार।

आजुक लोक: पूर्णाङ्क नाटक। विषय निम्नमध्यवर्गीय बेरोजगारी आ बियाहक दायित्वक बोझ।

जय मैथिली: पूर्णाङ्क नाटक। मिथिलाक भाषिक-सांस्कृतिक समस्या एकर कथावस्तु अछि।

महाकवि विद्यापति: विद्यापतिक नव विश्लेषण।



प्रभास कुमार चौधरी 1941-1998

गाम- पिंडारुछ, जिला- दरभंगा ।प्रख्यात कथाकार ओ उपन्यासकार । प्रभासक प्रकाशित कृति : कथा-प्रभास, प्रभासक कथा, नव घर उठय पुरान घर खसय, दिदवल (कथासंग्रह), अभिशप्त, युगपुरुष, हमरा लग रहब, नवारम्भ, राजा पोखरिमे कतेक मछरी (उपन्यास) । विभिन्न महत्वपूर्ण पत्रिकाक सम्पादन । त्रैमासिक कथा गोष्ठी 'सगर राति दीप जरय' केर प्रारम्भ।१९९०- प्रभास कुमार चौधरी (प्रभासक कथा, कथा) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित ।



साकेतानन्द 1940-

वरिष्ठ कथाकार, गणनायक (कथा-संग्रह) लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित। प्रकाशित कृति: मैथिली कथा साहित्यमे 1962 स� सक्रिय । गोडेक चालिस_पचास टा कथा, रिपोर्ताज. संस्मरण, यात्रा_विवरण



गंगेश गुंजन 1942-

जन्म स्थान- पिलखबाड़, मधुबनी।श्री गंगेश गुंजन मैथिलीक प्रथम चौबटिया नाटक बुधिबधियाक लेखक छथि आ हिनका उचितवक्ता (कथा संग्रह) क लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटल



प्रेमशंकर सिंह 1942-

ग्राम+पोस्ट- जोगियारा, थाना- जाले, जिला- दरभंगा।मौलिक मैथिली: १.मैथिली नाटक ओ रंगमंच,मैथिली अकादमी, पटना, १९७८ २.मैथिली नाटक परिचय, मैथिली अकादमी, पटना, १९८१ ३.पुरुषार्थ ओ विद्यापति, ऋचा प्रकाशन, भागलपुर, १९८६ ४.मिथिलाक विभूति जीवन झा, मैथिली अकादमी, पटना, १९८७५.नाट्यान्वाचय, शेखर

मैथिलीमे प्रकाशित अधिकांश पत्र_पत्रिकामे छपल । पहिल मैथिली कथा �ग्लेसियर� 1962मे �मिथिलामिहिर�मे प्रकाशित । हिन्दियोमे दू दर्जन कथा आदि प्रकाशित । सन 99मे छपल पहिल कथा_संग्रह �गणनायक� के ओही वर्ष �साहित्य अकादमी पुरस्कार। पैघ बान्ध� स� अबैबला विपत्तिके रेखांकित करैत, पर्यावरण के कथा वस्तु बना क� राजकमल प्रकाशन स� प्रकाशित एवं अत्यंत चर्चित उपन्यास (�डौकूमेंट्री फिक्शन�) �सर्वस्वांत� ।आकाशवाणीक राष्ट्रीय कार्यक्रममे प्रसारित दू टा उल्लेखनीय वृत्त रूपक_ �महानन्दा अभयारण्य� पर आधारित �जंगल बोलता है� एवं झारखंड के ग्रामीण क्षेत्रक ज्वलंत डाइनक समस्या पर आधारित वृत्तरूपक � नैना जोगन � चर्चित एवं प्रसिद्ध ।

छन्हि। एकर अतिरिक्त मैथिलीमे हम एकटा मिथ्या परिचय, लोक सुनू (कविता संग्रह), अन्हार- इजोत (कथा संग्रह), पहिल लोक (उपन्यास), आइ भोर (नाटक)प्रकाशित। हिन्दीमे मिथिलांचल की लोक कथाएँ, मणिपद्मक नैका- बनिजाराक मैथिलीसँ हिन्दी अनुवाद आ शब्द तैयार है (कविता संग्रह)।१९९४- गंगेश गुंजन (उचितवक्ता, कथा)पुस्तक लेल सहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित ।

प्रकाशन, पटना २००२ ६.आधुनिक मैथिली साहित्यमे हास्य-व्यंग्य, मैथिली अकादमी, पटना, २००४ ७.प्रपाणिका, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००५, ८.ईक्षण, ऋचा प्रकाशन भागलपुर २००८ ९.युगसंधिक प्रतिमान, ऋचा प्रकाशन, भागलपुर २००८ १०.चेतना समिति ओ नाट्यमंच, चेतना समिति, पटना २००८। २००९ ई.-श्री प्रेमशंकर सिंह, जोगियारा, दरभंगा यात्री-चेतना पुरस्कार।



मार्कण्डेय प्रवासी 1942-2010

जन्म ग्राम: गरुआर, जिला: समस्तीपुर । प्रकाशित कृति: अगस्त्यायिनी (महाकाव्य); एतदर्थ (कविता संग्रह), अक्षर चेतना (काव्य संग्रह)। अभियान, हम कालिदास (उपन्यास)। �अगस्त्यायिनी� लेल १९८१मे साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त।



देवेन्द्र झा १९४३-

गाम- चानपुरा (मधुबनी), कृति- विद्यापतिक श्रृंगारिक पदक काव्यशास्त्रीय अध्ययन, लालदास, सुधाकर झा "शास्त्री", अनुभव, बदलि जाइछ घरे टा।



डॉ. भीमनाथ झा 1945-

जन्म:कोइलख, मधुबनी, बिहार । प्रखर कवि, समालोचक, प्राध्यापक । �विविधा�निबन्ध पुस्तक लेल सन् १९९२मे सहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति: त्रिधारा, वीणा, की फुरैए की नहि, नाम तँ थिक ओएह (कविता संकलन), परिचायिका, सीताराम झा, कवि चूड़ामणिक काव्य साधना, विविधा (निबंध, आलोचना),टावर चौकसँ आदि ।



महेन्द्र मलंगिया 1946-





गाम- मलंगिया, जिला- मधुबनी । मैथिलीक सुपरिचित नाटककार, रंग निर्देशक एवं मैलोरंगक संस्थापक अध्यक्ष । लोक साहित्य पर गंभीर शोध आलेख । मैथिलीमे 13टा नाटक, 19टा एकांकी, 14टा नुक्कड़ आ 10टा रेडियो नाटक प्रकाशित आ आकाशवाणी सँ प्रसारित । सीनियर फेलोशिप (भारत सरकार), इंटरनेशनल थिएटर इंस्टिच्यूट (नेपाल), प्रबोध साहित्य सम्मान आदि सँ सम्मानित । संप्रति ज्योतिरीश्वर लिखित मैथिलीक प्रथम पुस्तक वर्णरत्नाकर पर शोध कार्य । श्री महेन्द्र मलगियाक जन्म २० जनबरी १९४६ मे मधुबनी जिलाक मलंगिया गाममे भेलन्हि। मलंगियाजी मैथिली हिन्दी, अंग्रेजी आ नेपाली भाषाक जानकार आ थियेटर शिक्षण, पटकथा लेखन आ तत्सम्बन्धी शोधक फ्रीलान्स शिक्षक छथि।२००२ ई.- श्री महेन्द्र मलंगिया, मलंगिया;यात्री-चेतना पुरस्कार। प्रबोध सम्मान 2005 सँ सम्मानित।

डॉ राम दयाल राकेश, सर्लाही, नेपाल 1942-

मैथिली मातृभाषा, हिन्दीक प्राध्यापक आ नेपालीक लेखक ई तीनू भाषा �राकेश�क व्यक्तित्वमे एना ने मिझराएल छैक जे कोनहुसँ हिनका भिन्न नहि कएल जा सकैत अछि । ई विशेषत: नेपालीमे लिखैत छथि, मुदा लेखनक विषय मूलत: मैथिलीए संस्कृति रहैत छनि । ओना मैथिली, हिन्दी आ अङ्रेजीमे सेहो ई अनेक रचना कएने छथि ।नेपालक राजकीय-प्रज्ञा-प्रतिष्ठानक सदस्य �राकेश� दिल्ली विश्वविद्यालयसँ पीएचडी आ अमेरिकास्थित इण्डियाना यूनिभर्सिटीसँ पोस्ट डाक्टरल रिसर्च कएने छथि । डा. �राकेश�क जन्म २५ जुलाइ १९४२ ई. कऽ सर्लाही जिलाक सिसौटियामे भेल छनि । नेपाली, मैथिली, हिन्दी आ अङ्रेजीमे मौलिक, सम्पादित आ अनूदित कऽ करीब दू दर्जन पोथी प्रकाशित , दर्जनभरि देशक भ्रमण सेहो कएने छथि । नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सदस्यता- श्री राम दयाल राकेश (1999)।

उपेन्द्र दोषी 1943-2001

जन्म स्थान रामपुर-कोरिगामा, दरभंगा । कवि-कथाकार, गीत-गजलकार । प्रकाशित कृति: यंत्रणाक क्षणमे (कविता संग्रह)। हिन्दीमे अनेक पोथी प्रकाशित। ओड़ियासँ मैथिली अनुवाद हेतु मृत्युपरान्त साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत। २००३- उपेन्द दोषी (कथा कहिनी- मनोज दास, उड़िया) लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



उदयचन्द्र झा "विनोद" 1943-

जन्म 5 अप्रैल 1943 ई.। गाम- रहिका, मधुबनी । जन्म-ग्राम- दुलहा, मधुबनी । प्रकाशित कृति: संक्रान्ति, मौसम अयला पर, एहना स्थितिमे, भरि देह गौरा, एहि जनपदमे, दोहा तीन सय दू, कहलनि पत्नी, सहरजमीन, अपक्ष, प्रश्नवाचक (कविता-संग्रह), धूरी (सहयोगी कविता संग्रह); जाँत (कथा संग्रह), उदास गाछक वसंत (नाटक)। �माटि पानि�क वरेण्य सम्पादक।२००५ ई.-श्री उदय चन्द्र झा �विनोद�, रहिका, मधुबनी;यात्री-चेतना पुरस्कार।



रेवती रमण लाल, जनकपुर 1943-



मंत्रेश्वर झा 1944-

जन्म ६ जनवरी १९४४ ई.ग्राम-लालगंज, जिला-मधुबनीमे। प्रकाशित कृति: खाधि, अन्चिनहार गाम, बहसल रातिक इजोत (कविता संग्रह); एक बटे दू (कथा संग्रह), ओझा लेखे गाम बताह (ललित निबन्ध)। मैथिली कथा संग्रहक हिन्दी अनुवाद �कुंडली� नामसँ प्रकाशित। दि फूल्स पैराडाइज (अंग्रेजीमे ललित निबन्ध)। २००८ ई.-श्री मंत्रेश्वर झा, लालगंज,मधुबनी यात्री-चेतना पुरस्कार। २००८- मंत्रेश्वर झा (कतेक डारि पर, आत्मकथा) पर साहित्य अकादमी पुरस्कार।



रत्नेश्वर मिश्र 1945-

अनुवादक, निबंधकार । प्रकाशन: तमिल साहित्यक इतिहास,भवभूति (दुनू अनुवाद)।



जगदीश प्रसाद मंडल

गाम-बेरमा, तमुरिया, जिला-मधुबनी। एम.ए.।कथाकार (गामक जिनगी-कथा संग्रह आ तरेगण- बाल-प्रेरक लघुकथा संग्रह), नाटककार(मिथिलाक बेटी-नाटक), उपन्यासकार(मौलाइल गाछक फूल, जीवन संघर्ष, जीवन मरण, उत्थान-पतन, जिनगीक जीत- उपन्यास)। मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर कथामे गामक लोकक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११ मूल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (गामक जिनगी, कथा संग्रह)।मैथिली उपन्यास 'पंगु' लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार २० २१



राज



महाराजाधिराज लक्ष्मीश्वर सिंह 1858-1898



महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह 1860-1929



महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह 1907-1962



सर हरगोविन्द मिश्र, अलीगढ़ आ कामेश्वर सिंह



बिनोदानन्द झा 1895-1971

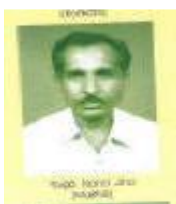


ललित नारायण मिश्र 1922-1975







डॉ. रामबरन यादव, नेपाल राष्ट्रपति	स्वर्गीय विन्ध्येश्वरी प्रसाद मंडल, राजनेता 1919-1982	भूपेन्द्र नारायण मण्डल
 कर्पूरी ठाकुर 1921-1988	 रामविलास पासवान १९४६- जन्म ५ जुलाइ १९४६, गाम-शहरबन्नी, जिला खगड़िया। भारतीय राजनीतिज्ञ।	 राम लषण राम "रमण"
 भोगेन्द्र झा	 चतुरानन मिश्र	 रमाकांत मिश्र
 रमानाथ मिश्र "मिहिर" "मैथिली मुहावरा एवम् लोकोक्ति प्रकाश" प्रकाशित।	 गजेन्द्र नारायण चौधरी, पत्रकार 1929-2008	 मोहन भारद्वाज 1943- गाम- नवानी, जिला- मधुबनी । मैथिलीक प्रखर समालोचक।२००७ ई.-श्री आनन्द मोहन झा, भारद्वाज, नवानी, मधुबनी;यात्री-चेतना पुरस्कार। प्रबोध सम्मान 2008 सँ सम्मानित।
		

योगानन्द झा 1955-

२००५- डॉ. योगानन्द झा (बिहारक लोककथा- पी.सी.राय चौधरी, अंग्रेजी)लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार। **प्रकाशित कृति:** लोकजीवन ओ लोक साहित्य (निबन्ध) 1986, परिणीता (कथाकव्यांश) 1987, फकीर मोहन सेनापति (अनुवाद) 2000, आलेख सञ्चयन (निबन्ध) 2002, बिहारक लोककथा (अनुवाद) 2003, स्नेहलता (विनिबन्ध) 2006, मैथिली पत्रकारिताकेँ सौ वर्ष (निबन्ध) 2006, गहबरगीत (निबन्ध) 2007, लोक-साहित्य ओ शब्द-सम्पदा (निबन्ध) 2007, मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली (शोध-ग्रन्थ) 2009

हीरानन्द झा "शास्त्री" ,पत्रकार

दीनानाथ झा, पत्रकार



नरेन्द्र झा, अर्थशास्त्र-पत्रकार

"विकास ओ अर्थतंत्र" प्रकाशित।



प्रेमशंकर झा, पत्रकार



शरदिन्दु चौधरी, पत्रकार



राजेश्वर झा (१९२३-१९७७)

जन्म- सहरसा जिलाक रसुआर गाम (आब सुपौल जिला)।

कृति- मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास, अवहट्ठ: उद्भव ओ विकास, मैथिली साहित्यक आदिकाल, विद्यापतिक संगीतमे



एस.एन.सत्यार्थी

मिथिलाक कला आ शिल्पकलापर लेखन।



राधाकृष्ण चौधरी, इतिहासकार 1921-1985

मिथिलाक इतिहास, A Survey of Maithili Literature, THE POLITICAL AND CULTURALHERITAGE OF MITHILA प्रकाशित।

वर्णित नायक-नायिका भेद एवं राग-रागिनी वर्गीकरण।

महाकवि विद्यापति नाटक, शास्त्रार्थ नाटक, कन्दर्पीघाट नाटक, एकादशी, विद्याधर-कथा, उर्वशी, धर्मव्याध- कथा, मेनका।



प्रो. रामशरण शर्मा १९२० -२०११



विजयकान्त मिश्र इतिहासकार 1927-1994

डॉ. विजयकांत मिश्रक जन्म १० अगस्त १९२७ मंगरौनी गाम - जे नव्य न्याय आ तांत्रिक साधनाक जन्म-स्थली अछि- (जिला मधुबनी) मे भेलन्हि। ओ 1948 मे प्राचीन भारतीय इतिहास आ संस्कृति विषयमे एलाहाबाद विश्वविद्यालयसँ सनात्तकोत्तर उपाधि कएलाक बाद कतेक बरख धरि बिहार सरकार आ पटना विश्वद्यालयसँ सम्बद्ध रहलाह आ 1957 ई. सँ भारतीय पुरात्तत्व विभागमे काज कएलन्हि आ ओकर शिशुपालगढ़, कौशाम्बी, वैशाली, हस्तिनापुर, कुम्हरार, पाटलिपुत्र, करियन, सोनपुर, बिलावली, नालन्दा, राजगीर, चन्द्रवल्ली, आ हम्पी खुदाइमे विभिना भूमिकामे भाग लेलन्हि।हिनकर लिखल-सम्पादित पोथी सभमे अछि: 1.वैशाली,1950 2.कुम्हरार एक्सकेवेशंस: 1950-1957 3.पुरातत्व की दृष्टिमे वैशाली 4.नागेश भट्टाज पारिभाषेन्दुशेखर 5.मिथिला आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर (सम्पादित) 6.कल्चरल हेरिटेज ऑफ मिथिला 7.श्रृंगार भजनावली- एक अध्ययन 8.क्षेत्र पुरातत्वविज्ञान- 9.पुरातत्व शब्दावली।



द्विजेन्द्र नारायण झा, इतिहासकार



सुरेश्वर झा, राजनीति विज्ञान

२००१- सुरेश्वर झा (अन्तरिक्षमे विस्फोट- जयन्त विष्णु नार्लीकर, मराठी)लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



भागीरथ लाल दास

भारतक कएक देशमे राजदूत रहल छथि आ जी.ए.टी.टी. मे भारतक प्रतिनिधि सेहो छलाह।



लक्ष्मीकान्त झा रिजर्व बैंक गवर्नर 1913-1988



एन. एन. झा डिप्लोमेट



कामेन्द्रनाथ झा "अमल" 1938-

जन्म- 4 जनवरी 1938, गाम कोइलख (मधुबनी)। ग्रिभांस (कथासंग्रह) प्रकाशित।



भाग्यनारायण झा 1941-



रमाकांत राय "रमा" 1947

जन्म- भादो पूर्णिमा सम्वत् 2003, प्रथम रचना- बटुक, बाल मासिक प्रयाग, कथा विशेषांक द्वितीय भागमे 1964ई., प्रकाशित कृति(क) तीनटा बाबाजी-(रूसीसँ मैथिलीमे मैथिलीमे टाल्स्टायक कथाक अनुवाद-1967ई.मे, (ख) फूलपात, कविता संग्रह 1978, (ग) भांगक गोला (2004 ई.मे), (घ) कटैत पाँखि: हँसैत आँखि , कथा संग्रह-2005, शीघ्र प्रकाश्य- कृष्णकान्त मिश्र (विनिबन्ध) साहित्य अकादेमी नई दिल्ली। प्राय: डेढ़ सए रचना (कथा-निबन्ध कविता) मैथिली हिन्दीक पत्र-पत्रिका, आकाशवाणी एवं दूरदर्शनसँ प्रकाशित/ प्रसारित। साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित कवि सम्मेलनक आयोजनक क्रममे रेलक चपेटमे पड़िदहिना पएर छाबा धरिगमा विकलांग। सेवा निवृत अध्यापक (उच्च विद्यालय) सम्पर्क- श्री रमानिवास, मानाराय टोल पो. नरहन (समस्तीपुर)।



प्रोफेसर महेन्द्र 1947-

जन्म: भेलाही, सुपौल, बिहार । प्रसिद्ध कवि, कथाकार, आलोचक । वृत्ति: भू.ना. विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर केन्द्र, सहरसामे मैथिली विभागाध्यक्ष। प्रकाशित कृति साहित्य अकादेमीसँ प्राकाशित मोनोग्राफ शैलेन्द्र मोहन झा । सहयोगी संकलन-संकल्प । �राजकमल जयन्ती प्रसंगक संपादन।



महेन्द्र 1944-2009

जन्म मधुबनी जिलाक जमसम गाममे। प्रसिद्ध मैथिली गीतकार आ गायक।



सुभाषचन्द्र यादव 1948-

जन्म ०५ मार्च १९४८, मातृक दीवानगंज, सुपौलमे। पैतृक स्थान: बलबा-मेनाही, सुपौल।घरदेखिया (मैथिली कथा-संग्रह), मैथिली अकादमी, पटना, १९८३, हाली (अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, १९८८, बीछल कथा (हरिमोहन झाक कथाक चयन एवं भूमिका), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, १९९९, बिहाड़ि आउ (बंगला सँ मैथिली अनुवाद), किसुन संकल्प लोक, सुपौल, १९९५, भारत-विभाजन और हिन्दी उपन्यास (हिन्दी आलोचना), बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, २००१, राजकमल चौधरी का सफर (हिन्दी जीवनी) सारांश प्रकाशन, नई दिल्ली, २००१, बनैत-बिगड़ैत (कथा-संग्रह) २००९। मैथिलीमे करीब सत्तरि टा कथा, तीस टा समीक्षा आ हिन्दी, बंगला तथा अंग्रेजी मे अनेक अनुवाद प्रकाशित।



सुभद्र झा 1909-2000

"फॉर्मेशन ऑफ मैथिली लैंगुएज"क लेखक। १९८६- सुभद्र झा (नातिक पत्रक उत्तर, निबन्ध)पर मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।



रामावतार यादव, मैथिली भाषिकी, नेपाल 1942-

देश-विदेशक भाषाविज्ञान जर्नलमे पचासो आलेखक द्वारा मैथिलीक विशिष्टताकेँ उजागर केनिहार। *मैथिली ध्वनिशास्त्र* 1984 ई. मे जर्मनीसँ आ *मैथिलीक सन्दर्भ व्याकरण* 1996 ई. मे बर्लिन आ न्यूयार्कसँ प्रकाशित। 2000 ई..मे लंदनसँ प्रकाशित *भारतीय आर्यभाषा* पुस्तक मे संकलित हिनकर मैथिली भाषा संबंधी आलेख विशेष उल्लेखनीय। नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानसँ पासाङ ल्हामु प्रज्ञा-पुरस्कारसँ सम्मानित।



योगेन्द्र प्रसाद यादव, भाषिकी,सिरहा, नेपाल 1946-

1998 ई. मे जर्मनीसँ प्रकाशित *इशुज इन मैथिली सिंटैक्स* आ *टॉपिक्स इन नेपालीज लिग्विस्टिक्स, रीडिंग्स इन मैथिली लंगुएज- लिटरेचर एण्ड कल्चर* आ *लेक्सीग्राफी इन नेपाल* (सम्पादित) प्रकाशित। नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानमे भाषा-विभागक प्राज्ञ रहि कतोक महत्वपूर्ण कार्यक सम्पादन। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सदस्यता श्री योगेन्द्र प्रसाद यादव (1994)। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान आजीवन सदस्यता श्री योगेन्द्र प्रसाद यादव।



रमानन्द झा 'रमण' 1949-

जन्म: 02 जनबरी 1949, शिक्षा- एम.ए., पीएच.डी., आजीविका- भारतीय रिजर्व बैंक, पटना (सेवा निवृत्त)। **प्रकाशन:** 1. नवीन मैथिली कविता,1982, 2. मैथिली नऽव कविता,1993, 3. मैथिली साहित्य ओ राजनीति, 1994,
4. अखियासल, 1995,
5. बेसाहल,2003, 6. भजारल, 2005., 7. निर्यात कैसे शुरू करें? हिन्दी- रिजर्व बैंक, पटनाक प्रकाशन सम्पादित 8. मैथिलीक आरम्भिक कथा, 1978 समीक्षा,



रामलोचन ठाकुर 1949-

श्री रामलचन ठाकुर, जन्म १८ मार्च १९४९ ई.पलिमोहन, मधुबनीमे। वरिष्ठ कवि, रंगकर्मी, सम्पादक, समीक्षक। भाषाई आन्दोलनमे सक्रिय भागीदारी। **प्रकाशित कृति**- इतिहासहन्ता, माटिपानिक गीत, देशक नाम छल सोन चिड़ैया, अपूर्वा (कविता संग्रह), बेताल कथा (व्यंग्य), मैथिली लोक कथा (लोककथा), प्रतिध्वनि (अनुदित कविता), *जा सकै छी, किन्तु किए जाउ*(अनुदित कविता), लाख प्रश्न अनुत्तरित (कविता), जादूगर (अनुवाद), स्मृतिक धोखरल रंग (संस्मरणात्मक निबन्ध), आंखि मुनने: आंखि खोलने (निबन्ध)। अनुवाद लेल **भाषा-भारती सम्मान 2003-**

9. श्यामानन्द रचनावली, 1981, 10. जनार्दन झा जनसीदन कृत निर्दयीसासु (1914) आ पुनर्विवाह (1926), 1984, 11. चेतनाथझाकृत श्रीजगन्नाथपुरी यात्रा (1910), 1994, 12. तेजनाथ झाकृत सुरराजविजय नाटक (1919), 1994, 13. रासबिहारीलाल दासकृत सुमति (1918), 1996, 14. जीबछ मिश्रकृत रामेश्वर (1916), 1996, 15. भेटघाँट (भेटवार्ता), 1998, 16. रूचय तँ सत्य ने तँ फूसि, 1998, 17. पुण्यानन्द झाकृत मिथिला दर्पण (1925), 2003, 18. यदुवर रचनावली (1888-1934) 2003, 19. श्रीवल्लभ झा (1905-1940) कृत विद्यापति विवरण, 2005, 20. मैथिली उपन्यासमे चित्रित समाज, 2003। अनुवाद लेल **भाषा-भारती सम्मान 2004-05** (सी.आइ.आइ.एल., मैसूर) छओ बिगहा आठ कट्ठा- फकीर मोहन सेनापतिक ओड़िया उपन्यासक मैथिली अनुवाद लेल प्राप्त।

04 (सी.आइ.आइ.एल., मैसूर) *जा सकै छी, किन्तु किए जाउ-* शक्ति चट्टोपाध्यायक बांग्ला कविता-संग्रहक मैथिली अनुवाद लेल प्राप्त। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०१२ अनुवाद पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर- (पद्मानदीक माझी, बांग्लासँ मैथिली अनुवाद, बांग्ला-उपन्यास - मानिक बंद्योपाध्याय)



गंगा प्रसाद मंडल "अकेला", नेपाल 1944-

पं सुन्दर झा शास्त्री राष्ट्रिय प्रतिभा पुरस्कारसँ सम्मानित। मिथिलांचलक किछु लोक कथा (संकलन आ सम्पादन) आ शिरीषक फूल (अनुवाद) प्रकाशित।



महेन्द्रनारायण निधि, धनुषा, नेपाल



परमेश्वर कापड़ि, धनुषा, नेपाल



जयनारायण झा "जिज्ञासु", नेपाल



सुरेश झा, नेपाल 1920-1995



रोहिणी रमण झा 1950-



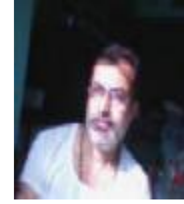
डॉ. कमलाकान्त भण्डारी 1952-

कबीर (मैथिली) पर शोध।



विनोद बिहारी लाल 1953-

जन्म स्थान पचही, मधुबनी, बिहार ।चर्चित कथाकार । सयसँ ऊपर कथा प्रकाशित ।



अरविन्द ठाकुर 1954-

परती टूटि रहल अछि (कविता संग्रह), अन्हारक विरोधमे (कथा संग्रह), बहुरुपिया प्रदेश मे (गजल संग्रह)।



श्याम दरिहरे 1954-

जन्म स्थान बरहा, बेनीपट्टी मधुबनी, बिहार । कवि, कथाकार । प्रकाशित कृति : सरिसोमे भूत (कथा संग्रह) अनूदित कृति : कनिप्रिया (धर्मवीर भारती)



दिनेश कुमार झा

मैथिलीक इतिहासपर लेखन।



अशोक कुमार ठाकुर

जन्म 2 जनवरी 1944 ई.। गाम बड़ागाँव (पंडौल)। नागमंडल (नाटक-अनुवाद), निशांत, वसुधाक संसार (उपन्यास)



प्रतापनारायण झा, नेपाल



शीतल झा, नेपाल



उग्रनारायण मिश्र "कनक"



डॉ. शम्भूनाथ चौधरी 1920-2008



इन्द्रकांत झा



पंचानन मिश्र



प्रोफेसर गुरमैता

ज्योतिरीश्वरपर लेखन।



महेन्द्र नारायण सिंह "मगन"



सूर्यकांत झा, जनकपुर



रमण झा (1957-)

रचना: पश्चात्ताप (कथा-संग्रह)- 1995, काव्य-वाटिका (कविता-संग्रह)- 1999, अलंकार-भास्कर (पूर्व-खण्ड) - 2002, अलंकार-भास्कर (अलंकार शास्त्र)- 2003, भिन्न-अभिन्न (समीक्षा)- 2008, संग सम्पादन: मैथिली (मिथिला विश्वविद्यालय, मैथिली विभागक शोध-पत्रिका) - 1996, सम्पादन: मैथिली (मिथिला विश्वविद्यालय, मैथिली विभागक शोध-पत्रिका)- 2007,2008



विजयनाथ झा

"अहींक लेल" (गीत-गजल संग्रह प्रकाशित)।



योगानन्द हीरा



बाबा बैद्यनाथ

पहरा इमानपर (गजल संग्रह)



जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" १९५० -

मूल नाम जगदीश चन्द्र ठाकुर, जन्म: 27.11.1950,शंभुआर, मधुबनी । सेवा निवृत बैंक अधिकारी। मैथिलीमे प्रकाशित पोथी-1. तोरा अडनामे -गीत संग्रह-1978; 2. धारक ओइ पार-दीर्घ कविता-1999, गीत गंगा (गीत संग्रह), गजल गंगा (गजल संग्रह)।



विद्यानन्द झा 1965-

बुद्धपूर्णिमा, १९६५कें कैथिनियाँ, झंझारपुर मुधुबनीमे जन्म। पराती जकाँ, बिछड़ल कोनो पिरीत जकाँ, दनुफक फूल जकाँ (कविता संग्रह) प्रकाशित । मूलत: कवि, थोड़ कथा लिखलनि, जे अपन मार्मिक अभिव्यक्तिक कारण बेस चर्चित भेल । विडम्बनापूर्ण परिस्थितिक पाछू जिम्मेवार समाजार्थिक

कारणक खोज हिनकर मूल सृजन प्रेरणा थिक ।



हरेकृष्ण झा 1950-

जन्म १० जुलाई १९५० ई. गाम- कोइलखमे। अभियंत्रणक अध्ययण छोड़ि मार्क्सवादी राजनीतिमे सक्रिय। अनेक कविता आ आलोचनात्मक निबन्ध प्रकाशित। अनुवाद एवं विकास विषयक शोध कार्यमे रुचि। स्वतंत्र लेखन। प्रकृति एवं जीवनक तादात्म्य बोधक अग्रणी कवि। "एना त� नहि जे" (कविता संग्रह)।२००८ ई. - श्री हरेकृष्ण झाकेँ कविता संग्रह �एना त नहि जे�लेल कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान।



उदय नारायण सिंह नचिकेता 1951-

जन्म-१९५१ ई. कलकत्तामे।पहिल काव्य संग्रह �कवयो वदन्ति�। १९७१ �अमृतस्य पुत्राः� (कविता संकलन) आऽ �नायकक नाम जीवन� (नाटक)| १९७४ मे �एक छल राजा�/ �नाटकक लेल� (नाटक)। १९७६-७७ �प्रत्यावर्त्तन�/ �रामलीला�(नाटक)। १९७८मे जनक आऽ अन्य एकांकी। १९८१ �अनुत्तरण�(कविता-संकलन)। १९८८ �प्रियंवदा� (नाटिका)। १९९७-�रवीन्द्रनाथक बाल-साहित्य�(अनुवाद)। १९९८ �अनुकृति�- आधुनिक मैथिली कविताक बंगलामे अनुवाद, संगहि बंगलामे दूटा कविता संकलन। १९९९ �अश्रु ओ परिहास�। २००२ �खाम खेयाली�। २००६मे �मध्यमपुरुष एकवचन�(कविता संग्रह। २००८ ई. मे नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश" सम्पूर्ण रूपेँ "विदेह" ई- पत्रिकामे धारावाहिक रूपेँ ई-प्रकाशित भए एकटा कीर्तिमान बनेलक।२००९ ई.-श्री उदय नारायण सिंह �नचिकेता�केँ नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश लेल कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान।



आशीष अनचिन्हार

मूल

लेखन: कुमारि इच्छा (गजल संग्रह), जंघाजोड़ी (गजल संग्रह), अनचिन्हार आखर (गजल, रुबाइ आ कताक संग्रह), मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास, मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास, मैथिली गजलक रेडी रेकोनर, शब्द-अर्थ-शक्ति।

गजेन्द्र ठाकुर आ आशीष अनचिन्हार

(सम्पादन): मैथिलीक प्रतिनिधि गजल, मैथिली गजल: आगमन ओ प्रस्थान बिंदु (गजलक आलोचना-समालोचना-समीक्षा)



कुमार पवन 1958

गाम मुरैठा। कथा संग्रह, कविता संग्रह आ व्यंग्य संग्रह शीघ्र प्रकाश्य। मैथिलीमे १९९० ई सँ विरल लेखन। २००८ ई. सँ दस सालक मौन भंगक बाद पुनः रचनाक दोसर पालीक प्रारम्भ।



कीर्तिनाथ झा 1955-

कुरल: मैथिली भावानुवाद



महेन्द्र हजारी



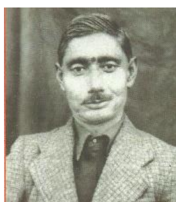
स्व. चन्द्रकान्त मिश्र, आसी, दरभंगा



स्व. महेन्द्र नारायण झा, बेलौंजा, मधुबनी



स्व.राजकुमार मल्लिक, सोहराय (पोखरिभीड़ा), मधुबनी



लक्ष्मीपति सिंह



फूलचन्द्र मिश्र रमण



किशोरनाथ झा

गाम- विट्ठो, पो. सरिसवपाही, मधुबनी। "लोकवेद" पोथी प्रकाशित।



सूर्यनारायण झा "सरस"

पोथी "मैथिली श्री सीतारामचरितमानस" प्रकाशित।



कलानन्द भट्ट

कान्ह पर लहास हमर मैथिली गजल संग्रह



दयानाथ झा

गाम नागदह, मधुबनी। मैथिली रंगमंडल मिथि-यात्रिक, कोलकाता।



डॉ. सुधाकर चौधरी १९४६-

जन्म १५ मार्च १९४६ ई.। प्रकाशित पोथी: काजर, तीन रंग तेरह चित्र (कथा संग्रह), पंडी जी छत्ता (प्रहसन), विप्लवी सुभाष (नाटक)।



स्व. चुनचुन मिश्र, रहिका, मधुबनी।

मिथिला राज्यक आन्दोलन कर्मी।



सत्यनारायण लाल कर्ण

मिथिला चित्रकला



ले. कर्नल मायानाथ झा 1945-

जन्म 1 अप्रैल 1945 ई.। गाम- भराम (मधुबनी)। जकर नारि चतुर होइ (मैथिली लोक कथा संग्रह) प्रकाशित। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११ बाल साहित्य पुरस्कार- ले.क. मायानाथ झा (जकर नारी चतुर होइ, कथा संग्रह)



श्याम किशोर सिंह



सचिन्द्रनाथ झा

मिथिला लोक चित्रकला



कालीनाथ ठाकुर

ग्राम सर्वसीमा



राजेन्द्र विमल, जनकपुर, नेपाल 1949-

मैथिली, नेपाली आ हिन्दी भाषाक प्राज्ञ विमल शिक्षाक हकमे विद्यावारिधि (पी.एच.डी.)क उपाधि प्राप्त कएने छथि।कम्मो लिखिकऽ यथेष्ट यश अरजनिहार डा. विमलक लेखनीक प्रशंसा मैथिलीक सङ्गसङ्ग नेपाली आ हिन्दी साहित्यमे सेहो होइत रहलनि अछि। त्रिभुवन विश्वविद्यालयअन्तर्गत रा.रा.ब. कैम्पस, जनकपुरधाममे प्राध्यापन कएनिहार डा. विमलक पूर्ण नाम राजेन्द्र लाभ छियनि। हिनक जन्म २६ जुलाई १९४९ ई. कऽ भेल अछि। साहित्यकारक नव पीढ़ीकेँ निरन्तर उत्प्रेरित करबाक कारणे ई डा.धीरेन्द्रक बाद जनकपुर-परिसरक साहित्यिक गुरुक रूपमे स्थापित भऽ गेल छथि।



नरेश कुमार विकल 1950-

जन्म २७ जुलाइ १९५० भगवानपुर देसुआ (समस्तीपुर)। काव्य- अरिपन, महुआ मदन रस टपकय, बिन बाती दीप जरय। कथा-संग्रह- भरि गेल दर्दक इनार। उपन्यास-टहकैत टीस। नाटक- चोखगर खौंच।



जनक किशोर लाल दास



कृष्णचन्द्र झा "मयंक"



लक्ष्मण झा "सागर" 1953-

"उचरि बैसू कौआ" मैथिली कविता संग्रह प्रकाशित।



रघुवीर मोची



शारदानन्द दास "परिमल"



शशिबोध मिश्र "शशि" 1946-



सुरेन्द्रनाथ



अमरनाथ

१९७५ ई. मे "क्षणिका" लघुकथा संग्रह प्रकाशित। हास्य कथाकार।



बच्चा ठाकुर



बुद्धिनाथ मिश्र



राजाराम सिंह राठौर, धनुषा



वैद्यनाथ विमल 1955-



डॉ वासुकीनाथ झा 1940-



जितेन्द्र मिश्र "जीवन"

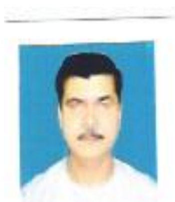


वीरेन्द्र नारायण झा







वीरेन्द्र झा 1956- गोनू झा पर लेखन।	वैकुण्ठ झा 1954- पिता-स्वर्गीय रामचन्द्र झा, जन्म-२४ - ०७ - १९५४ (ग्राम-भरवाड़ा, जिला-दरभंगा), शिक्षा-स्नात्कोत्तर (अर्थशास्त्र), पेशा- शिक्षक। मैथिली, हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा मे लगभग २०० गीतक रचना। गोनू झा पर आधारित नाटक ''हास्यशिरोमणि गोनू झा तथा अन्य कहानी" क लेखन। एकर अलावा हिन्दीमे लगभग १५ उपन्यास तथा कथाक लेखन।	वैकुण्ठ झा
 विद्यानन्द झा 'पञ्जीकार' 1957- जन्म-09.04.1957,पण्डुआ, ततैल, ककरौड़(मधुबनी), रशाढ़य(पूर्णिया), शिवनगर (अररिया) आ सम्प्रति पूर्णिया। पिता लब्ध धौत पञ्जीशास्त्र मार्त्तण्ड पञ्जीकार मोदानन्द झा, शिवनगर, अररिया, पूर्णिया| पितामह-स्व. श्री भिखिया झा। पञ्जीशास्त्रक दस वर्ष धरि 1970 ई.सँ 1979 ई. धरि अध्ययन, 22 वर्षक बएससँ पञ्जी-प्रबंधक संवर्द्धन आ संरक्षणमे संलग्न। कृति- पञ्जी शाखा पुस्तकक लिप्यंतरण आ संवर्द्धन।	 महेन्द्र नारायण कर्ण	 डॉ. विश्वेश्वर मिश्र
 अर्जुन नारायण चौधरी	 नरेन्द्र गजलकार।	 महेन्द्र मिश्र, नेपाल
		

कमल कांत झा 1943-

महाप्रकाश 1946-

जन्म: बनगांव, सहरसा, बिहार। वरिष्ट कवि ओ कथाकार। प्रकाशित कृति: कविता संभवा, संग समय के (कविता संग्रह)। कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान २०१० ई.- श्री महाप्रकाश (कविता संग्रह �संग समय के�)।

छत्रानन्द सिंह झा 1946-



अयोध्यानाथ चौधरी, धनुषा, नेपाल 1947-

मूलत: कविक रूपमे परिचित छथि। नेपालक आधुनिक कविताक क्षेत्रमे हिनक नाम उल्लेखनीय अछि। श्री चौधरीक लेखनमे मानवीय संवेदनाक प्रतिबिम्ब पाओल जाइत अछि। कविताक संग कथा आ निबन्धमे सेहो ई कलम चलबैत छथि। फड़िछाएल लेखन हिनक विशेषता थिकनि।धनुषा जिलाक दुहबी गामक रहनिहार श्री चौधरीक जन्म ६अक्टुबर १९४७कऽ भेल छनि। हिनक क्षितिजक ओहिपार नामसँ एक कविता-सग्ङ्ग्रह प्रकाशित छनि।



विद्यानाथ झा 'विदित'



सियाराम झा "सरस" 1948-

जन्म स्थान मेंहथ, मधुबनी बिहार। प्रसिद्घ गीतकार, बादमे कथा लेखन प्रारम्भ केलनि। प्रकाशित कृति आंजुर भरि सिंगरहार, शोणिताएल उगैत सूर्यक धम्मक (कथा संग्रह)।



अग्निपुष्प 1948-

जन्म: तरौनी, दरभंगा। मूलनाम : महेन्द्र झा। मैथिलीमे सहस्त्रबाहु कविता संग्रह प्रकाशित। मुक्ति प्रसंगक अनुवाद प्रकाशित। वामपंथी आन्दोलनमे सक्रिय। शिक्षा, सम्वाद आदि पत्रिकाक सम्पादन। वामपंथी विचारधाराक सशक्त कवि।



मधुकांत झा 1949-



वीनू भाइ



सत्यानन्द पाठक



योगीराज



कुणाल 1951-



राम भरोस कापड़ि भ्रमर, धनुषा, नेपाल 1951-

जन्म-बघचौरा, जिला धनुषा (नेपाल)।बन्नकोठरी: औनाइत धुँआ (कविता संग्रह), नहि, आब नहि (दीर्घ कविता), तोरा संगे जएबौ रे कुजबा (कथा संग्रह, मैथिली अकादमी पटना, १९८४), मोमक पघलैत अधर (गीत, गजल संग्रह, १९८३), अप्पन अनचिन्हार (कविता संग्रह, १९९० ई.), रानी चन्द्रावती (नाटक), एकटा आओर बसन्त (नाटक), महिषासुर मुर्दाबाद एवं अन्य नाटक (नाटक संग्रह), अन्ततः (कथा-संग्रह), मैथिली संस्कृति बीच रमाउंदा (सांस्कृतिक निबन्ध सभक संग्रह), बिसरल-बिसरल सन (कविता-संग्रह), जनकपुर लोक चित्र (मिथिला पेंटिङ्गस), लोक नाट्य: जट-जटिन (अनुसन्धान)। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सदस्यता- श्री राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' (2010)।



धीरेन्द्रनाथ मिश्र



शिवेन्द्रलाल कर्ण, धनुषा, नेपाल 1951-

लेखकसँ अधिक शिक्षकक रूपमे परिचित आ प्रतिष्ठित छथि । त्रिभुवन विश्वविद्यालयअन्तर्गतरा. रा. ब. कैम्पस, जनकपुर-धामक सह-प्राध्यापक श्री कर्णक ऐतिहासिक विषय-वस्तुपर लिखल कतोक लेख मैथिली, हिन्दी आ अङ्रेजी भाषामे प्रकाशित अछि । स्वान्त-सुखाय ई कहियो कालकऽ कविता-कथा सेहो लिखि लैत छथि । हिनक लेखन ज्ञानवर्द्धक, जानकारीमूलक एवं सोझारएल रहैत अछि । देखलापर बुझना जाइत अछि जे ई हिनक गम्भीर अध्ययनक परिणति थिक ।सामाजिक तथा साहित्यिक सङ्घ-संस्थासभमे सेहो सक्रिय प्राध्यापक कर्णक जन्म धनुषा जिलाक देवडीहा गाममे २ जनवरी १९५१ ई. कऽ भेल छनि ।



ब्रह्मदेव लाल दास



चण्डेश्वर खान

गाम- पट्टीटोल, जिला मधुबनी। लघुकथा लेल चर्चित प्रशंसित।



दयाकान्त झा



गजेन्द्र नारायण सिंह, नेपाल



पद्मश्री श्री गजेन्द्र नारायण सिंह



हरिकान्त झा



इन्द्रनारायण झा



प्रवासी साहित्यालंकार



सीताराम सिंह



तुलानन्द मिश्र



शैलेन्द्र कुमार झा 1952-

जन्म स्थान हरिपुर, वकशी टोल, मधुबनी बिहार। प्रकाशित कृति: आरोह अवरोह, दशम खुट्टी (कथा संग्रह), इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ मिथिला (अंग्रेजी) ।



शिवशंकर श्रीनिवास 1953-

जन्म स्थान लोहना मधुबनी, बिहार । चर्चित कथाकार ओ आलोचक । गीत ओ कविता सेहो कहियो काल लिखैत छथि । प्रकाशित कृति : त्रिकोण, अदहन, गाछ-पात, गामक लोक (कथा संग्रह)।



अशोक 1953-

जन्म स्थान लोहना, मधुबनी, बिहार। चर्चित कथाकार, कवि ओ सम्पादक । प्रकाशित कृति : चक्रव्यूह (कविता संग्रह) त्रिकोण (सहयोगी कथा संग्रह), ओहि रातिक भोर (कथा-संग्रह), मातवर (कथा संग्रह)।



विभूति आनन्द 1953-

जन्म: शिवनगर, मधुबनी, बिहार। चर्चित कवि, कथाकार, संपादक । प्रकाशित कृति टूटा उपन्यास टूटा समीक्षा, तीन टा कथ संग्रह, टूटा गीत-गजल संग्रह ओ चारिटा कथा-संग्रह प्रकाशित।२००६- विभूति



केदार कानन 1959-

जन्म स्थान सुपौल, बिहार। चर्चित कवि, कथाकार ओ संपादक। प्रकाशित कृति : आकार लैत शब्द (कविता संग्रह), अनूदित कृति राजा राम मोहन राय, प्रायश्चित। सम्पादन संकल्प, भारती मंडन (पत्रिका)।

आनन्द (काठ, कथा)मैथिली लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार ।



डॉ. शशिनाथ झा 1954-

गाम-दीप, जिला- मधुबनी। मैथिली, बांग्ला, नेवारी आ देवनागरी पांडुलिपिक विशेषज्ञ। साहित्य अकादमीक भाषा सम्मान 2007 क्लासिकल आ मध्यकालीन साहित्य लेल।



धनुर्धर झा

गाम- विशौल। "वाक्यार्थविवेचनम्" लेल श्रीवाणीयुवालंकरण पुरस्कार 2010 प्राप्त।



शिवकान्त पाठक



हितनाथ झा

"कोइलख ग्रामकथा" प्रकाशित। कवि सह कथाकार। मैथिली साहित्यक रेखांकन (सम्पादन)



डॉ. योगेन्द्र पाठक "वियोगी" , वैज्ञानिक

"विज्ञानक बतकही" प्रकाशित।



राजनन्द झा

२००६- राजनन्द झा (कालबेला- समरेश मजुमदार, बांग्ला)लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



आद्यानाथ झा "नवीन"



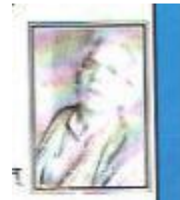
अमलतास 1956-



यंत्रनाथ मिश्र







दिगम्बर ठाकुर

गणेश झा 1950-

कन्दर्पनारायण लाल कर्ण







शैलेन्द्र आनन्द 1955-

कमलाकांत झा

अध्यक्ष, मैथिली अकादमी, पटना

लल्लन प्रसाद ठाकुर 1951-1995

जन्म ५ फरबरी १९५१ मुंगेर मे श्रीमती सुभद्रा देवी आ श्री हीरानंद ठाकुरक द्वितीय बालक । हिनक ग्राम- समौल,जिला-मधुबनी। सिविल इंजीनियर, टाटा स्टीलमे चाकरी। प्रकाश झाक फ़िल्म "कथा माधोपुर की" मे मुख्य भुमिका। नाटककार आ मंच अभिनेता। हुनक लिखल किछु प्रसिद्ध मैथिली नाटक छन्हि :बडका साहेब,मिस्टर निलो काका, लोंगिया मिरचाई,बकलेल आदि वा अंत।







ललित कुमार

हरिमोहन झा केर उपन्यास कन्यादानक अंग्रीजी मे अनुवास 'The Bride' नामसँ प्रकाशित।

मिथिलेश कुमार झा

'Language Politics and Public Sphere in North India: Making of the Maithili Movement' प्रकाशित।

डॉ. कमलानन्द झा







लोकनाथ मिश्र

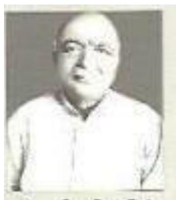
डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी 1966-

जन्म:5 मार्च 1966 ई. गनपतगंज, सुपौल। मैथिलीक प्राध्यापक। रक्षामंत्रीक पदक आ बिहार आ झारखण्ड सरकार द्वारा पुरस्कृत। झारखण्डक मैथिली आन्दोलनमे अग्रणी।

अशोक अविचल

जन्म- ५ जनवरी १९६७, गाम- रहुआ संग्राम, जिला मधुबनी। मैथिली प्राध्यापक। रचना: एक बनू नेक बनू (लघु नाटक), मैथिली भाषा: सर्वेक्षण आ विश्लेषण, हमरा देशक

भागमे (मैथिलीक प्रथम असंगत नाटक), सम्पादन: झारखण्डक सनेश, कचोट (नौ अंक), झारखण्ड वाणी (हिन्दी साप्ताहिक), सम्मान: अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनमे सम्मान (२०००), परमहंस लक्ष्मीनाथ गोस्वामी समिति सम्मान (२००८)



डॉ. श्रीपति सिंह १९४४-

"उमंग-तरंग" कविता-संग्रह प्रकाशित।



डॉ. उमाकान्त

मैथिली व्यंग्य-आलेखक पोथी "अपन बात" प्रकाशित।



सुशील 1942-

अस्मिता (लघुकथा संग्रह), भामती (नाटक) प्रकाशित।



श्रीदेव

मूल नाम- वागेश्वर झा। कथा-सँग्रह "हिलकोर", नाटक "लोहक कङना", गीत-प्रबन्ध "पुलोमा" प्रकाशित।



सुकांत सोम 1950-

जन्म दरभंगा जिलाक तरौनी गाममे 1950 ई. मे भेलन्हि । बी. ए. पास कए ई पटनाक दैनिक �जनशक्ति�क सहायक सम्पादक छलाह । फेर नव भारत टाइम्स, पटनामे।बाल्यवस्थासँ अपन पैतृक (पिता यात्नीजी) गुण कविता करबाक तथा कथा लिखबामे सेहो यश अर्जन कएलन्हि अछि । वर्त्तमान राजनीति सामाजिक विषयसँ सम्बद्ध व्यंग्यात्मक, सरल भाषामे लिखल नव कविता हिनक विशेषता छन्हि । गामघरक परिवेश तदनुकूल शब्द एवं बिम्ब रचनामे क्रमहि सिद्ध छथि ।



डॉ. देवकांत मिश्र 1952-

पिता कविचूड्क्षामणि पं. काशीकांत मिश्र "मधुप", "बेनीपुर अनुमण्डलमे मैथिली" पोथी प्रकाशित।







डॉ. नित्यानन्द लाल दास

पिता स्वर्गीय सूर्यनारायण दास। फारबिसगंज कॉलेज, फारबिसगंज सँ अंग्रेजी विभागाध्यक्ष पदसँ १९९८ मे अवकाशप्राप्त। डॉ. सुरेन्द्र झा "सुमन"क संयोजकत्वक कार्यकालमे "मैथिली परामर्शदातृ समिति" (साहित्य अकादेमी, दिल्ली)क सदस्य। मैथिली पत्रिका सभ जेना बटुक, प्रयाग; मिथिला मिहिर, पटना; स्वदेश, दरभंगा; पहुँच, पटना आ परती पलार, अररियामे रचना प्रकाशित। १९६७ ई. सँ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मे सक्रिय। प्रांतीय प्रतिनिधि २००४ धरि जिला सरसंघचालक। जे.पी.आन्दोलनमे लोकतंत्र सेनानी। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलामक अंग्रेजी पोथी "इग्नाइटेड माइण्ड्स"क मैथिलीमे "प्रज्वलित प्रज्ञा" नामसँ अनुवाद। साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार २०१०- डॉ. नित्यानन्द लाल दास- (इग्नाइटेड माइण्ड्स- डॉ.ए.पी.जे. कलाम, अंग्रेजी) लेल।

राजनाथ मिश्र 1950-

"अ बर्ड्स आइ व्यू ऑन मिथिला" प्रकाशित।

पशुपतिनाथ झा, महोत्तरी, नेपाल 1954-

हिनक लेखन विवरणात्मक होइत अछि आ सम्बद्ध विषयमे नीकजकाँ जानकारी दैत अछि । विभिन्न पत्र-पत्रिकामे हिनक लेख-रचना बरोबरि देखबामे अबैत रहैछ ।रा.रा.ब. कैम्पस, जनकपुरधाममे मैथिली विषयक प्राध्यापनमे संलग्न श्री झा मैथिलीसम्बन्धी सग्ङठनात्मक गतिविधिसँ सेहो जुड़ल छथि । मैथिली भाषाक लोपोन्मुख अवस्थामे रहल अपन लिपि तिरहुतामे विशेषज्ञता रखनिहार श्री झा एकर संरक्षण-सम्बर्द्धनक दिशामे सेहो क्रियाशील छथि ।प्रध्यापक झा मैथिली महाकाव्यमे रस निरूपण विषयपर विद्यावारिधि कएने छथि आ शिक्षा तथा कानून विषयमे सेहो स्नातक छथि । महोत्तरी जिलाक एकरहिया रहनिहार श्री झाक जन्म ४ दिसम्बर १९५४ कऽ भेलछनि ।चेन्नैमे मिथिला रत्नसँ सम्मानित।



अनिलचन्द्र ठाकुर 1954-2009

जन्म 13 सितम्बर 1954 ई.कैं कटिहार जिलाक समेली गाममे भेलन्हि। 1982 ई.मे हिन्दी साहित्यमे स्नातकोत्तर केलाक बाद नवम्बर '93 सँ नवम्बर '94 धरि "सुबह" हस्तलिखित पत्रिकाक सम्पादन-प्रकाशन कएलन्हि आ कोशी क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकमे अधिकारी रहथि। मैथिली, अंगिका, हिन्दी आ अंग्रेजीमे समानरूपैं लेखन। मृत्युक पूर्व ब्रेन ट्यूमरसँ बीमार चलि रहल छलाह। **प्रकाशित कृति**: आब मानि जाउ(मैथिली उपन्यास)- पहिने भारती-मंडन पत्रिकामे प्रकाशित भेल, फेर मैलोरंग द्वारा पुस्तकाकार प्रकाशित भेल।; कच(अंगिकाक पहिल खण्ड काव्य,1975); एक और राम (हिन्दी नाटक,1981); एक घर सड़क पर (हिन्दी उपन्यास, 1982); द पपेट्स (अंग्रेजी उपन्यास, 1990); अनत कहाँ सुख पावै (हिन्दी कहानी संग्रह,2007)। आब मानि जाउ (मैथिली उपन्यास) - एहि



बृषेश चन्द्र लाल

जन्म 29 मार्च 1955 ई. कैं भेलन्हि। पिताः स्व. उदितनारायण लाल,माताः श्रीमती भुवनेश्वरी देव। हिनकर छठिहारक नाम विश्वेश्वर छन्हि। मूलतः राजनीतिककर्मी । नेपालमे लोकतन्त्रलेल निरन्तर संघर्षक क्रममे १७ बेर गिरफ्तार । लगभग ८ वर्ष जेल ।सम्प्रति तराई�मधेश लोकतान्त्रिक पार्टीक राष्ट�ीय उपाध्यक्ष । मैथिलीमे किछु कथा विभिन्न पत्रपत्रिकामे प्रकाशित । आन्दोलन कविता संग्रह आ बी.पीं कोइरालाक प्रसिद्ध लघु उपन्यास मोदिआइनक मैथिली रुपान्तरण तथा नेपालीमे संघीय शासनतिर नामक पुस्तक प्रकाशित । ओ विश्वेश्वर प्रसाद कोइरालाक प्रतिबद्ध राजनीति अनुयायी आ नेपालक प्रजातांत्रिक आन्दोलनक सक्रिय योद्धा छथि। नेपाली राजनीतिपर बरोबरि लिखैत रहैत छथि।



नारायणजी 1956-

जन्मः घोघरडीहा (मधुबनी)। मैथिली भाषा-साहित्यमे एम. ए., पी-एच. डी. कामेश्वर लता संस्कृत विद्यालय, घोघरडीहामे अध्यापन । प्रकाशित कृतिः �घरि घुरि रहल छी� (काव्य-संग्रह)।

उपन्यासमे एक एहन युवतीक संघर्ष-गाथा अंकित अछि जे अपन लगनसँ जीवन बदलैत अछि। असंख्य गामक ई कथा कुलीनताक अध:पतनक कथा, संस्कारविहीनताक उद्घाटन आ भविष्यक पीढ़ीकेँ बचएबाक चेतौनी छी।



डॉ. श्री श्रीशंकर झा 1952-



जगदीपनारायण "दीपक"



राजदेव मंडल

शिक्षा- एम.ए.द्वय, एल एल बी.,पता- ग्राम-मुसहरनियाँ, रतनसारा (निर्मली, मधुबनी)। **प्रकाशित कृति**- अम्बरा-कविता-संग्रह, हमर टोल (उपन्यास), बसुंधरा(कविता संग्रह), जाल (पटकथा), लाज (एकांकी), जल भंवर (उपन्यास), त्रिवेणीक रंग (विहनि आ लघु कथा संग्रह), पंचैती (लघु पटकथा), वापसी।



शिवप्रसाद यादव



हीरेन्द्र कुमार झा 1958-

जन्म 30 अगस्त 1958,गाम- कोइलख (मधुबनी), पिता श्री कामेन्द्र नाथ झा। ट्रांसफर्मर (मैथिली कथा संग्रह) प्रकाशित।



मानेश्वर मनुज 1958-

जन्म गम्हरिया (मानपौर, मधुबनी)मे, 1978सँ 1992 धरि नौसेनामे विभिन्न जहाजपर कार्यरत, फेर यात्री रेलमे। सम्बन्ध (कथा संग्रह) प्रकाशित।



नबोनाथ झा



महेन्द्र नारायण राम 1958-



तारानन्द वियोगी 1966-

महिषी, सहरसामे जन्म। पहिल पोथी अपन युद्धक साक्ष्य (गजल संग्रह) १९९१ मे प्रकाशित। अन्य पुस्तक

हस्तक्षेप, प्रलय रहस्य(कविता-संग्रह), अतिक्रमण (कथा-संग्रह), शिलालेख (लघुकथा संग्रह), कर्मधारय। राजकमल चौधरीक कथाकृति एकटा चंपाकली एकटा विषधर संकलन-सपादन। साहित्य अकादेमी मैथिली बाल साहित्य पुरस्कार २०१०-तारानन्द वियोगीकेँ पोथी "ई भेटल तँ की भेटल" लेल। यात्री-चेतना पुरस्कार २०१० ई.- डॉ. तारानन्द वियोगी।



भालचन्द्र झा

ए.टी.डी., बी.ए., (अर्थशास्त्र), मुम्बईसँ थिएटर कलामे डिप्लोमा। मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी आ गुजरातीमे निष्णात। १९७४ ई.सँ मराठी आ हिन्दी थिएटरमे निदेशक। महाराष्ट्र राज्य उपाधि १९८६ आ १९९९ मे। आइ.एन.टी. केर लेल नाटक �सीता� क निर्देशन। �वासुदेव संगति� आइ.एन.टी.क लोक कलाक शोध आ प्रदर्शनसँ जुड़ल छथि आ नाट्यशालासँ जुड़ल छथि विकलांग बाल लेल थिएटरसँ। निम्न टी.वी. मीडियामे रचनात्मक निदेशक रूपेँ कार्य।लेखन-बीछल बेरायल मराठी एकांकी(अनुवाद), सिंहावलोकन (मराठी साहित्यक १५० वर्ष), आकाश (जी.टी.वी.क धारावाहिकक ३० एपीसोड), जीवन सन्ध्या(मराठी साप्ताहिक, डी.डी, मुम्बई), धनाजी नाना चौधरी (मराठी), स्वयम्बर (मराठी), फिर नहीं कभी नहीं(हिन्दी), आहट (हिन्दी), यात्रा (मराठी सीरयल), मयूरपन्ख (मराठी बाल-धारावाहिक), हेल्थकेअर इन २०० ए.डी.) (डी.डी.)।२००९ मे-भालचन्द्र झा (बीछल बेरायल मराठी एकाँकी- सम्पादक सुधा जोशी आ रत्नाकर मतकरी, मराठी)लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



मनमोहन झा



कुमार शैलेन्द्र



रमेश 1961-

जन्म स्थान मेंहथ, मधुबनी, बिहार। चर्चित कथाकार ओ कवि । प्रकाशित कृति: समांग, समानांतर, दखल (कथा संग्रह), नागफेनी (गजल संग्रह), संगोर, समवेत स्वरक आगू, कोसी धारक सभ्यता, पाथर पर दूभि (काव्य संग्रह), प्रतिक्रिया (आलोचनात्मक निबंध)।



मेघन प्रसाद 1961-



प्रदीप बिहारी 1963-

जन्म स्थान कन्हौली मल्लिक टोल, खजौली, मधुबनी, बिहार। चर्चित कथाकार, उपन्यासकार ओ रंगकर्मी । प्रकाशित कृति: गुमकी ओ बिहाड़ि, विसूवियस (उपन्यास), औतीह कमला जयतीह कमला, खण्ड-खण्ड जिनगी, सरोकार (कथा संग्रह)। २००७- प्रदीप बिहारी (सरोकार, कथा)मैथिली लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार ।



चन्द्रमोहन झा पर्वा



डॉ. सुरेन्द्र लाभ, नेपाल



रोशन जनकपुरी, नेपाल



डॉ. अरविन्द अक्कू 1957-



फूलचन्द्र झा "प्रवीण" 1961-

गाम तुमौल दरभंगा, आयल नवल प्रभात, पांगल गाछक छाहरि, हमरा मोनक खजन चिड़ैया, बसंतक बजनिञा (कविता संग्रह), भूत होइत भविष्य (कथा संग्रह)।



रामानुग्रह झा

जन्म: सुपौल, बिहार। मैथिली कवि आ आलोचक।



ललितेश मिश्र

"बीच वैतरणीमे" (कथा संग्रह), Pied Poesy (Anthology of Maithili Poems translated into Englesh), परख, प्रस्तावना, रचना रसायन (आलोचना) प्रकाशित।



देवशंकर नवीन 1962-

ओ ना मा सी (गद्य-पद्य मिश्रित हिन्दी-मैथिलीक प्रारम्भिक सर्जना), चानन-काजर (मैथिली कविता संग्रह), आधुनिक (मैथिली) साहित्यक परिदृश्य, गीतिकाव्य के रूप में विद्यापति पदावली, राजकमल चौधरी का रचनाकर्म (आलोचना), जमाना बदल गया, सोना बाबू का यार, पहचान (हिन्दी कहानी), अभिधा (हिन्दी कविता-संग्रह), हाथी चलए बजार (कथा-संग्रह)।



कुमार मनीष अरविन्द 1964-



बदरी नारायण बर्मा



राजेन्द्र किशोर, नेपाल



श्याम सुन्दर शशि, नेपाल

श्याम सुन्दर शशि, जनकपुरधाम, नेपाल। पेशा-पत्रकारिता। शिक्षा: त्रिभुवन विश्वविद्यालयसँ,एम.ए. मैथिली, प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान। मैथिलीक प्राय: सभ विधामे रचनारत। बहुत रास रचना विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित। हिन्दी, नेपाली आऽ अंग्रेजी भाषामे सेहो रचनारत आऽ बहुतरास रचना प्रकाशित। सम्प्रति- कान्तिपुर प्रवासक अरब ब्यूरोमे कार्यरत।



हिमांशु चौधरी, नेपाल



सत्यनारायण मेहता



भुवनेश्वर पाथेय

पिता : स्वर्गीय कामेश्वर चौधरी,माता: श्रीमती चन्द्रावती चौधरी,जन्म: वि स २०२०/६/५ लहान, सिरहा,शिक्षा: स्नातकोत्तर(नेपाली),पेशा: पत्रकारिता (सम्प्रति : राष्ट्रिय समाचार समिति),कृति : की भार सांठू ? (मैथिली कविता संग्रह),विगत दू दशकसं नेपाली आ मैथिली लेखन तथा अभियानमे निरन्तर क्रियाशील आ विभिन्न संघ संस्थासं आबद्ध ।



राजेन्द्र झा, धनुषा



अशोक कुमार मेहता



धर्मेन्द्र विह्वल, सिरहा, नेपाल 1967-

रस्ता तकैत जिनगी, एक सृष्टि एक कविता, एक समयक बात, धुअनाएल आकृति सभ (मैथिली कविता संग्रह), भ्रमरका उत्कृष्ट नाटकहरु, गोनूझाका कथाहरु (मैथिलीसँ नेपाली अनुवाद), मैथिलीक कक्षा 1 सँ 5 आ बाल-साहित्य संदर्भक तीनटा पोथीक सह-लेखक। पत्रकारिताक मूल सिद्धांत (मैथिली, प्रेसमे), दलित रिपोर्टिंग मैनुअल (नेपाली, प्रेसमे)।



धीरेन्द्र कुमार झा



निमिष झा, नेपाल



गौरीनाथ (अनलकान्त)

"अन्तिका"क सम्पादन।







श्रीधरम

कथाकार, समालोचक

रमण कुमार सिंह

१९६९-

"फेर सँ हरियर", "दुःस्वप्नक बाद" (कविता संग्रह), "हमर पसार संसार सार" (ललित निबन्ध), "तिरपेच्छन" (आलोचना), "उड़ि जो रे सुग्गा" (राजस्थानीसँ मैथिली अनुवाद) प्रकाशित।

मुख्तार आलम

"परिचय बनैत शब्द" (कविता संग्रह) प्रकाशित।



डॉ विजयेन्द्र झा

१९६४-

"मैथिली व्याकरण ओ रचना","मैथिली भाषा विज्ञान" प्रकाशित।



अजित आजाद

"पेन ड्राइव मे पृथवी" लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।



बद्री नाथ

राय 'अमात्य'

'मैथिल भैया करू विचार' प्रकाशित।



किशन कारीगर

"किछु फुरा गेल हमरा" प्रकाशित।



कुमार मनोज कश्यप

बदलैत समय (मैथिली लघु कथा संग्रह)



बिनोद मिश्र

डॉ. बिनोद मिश्र सम्प्रति आई आई टी रुडकी, उत्तराखंडमे अंग्रेजी पढ़बैत छथि आ हिनक रचनाb अंग्रेजी आ हिंदी मे प्रकाशित भेल छन्हि। अहि वर्ष हिनक कविता संग्रह Silent Steps and Other Poems प्रकाशित भेल छन्हि। एकर अतिरिक्त ई अंग्रेजीमे आलोचनाक क्षेत्रमे आठ टा पोथी संपादित केने छथि। हिनक पोथी Communication Skills for Engineers and Scientists बहुतो इंजीनियरिंग संस्थानमे पाठ्य पुस्तक रूपमे पढ़ाओल जाइत अछि।



आनन्द कुमार झा 1977-

जन्म स्थान: मेंहथ, झंझारपुर; पिता स्व. अभयकांत झा, माता श्रीमती इन्द्रकाली देवी, प्रकाशन- "धधाइत नवकी कनियाँक लहास", "हठात् परिवर्तन", "बदलैत समाज", "टाकाक मोल", "कलह" (पाँचू मैथिली नाटक) प्रकाशित। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११ युवा पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (कलह, नाटक)



वनदेवीपुत्र भवनाथ, नाटककार



चन्द्रेश



राम सेवक सिंह



शहीद दुर्गानन्द झा, नेपाल



उदयनाथ झा "अशोक"



कपिलेश्वर राउत

उलहन (विहनि - लघु कथा संग्रह) प्रकाशित।



कपिलेश्वर साहू



डॉ. शम्भु कुमार सिंह

जन्म: 18 अप्रील 1965 सहरसा जिलाक महिषी प्रखंडक लहुआर गाममे। आरंभिक शिक्षा, गामहिसँ, आइ.ए., बी.ए. (मैथिली सम्मान) एम.ए. मैथिली (स्वर्णपदक प्राप्त) तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार सँ। BET [बिहार पात्रता परीक्षा (NET क समतुल्य) व्याख्याता हेतु उत्तीर्ण, 1995] �मैथिली नाटकक सामाजिक विवर्त्तन� विषय पर पी-एच.डी. वर्ष 2008, तिलका माँ. भा.विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार

सँ। मैथिलीक कतोक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिका सभमे कविता, कथा, निबंध आदि समय-समय पर प्रकाशित। वर्तमानमे शैक्षिक सलाहकार (मैथिली) राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर-6 मे कार्यरत।



कृष्णचन्द्र यादव, नेपाल



शिवकान्त ठाकुर



शोभाकान्त झा



उमाकान्त झा आ प्रियंका, मैथिली रंगमंच



श्यामानन्द ठाकुर



हरिकांत लाल दास, नेपाल



शशिनाथ ठाकुर, नेपाल



दुर्गानन्द मंडल

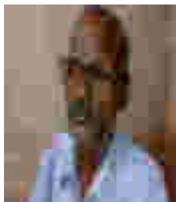
संचयिका, कथा कुसुम (विहनि आ लघु कथा संग्रह), चक्षु प्रकाशित।



शिव कुमार झा 1973-

शिव कुमार झा ��टिल्लू��,पिताक नाम: स्व. काली कान्त झा ��बूच��, माताक नाम: स्व. चन्द्रकला देवी,जन्म तिथि: 11-12-1973,शिक्षा: स्नातक (प्रतिष्ठा),जन्म स्थान: मातृक- मालीपुर मोड़तर, जि. - बेगूसराय, मूलग्राम: ग्राम-पत्रालय - करियन, जिला - समस्तीपुर, पिन: 848101,संप्रति: प्रबंधक, संग्रहण,जे. एम. ए. स्टोर्स लि.,मेन रोड, बिस्टुपुर जमशेदपुर - 831 001, अन्य गतिविधि: वर्ष 1996 सँ वर्ष 2002 धरि

विद्यापति परिषद समस्तीपुरक सांस्कृतिक ,गतिवधि एवं मैथिलीक प्रचार-प्रसार हेतु डॉ. नरेश कुमार विकल आ श्री उदय नारायण चौधरी (राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षक) क नेतृत्वमे संलग्न। **प्रकाशित कृति:** क्षणप्रभा-कविता-संग्रह, अंशु-समालोचना।



राम विलास साहु

मनक मैल, अंकुर- लघुकथा संग्रह, रथक चक्का उलटि चलै बाट (कविता/ टनका संग्रह), कर्म बिनु जग सुन्ना (दोसर कविता/ टनका संग्रह), स्कूलक खिचड़ी (विहनि/ लघु कथा संग्रह), दूधबेचनी (लघु कथा संग्रह) प्रकाशित।



महाकान्त ठाकुर



बचेश्वर झा, निर्मली

"निबन्ध-निकुञ्ज" प्रकाशित।



धीरेन्द्र कुमार, निर्मली



चन्द्रशेखर कामति 1959-

मैथिली कवि। शिक्षा- एम.ए. (राजनीतिशास्त्र), पिता- स्व. योगेन्द्र कामति , गाम-पोस्ट- करियन, भाया- इलमास नगर, थाना- रोसड़ा, जिला- समस्तीपुर, बिहार। संप्रतिप्रखण्ड सहकारिता प्रसार पदाधिकारी (बेनीपट्टी)।



नन्द विलास राय

"भरदुतिया", "छठिक डाला", "हमर चारूधाम" प्रकाशित।



बिनय भूषण

उजरा परवाक खोज (कविता संग्रह)



सुधाकर झा, महोत्तरी , नेपाल

सएसँ बेशी सड़क नाटकमे मंचन।



सदरे आलम "गौहर"

गाम-पुरसौलिया, भाया-जयनगर, जिला मधुबनी।



डॉ. भुवन किशोर मिश्र "भुवनेश"

मैथिली कथा संग्रह- गोबरछत्ता।



दिनकर कुमार

"पूर्वोत्तर मैथिल"क सम्पादन।



डॉ. विनय विश्वबन्धु



रामदेव प्रसाद मण्डल झारूदार

मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल �झारूदार�।

"हमरा बिनु जगत सूना छै" आ "गीताञ्जलि झाड़ू" प्रकाशित।



उमेश पासवान

"वर्णित रस" प्रकाशित।



ओम प्रकाश झा

घोघरडीहा (मधुबनी)।

"कियो बूझि नै सकल हमरा" (गजल, रुबाइ आ कता संग्रह) प्रकाशित।



जगदानन्द झा मनु

नढ़िया भुकैए हमर घराड़ीपर (गजल संग्रह), तोहर कतेक रंग (विहनि कथा संग्रह), चोनहा-(बाल उपन्यास), व्यथा- (कविता-गीत संग्रह)।



अच्छेलाल शास्त्री



डॉ अमोल राय







नन्द कुमार मिश्र नन्द



डॉ. नन्द कुमार मिश्र



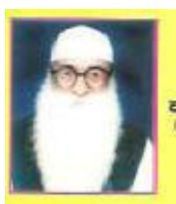
शिव कुमार प्रसाद



दिलीप कुमार झा



डॉ ताराकान्त झा



अमरकान्त, नेपाल



मुरलीधर झा

कबिलपुर, दरभंगा। बाल कथा संग्रह "पिलपिलहा गाछ" (2010) प्रकाशित।



कमलधर दास

"मैथिल कर्ण कायस्थक गोत्र, प्रवर, मूल आ वैवाहिक सम्बन्ध" पोथी प्रकाशित।



श्रीकान्त मण्डल, मैथिली रंगमंच



बेचन ठाकुर

गाम: चनौरागंज, मधुबनी। प्रकाशित कृति: बेटीक अपमान आ छीनरदेवी (नाटक), बाप भेल पित्ती आ अधिकार (नाटक), बिसवासघात (नाटक), ऊँच-नीच (नाटक), भौँट (नाटक); एक दर्जनसँ बेशी नाटक प्रकाशनक प्रतीक्षामे।



गंगा झा

मैथिली रंगमंडल कोकिल मंच, कोलकाता। कोलकाता आ गाम पजुआरिडीह टोलमे मैथिली रंगमंच निर्देशन।



नबोनारायण मिश्र 1955-

पिता-श्री गोबिन्द मिश्र, माता- श्रीमति अढ़ूला देवी। गाम- कुशमौल,पो.नागदह-बलाइन, भाया-अरेड़हाट, जिला-मधुबनी। मैथिली रंगमंचसँ सम्बद्ध "कोकिल मंच" संस्थाक माध्यमसँ।



कमलेश कुमार दास, रंगमंच कलाकार	किशोर केशव, मैथिली रंगमंच	कुमार गगन, मैथिली रंगमंच
 अशोक दत्त, जनकपुर	 मदन ठाकुर चर्चित रंगकर्मी, जनकपुरक चर्चित संस्था मिथिला नाट्यकला परिषदक संस्थापक । तीन दशकसँ बेसी समयसँ रंगक्षेत्रमे सक्रिय। करीब ३०�४० गोट मंचीय नाटकक सयो प्रस्तुति , २०�२५ गोट सड़क नाटकक हजारसँ बेसी प्रदर्शनमे अभिनय ।२० गोट टेली-सीरियल आ आधा दर्जन मैथिली फीचर फिल्ममे अभिनय । पुरस्कार: सप्तम अन्तर्राष्ट्रिय महोत्सवमे सर्वश्रेष्ठ अभिनेता २०४९ वि.स., क्षेत्रीय प्रतिभा पुरस्कार (नेपाल सरकार) २०६३ वि.स.।	 अभय कुमार यादव, मैथिली रंगमंच
 आशुतोष यादव अभिज्ञ	 कृष्ण कुमार कश्यप 1949- जन्म १५ सितम्बर १९४९ ई.। पिता- कवि-उपन्यासकार स्व. इन्द्रनारायण लाल "सँवलिया"। जनबरी १९६५ ई. मे नेना सभ लेल "नाइट स्कूल", १९८१ ई. मे "कला आधारित जीवन आ शिक्षण पद्धति"क प्रवर्तन आ तकर कार्यान्वयन लेल शिवा कश्यप आ शशिबालाक सहयोगसँ "भारती विकास संस्था"क स्थापना। रचना: शशिबालाक संग "मेघदूत" आ "गीत-गोविन्द"क मैथिली अनुवाद, माछ-भात, मिथिला चित्र-शिक्षा, भाग-१, मिथिला चित्र-कोर, भाग-३।	 ललित कुमुद



बटोही झा, मिथिला चित्रकला



प्रवीण कुमार ठाकुर

जन्म तिथि -31 दिसम्बर 1977; जन्म स्थान - कन्हौली , सकरी , मधुबनी ; शिक्षा- सूर्य नारायण हाई
स्कूल - नरपतिनगर , बी . एस . सी - मेमोरिअल कॉलेज - दरभंगा , डिप्लोमा इन फैशन डिजाईन (नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ फैशन डिजाईन - नयी दिल्ली) , चित्रकला �आओर फैशन पूर्वानुमानमे विशेष योग्यता, निवास स्थान- दिल्ली , इंडिया; पिता- श्री सत्य नारायण ठाकुर , सकरी - कन्हौली� ; माता- श्रीमती मालती ठाकुर , सकरी - कन्हौली । वर्तमानमे अपन एक्सपोर्ट बिज़नस एस्थेट) �क नामसँ शुरुआत , पूर्वमे प्रोडक्ट डेवेलोप्मेंट आओर मर्चेंटक रूपमे कार्यरत।



लाला पंडित, मिथिला मूर्तिकला



राजेन्द्र पंडित, मिथिला मूर्तिकला



गिरीश चन्द्र लाल



नवेन्दु कुमार झा, पत्रकार



चन्द्र किशोर लाल, पत्रकार, नेपाल



उपेन्द्र भगत नागवंशी, नेपाल

सड़क नाटक।



रमेश रंजन, परवाहा, नेपाल 1966 -

परवाहा, नेपालमे जन्म । नेपालीय कथा-जगतक नवीन मुदा सम्मानित नाम । जनपक्षधर कथा-दृष्टि आ मोहक शिल्प । थोड़ लिखलनि, मुदा बेर-बेर चर्चित रहलाह ।



विनीत ठाकुर

"बाँकी अछि हम्मर दूधक कर्ज" प्रकाशित।



सुजीत कुमार झा, नेपाल

जिद्दी (लघुकथा संग्रह), चिड़ै (लघुकथा-संग्रह), रिपोर्टर डायरी (रिपोर्ताज), गन्ध (लघु कथा संग्रह), खजुरी बाली (लघु कथा संग्रह), कोइली घूरि आउ (बाल लघु-विहनि कथा संग्रह), दूधमती- (सम्पादन- नेपाली आ मैथिलीमे)।



सरोज खिलाड़ी

नेपालक पहिल मैथिली रेडियो नाटक संचालक



देवांशु वत्स

जन्म- तुलापट्टी, सुपौल। मास कम्युनिकेशनमे एम.ए., हिन्दी, अंग्रेजी आ मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकामे कथा, लघुकथा, विज्ञान-कथा, चित्र-कथा, कार्टून, चित्र-प्रहेलिका इत्यादिक प्रकाशन। विशेष: गुजरात राज्य शाला पाठ्य-पुस्तक मंडल द्वारा आठम कक्षाक लेल विज्ञान कथा �जंग� प्रकाशित (2004 ई.), नताशा: मैथिलीक पहिल-चित्र-श्रृंखला (कॉमिक्स) प्रकाशित।



संतोष मिश्र, नेपाल

पोसपुत (लघुकथा-संग्रह), उदास मोन (लघुकथा-संग्रह), एना-किए (कविता-संग्रह), अएना (संपादन- कविता-संग्रह)।



सुनील कुमार मल्लिक, गायक, जनकपुर, नेपाल 1968-

मैथिलीक गायक-सङ्गीतकारक रूपमे प्रसिद्ध छथि । मैथिली भाषाक गीतसभमे मौलिक तथा सार्थक सङ्गीतक सृजनमे हिनक सक्रियता प्रशंसनीय छनि । सुनीलक गायन तथा सङ्गीतमे कैसेट एलबमसभ सेहो बाहर भेल अछि ।लेखनदिस हिनक सक्रियता परिमाणात्मक रूपमे कम रहितहुँ गुणात्मक दृष्टिएँ हृदयस्पर्शी मानल जाइत अछि ।पेशासँ विज्ञान-शिक्षक छथि ।



धीरेन्द्र प्रेमर्षि, सिरहा, नेपाल 1967-

वि.सं.२०२४ साल भादव १८ गते सिरहा जिलाक गोविन्दपुर-१, बस्तीपुर गाममे जन्म लेनिहार प्रेमर्षिक पूर्ण नाम धीरेन्द्र झा छियनि।कान्तिपुरसँ हेल्लो मिथिला कार्यक्रम प्रस्तुत कर्ता जोड़ी रूपा-धीरेन्द्रक धीरेन्द्रक अबाज गामक बच्चा-बच्चा चिन्हैत



रबीन्द्र नारायण मिश्र

पिताक नाम:स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नाम:स्वर्गीया दया काशी देवी, पैतृक ग्राम:अडेर डीह, मातृक:सिन्घिआ ड्योढी। वृति: योजना आयोगक उप सचिव, दिल्लीमे स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट। आब सेवा निवृत्त। शिक्षा: चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-



कुमार भास्कर

अछि। �पल्लव� मैथिली साहित्यिक पत्रिका आ �समाज� मैथिली सामाजिक पत्रिकाक सम्पादन।

सी. भौतिकी विज्ञानमे प्रतिष्ठा; दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक। प्रकाशित कृति : मैथिली:-

१. �भोरसँ साँझ धरि� (आत्म कथा), २. �प्रसंगवश� (निवंध), ३. �स्वर्ग एतहि अछि� (यात्रा प्रसंग), ४. �फसाद� (कथा संग्रह) ५. `नमस्तस्यै� (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निवंध) ७.महराज (मैथिली उपन्यास) ,८.लजकोटर (मैथिली उपन्यास) ,९.सीमाक ओहि पार (मैथिली उपन्यास) १०.समाधान(निवंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास) १३.शंखनाद(उपन्यास)।



अमरेन्द्र यादव, नेपाल



आमोद कुमार झा

१९६८-२०२१

बिम्बक पथार (कविता संग्रह) प्रकाशित



मनोज कुमार मण्डल

प्रसिद्ध कवि। गद्य रचना सेहो।



रवि भूषण पाठक

रिहर्सल (नाटक), विदेह:सदेह २९ (रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३५० सँ), विदेह:सदेह २७ (गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठकक आन भाषासँ अनूदित गद्य



संदीप कुमार साफी

"बैशाखमे दलानपर" प्रकाशित, ऐ पोथीमे मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा संकलित भेल।



रघुनाथ मुखिया

आ पद्य- अंक १-३५० सँ)		
 प्रदीप पुष्प	 मुन्ना जी मोकाम दिस (बीहनि कथा संग्रह), प्रतीक (विहनि कथा संग्रह), माँझ आंगनमे कतिआएल छी (मैथिली गजल संग्रह), हम पुछैत छी (साक्षात्कार), तीन टा बाल नाटक (मैथिली बाल साहित्य), खुरलुच्ची (मैथिली बाल कविता- बाल साहित्य), घाह (हाइकू-टंका संग्रह)	 राम चन्द्र राय सपना साकार (कथा संग्रह) प्रकाशित।
 विनीत उत्पल हम पुछैत छी (कविता संग्रह), रेहन पर रग्घू -काशीनाथ सि हक हिन्दी उपन्यासक मैथिली अनुवाद,	 आचार्य रामानन्द मण्डल सामाजिक चिंतक सीतामढ़ी,सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-चन्द्र देवी, पिता-स्व०राजेश्वर मंडल, पत्नी-प्रमिला देवी, जन्म तिथि-०१ जनवरी १९६० योग्यता-एम-एससी (रसायन शास्त्र), एम ए (हिन्दी)। रूचि- साहित्यिक,	 पं बाल गोविन्द 'आर्य' घरक नाम- गोविन्द यादव। वर्ण-प्रकरण-भाष्य (आधुनिक मैथिली व्याकरण) प्रकाशित।

मन्त्रद्रष्टाऋष्यश्रृङ्ग- लेखक हरिशंकरश्रीवास्तव "शलभ" (हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद), मोहनदास- उदय प्रकाशक हिन्दी उपन्यासक मैथिली अनुवाद	मैथिली-हिन्दी कविता -कहानी लेखन आ आलेख। प्रकाशित पोथी - मैथिली कविता संग्रह भासा के न बांटियो। २०२२ प्रकाशित रचना - सझिया कविता संग्रह पोथी - जनक नंदिनी जानकी आ शौर्य गान। २०२२ पत्रिका -मिथिला समाज, घर -बाहर आ अपूर्वा (मैसाम)। अखबार - दैनिक मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश। सामाजिक-सामाजिक चिंतन, दायित्व- पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, डुमरा, सीतामढ़ी। स्थायी पत्ता- ग्राम-पिपरा विशनपुर थाना-परिहार जिला-सीतामढी। वर्तमान पता-पिपरा सदन,मुरलियाचक वार्ड-04 सीतामढ़ी पोस्ट-चकमहिला जिला-सीतामढी राज्य-बिहार पिन-843302	
 लालदेव कामत दिव्य दृष्टि (निबन्ध-प्रबन्ध-समालोचना) प्रकाशित।	 पं कैलाश कुमार मिश्र समाजशास्त्री- मानव विज्ञानी। कथा कविता आ मानव वैज्ञानिक आलेख सभ प्रकाशित।	 रामकृष्ण परार्थी "दू पटरीक बीच", "प्रतिकार एखन बाँकी अछि" कविता संग्रह प्रकाशित। दलित लेखन लेल प्रसिद्ध।
 नारायण यादव सल्हैता-गुरुमैता (अमृत पर्वक अवसर पर स्वतंत्रता सेनानी लोकनिक स्मरण) प्रकाशित।	 उमेश मंडल निश्तुकी- कविता संग्रह, मिथिलाक संस्कार गीत, विध-व्यवहार गीत आ गीतनाद (संकलन), "मिथिलाक वनस्पति स्लाइड शो मिथिलाक जीव-जन्तु स्लाइड शो मिथिलाक जिनगी स्लाइड शो", सगर राति दीप जरय- इतिहास, दुध-पानि फराक-फराक (कथा एवं पाण्डुलिपि जगदीश प्रसाद मण्डल)-(छाया एवं सम्पादन- उमेश मण्डल), हिन्दुस्तानी मुसलमान और हि	 चन्द्रमणि

न्दुस्तानियत - मूल हिन्दी लेख- गीतेश शर्मा, मैथिली अनुवाद- उमेश मण्डल।



स्व. हेमकान्त झा, गायक



मुरलीधर, मैथिली फिल्म निर्देशक



कुंज बिहारी, मैथिली गायक



रामबाबू झा, गायक



बि.पि.उदासी



जितेन्द्र सहयोगी



उदितनारायण फिल्म गायक



प्रकाश झा, फिल्म निर्देशक



कीर्ति आजाद क्रिकेट



श्रीराम झा शतरंज



अभिषेक झा गोल्फ



अशोक कुमार 1981-

साधारण काष्ठकारक परिवारमे समस्तीपुर जिलाक मोखियारपुर सखलानी गाममे जनमल अशोक कुमार कहियो स्कूल नहि गेलाह। दिनमे पचास टाका कमेनिहार दिल्लीक एकटा गोल्फ क्लबक एहि कैडीकें 1994 ई. मे चोरिक मिथ्यारोप लगा कए गोल्फ कोर्ससँ बाहर कए देल गेल। वैह कैडी दस

सालक भीतर भारतक नम्बर एक गोल्फर बनि गेल।



राजेश रंजन, मैथिली फेडोरा प्रोजेक्ट



संजय झा

सुल्तानगंज, भागलपुर। मोटोरोलाक सी.ई.ओ.।



बिन्देश्वर पाठक



राजकमल झा, अंग्रेजी लेखक, पत्रकार

हिनकर अंग्रेजी उपन्यास "द ब्लू बेडस्प्रेड" , "इफ यू आर अफरेड ऑफ हाइट्स" आ "फायरप्रूफ" प्रकाशित छन्हि। "द ब्लू बेडस्प्रेड" (१९९९)पर हुनका "कॉमनवेल्थ राइटर्स प्राइज फॉर बेस्ट फर्स्ट बुक- यूरेशिया" भेटल छन्हि। राजकमल झा श्री मुनीश्वर झा आ श्रीमती रंजना झाक पुत्र छथि, "आइ.आइ.टी.खड़गपुर"सँ बी.टेक.छथि, आ आइ काल्हि दिल्लीमे रहै छथि, जतए ओ "इण्डियन एक्सप्रेस" मे एडिटर छथि।



मानस बिहारी वर्मा, वैज्ञानिक



फणीश्वर नाथ 'रेणु' मिथिला रत्न 1921-1977



रामधारी सिंह 'दिनकर' मिथिला रत्न 1908-1974



रामवृक्ष बेनीपुरी 1899-1967



डॉ. हरिवंश तरुण 1927-2009

जन्म 21 जून 1927 ई.।
गाम- चकसलेम, पो.- पटोरी, जिला- समस्तीपुर।
तीन दर्जन सँ बेशी हिन्दी पोथी जाहिमे काव्य-कथा-प्रबन्ध सम्मिलित अछि।



हरिशंकर श्रीवास्तव "शलभ" 1934-



स्व. जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज'

हिन्दीक साहित्यकार।



रामेश्वर प्रेम

हिन्दीक नाटककार।



डॉ. नवल किशोर दास "नवल"



मोहनानन्द झा 1955-



रामाज्ञा शशिधर



गणेश चंचल १९३०-२०११



डॉ. अमरेन्द्र



गोरेलाल मनीषी



कुन्दन अमिताभ



शंभु अगेही

जन्म ८ जनवरी १९४१, प्रकाशित कृति:ओझराएल डीह (कथा-काव्य) १९९८, सतंजा (कथा संग्रह)१९९९, तेसरी बेरिआ (कथा काव्य)२००३, बज्जिका छंद विभास २००७



पोद्दार रामावतार अरुण १९२३ -१९९९



मजहर इमाम १९३०-२०१२



अरुण प्रकाश १९४८-२०१२



अंशुमन पाण्डेय

तिरहुता यूनीकोडक आवेदनकर्ता।



दिनेश कुमार मिश्र

मिथिलाक बाढ़िक एक्स्पर्ट। मिथिलाक मोटा-मोटी सभ धारपर किताब प्रकाशित। उत्तर बिहार की व्यथा कथा (१९९०), कोसी- उम्र कैद से सजा-ए-मौत तक (१९९२) बंदिनी महानंदा (१९९४), बोया पेड़ बबूल का- बाढ़ नियंत्रण का रहस्य (२०००), बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी (२००४), भुतही नदी और तकनीकी झाड़- फूक (२००५), , दुई पाटन के बीच में- कोसी नदी की कहानी (२००६) तथा बागमती की सद्गति (२०१०)।



ओमप्रकाश भारती १९६८-

कोसी नदीक लोक सांस्कृतिक अध्ययन - नदियाँ गाती हैं, बिहार के पारम्परिक नाट्य आ मैथिलीक लोक नाट्य प्रकाशित



वैदेही सीता



याज्ञवल्क्य पत्नी मैत्रेयी

याज्ञवल्क्यक दू टा पत्नी छलथिन्ह पहिल कात्यायनी आ दोसर मैत्रेयी। मैत्रेयी ब्रह्मवादिनी छलीह। कात्यायनीसँ हुनका तीनटा पुत्र छलन्हि- चन्द्रकान्ता, महामेघ आ विजय।



मोतीदाइ

मिथिलाक रजक (धोबि) जातिक लोकदेवता



बिहुला

चम्पानगरक बिहुला।



गांगो देवी

मिथिलाक मलाह जातिक लोकदेवता। गांगोदेवीक भगता अखनो मिथिलाक मलाह लोकनिमे प्रचलित अछि।



रेशमा, कुसुमा, फुल्वा



मोरंगक मोतीसायर



विन्ध्यवासिनी देवी मैथिली लोक गीत 1920-2006



कामेश्वरी देवी 1922-

मधुबनी जिलाक नवानी गामक। जन्म १९२२ ई. मे अपन मातृक नाहरमे भेलनि। पति पं मदनमोहन झा। बरौनीवासी प्रसिद्ध तान्त्रिक पण्डित केशव मिश्र हिनक पिता छलथिन। "मिथिला संस्कार गीत" पोथी।



कुसुमलता कर्ण



अणिमा सिंह 1924-

समीक्षिका, अनुवादिका, सम्पादिका । प्रकाशन: मैथिली लोकगीत, वसवेश्वर (अनु.), शिशु खेल गीत आदि। लेडी ब्रेबोर्न कॉलेज, कलकत्तामे पूर्व प्राध्यापिका।



लिली रे 1933-

जन्म:२६ जनवरी, १९३३,पिता:भीमनाथ मिश्र,पति:डॉ. एच.एन्.रे, दुर्गागंज, मैथिलीक विशिष्ट कथाकार एवं उपन्यासकार । मरीचिका उपन्यासपर साहित्य अकादेमीक १९८२ ई. मे पुरस्कार । मैथिलीमे लगभग दू सय कथा आ पाँच टा उपन्यास प्रकाशित । विपुल बाल साहित्यक सृजन। अनेक भारतीय भाषामे कथाक अनुवाद-प्रकाशित। पहिल प्रबोध सम्मान 2004 सँ सम्मानित।



चित्रलेखा देवी 1935-



मोहिनी झा 1937-



डॉ. सावित्री झा



कविता देवी 1942-



प्रमिला झा



शान्ति सुमन 1942-

जन्म 15 सितम्बर 1942, कासिमपुर, सहरसा, बिहार, प्रकाशित कृति, �ओ प्रतीक्षित, परछाई टूटती, सुलगते पसीने, पसीने के रिश्त, मौसम हुआ कबीर, समय चेतावनी नहीं देता, तप रेहे कचनार, भीतर-भीतर आग, मेघ इन्द्रनील (मैथिली गीत संग्रह), शोध प्रबंध: मध्यवर्गीय चेतना और हिन्दी का आधुनिक काव्य, उपन्यास: जल झुका हिरन। सम्मान: साहित्य सेवा सम्मान, कवि रत्न सम्मान, महादेवी वर्मा सम्मान। अध्यापन कार्य।



प्रभावती झा 1945-1999



स्व. इलारानी सिंह 1945-1993

इलारानी सिंह: जन्म 1 जुलाई, 1945, निधन : 13 जून, 1993, पिता : प्रो. प्रबोध नारायण सिंह सम्पादिका : मिथिला दर्शन, विशेष अध्ययन : मैथिली, हिन्दी, बंगला, अंग्रेजी, भाषा विज्ञान एवं लोक साहित्य। प्रकाशित कृति : सलोमा (आस्कर वाइल्डक फ्रेंच नाटकक अनुवाद 1965), प्रेम एक कविता (1968) बंगला नाटकक अनुवाद, विषवृक्ष (1968) बंगला नाटकक अनुवाद, विन्दंती (1972), स्वरचित: मैथिली कविता संग्रह (1973), हिन्दी संग्रह।



उषाकिरण खान 1945-

जन्म:२४ अक्टूबर १९४५,कथा एवं उपन्यास लेखनमे प्रख्यात । मैथिली तथा हिन्दी दून्‌ भाषाक चर्चित लेखिका ।प्रकाशित कृति:अनुंत्तरित प्रश्न, दूर्वाक्षत, हसीना मंज़िल, भामती (उपन्यास) । २०१०-श्रीमति उषाकिरण खान (भामती, उपन्यास) लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार- मैथिली।



नीरजा रेणु 1945-

जन्म: ११ अक्टूबर १९४५,नाम: कामाख्या देवी,उपनाम:नीरजा रेणु,जन्म स्थान:नवटोल,सरिसबपाही ।शिक्षा: बी.ए.(आनर्स) एम.ए., पी-एच.डी.,गृहिणी ।प्रकाशित रचना : ओसकण (कविता मि.मि., १९६०) लेखन पर पारिवारिक, सांस्कृतिक परिवेशक प्रभाव । मैथिली कथा धारा साहित्य अकादेमी नई दिल्लीसँ स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथाक पन्द्रह टा प्रतिनिधि कथाक सम्पादन ।सृजन धार पियासल कथा संग्रह,आगत क्षण ले कविता संग्रह,ऋतम्भरा कथा संग्रह,प्रतिच्छवि हिन्दी कथा संग्रह,१९६० सँ आइधरि सएसँ अधिक कथा, कविता, शोधनिबन्ध, ललितनिबन्ध,आदि अनेक पत्र-पत्रिका तथा अभिनन्दनग्रन्थमे प्रकाशित ।मैथिलीक अतिरिक्त किछु रचना हिन्दी तथा अंग्रेजीमे सेहो।२००३- नीरजा

रेणु (ऋतम्भरा, कथा)लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।



वीणा ठाकुर 1954-

जन्म- भवानीपुर, पण्डौल (मधुबनी)। पिता श्री श्रीमोहन ठाकुर। प्रकाशित कृति: मैथिली रामकाव्यक परम्परा, इतिहास-दर्पण (समीक्षा), विद्यापतिक उत्स (समालोचना), भारती (उपन्यास)



ज्ञानसुधा मिश्र

भारतक उच्चतम न्यायालयक चारिम महिला न्यायाधीश आ पहिल मैथिलानी।



जस्टिस मृदुला मिश्र



वीणा कर्ण 1946-

जन्म 3 नवम्बर 1946, गाम- पटोरी, पो.पंचगछिया, जिला- सहरसा। सदस्य, मैथिली साहित्य अकादेमी परामर्शदातृ समिति 1987-1993, सदस्य, भाषा परामर्शदातृ समिति (मैथिली), भारतीय ज्ञानपीठ। अवकाशप्राप्त विश्वविद्यालय आचार्य आ अध्यक्ष, मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय। **प्रकाशित कृति**- अर्गला, भावनाक अस्थिपंजर (मैथिली काव्य संग्रह), शंखनाद, तुभ्यमेव समर्पये, अनुबन्ध (हिन्दी काव्य संग्रह)। प्रकाश्य: सप्तपदी (मैथिली निबन्ध संग्रह), चारित्रिक पृष्ठभूमिमे मैथिलीक प्रसिद्ध उपन्यास, मैथिली-उपन्यासक कथा किछु कहैत अछि (मैथिली आलोचना); जिन्दगीनामा (हिन्दी काव्य संग्रह), क्रमशः (हिन्दी आलोचना)।



शेफालिका वर्मा 1943-

जन्म:९ अगस्त, १९४३,जन्म स्थान : बंगाली टोला, भागलपुर । शिक्षा:एम., पी-एच.डी. (पटना विश्वविद्यालय), ए. एन. कालेज, पटना मे हिन्दीक प्राध्यापिका पदसँ सेवानिवृत्त । नारी मनक ग्रन्थिकेँ खोलि:करुण रससँ भरल अधिकतर रचना। प्रकाशित रचना:झहरैत नोर, बिजुकैत ठोर; विप्रलब्धा (कविता संग्रह), स्मृति रेखा (संस्मरण संग्रह), एकटा आकाश (लघुकथा संग्रह), यायावरी (यात्रा-वृत्तान्त), भावाञ्जलि (काव्य-प्रगीत) , किस्त-किस्त जीवन (आत्मकथापर साहित्य अकादेमी पुरस्कार)। अर्थयुग (लघु कथा संग्रह)आखर-आखर प्रीत, नागफांस (उपन्यास)। २००४ ई.- डॉ. श्रीमती शेफालिका वर्मा, पटना;यात्री-चेतना पुरस्कार।



नीता झा 1953-

जन्म : २१-०१-१९५३,व्यवसाय:प्राध्यापिका । लेखन पर समाजक परम्परा तथा आधुनिकताक संस्कार सँ होइत विसंगतिक प्रभाव।प्रकाशित कृति : फरिच्छ, कथा संग्रह १९८४, कथानवनीत १९९०,सामाजिक असन्तोष ओ मैथिली साहित्य शोध समीक्षा । बिलाइ मौसी (बाल लघुकथा संग्रह)।



आशा मिश्र 1950-



डॉ. सुनीति झा



जन्म:६-७-१९५० ई.,प्रकाशित कथा मे मैथिकीक संग हिन्दी मे सेहो । सभसँ पैघ विजय मैथिली कथा संग्रह ।

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' 1948-

जन्मस्थान:रहिका,माता:श्रीमती वृन्दा देवी,पिता:पं. दीनानाथ झा,शिक्षा:एम.ए., बी.एड.,प्रसिद्ध अभिनेत्री दू सयसँ बेशी नाटकमे भाग लेलनि ।भंगिमा (नाट्यमंच) क भूतपूर्व उपाध्यक्षा, पत्रिकाक सम्पादन, कथालेखन आदिमे कुशल । �अरिपन� आदि अनेक संस्था द्वारा पुरस्कृत-सम्मानित।



डॉ. इन्दिरा झा 1957



मेनका मल्लिक 1966-



शारदा सिन्हा मैथिली लोकगीत 1953-



लालपरी देवी



शकुंतला चौधरी



गोदावरी दत्ता, मिथिला चित्रकला



उषा वर्मा 1948-



कमला चौधरी 1953-

कृति- मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली, प्रकाशनाधीन: बाटे बिलायल पानि (कथा संग्रह), पिया मधुमास (कविता संग्रह), आशापूर्णा देवीक बंगला लघु उपन्यास **मन मंजूषा**क मैथिली अनुवाद। मुजफ्फरपुरसँ प्रकाशित मैथिली साहित्यिक



सीता देवी, मिथिला चित्रकला

पत्रिका **स्वाती**क सम्पादन (१९८४-८५)।



गंगा देवी १९२८-१९९१

मिथिला चित्रकला



सरस्वती चौधरी, जनकपुर



डॉ वन्दना झा

काशी हिन्दू विश्वविद्यालयमे मदन मोहन मालवीय द्वारा मैथिली अध्यापन शुरू भेल मुदा ओ बादमे बन्द भऽ गेल। पुनः एकर अध्यापन लेल उप-कुलपति राकेश भटनागरक कार्यकालमे मैथिली अध्ययन केन्द्रक स्थापनाक २०२० मे घोषणा भेल, कला संकाय प्रमुख प्रो. विजय बहादुर समन्वयक आ वसंत महिला महाविद्यालय राजघाटक प्राध्यापक डॉ. वंदना झा कैं सह-समन्वयक बनाओल गेल।



डॉ. अरुणा चौधरी



विभा रानी 1959-

मैथिली क 3 साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता लेखकक 4 गोट किताब "कन्यादान" (हरिमोहन झा), "राजा पोखरे में कितनी मछलियां" (प्रभास कुमार चाऊधरी), "बिल टेलर की डायरी" व "पटाक्षेप" (लिली रे) हिन्दीमे अनूदित छन्हि।2 गोट लोककथाक पुस्तक "मिथिला की लोक कथाएं" व "गोनू झा के किस्से"। मैथिली कथा संग्रह "खोहसँ निकसैत"।



ज्योत्सना चन्द्रम 1963-

जन्मतिथि: १५ दिसम्बर, १९६३,जन्मस्थान : मरूआरा, सिंधिया खुर्द, समस्तीपुर,पिता : श्री मार्कण्डेय प्रवासी,माता: श्रीमती सुशीला झा,अध्यापन ।सुपरिचित कवयित्री, कथाकार । प्रकाशित कृति: बोनसाई (कविता संग्रह), झिझिरकोना (कथासंग्रह)।



सुस्मिता पाठक 1962-

जन्म: सुपौल, बिहार। परिचिति कविता संग्रह प्रकाशित। कथावाचक, कथासंग्रह प्रकाशनाधीन। राजनीति शास्त्रमे एम.ए.। संगीत, पेंटिंगमे रुचि। मैथिलीक पोथी पत्रिका पर अनेक रेखाचित्र प्रकाशित। समकालीन जीवन, समय, आ तकर स्पंदनक कवयित्री। अनेक भाषामे रचनाक अनुवाद प्रकाशित।



उर्मिला देवी, मिथिला चित्रकला



यमुना देवी, मिथिला चित्रकला



यशोदा देवी, मिथिला चित्रकला



रमा झा, सम्पादक मिथिला दर्पण



पन्ना झा

अनुभूति (लघुकथा संग्रह)।



सुधा कर्ण



नूतन दास

सम्पादिका, मिथिलांगन



राधिका झा, अंग्रेजी लेखिका

हुनकर अंग्रेजी उपन्यास "स्मेल" आ "लैन्टर्न्स ऑन देयर हॉर्न्स" आ अंग्रेजी लघु कथा संग्रह "द एलीफेन्ट एण्ड द मारुति" प्रकाशित अछि। उपन्यास "स्मेल" लेल हुनका "फ्रेन्च प्रिक्स गुएरलेन" पुरस्कार भेटल छन्हि आ ई पोथी सोलह भाषामे अनूदित भेल अछि। राधिका "एमहर्स्ट कॉलेज"सँ "एन्थ्रोपोलोजी" पढ़ने छथि आ "शिकागो विश्वविद्यालय"सँ राजनीति विज्ञानमे मास्टर्स डिग्री लेने छथि। ओ "हिन्दुस्तान टाइम्स" आ "बिजनेस वर्ल्ड"मे काज केने छथि आ संगमे "राजीव गांधी फाउन्डेशन, दिल्ली" मे सेहो, जतए ओ

आतंकवादसँ पीड़ित बच्चा सभ लेल सम्पर्क कार्यक्रमक प्रारम्भ केने रहथि। आइ काल्हि ओ अपन पति आ बच्चीक संग टोक्योमे रहै छथि।



स्वयंप्रभा झा 1970-



रूपा धीरू 1973-

रूपा धीरू- जन्मस्थान- मयनाकडेरी, सप्तरी, श्रीमती पूनम झा आ श्री अरूणकुमार झाक पुत्री।स्थायी पता- अञ्चल- सगरमाथा, जिल्ला- सिरहा। प्रथम प्रकाशित रचना-कोइली कानए, माटिसँ सिनेह (कविता),भगता बेङक देश-भ्रमण (कनक दीक्षितक पुस्तकक धीरेन्द्र प्रेमर्षिसँग मैथिलीमे सहअनुवाद,सङ्गीतसम्बन्धी कृति- राष्ट्रियगान, भोर, नेहक वएन, चेतना, प्रियतम हमर कमौआ (पहिल मैथिली सीडी), प्रेम भेल तरघुस्कीमे, सुरक्षित मातृत्व गीतमाला, सुखक सनेस। सम्पादन- पल्लव, मैथिली साहित्यिक मासिक पत्रिका, सम्पादन-सहयोग,हमर मैथिली पोथी (कक्षा १, २, ३, ४ आ ५ आ कक्षा 9-10 क ऐच्छिक मैथिली विषय पाठ्यपुस्तकक भाषा सम्पादन)।



रंजना झा, विद्यापति संगीत गायिका



रश्मि दत्त, गायिका, जनकपुर



कामिनी कामायनी

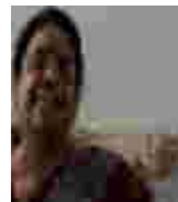


मुन्नी झा युवा रचनाकार







कामिनी 1978- युवा कवियित्री	रुक्साना सिद्दीकी	कल्पना मिश्र, मैथिली रंगमंच
 ज्योति झा, , मैथिली रंगमंच	 किरण झा, मैथिली रंगमंच	 प्रियंका झा, मैथिली रंगमंच
 ऋतु कर्ण, मैथिली रंगमंच	 ज्योति वत्स, रंगमंच	 नेहा वर्मा, रंगमंच
 सविता	 अनुप्रिया	 मृदुला प्रधान
 अरुण मिश्र, महिला बॉक्सिंग	 राखी दास, मिथिला चित्रकला	 बनारसी पंडित,मिथिला चित्रकला, धनुषा, नेपाल

 देवकला देवी कर्ण,मिथिला चित्रकला, नेपाल	 मदनकला कर्ण,मिथिला चित्रकला, नेपाल	 महासुन्दरी देवी,मिथिला चित्रकला
 निर्जला झा, मिथिला चित्रकला, नेपाल	 फुलो साह, मिथिला चित्रकला, महोत्तरी, नेपाल	 रजनी पल्लवी
 संगीता कुमारी, मैथिली फेडोरा प्रोजेक्ट	 विन्देश्वरी दास	 गौरी सेन
 सीमा झा	 वाणी मिश्र, कवियित्री १९५३ -१९९६ कोइलख, मधुबनी। जन्मस्थान तिलाठी, नेपाल।	 मौसमी बनर्जी, कवियित्री



शैल झा



शान्ति देवी



शशिबाला

पिता श्री उग्र नारायण लाल, पति श्री उमेश कुमार कण्ठ (बिसहथ)। शिवा कश्यप आ कृष्ण कुमार कश्यपक सहयोगसँ "भारती विकास संस्था"क स्थापना। रचना: कृष्ण कुमार कश्यपक संग "मेघदूत" आ "गीत-गोविन्द"क मैथिली अनुवाद, माछ-भात, मिथिला चित्र-शिक्षा, भाग-१, मिथिला चित्र-कोर, भाग-३।



मुन्नी कामत

सुखल मन तरसल आँखि, अंतत: (कविता संग्रह), चुक्का (बाल कथा संग्रह) प्रकाशित।



प्रेरणा झा

मिथिला लोक कला



अंशुमाला

मैथिली लोकगीत।



श्वेता झा चौधरी, चित्रकार

गाम सरिसव-पाही, ललित कला आ गृहविज्ञानमे स्नातक। मिथिला चित्रकलामे सर्टिफिकेट कोर्स।कला प्रदर्शिनी: एक्स.एल.आर.आइ., जमशेदपुरक सांस्कृतिक कार्यक्रम, ग्राम-श्री मेला जमशेदपुर, कला मन्दिर जमशेदपुर (एक्जीवीशन आ वर्कशॉप)।कला सम्बन्धी कार्य: एन.आइ.टी. जमशेदपुरमे कला प्रतियोगितामे निर्णायकक रूपमे सहभागिता, २००२-०७ धरि बसेरा, जमशेदपुरमे कला-शिक्षक (मिथिला चित्रकला), वूमेन कॉलेज पुस्तकालय आ हॉटेल बूलेवार्ड लेल वाल-पेंटिंग।प्रतिष्ठित स्पॉन्सर: कॉरपोरेट कम्युनिकेशन्स, टिस्को; टी.एस.आर.डी.एस, टिस्को;



श्वेता झा

मिथिला चित्रकला, सम्प्रति सिंगापुरमे निवास।



रानी झा

ए.आइ.ए.डी.ए., स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, जमशेदपुर; विभिन्न व्यक्ति, हॉटेल, संगठन आ व्यक्तिगत कला संग्राहक।

हॉबी: मिथिला चित्रकला, ललित कला, संगीत आ भानस-भात।



मोती कर्ण

मिथिला चित्रकला



निक्की प्रियदर्शिनी



प्रज्ञा झा



डॉ. नलिनी चौधरी



नीलम चौधरी, कथक नृत्यांगना



इरा मल्लिक

पिता स्व. शिवनन्दन मल्लिक, गाम- महिसारि, दरभंगा। पति श्री कमलेश कुमार, भरहुल्ली, दरभंगा।



गुंजन कर्ण

राँटी मधुबनी, सम्प्रति यू.के.मे रहै छथि। www.madhubaniarts.co.uk पर हुनकर कलाकृति देखि सकै छी।



पूनम मंडल

प्रियंका झाक संग मैथिली न्यूज पोर्टल "समदिया" www.esamaad.blogspot.com क संचालन।



प्रियंका झा

पूनम मंडलक संग मैथिली न्यूज पोर्टल "समदिया" www.esamaad.blogspot.com क संचालन।



स्तुति नारायण



डॉ. ललिता झा १९५१

जन्म
पनिचोभ, दरभंगामे। "मैथिलीक
भोजन सम्बन्धी
शब्दावली" प्रकाशित"।



आरती कुमारी १९६७-

"मैथिली मुक्तक काव्यमे
नारी" प्रकाशित।



मीना झा

ब्रेस्ट कैसरक समस्यापर विदेह मे मीना झा केर एकटा लघु कथा प्रकाशित भेल। ई मैथिलीक पहिल कथा छल जे ब्रेस्ट कैसर पर लिखल गेल। हिन्दीमे सेहो ताधरि एहि विषयपर कथा नहि लिखल गेल छल।



अनुपमा प्रियदर्शिनी

पति डॉ. रतन कर्ण, गाम- उजान (बड़कागाम), पो. लोहना रोड, जिला दरभंगा। सम्प्रति लोजियाना (संयुक्त राज्य अमेरिकामे), शिक्षा- एम.एस.सी. (जंतु विज्ञान), ल.ना. मिथिला वि.वि., दरभंगा; बी.एस.सी. बी.आर. अम्बेडकर वि.वि. मुजफ्फरपुरसँ, हॉबी, मिथिला चित्रकला, कमप्यूटराइज्ड चित्रकला, ललित कला। उपलब्धि: अखिल भारतीय कला आ दस्तकारी प्रतियोगिताक पुरस्कार 1995 मे; संस्कार भारती भाव नृत्य प्रतियोगिता 1989 मे सहभागी।



मैथिली ठाकुर

○मैथिली लोकगीत आ शास्त्रीय संगीत गायिका।



सोनी नीलू झा

मैथिली रंगमंच। "औनी-
पथारी" कविता संग्रह प्रकाशित।



शिखा

मैथिली रंगमंच।



प्रीति ठाकुर

गाम- जगेली, भाया तारानगर, पूर्णियाँ। मैथिली बाल साहित्यमे "गोनू झा आ आन चित्र कथा २००८", "मैथिली चित्रकथा

२००९" आ "मिथिलाक लोकदेवता २०१०", विद्यापतिक पुरुष परीक्षा (बाल साहित्य) २०१४ प्रकाशित।



अनुपमा झा

ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल, भारत।



विनीता मल्लिक



रेवती मिश्र



अनामिका राज



शान्ति लक्ष्मी चौधरी

ग्राम गोविन्दपुर, जिला सुपौल निवासी आ राजेन्द्र मिश्र महाविद्यालय, सहरसा मे कार्यरत पुस्तकालयाध्यक्ष श्री श्यामानन्द झाक जेष्ठ सुपुत्री, आओर ग्राम महिषी (पुनर्वास आरापट्टी), जिला सहरसा निवासी आ दिल्ली स्कूल ऑफ इकानोमिक्स सँ जुड़ल अन्वेषक आ समाजशास्त्री श्री अक्षय कुमार चौधरीक अर्धांगिनी छथि। प्राणीशास्त्र सँ स्नातकोत्तर रहितो शिक्षाशास्त्रक स्नातक शिक्षार्थी आ एकटा समाजशास्त्री सँ सानिध्यक चलिते आम जीवनक सामाजिक बिषय-बौस्तु आ खास कऽ महिलाजन्य सामाजिक समस्या आ प्रघटनामे हिनक विशेष अभिरूचि स्वभाविक।



डॉ कल्पना मणिकान्त मिश्र

पिता डॉ शिव कुमार झा, गाम राटी, सासुर- गजहारा। मेडिकल शिक्षा जे. जे. हॉस्पीटल/ ग्रान्ट हॉस्पीटलसँ सम्पन्न कय स्त्री-रोग विशेषज्ञ। मुम्बइसँ १९८०-८२ मे प्रकाशित होइबला मैथिली पत्रिका "विदेह"क पति डॉ मणिकान्त मिश्र (निर्माता- मैथिली फिल्म- आउ पिया हमर नगरी) संग सम्पादन।



कुसुम ठाकुर



नन्दिनी पाठक १९६१-



कल्पना झा १९६५-

प्रत्यावर्तन (आत्मकथा)	पाथरक शहर (कविता संग्रह)	गोसाउनिक गीत, नशामुक्ति हित गाबी गीत, निनियाँ (बाल साहित्य) आ यायावरी- शेफालिका वर्मा (हिन्दी अनुवाद कल्पना झा) प्रकाशित।
 स्वाति शाकम्भरी कविता संग्रह पूर्वागमन प्रकाशित	 रोमिशा झा आँजुर भरि इजोत (कविता संग्रह) प्रकाशित।	 सविता झा "सोनी" "स्त्रीक अकाश"- कविता संग्रह आ "मिथिलामे सियाराम" प्रकाशित।
 आभा झा कने हमरो सुनू, चिनबार (कविता संग्रह), प्रतीक्षा (कथा संग्रह), सिनेहक दाम (बीहनि कथा संग्रह), आलोचनाक वातायन (आलोचना), सीताक स्वर (शृंखलाबद्ध काव्य) प्रकाशित।	 दीपा मिश्र सम्पादिका- वाची।	 पल्लवी मण्डल कवि।
 विजेता चौधरी कविता संग्रह-"धाराक विरुद्ध" आ कथा संग्रह "कर्फ्यू" प्रकाशित।	 अभिलाषा १९८८- मूल नाम- अभिलाषा कुमारी। "पह", "ओ छौंड़ी" (कथा संग्रह) आ पोथी-पाठ (आलोचना) प्रकाशित।	 बिभा विमर्श १९७८- मूल नाम- बिभा झा। पिता: श्री सुखचंद्र झा; पति:श्री शम्भूनाथ झा, शिक्षा/ बी.ए., वृत्ति- व्यापार, स्थायी पता- पैत्रिक- जिल्ला महोत्तरी /ग्राम महोत्तरी जलेश्वर (नेपाल), वर्तमान- लामपाटी मार्ग ५९७, काठमांडू (नेपाल)। साहित्यिक उपलब्धि- गोरखापत्र,

		आँजुर, आङन, समय राग, यात्री लोकोत्सव स्मारिका- ऐसभमे कविता प्रकाशित। मैथिलीमे प्रकाशित पहिल रचना- विषक भूजा (कविता) २०१८ मे। कविता संग्रह "नहि सीता नहि" प्रकाशित।

